हिन्दी नुक्कड़ नाटकों का सामाजिक सरोकार : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

(HINDI NUKKAD NATAKOM KA SAMAJIK SAROKAR : EK VISHLESHNATMAK ADHYAYAN)

Thesis Submitted to

Cochin University of Science and Technology

For the award of the degree of

Doctor of Philosophy

By

अंजली एन.

ANJALI N.

Prof. Dr. R. SASIDHARAN
Prof.& Head of the Department

Prof. Dr. P.A. SHEMIM ALIYAR
Supervising Teacher

DEPARTMENT OF HINDI
COCHIN UNIVERSITY OF SCIENCE AND TECHNOLOGY
COCHIN – 682022

May 2014

हिन्दी नुक्कड़ नाटकों का सामाजिक सरोकार : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

(HINDI NUKKAD NATAKOM KA SAMAJIK SAROKAR : EK VISHLESHNATMAK ADHYAYAN)

Ph. D Thesis

Author

Anjali N.
Department of Hindi
Cochin University of Science and Technology
Cochin- 682 022, Kerala, India
E-mail:pranavanjali83@gmail.com

Guide:

Dr. P.A. Shemim Aliyar
Professor (Rtd.)
Department of Hindi
Cochin University of Science and Technology
Cochin- 682 022, Kerala, India

May 2014

Dr. P.A. Shemim Aliyar
Professor (Rtd)
Department of Hindi
Cochin University of Science & Technology
Kochi – 682 022

Certificate

This is to certify that the research work presented in the thesis entitled **"HINDI NUKKAD NATAKOM KA SAMAJIK SAROKAR: EK VISHLESHNATMAK ADHYAYAN"** is an authentic record of research work carried out by **ANJALI N.** under my supervision at the Department of Hindi, Cochin University of Science & Technology, in partial fulfillment of the requirements for the degree of DOCTOR OF PHILOSOPHY in HINDI and that no part thereof has been included for the award of any other degrees.

Cochin - 22
12-05-2014

Dr. P.A. Shemim Aliyar
Supervising Guide

Declaration

I hereby declare that the thesis entitled "**HINDI NUKKAD NATAKOM KA SAMAJIK SAROKAR: EK VISHLESHNATMAK ADHYAYAN"** is the bonafide record of the original work carried out by me under the supervision of **Dr. P. A. Shemim Aliyar**, Professor, at the Department of Hindi, Cochin University of Science & Technology, and no part has been included in any other thesis submitted previously for the award of any degree.

Anjali N.
Department of Hindi
Cochin University of
Science & Technology
Kochi – 682 022

12-05-2014

मेरे माता-पिता तथा पति
को सादर समर्पित .....

भूमिका

साहित्य मानव जीवन की आलोचना है| साहित्य में जीवन की अनुभूतियों को ही व्यक्त किया जाता है| साहित्य की सभी विधाओं का अपना-अपना महत्व होता है,लेकिन उनमें नाटक तो विशेष महत्व का अधिकारी है, क्योंकि नाटक पढ़नीय होने के साथ-साथ मंचीय भी होने के कारण उसका प्रभाव मानव हृदय पर अधिक पड़ता है|

समसामयिक परिवेश और आग्रह के अनुरूप नाटक अपनी विकास यात्रा के दौरान अनेक रूप धारण करता रहा है| स्वातंत्र्योत्तर भारतीय परिवेश के अनुरूप हिंदी नाटक का एक बहुचर्चित और लोकप्रिय रूप उद्भूत हुआ है जो नुक्कड़ नाटक के नाम से जाना जाता है| नुक्कड़ नाटक के उद्भव के पीछे ठोस सामाजिक-राजनैतिक-सांस्कृतिक-परिस्थितियाँ ज़िम्मेदार थी|

जिस समय भारत में दलितों-मज़दूरों-महिलाओं-किसानों के आन्दोलन समाज में परिवर्तन की आकांक्षाओं के लिए संघर्षरत थे, उस समय इस संघर्ष का सांस्कृतिक हथियार बनकर नुक्कड़ नाटक का आविर्भाव हुआ|

गलत- व्यवस्था का विरोध और उसके समान्तर एक आदर्श-व्यवस्था की संरचना इसी धरातल पर नुक्कड़ नाटक की धुरी टिकी हुई है| प्रतिरोध का स्वर ही उसमें गूँज उठता है|

सर्वहारा-वर्ग में जनवादी अधिकारों के प्रति जागरूकता पैदा करने और आंदोलनात्मक गतिविधियों की ओर सक्रिय करने का कठिन और निरंतर

प्रयास नुक्कड़ नाटक कर रहा है| लोकनाट्य परम्परा की शैली को अपनाते हुए ही नुक्कड़ नाटककारों ने अपने नाटकों को जनता के सामने प्रस्तुत किया| लेकिन नुक्कड़ नाटक लोकनाट्य परंपरा का विकास नहीं है, क्योंकि इसका आरंभ और विकास जनवादी आन्दोलन के साथ-साथ ही हुआ है|

नुक्कड़ नाटक की इसी सामाजिक प्रतिबद्धता से होकर तथा यह जानकर कि हमारे विश्वविद्यालय में इस विषय पर शोध कार्य न हुए है, मैं ने इसे अपने शोध प्रबंध के विषय के रूप में चुना|

प्रस्तुत शोध प्रबंध का विषय है –

"हिन्दी नुक्कड़ नाटकों का सामाजिक सरोकार : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन"| इस शोध प्रबंध के छः अध्याय है|

पहला अध्याय है : "नुक्कड़ नाटकों की आन्दोलनकारी भूमिका : विश्वसाहित्य के संदर्भमें"| इसमें विश्व के विभिन्न राष्ट्रों में नुक्कड़ नाटकों के प्रचार प्रसार पर विचार करने का प्रयास किया गया है|

दूसरा अध्याय है : "हिन्दी में नुक्कड़ नाटक : उद्भव और विकास"| इस अध्याय में हिंदी में नुक्कड़ नाटकों का जन्म, उसके लिए प्रेरक परिस्थितियों तथा नुक्कड़ नाटक के क्षेत्र में कार्यरत संस्थाओं पर विचार किया गया है|

तीसरा अध्याय है : "हिन्दी नुक्कड़ नाटकों में चित्रित सामाजिक समस्याएँ"| इसमें हिंदी नुक्कड़ नाटकों में चित्रित मज़दूर समस्याएँ नारी दलितों की समस्याएँ तथा शैक्षिक क्षेत्र में व्याप्त भ्रष्टाचार आदि पर विचार किया गया है|

चौथा अध्याय है : "हिन्दी नुक्कड़ नाटकों में चित्रित राजनैतिक -धार्मिक समस्याएँ"| इसमें हिंदी नुक्कड़ नाटकों में चित्रित राजनैतिक तथा धार्मिक विसंगतियों का अध्ययन किया गया है|

पाँचवाँ अध्याय है : "हिन्दी नुक्कड़ नाटकों में चित्रित आर्थिक – सांस्कृतिक संकट|" इस अध्याय में तो नुक्कड़ नाटकों में चित्रित आर्थिक – सांस्कृतिक समस्याओं का अध्ययन किया गया है|

छठा अध्याय हैं : "नुक्कड़ नाटकों का शिल्प- पक्ष"| इसमें नुक्कड़ नाटकों का शिल्पगत अध्ययन प्रस्तुत किया गया है|

अंत में **उपसंहार** है जिसमें इस अध्ययन का निष्कर्ष प्रस्तुत किया गया है|

प्रस्तुत शोध प्रबंध का कार्य कोच्चिन विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग की आदरणीय प्रोफेसर डॉ.पी.ए.शमीम अलियार के निर्देशन में संपन्न हुआ| इसकी तैयारी में उनकी ओर से जो प्रेरणा, प्रोत्साहन एवं सहयोग मिला है, उसके लिए मैं हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापित करती हूँ|

हिन्दी विभाग के अध्यक्ष तथा मेरे इस शोध कार्य के विषय विशेषज्ञ परमपूज्य आर. शशिधरन जी के अमूल्य निर्देशन एवं प्रेरणा शोधकार्य के अथ से इति तक मिली है| इनके प्रति मैं हार्दिक आभार प्रकट करती हूँ|

हिन्दी परिवार के डॉ.एन मोहनन, डॉ. के वनजा, डॉ एम. षण्मुखन, डॉ. एन देवकी और डॉ अजिता, इन सभी विद्वतजन मेरे इस शोध कार्य के लिए अमूल्य सहायता की है| इन सभी के प्रति मैं तहे दिल से कृतज्ञता ज्ञापित करती हूँ|

पुस्तकालय के अध्यक्ष श्री अषरफ और सहायक श्री बालकृष्णन के प्रति मैं कृतज्ञता प्रकट करती हूँ| कार्यालयी सुविधाएँ प्रदान करके मेरी सहायता किए सभी कर्मचारियों के प्रति भी मैं कृतज्ञता अदा करती हूँ|

आखिर मैं अपने प्रिय मित्रों एवं शुभ-चिंतकों के प्रति भी कृतज्ञता प्रकट करती हूँ जिन्होंने समय-समय पर मेरी सहायता की है|

मैं यह शोध-प्रबंध विद्वानों के सामने सविनय प्रस्तुत कर रही हूँ| अनजाने आ गई कमियों एवं त्रुटियों के लिए क्षमा प्रार्थी हूँ|

सविनय
अंजली.एन

विषयानुक्रमणिका

पहला अध्याय

नुक्कड़ नाटकों की आन्दोलनकारी भूमिका : विश्व-साहित्य के संदर्भ में ---------- 01 - 39

नाटक और रंगकर्म का सामाजिक दायित्व-नाटक एक सामूहिक कला – जन-जागरण में नाटक की भूमिका – विश्व के विभिन्न देशों के स्वाधीनता आन्दोलन में नुक्कड़ नाटक की भूमिका – सोवियत क्रांति और नुक्कड़ नाटक यूरोप और अमरिका में नुक्कड़ नाटक – चीन क्रांति और नुक्कड़ नाटक – साम्राज्यवादी शक्तियों के खिलाफ नुक्कड़ नाटकों की भूमिका – नैजीरिया – जापान – आफ्रिका –श्रीलंका – लाटिन अमरिका – विभिन्न भारतीय भाषाओं में नुक्कड़ नाटक : एक परिचय – निष्कर्ष

दूसरा अध्याय

हिन्दी में नुक्कड़ नाटक : उद्भव और विकास ---------- 41 - 93

नुक्कड़ नाटक : स्वरूप की अहमियत – नुक्कड़ नाटक – परिभाषा – नुक्कड़ नाटक : उद्भव " प्रेरक परिस्थियाँ 1) पाश्चात्य – प्रभाव – बर्टोल्ट ब्रेख्त और नुक्कड़ नाटक – 2) लोकनाट्य परंपरा – 3) प्रगतिशील लेखक संघ की स्थापना – 4) भारतीय जन नाट्य – संघ(इप्टा) – अन्य प्रेरक परिस्थितियाँ 5) मज़दूर आन्दोलन – किसान –आन्दोलन – नुक्कड़ नाटक का उदय – प्रमुख नुक्कड़ नाट्य – संस्थाएँ और नुक्कड़ नाटककार – 1) जन नाट्य मंच 2) समुदाया, बैंगलूर – 3) निशांत नाट्य मंच, दिल्ली – 4) दिशा - जन सांस्कृतिक मंच, बिहार 5) दस्ता, इलाहाबाद 6) तीसरा थियेटर – 7)अभिनव जन सांस्कृतिक मंचयुवानीति, भोजपुरथियेटर यूनियन, दिल्ली - नुक्कड़ नाटक से जुडी अन्य मंडलियाँ - प्रमुख नुक्कड़ नाटककार - सफ़दर हाश्मी - रमेश उपाध्याय–शिवराम - स्वयंप्रकाश - अरविंद गौड़ - अनुराधा कपूर - निष्कर्ष

तीसरा अध्याय

हिन्दी नुक्कड़ नाटकों में चित्रित सामाजिक समस्याएँ ------95 - 138

स्वातंत्र्योत्तर सामाजिक परिवेश – नुक्कड़ नाटकों में चित्रित सामाजिक समस्याएँ – 1) किसानों और मज़दूरों के शोषण – मज़दूरों के शोषण के विरुद्ध प्रतिरोधात्मक स्वर – शैक्षिक –क्षेत्र में व्याप्त अनीतियों का चित्रण – नुक्कड़ नाटकों में नारी – समस्याएँ – नारी –शोषण – शारीरिक - बलात्कार – लड़का-लडकी का भेद-भाव – शादी शुदा नारी की समस्याएँ तथा दहेज़ –प्रथा के कारण होने वाले नारी शोषण नारी-शिक्षा – नुक्कड़ नाटकों में चित्रित अन्य सामाजिक समस्याएँ - निष्कर्ष

चौथा अध्याय

हिन्दी नुक्कड़ नाटकों में चित्रित राजनैतिक –धार्मिक समस्याएँ---------- 139 - 174

स्वातंत्र्योत्तर राजनैतिक परिस्थिति – नुक्कड़ नाटक : वर्तमान राजनीति का दस्तावेज़ – अवसरवादिता – स्वार्थ-पूर्ति – पूँजीपतियों के साथ गठबंधन – स्वातंत्र्योत्तर धार्मिक परिदृश्य - नुक्कड़ नाट्यवस्तु धार्मिक – सांप्रदायिक समस्याओं के संदर्भ में सांप्रदायिक समस्याओं का चित्रण - निष्कर्ष

पाँचवाँ अध्याय

हिन्दी नुक्कड़ नाटकों में चित्रित आर्थिक सांस्कृतिक संकट--- 175 -220

स्वातंत्र्योत्तर आर्थिक परिवेश – नुक्कड़ नाटकों में चित्रित आर्थिक – संकट – किसानों – मज़दूरों का आर्थिक संकट – महँगाई – बेरोज़गारी का चित्रण – स्वातंत्र्योत्तर सांस्कृतिक परिवेश – सांस्कृतिक संकट: नुक्कड़ नाटकों में – भूमंडलीकरण और हिन्दी नुक्कड़ नाटक – विज्ञापनों का इस्तेमाल – पूँजीवादी संस्कृति से जुडी समस्याएँ - निष्कर्ष

छठा अध्याय

नुक्कड़ नाटकों का शिल्प-पक्ष ---------------------------- 221 - 260

नुक्कड़ नाटक रूप पक्ष – नुक्कड़ नाटक का रंगमंच - नुक्कड़ नाटकों में अभिनेता तथा दर्शक – नुक्कड़ नाटकों की भाषा शैली एवं संवाद – नुक्कड़ नाटकों का स्थल – चयन तथा मंच – संरचना – पात्रों की वेश-भूषा –नुक्कड़ नाटक की दृश्य-रचना - प्रकाश/ध्वनी – योजना – गीत संगीत – नृत्य–योजना-उद्देश्य – नुक्कड़ नाटकों का संप्रेषण तथा प्रस्तुति में आनेवाली बाधाएँ - निष्कर्ष

उपसंहार -- 261 - 267

संदर्भ ग्रंथ-सूची-- 269 - 288

.....ഊര.....

पहला अध्याय

नुक्कड़ नाटकों की आन्दोलनकारी भूमिका – विश्व-साहित्य के संदर्भ में

नाटक और रंगकर्म का सामाजिक दायित्व

नाटक साहित्य का सामाजिक स्वरूप है| इसकी प्रस्तुति और आस्वादन दोनों समाजधर्मी होते हैं| इसलिए लोक-जागरण की भावना के साथ साहित्यकारों का ध्यान नाटक-लेखन की ओर गया| नाटक अवाम की, खास तौर पर उपेक्षित जन-समुदाय की गैरबराबरी एवं तानाशाही शोषण के खिलाफ अपनी आवाज़ मुहैया करता है|

नाटक मानव-जीवन की वास्तविक तथा सजीव प्रतिच्छवि है| उसमें मानव-मूल्यों, मनुष्य के विचारों, अनुभूतियों और समस्याओं पर यथासंभव प्रकाश डाला जा सकता है| पूरे विश्व की मानवीय पीड़ा, संघर्ष और संघर्षपरक उपलब्धियों में नाटक सार्थक हस्तक्षेप करता आया है| नाटक का अभिन्न अंग रंगमंच, समूहगत और जीवन्त शक्तिशाली माध्यम होने के कारण मानव की मानवीयता को लेकर होनेवाली लड़ाई में भागीदार रहा है|

नाटक जनता में जागृति का सम्यक रूप से संचार करनेवाला तथा जन-रुचि को परिष्कृत करने में सहायता देनेवाला माध्यम भी है| मानव में सामूहिक प्रतिक्रिया और प्रेरणा उत्पन्न करने में नाटक जो कुछ कर सकता है उतना शायद कोई अन्य विधा न कर सकती है| सामूहिक उपयोग के लिए नाटक ही प्रधान साहित्यांग है|

समाज के उच्च तथा निम्न दोनों वर्गों में प्रभाव डालने की क्षमता नाटक में है| शिक्षित-अशिक्षित हृदयों पर समान रूप से प्रभाव डालने की क्षमता

उसका अपना विशिष्ट गुण है| डॉ.पवन कुमार मिश्र की राय में – "नाटक इतनी विराटता और गरिमा से युक्त है कि उसके द्वारा मूर्ख से मूर्ख और पंडित से पंडित का मनोरंजन होता है|"[1]

पुनर्जागरण की व्यापक-सामाजिक चेतना की अभिव्यक्ति के लिए नाटक सर्वाधिक उपयुक्त माध्यम था| शायद इसी कारण से गद्य-साहित्य का आरंभ नाटक से हुआ| आचार्य शुक्लजी ने लिखा है – "विलक्षण बात तो यह है कि आधुनिक हिंदी गद्य-साहित्य की परंपरा का प्रवर्तन नाटकों से हुआ|"[2]

साहित्य की हर विधा परिवर्तन की प्रक्रिया को अपनी दक्षता के अनुसार ग्रहण करती है, और इस प्रक्रिया की प्रतिक्रिया द्वारा अपनी भूमिका निभाती है| रंगमंच दृश्यत्व को लेकर चलता है, इसलिए उसकी अभिव्यक्ति जन-जीवन को जल्दी आकृष्ट करती है और उसका प्रभाव भी दर्शकों पर अधिक गहरा पड़ता है| रंगमंच में सामाजिकता की भावना अधिक क्रियाशील रहती है|

अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम होने के कारण जन-जागरण में रंगमंच की विशेष भूमिका रही है| शिक्षा, राष्ट्रीयता, नैतिकता और मानवीय मूल्यों के प्रचार-प्रसार में रंगमंच बहुत उपयोगी है| रंगमच के माध्यम से जनता को सहज और सशक्त रूप से उद्बोधित किया जा सकता है| नाटक हमेशा अपने

[1] डॉ. पवन कुमार मिश्र, हिंदी नाटक और रंगमंच, पृ : 13

[2] आचार्य रामचंद्र शुक्ल, हिंदी साहित्य का इतिहास, पृ : 115

परिवेश से ही जन्म लेता है| इसलिए अपने समाज में व्याप्त भ्रष्टाचार और अनीतियों के खिलाफ आवाज़ उठाने की कोशिश नाटककारों ने की है और अब भी कर रहे हैं| इसी वजह से नाटक अपनी प्रासंगिकता और सामाजिकता के कारण साहित्य में प्रमुख स्थान बना सका है|

नाटक एक सामूहिक कला

नाटक एक उत्कृष्ट कला है| एक सामाजिक कला-सृजन है| मानव की हृदयगत अभिव्यक्ति की सशक्त और प्रभावपूर्ण साहित्यिक विधाओं में नाटक प्रमुख स्थान रखता है| समस्त विधाओं में नाटक ही कला और साहित्य के अंतर्गत आनेवाले सभी रूपों – नृत्य, संगीत – का मिश्रित रूप है|

भरतमुनि ने 'नाट्यशास्त्र' में स्पष्ट कहा है – "योग, कर्म, सारे शास्त्र, संपूर्ण शिल्प तथा विविध कार्यों में कोई ऐसा नहीं जो नाटक में न पाया जाता हो|"[1] नाटक ही एकमात्र सामंजस्यपूर्ण अभिव्यंजना है जिसमें कला और साहित्य का समस्त अन्तः सौन्दर्य आँख, कान, मन और बुद्धि आदि इन्द्रियों की सामूहिक एकाग्रता से अर्जित तथा आस्वादनीय होता है|

नाटक एक सामूहिक कला है| नाटक के प्रस्तुतीकरण में अनेक व्यक्तियों का सामूहिक योगदान है – नाटक – लेखक, निर्देशक, अभिनेता, सज्जा-

[1] भरत, नाट्यशास्त्र, अध्याय 1, कारिका – 113-117

सहायक, मंच-व्यवस्थापक, प्रकाश-चालक और इनके पीछे कार्य करनेवाले अनेक शिल्पी और कारीगर, नाट्य-रचना में इन सबका गुणात्मक सहयोग है|

दूसरी ओर नाटक का आस्वादन भी अपनी प्रकृति में सामूहिक है| अनेक व्यक्ति एक साथ बैठकर उसे देखते हैं और इस एक साथ बैठने में नाटक का प्रभाव बढ़ता है, क्योंकि मनोभाव अपनी प्रकृति से अनेक बार संक्रामक होते हैं| इसीलिए नाटक देखनेवाले को हमारे यहाँ नाम दिया गया है सामाजिक| नाटक अपनी रचना और आस्वादन दोनों सिरों पर सामूहिक तथा सामाजिक है|

नाटक में सभी कलाओं का उचित समन्वय हो जाता है| नाटक, लेखक की विभिन्न कलाओं का ज्ञान और प्रतिभा का सच्चा प्रमाण है| नाटक में सभी दृश्य और अनेक मूर्तियाँ उपस्थित की जाती है| इस प्रकार नाटक में मूर्ति, संगीत, चित्र, नृत्य आदि कलाओं और मनोविज्ञान, समाज शास्त्र आदि का भी समावेश हो जाता है|

नाटक की संप्रेषणीयता की पैठ मानव-मन की गहराइयों तक अधिक है| नाट्य श्रवणेन्द्रिय के साथ-साथ दृश्येन्द्रिय द्वारा भी रसोद्रेक की स्थिति तक सामाजिक को पहुँचाता है|

जन-जागरण में नाटक की भूमिका

साहित्य द्वारा सामाजिक परिवर्तन को गतिमय बनाने का काम इतने सूक्ष्म ढंग से होता है कि ऊपर-ऊपर से दिखाई नहीं देता| लेकिन हर

सामाजिक परिवर्तन के पीछे उसका हाथ होता है| साहित्य समाज की परिवर्तनकारी शक्ति के साथ गहरे से जुड़ता है और समाज में परिवर्तन लाता है|

जन-जीवन, समाज एवं संस्कृति के साथ रची-बसी कलाओं-विधाओं में नाटक अपना महत्वपूर्ण स्थान रखता है| आदिकाल से ही वह जन-अस्तित्व के साथ जुड़ा रहा है| नाटक मानव-जीवन का एक सहज और स्वाभाविक रूप है| हम नाटक में खुद को देखते हैं और यही सबसे विलक्षण बात है| नाटक जनता को राजनीतिक- धार्मिक-कट्टरपन के विरुद्ध आवाज़ उठाने के लिए सशक्त बनाता है| नाटक अपने समकालीन युग तथा उसके परिवेश के समस्त जीवन का अत्यंत प्रभावशाली एवं सर्जनात्मक रूपायन करके उनका दस्तावेज़ प्रस्तुत करता है|

आधुनिक युग में नाटकों में राजनीति और विचार-धारा की भूमिका को स्वीकृति मिली है और सामाजिक परिवर्तन के संदर्भ में उसकी भूमिका को अधिक स्पष्ट और मुखर रूप में परिभाषित किया गया| नाटक को जन-जागरण का औजार माना गया|

जन-जागरण में नाटक की भूमिका तो हमने फ़्रांस की राज्य-क्रांति और रूसी-क्रांति के संदर्भ में देखा है| इन दोनों महान क्रांतियों की सफलता के पीछे साहित्य की महत्वपूर्ण भूमिका थी| आधुनिक युग के नाटककारों ने अपने रंगकर्म के माध्यम से जन-जागृति के आन्दोलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी| कुछ नाटककारों ने लोकनाट्य रूपों का उपयोग, समकालीन यथार्थ को प्रस्तुत करते

हुए जनता तक अपना संदेश पहुँचाने के लिए किया| इस तरह जन-जागरण की नयी भावना को लेकर नाटक एक नयी पहचान के साथ सामने आया|

नाटक लिखने के प्रयत्न का मतलब है, आज के वस्तु-परक तथ्यों तथा साक्षात् जीवन-सन्दर्भों से जुड़ना और उनकी गहराइयों से संबंधित होना| इसीलिए जन-जागरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने की ताकत नाटक में है| उपन्यास में जहाँ यथार्थ लिखा जाता है, उसका चित्र उपस्थित किया जाता है, वहाँ नाटक में यथार्थ जिया और भोगा जाता है| रचनात्मक साहित्य की प्रत्येक विधा में जीवन-प्रसंगों के भीतर से उपजानेवाला अर्थ शब्दों में अंतर्भूत रहता है| पर इससे आगे नाटक में यही अर्थ मंच पर प्रस्तुत किया जाता है जिससे लोगों पर इसका प्रभाव पड़ता है|

सामाजिक संपृक्ति और व्यापक जनानुभूति के कारण नाटक में दर्शकों को प्रभावित करने की क्षमता होती है| नाट्य-रचना करते समय नाटककार अपने ही जीवन से ऐसी अनुभूतियों का चयन करता है जो न केवल उसकी अपनी होती है बल्कि सबकी| उन अनुभूतियों को कथ्य का आवरण प्रदान कर एक जीवन-दर्शन के साथ नाटक के रूप में प्रस्तुत करने का प्रयास करता है, जिससे जनता में जागरण लाने की कोशिश भी की जाती है|

विश्व के विभिन्न देशों के स्वाधीनता आन्दोलन में नुक्कड़ नाटक की भूमिका

दर असल साहित्य द्वारा सामाजिक परिवर्तन को गतिमय बनाने का काम कुछ इतने सूक्ष्म ढंग से होता है कि ऊपर-ऊपर से दिखाई नहीं देता,

लेकिन हर सामाजिक परिवर्तन के पीछे उसका हाथ होता है| चाहे वह फ़्रांस की राज्य-क्रांति हो या रूस की लाल-क्रांति या हमारी आज़ादी की लड़ाई| साहित्य समाज की परिवर्तनकारी शक्ति के साथ गहरे से जुड़ता है और समाज में परिवर्तन लाता है|

दुनिया में लड़ने की ज़रूरत मनुष्य को आदिकाल से रही है| यह लड़ाई काल और परिस्थितियों के अनुसार परिवर्तित होती रही है| विश्व के सभी देशों में इसी लड़ाई के विभिन्न रूप हम देख सकते हैं| पूरे विश्व के संघर्ष और इन संघर्षों से पायी गयी उपलब्धियों में कला सदैव सार्थक हस्तक्षेप करती आई है| लड़ाई या आन्दोलन के समय नाटककार समझ लेते हैं कि लोक-मानस के मनोगत भाव-विचारों की सच्ची अभिव्यक्ति नाटक और रंग-प्रस्तुति के माध्यम से हो सकती है| इसका कारण यह है कि नाटकों के कथानकों में युगबोध के अनुकूल विचारों को संप्रेषित करके उनके मानस को प्रेरित व उद्वेलित किया जा सकता है|

क्रांति की अवस्था में नुक्कड़ नाटक को एक सशक्त माध्यम के रूप में स्वीकारा गया क्योंकि इसके प्रस्तुतीकरण के लिए अधिक उपादानों की आवश्यकता नहीं होती है| नुक्कड़ नाटक का जो रूप आज हमारे सामने हैं उसका सीधा संबंध सन् 1917 की सोवियत क्रांति और उसके बाद के वर्षों से जुड़ता है| सोवियत क्रांति के समय नाटककारों ने नुक्कड़ नाटकों के माध्यम से जनता को जागृत करने का प्रयास किया क्योंकि ये नाटक इतना सरल होते हैं कि अनपढ़ लोग भी नाटक के सन्देश को समझ सकते हैं|

सोवियत क्रांति के अलावा अमरीका, यूरोप, नाइजीरिया आदि देशों में हुई क्रांतियों के प्रेरणा-स्रोतों में नुक्कड़-नाटकों का हाथ है| इस संदर्भ में अमरीका के 'प्रचार थियेटर', यूरोप के 'यूनिटी थियेटर' और चीन की 'जनता की जापान-विरोधी नाटक समिति' आदि का नाम विशेष उल्लेखनीय है| इन सभी नाट्य मंडलियों ने जनता की राजनीतिक शिक्षा और सांस्कृतिक उन्नति के लिए महत्वपूर्ण कार्य किया|

"बहुतायत क्रांति के दिनों में नुक्कड़-नाटक अपने पूर्ण स्वरूप को लेकर उभरा| अनेक देशों में उनके इतिहास की नाज़ुक घड़ियों के दौरान, वियतनाम में जापानी, फ्रांसीसी और अमरीकी हमलावारों के विरुद्ध पैंतालीस वर्षों के लम्बे गृहयुद्ध के दौरान, क्यूबा में क्रांति के तत्काल बाद और पूरे लैटिन अमरीका व आफ्रिका में राष्ट्रीय मुक्ति संग्राम के दौरान नुक्कड़ नाटकों ने खुलकर भागीदारी की|"[1]

इस दृष्टि से देखें तो इतिहास गवाह है कि पूरे विश्व में सामाजिक क्रांति एवं स्वाधीनता आन्दोलन में नुक्कड़ नाटक की महत्वपूर्ण भूमिका रही है|

सोवियत क्रांति और नुक्कड़ नाटक

नुक्कड़ नाटक की शुरुआत ही सोवियत क्रांति से जुडी हुई है| नुक्कड़ नाटक का वास्तविक आरंभ सन् 1917 की सोवियत क्रांति के तत्काल बाद

[1] विजय पंडित, रंगमंच और स्वाधीनता आन्दोलन, पृ : 13

के वर्षों में हुआ|"अक्टूबर क्रांति की पहली जयंती पर व्सेवोलोद मायेर्होल्द ने टेंट-शो के तत्वों और क्रांतिकारी कविता को मिलाकर मायकोव्स्की के 'मिस्ट्री बूफे' को नाट्य रूप दिया और उसे कई हज़ार दर्शकों के सामने शहर के बीच प्रस्तुत किया|"[1] यह गलियों, चौराहों, खेल के मैदानों में खेले जानेवाले आन्दोलन-प्रचारपरक नाटकों का आरंभिक दौर था| युद्ध के कठिन वर्षों में सोवियत रंगमंच ने मोर्चे पर, जंगलों में, लारियों में, ऐसी ही अन्य कई जगहों में दिमाग को झकझोर देनेवाली प्रस्तुतियाँ की थीं|

सोवियत क्रांति के तत्काल बाद के वर्षों में नुक्कड़ नाटक ने अपना ज़ोर पकड़ा| सोवियत संघ के श्रमिक वर्ग द्वारा युद्ध के वर्षों में प्रदर्शित पराक्रम और युद्ध की विजय को विषय बनाकर जनता में चेतना जगाने के लिए सोवियत साहित्य रचनाएँ हुई| इस प्रकार की रचना करनेवाले सोवियत कलाकारों की रचनाओं से सोवियत साहित्य अधिक प्रभावात्मक बना|

सोवियत नुक्कड़ नाटकों की बात करते समय हमारे सामने आनेवाले कुछ प्रमुख नाटककार हैं – निकोलाई पोगोदिन, लेओनिद लेओनोव, अलेक्सान्द्र कोनौइचुक आदि| निकोलाई पोगोदिन ने अपने नाटकों में श्रमिक-उत्साह का चित्रण करके श्रमिकों में नयी चेतना जगाने की कोशिश की है|

[1] सफदर-संपादित, पृ : 42

"लेओनिद लेओनेव के 'धावा' और अलेक्सान्द्र कोनेंइचुक के 'मोर्चा' आदि नाटकों में फासिस्ट कब्ज़ावारोंके विरुद्ध संघर्ष में सोवियत संघ के लोगों द्वारा प्रदर्शित अदम्य संकल्प तथा नैतिक बल का असामान्य चित्रण किया गया है|"[1]

सोवियत क्रांति को प्रेरणा देनेवाले स्रोतों के बारे में सोचते वक्त 'तागान्का थियेटर' का नाम उल्लेखनीय है| 'बोरीस वसील्येव' की लंबी कहानी 'यहाँ सुबह शांत सुहानी है' पर आधारित 'तागान्का थियेटर' नाटक ने सोवियत जनता में अद्‌भुत और अनुपम नैतिक उत्साह का संचार किया| इस नाटक की प्रस्तुति ने सोवियत साहित्यकारों में एक नयी चेतना जगायी| शांति तथा राष्ट्रों की मुक्ति हेतु संघर्ष और श्रमिक वर्ग की उन्नति को विषय बनाकर अनेक रचनाएँ होने लगीं| निकोलाई मिरोश्चिन चेंको के नाटक 'तीसरी पीढ़ी', गेनारिखा बोरोविक के 'मार्टिन ग्रो के तीन मिनट' आदि नाटक इस कोटि में आनेवाले हैं|

यूरोप और अमरीका में नुक्कड़-नाटक

सोवियत क्रांति के तत्काल बाद शुरू हुई नुक्कड़ नाट्य-विधा का प्रभाव विश्व भर के साहित्यकारों पर पड़ा| जनता में चेतना जगाने का एक सशक्त माध्यम के रूप में इस विधा को नाटककारों ने स्वीकार किया| आम-जनता की समस्याओं को उसके ऐन सामने चित्रित करने के लिए नुक्कड़ नाटक के समान प्रभावात्मक माध्यम और कोई नहीं है|

[1] विजय पंडित, रंगमंच और स्वाधीनता आन्दोलन, पृ : 12

यूरोप के नाटककारों ने भी इस दिशा की ओर मुड़ने लगे| यूरोप का 'यूनिटी थियेटर' इसका अच्छा ख़ासा उदाहरण है| इस थियेटर ने यूरोपीय जनता की राजनीतिक शिक्षा एवं सांस्कृतिक उन्नति के लिए प्रभावात्मक कार्य किया| इसका वास्तविक संबंध 'वर्क्स थियेटर मूवमेन्ट्स' से है|

यूनिटी थियेटर का विकास 'वर्क्स थियेटर मूवमेन्ट्स' से हुआ| इसकी स्थापना सन् 1936 में हुआ| इस थियेटर की स्थापना किसी विशेष उद्देशों से हुई| इन उद्देशों में सबसे प्रमुख था समसामयिक सामाजिक और राजनीतिक समस्याओं को श्रमिक वर्गों के सामने प्रस्तुत करना| यह थियेटर फासीवादी विरोधी संयुक्त मोर्चा का प्रमुख प्रचार तंत्र था| श्रमिकों की समस्याओं को प्रस्तुत करने के लिए इस थियेटर कंपनी ने अजिट-प्रोप थियेटर तकनीकों का इस्तेमाल किया| इस थियेटर कंपनी ने अपने नुक्कड़ नाटकों के ज़रिए जर्मनी के नासिसम और फासिसम को चुनौती दी|

यूनिटी थियेटर कंपनी के नाटकों की विशेषता यह है कि इन नाटकों के प्रमुख पात्र श्रमिक तथा निम्न वर्ग के होते हैं| ब्रेख्त के नाटकों को पहली बार ब्रिटेन में प्रस्तुत करने का श्रेय इस थियेटर कंपनी को जाता है| इस नाटक का नाम था 'सेनोरा कारारस रैफल्स' (Senora Carrara's Rifles)| इस कंपनी के अन्य नाटकों में विल्फार्ड ओडेटका – 'वेंटिंग फार लेफ्टी', सीन ओ कासीस का – 'द स्टार टेनर्स रेड' – ट्रिट्रिया शव नाटक का – रोडर चाइना',

गोर्की का – 'मदर' स्ट्रीफन स्पैंडर का – 'दी ड्राइल ऑफ़ एजज' आदि अनूदित तथा मौलिक नाटक प्रसिद्ध है|

यूनिटि थियेटर ने मैक्सिम गोर्की के नाटकों को प्रसिद्धि मिलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी| इस थियेटर से सहयोजित नाटककारों में लाइनेल बार्ट, आल्फी बास, जूलियन ग्लावर, जाक ग्रोस्मान, बिल ओवन, एशिक पेइस, आदि के नाम उल्लेखनीय है| बार्ट ने यूनिटी थियेटर के लिए अनेक रचनात्मक कार्य किये हैं| उन्होंने 'सिंड्रेला' के अजिट-प्रोप प्रस्तुति के लिए पंक्तियाँ लिखी| यूनिटी थियेटर कंपनी के लिए बार्ट के द्वारा लिखित नाटक का नाम है 'वाली पोन' (Walley Pone)|

वर्क्स थियेटर मूवमेंट से संबद्ध होने के कारण यूनिटी थियेटर के नाटक भी सरल थे| लेकिन सरलता के पीछे गहन अर्थ तथा संदेश छिपे हुए होगे| श्रमिकों के द्वारा प्रस्तुत होने के कारण तथा श्रमिकों के लिए प्रस्तुत होने के कारण इस प्रकार के नाटकों में सरलता का होना अपेक्षित है| इस सरलता के बावजूद भी आम जनता के मनोरंजन, मनोविकास और उसे रोज़मर्रा की समस्याओं से अवगत कराकर जागरूक करने में ये नाटक अत्यन्त सफल माध्यम सिद्ध हुआ|

विश्व के अन्य देशों के समान अमरीका में नुक्कड़ नाट्य-आन्दोलन को प्रचार मिला| अमरीका के नीग्रो वर्गों की प्रगति के लिए अनेक नुक्कड़ नाटककारों ने सराहनीय कार्य किया| अमरीका की क्रांति के समय अवाम में चेतना जगाने

हेतू भी नुक्कड़ नाटकों की रचना हुई| नुक्कड़ नाटकों को गतिशील बनाने के लिए अमरीका के नाटककारों ने भी अपना योगदान दिया है|

अमरीका के नुक्कड़ नाटकों की बात करते समय वहाँ के क्रांतिकारी थियेटर या प्रचार, डोक स्ट्रीट थियेटर, पार्क थियेटर, लिटिल थियेटर मूवमेंट आदि कुछ संस्थाओं का नाम उल्लेखनीय है| सोवियत संघ के नुक्कड़ नाट्य आन्दोलन से प्रभावित होकर अमरीका के नाटककारों ने भी नुक्कड़ नाटक पर अपनी लेखनी चलायी|

मज़दूरों तथा श्रमिक वर्गों की प्रगति को लक्ष्य बनाकर स्थापित नुक्कड़ नाट्य मंच था 'प्रचार' या 'क्रन्तिकारी थियेटर'| इस नाट्यमंच ने मज़दूरों और श्रमिकों के बीच नाटक दिखाने की प्रवृत्ति पैदा की| इस थियेटर की एक विशेषता यह थी कि उसने ऐसे चलते-फिरते थियेटर स्थापित किए थे जिनमें रंगमंच की तडक-भड़क नहीं रहती थी| इन नाटकों में शिक्षित अभिनेताओं की आवश्यकता भी नहीं होती थी| साधारण मज़दूर या श्रमिक कहीं इकट्ठे होकर इन नाटकों को प्रस्तुत करते थे| इन नाटकों का मुख्य विषय भी मज़दूरों -श्रमिकों जैसी आम जनता के जीवन से संबंध रखनेवाले थे|

अमरीका में नुक्कड़ नाटकों के विकास में अनेक नुक्कड़ नाट्य-संस्थाओं का योगदान है जिनमें डोक स्ट्रीट थियेटर, बोंड स्ट्रीट थियेटर, 7th स्ट्रीट थियेटर आदि के नाम उल्लेखनीय हैं| डोक स्ट्रीट थियेटर की स्थापना सन् 1936 में हुई जो एक गिरिजाघर के कोने में स्थापित हुई| लेकिन बाद में सन् 1940 के

आसपास इस थियेटर कंपनी को नष्ट करके वहाँ एक होटल की स्थापना हुई| इसके कई वर्ष बाद सिविल युद्ध के भी उपरान्त वहाँ एक प्रशासनिक कार्यालय निर्मित किया गया जिसका एक कमरा इस थियेटर कंपनी के लिए सौंप दिया गया|

अमरीका बोंड स्ट्रीट थियेटर कंपनी की स्थापना सन् 1976 अक्टूबर 8 को हुआ| चार अभिनेता या निदेशकों ने मिलकर इसकी स्थापना की जिनका नाम इस प्रकार हैं : - पाट्रिक सियाशट्टा, जोयन्ना शेरमान, मैकल टिटेलबाम, राय अब्रुजो| सामाजिक समस्याओं और इतिहासों को विषय बनाकर इन्होंने नाटकों को प्रस्तुत किया| इन्होंने मिलकर कई नाटकों को प्रस्तुत किया जिनमें कपका का 'द हंगर आर्टिस्ट' (The Hunger Artist), मोलियर का 'द फ्लाइंड डाक्टर' (The Flying Doctor) आदि के नाम प्रमुख हैं| अब भी यह स्ट्रीट थियेटर कंपनी नाटक कर रहे हैं|

7th स्ट्रीट थियेटर की स्थापना तो सन् 1928 में हुई| 1928 से लेकर कई वर्षों तक यह नाट्य-मंच ने जनता को मनोरंजन के लिए आवश्यक चीज़े प्रस्तुत की| लेकिन टेलीविज़न के आगमन ने इस थियेटर को क्षति की दिशा में पहुँचाया| अमरीका के नुक्कड़ नाट्य मंचों के नामों में आनेवाला एक दूसरा नाम है मेइन स्ट्रीट थियेटर|

इस थियेटर की स्थापना सन् 1970 के आसपास हुई| इस थियेटर के अधीन में हुई सबसे पहली प्रस्तुति 'है फिवर' (Hay Fever) है जिसकी रचना

नोयल काउडर्स ने की थी| मेइन स्ट्रीट थियेटर के अलावा अमरीका में स्थापित एक अन्य नुक्कड़ नाट्य संस्था है 'एक्स्टीरियर स्ट्रीट थियेटर|

इस प्रकार देखें तो अमरीका में नुक्कड़ नाटकों का आन्दोलन अपने ज़ोरों पर थे लेकिन जनसंचार माध्यमों का विकास इस आन्दोलन पर शिथिलता लाया| अमरीका में नुक्कड़ नाटक का वास्तविक प्रस्फुटन मैक्सिको के खेत मज़दूरों और नीग्रो के बीच संघर्ष और संगठन के साधन के रूप में हुआ|

समाज के उपेक्षित वर्गों में चेतना जगाने का सशक्त माध्यम होने के कारण साहित्यकारों ने इस नुक्कड़ नाट्य-विधा को स्वीकारा और आम जनता की समस्याओं को उनके ही सामने इस नाट्य-विधा के माध्यम से प्रस्तुत किया|

चीन क्रांति और नुक्कड़ नाटक

संस्कृति क्रांतिकारी आन्दोलन का एक ऐसा भाग है जिसके माध्यम से जीवन के सभी क्षेत्रों में मूलभूत परिवर्तन लाने की कोशिश की जाती है| चीन क्रांति के समय भी यही बात घटित हुई| सोवियत संघ से प्रेरणा पाकर साहित्यकारों ने साम्राज्यवादी शक्तियों के खिलाफ लड़ने में अपने देश की जनता को प्रेरणा देने लायक रचनाएँ की|

चीन देश पर जापान जैसी साम्राज्यवादी शक्तियों का हमला हो रहा था| इन आक्रमणों से अपने देश की रक्षा करने के लिए क्रांति की आवश्यकता है और इस क्रांति को रूपायित करने में आम जनता का अहं हाथ है – ये सारी

बातें जब चीन साहित्यकारों की समझ में आयी तब से लेकर उन्होंने नुक्कड़ नाटकों का आश्रय लिया|

नुक्कड़ नाटकों के माध्यम से जनता को क्रांति की आवश्यकता समझाने की कोशिश साहित्यकारों ने की जिसको फल भी मिला| इस प्रकार के नाटकों ने सोयी हुई जनता में चेतना की एक क्रन्तिकारी लहर दौड़ा दी थी| चीन की जनता में एकता और संगठन पैदा कर दिया| अपने राष्ट्र पर आक्रमण करनेवाली शक्तियों का मुकाबला करने के लिए वे उठ खड़ी हुई|

चीन की नुक्कड़ नाट्य प्रस्तुतियों का मुख्य श्रेय क्रांतिकारी नाट्यशाला को जाता है| इस नाट्यशाला द्वारा मंचित किए गए नाटकों के शीर्षक से ही पता चलता है कि चीन-जापान की मुख्य घटनाओं से उनका संबंध है|

साम्राज्यवादी शक्तियों के खिलाफ नुक्कड़-नाटकों की भूमिका

नाइजीरिया

नाइजीरिया में नव-उपनिवेशवाद का सामना करने के लिए समाज के हाशिये पर पड़े हुए लोगों को सशक्त बनाने हेतु सन् 1970 में थियेटर फार डवलपमेंट (Theatre for Development TFD) की स्थापना हुई| आम जनता की समस्याओं तथा आकांक्षाओं को उनके ही सामने उनको समझने लायक भाषा में प्रस्तुत करने की कोशिश इस थियेटर ने की| टि. एफ.डी. ने कई प्रयोगशालाएँ आयोजित की और अनेक सामान्य तरीके के प्रस्तुतीकरण

भी किये| जनता का ध्यान उपनिवेशवादी ताकतों पर केंद्रित करना इस प्रकार के नाटकों का उद्देश्य था|

नाइजीरिया के नुक्कड़ नाटकों की बात करते समय नोबेल पुरस्कार विजेता और प्रसिद्ध नाटककार वोले सोयिंका का नाम भूल नहीं सकता|

वोले सोयिंका एक ऐसे लेखक हैं जो अपने समाज में प्रत्यक्ष रूप से दृष्टिगोचर न होने वाले तत्वों को तलाशकर उन तत्वों को नाटकों की रचना और प्रस्तुति के माध्यम से व्यक्त करते हैं| वे नाइजीरिया के अश्वेत नाटककार एवं रंगकर्मी है जिन्होंने श्वेत –अश्वेत के संघर्ष में अपनी नाट्य-प्रस्तुतियों के माध्यम से अश्वेत के पक्षधर होकर न्याय केलिए लड़ाइयाँ लड़ी|

वोले सोयिंका की राय में अपने नाटकों के माध्यम से नाटककार किसी भी संघर्ष को नैतिक दिशा और दृष्टि प्रदान कर सकता है| वे इस बात पर बल देते है कि एक रचनाकार अपनी रचना से युद्ध-क्षेत्र में शरीक रह जाता है|

उन्होंने अपनी रचनाओं के ज़रिए अश्वेत वर्ग में चेतना जगाकर उसकी मुक्ति के लिए कोशिशें की| उनके सात से अधिक नाटक प्रकशित हो चुके हैं| नाइजीरिया की आज़ादी से संबद्ध चलाये गये आयोजन में प्रस्तुत करने के लिए सोयिंका ने दो नाटकों की रचना की जिनका नाम तो इस प्रकार हैं :- 'द ट्रायल ऑफ़ ब्रेदर ज़ेरों', 'अ डांस ऑफ़ फोरेस्ट्स' नाइजीरिया के मुक्ति संग्राम को प्रेरणा देने लायक नाट्य रचनाएँ भी उन्होंने लिखी हैं जिनमें 'द रोड', 'ज़ीरो प्लेज़', 'लाइन एन्ड ज्वेल' आदि विशेष उल्लेखनीय हैं|

सोयिंका ने अपनी सर्जनात्मक प्रतिभा की शोभा को और भी बढ़ानेवाला एक कार्य भी किया है वह है 'द 1960 मास्क' की स्थापना| सोयिंका ने सन् 1960 में इस कंपनी की स्थापना की| मास्क कंपनी ने 'द न्यू रिपब्लिकन', बिफोर द ब्लाक औट' आदि कथाचित्रों के प्रदर्शन के ज़रिए समसामयिक राजनीति पर कठोर प्रहार किया|

सत्ता के नशे में पड़कर स्वार्थ पूर्ति के लिए दौड़नेवाले राजनीतिज्ञों के खोखलेपन का चित्रण उन्होंने अपने नाटकों में किया है| इस कोटि में आनेवाला उनका एक नाटक है 'कोंगीस हार्वेस्ट' जो सत्ता के दुरुपयोग को विषय बनाकर लिखा गया था|

वोले सोयिंका से प्रेरणा पाकर अपने वर्ग की मुक्ति के लिए प्रेरणा स्रोत बनानेवाली रचनाओं के सृजन की दिशा में कई अन्य नाटककारों ने भी अपनी लेखनी चलायी| इनके नाटक भी राष्ट्रीयता और मुक्ति संघर्ष को अभिव्यक्ति देनेवाले हैं| इस कोटि में आनेवाले अश्वेत नाटककारों में गुगी व थाङ्ग और मिन्सेरे का नाम उल्लेखनीय है, जिनका नाटक 'द ड्राइल ऑफ़ डेडेन किमेथी' मुक्ति संघर्ष को आवाज़ देता है|

जापान

साम्राज्यवादी शक्तियों के खिलाफ लड़ने के लिए जापानी जनता को शक्तिशाली बनाना जापानी लेखकों का उद्देश्य था| इस उद्देश की पूर्ति के लिए उन्होंने अपनी रचनाओं को माध्यम बनाया जिनमें नुक्कड़ नाटक को

अधिक स्थान मिला| इसका कारण यह था कि इस प्रकार के नाटकों के मंचन के लिए किसी विशेष प्रकार की योजनाओं की आवश्यकता नहीं है|

युद्ध के पूर्वकाल में जापानी थियेटर में मुख्य अधिकार षिङ्केकी (shingeki) के तीन प्रकार के मंचो पर था| इन तीन प्रकार के मंचो के नाम तो इस प्रकार हैं – मिगीई (Mingei) एक्टर्स थियेटर (Actors Theatre), लिटेररी थियेटर (Literary Theatre)

मिगीई थियेटर को जन-कला मंच (The People art theatre) भी कहा जाता था| इस थियेटर जनता के अधिक निकट आनेवाला था| यह तो वामपंथ पर विश्वास रखनेवाले नाटककारों के ज़रिए चलाया गया थियेटर था| हाईयीज़ा (Haiyiza) नाम से भी जानेवाले एक्टर्स थियेटर का नेतृत्व सेन्टा कोरिया द्वारा हो रहा था| लिटेररी थियेटर के ज़रिए साहित्यिक कार्यों पर नाटक चल रहे थे|

युद्ध की समाप्ति पर इन तीनों थियेटरों पर आघात-सा पड़ा| जापान रंगमंच इस समय बहुत बुरी हालत पर पड़कर तड़प रहा था| अधिकांश रंगमंचो का नाश हुआ| लेकिन षिड्गकी ने 1960 तक आते-आते किसी न किसी प्रकार विजय हासिल करके अपने अस्तित्व को बनाया रखा|

यह षिड्गकी आन्दोलन तो बहुत ही संकुचित दायरे में खड़ा हुआ था| जापान के युवालोगों को जाते-जाते इस संकुचित आन्दोलन से नीरस आने

लगे| अपनी समस्याओं की प्रस्तुति के लिए इस मंच को नामुमकिन जानकर युवा वर्ग एक नवीन नाट्य आन्दोलन की ओर अग्रसर हुए|

युवा वर्ग पर एक नयी प्रकार की चेतना आयी और वे नुक्कड़ नाटकों की दिशा में अग्रसर हुए| षिड्गकी आन्दोलन के बाद जापान में आयी नयी नाट्य आन्दोलन को अंकुरा(Angura) नाम दिया गया| अंकुरा नाट्यमंच का निर्माण सन् 1959 नवंबर में जनकलामंच के युवा-सदस्यों ने किया| समसामयिक नाटककारों को नाटक लिखने और करने के लिए अंकुर नाट्यमंच ने मौका दिया| जापान के नाट्य-लेखक फूंकूड़ा, कारा जोरो, बेटसुयुका मिनोरू आदि इस नाट्यमंच से जुड़े हुए थे|

युवजनता को पहले षिड्गकी थियेटर से जो नीरस था तथा एक नए नाट्यमंच के निर्माण की आशा थी इन सभी विषयों को आधार बनाकर सन् 1965 में अंकुरा थियेटर ने बेटसुयुका के 'द इलिफन्ट' नाटक का पुनर्मंचन किया| सन् 1964 में फुकूड़ के 'फाइन्ट हकामाडार्क' (Find Hakamadresic) का मंचन भी किया|

सामाजिक यथार्थ के चित्रण करनेवाले जापान नाटकों में 'कजानबाइची' का नाम प्रमुख है जिसका लेखन कुबो सकाई ने किया था| साहित्यिकी रंगमंच का नेता कुनियों किषिदा था| युद्धोपरान्त अनेक नाटकों का मंचन करने में यह नाट्यमंच सफल हुआ|

इस प्रकार देखें तो सन् 1868 तथा सन् 1940-60 के बीच जापानी रंगमंच में बदलाव की परंपरा देख सकते हैं| पहले-पहल देवी-देवताओं को लेकर नाटकों की रचना होती थी| बाद में आकर सामाजिक राजनीतिक समस्याओं तथा साम्राज्यवादी शक्तियों के हमला को विषय बनाकर नाटक होने लगे| राष्ट्र में होनेवाली घटनाओं तथा लोगों की समस्याओं को नुक्कड़ नाटकों के माध्यम से आम जनता के सामने प्रस्तुत करने लगे| इस प्रकार नुक्कड़ नाटक को एक सशक्त हथियार के रूप में स्वीकारा गया|

आफ्रिका

आफ्रिका बहुत ही शोषित-अशिक्षित और गरीब जनता का देश है| वहाँ की अशिक्षित जनता की उन्नति के लिए अनेक नेताओं और साहित्यकारों ने अधिक कोशिश की हैं| साहित्यकारों का योगदान इस दिशा में अधिक है| अशिक्षित जनता की बहुतायत होने के कारण वहाँ अन्य साहित्यिक विधाओं की तुलना में नाटकों का प्रचार अधिक था|

नुक्कड़ नाटक का मूल रूप जातीय पर्वों-त्योहारों में आफ्रिका में द्रष्टव्य है| अग्नि के घेरे में लोककथाओं को प्रस्तुत करने की रीति प्राचीन काल से वहाँ प्रचलित है| इस प्रकार की प्रस्तुतियों को देखने के लिए लोग इकट्ठे होते हैं| विशेष मंच पर न होनेवाली इन प्रस्तुतियों में नुक्कड़ नाटकों की झलक हम देख सकते हैं|

आगे चलकर सन् 1920-30 के आसपास आफ्रिका में नाटक ने अपना ज़ोर पकड़ा| निम्न वर्ग के लोगों की जीवन-रीति और रिवाजों को विषय बनाकर लिखा गया नाटक है 'लक्की स्टार्स'| सन् 1932 में आफ्रिका में बांटू ड्रामाटिक सोसाइटी की स्थापना हुई जिसने आफ्रिका की नाट्य-विधा को प्रोत्साहित किया| सन् 1930-1940 के बीच आफ्रिका के प्रसिद्ध नाटककार हेरवेर्ट द्लोमो का आविर्भाव हुआ जिन्होंने उपनिवेशवादी शक्तियों के खिलाफ अपने नाटकों के ज़रिए आक्रमण किया| उनका प्रसिद्ध नाटक है 'द गर्ल हु किल्ड टू सेव'|

सन् 1970 में श्रमिक तथा ट्रेड यूनियन और विद्यार्थियों ने मिलकर क्रांति की जिसके फलस्वरूप 1994 में वहाँ जनतंत्र का आरंभ हुआ| इस क्रांति के तहत गलियों और नुक्कड़ों पर अनेक प्रस्तुतीकरण हुए जिसमें क्रांति की आवश्यकता पर बल देते हुए क्रांति करने के लिए जनता को आह्वान दिया गया| जनता में नयी चेतना जगाने के उद्देश से सन् 1972 में संगीत नाटक कला और साहित्य संस्था' (The Music Drama Arts and Literature Institute) की स्थापना की गयी| सन् 1970 में स्थापित 'नॉन-रेष्यल जंक्शन अवन्यु थियेटर' (Non-racial Junction Avenue Theatre) ने अनेक प्रस्तुतियाँ की जिसमें 'द फंटास्टिकल हिस्ट्री ऑफ़ ए युस्लस मान' और 'रान्टलोर्डस और रोटगट' उल्लेखनीय हैं|

आफ्रिका में बार्नी सिमोन और मानि मानिम ने मिलकर मार्केट थियेटर (The Market Theatre) की स्थापना की| सन् 1974 के आसपास इसका

निर्माण हुआ| इस संस्था ने वहाँ-वहाँ नाटक किये जहाँ-जहाँ लोग इकट्ठे होते थे| इनके नाटकों में दर्शक भी अभिनेता होते थे| इस संस्था के नाटकों में 'ए लेसन फ्रम अलोस', 'द राड टू मका', माई चिल्ड्रन- माई आफ्रिका और प्लेलांड' आदि प्रसिद्ध है|

जैसाकि नाम से ही स्पष्ट होता है इस थियेटर की अधिकांश प्रस्तुतियाँ मार्केट, गली, चौराहा जैसे खुले स्थानों में होती थी| इस संस्था ने आफ्रिका के प्रमुख नाटककारों के नाटकों को प्रस्तुत किया जिनमें वेल्कम सोमि (Welcome Msomi), पीटर डिर्क यूस (Peter Dirk Uys) गिब्सन कन्टे (Gibson Kente), अदम स्माल (Adam small), रेज़ा द वेट (Reza de wet) आदि के नाम प्रमुख हैं| सन् 1977 में बाक्स्टर थियेटर सेन्टर की स्थापना हुई जिसने मार्केट थियेटर को ऊर्जा दी|

सन् 1970 के बाद आफ्रिका के नाट्य-क्षेत्र में व्यापक आन्दोलन सा हुआ| सन् 1978 में पीपल्स स्पेस में तथा बाद में मार्केट थियेटर में 'इंफुण्डिसो' को प्रस्तुत किया गया जिसका निर्माण क्रोसरोड़ की नारियों ने किया था| सन् 1970-80 के बीच हुए अधिकांश नाटकों का विषय कारागृह था| इस कोटि के नाटकों में 'कनि', 'द ऐलन्ट' आदि के नाम प्रमुख हैं|

इस दृष्टि से देखे तो आफ्रिका की अशिक्षित जनता में चेतना जगानेवाले अनेक नाटकों की रचना हुई है| अशिक्षित जनता में लहर पैदा करने के लिए

सबसे उपयोगी माध्यम महसूस करने के कारण नाटककारों ने नुक्कड़ नाटकों को अपनाया|

श्रीलंका

श्रीलंका में अन्य स्थानों से प्रेरणा पाकर साम्राज्यवादी शक्तियों के खिलाफ लड़ने के हथियार के रूप में नुक्कड़ नाटक को अपनाया गया| सन् 1970 तक आते-आते वहाँ की राजनीतिक- परिस्थिति ने अनेक नुक्कड़ नाट्य-संस्थाओं को जन्म दिया| सामान्य दर्शकों की आवश्यकताओं को समझकर श्रीलंका की युवा-पीढ़ी अपने नुक्कड़ नाटकों को लेकर सड़क पर आयी|

तत्कालीन सामाजिक परिस्थितियों का पर्दाफाश करनेवाले नाटकों का मंचन करनेवाले नुक्कड़ नाट्यकारों में गमिनि हटेटूवेगमा (Gamini Hattetuwegema) पराक्रमा निरिल्ली (Parakrama Nirielle), एच.ए.परेरा (H.A. Parera) आदि के नाम उल्लेखनीय हैं|

गमिनी हटेटूवेगमा ने अपनी नुक्कड़ नाट्य संस्था 'मोर्डन स्ट्रीट ड्रामा' के ज़रिए 1970 की शुरुआत में श्रीलंका में हुई आज़ादी आन्दोलन को प्रेरणा दी| गमिनी ने एक कार्यरत थियेटर को जन्म दिया जो जन आन्दोलन को शक्तिशाली बनाकर उसके साथ-साथ चला| गमिनी के द्वारा आयोजित इस नये प्रकार की नाट्य शैली से प्रभावित होकर पराक्रमा तथा परेरा ने भी इस नुक्कड़ नाट्य को अपनाया| सन्1980 तक आते-आते श्रीलंका में नुक्कड़ नाटक अपना ज़ोर पकड़ा|

सन् 1956 में श्रीलंका में सिन्हला थियेटर नामक एक नाट्य संस्था कार्यरत थी| सन् 1984 में इस संस्था के समान प्रमुख तमिल नाट्य दुनिया को भी यश मिलने लगा जिसका मुख्य कारण शिवतंपी है, जो इस संस्था का एक मुख्य उन्नायक था| इसी साल में जाफना विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों ने राजनैतिक संदेश देनेवाले नुक्कड़ नाटक करने लगे| इस प्रकार के नुक्कड़ नाटकों के ज़रिए युवावर्ग ने समसामयिक राजनैतिक-सामाजिक-समस्याओं को जनता के सामने प्रस्तुत किया| इन विद्यार्थियों का नेतृत्व करनेवालों में षन्मुखलिंगम, मौनागुरु आदि के नाम उल्लेखनीय हैं|

पराक्रमा तथा परेरा ने मिलकर एक मोबाइल थियेटर को जन्म दिया जिसका नाम है जन-करलिया| इसका मुख्य उद्देश्य जनता को भी भागीदार बनाकर नाटक करना तथा इन नाटकों के ज़रिए अपनी सामाजिक स्थितियों से जनता को अवगत कराना था| जहाँ-कहीं जनता इकट्ठा होती है वहाँ उन्होंने नाटक खेला|

श्रीलंका में शांति तथा एकता को प्रेरणा देने के उद्देश्य से स्थापित मंच है 'ट्रिकोन इ आर्ट्स सेन्टर' जिसका उन्नायक था धर्मासिरी बंडारनायके| इस थियेटर ग्रुप ने सिंहला तथा तमिल लोककलाओं को प्रमुखता देकर श्रीलंका की संस्कृति का यशोगान किया| युद्ध की विभीषिका को चित्रित करके शांति स्थापित करने की आवश्यकता पर बल दिया| इस संस्था के नाटकों में 'कलाकीर्ति', 'ट्रोजन कन्ताओं' आदि प्रमुख हैं|

गामिनी. के. हटेटूवेगमा ने सन् 1974 में 'द वे सैड थियेटर ट्रूप' की स्थापना की| समाज की अनीतियों को प्रस्तुत करते हुए गामिनी तथा उसके सहयोगियों ने मिलकर अनेक नाटक किए| श्रीलंका की जनता की आज़ादी आन्दोलन को ज़ोर देना इन नाटकों का मुख्य उद्देश्य था| सन्1975 में कोलंबों में आयोजित एक अंतर्राष्ट्रीय अधिवेशन में इस संस्था ने अपना एक नाटक खेला जिसका नाम था 'लोक-आहरा-सम्मेलन'| इस नाटक के ज़रिए इन्होंने यह दिखाने की कोशिश की कि तीसरी दुनिया में प्रथम दुनिया की भोजन-नीति अपनाने से कोई फायदा नहीं है| इस नाट्य-मंच ने अंतर्राष्ट्रीय वनिता दिन, श्रमिक दिन आदि में अनेक नाटक खेले|

प्रसन्नाजित अबेयसूर्या ने सन् 1997 में कोलंबों में 'द पहूरा' नामक नुक्कड़ नाट्य-संस्था की स्थापना की| सन् 1995 में श्रीलंका में स्थापित एक अन्य नाट्य-संस्था है 'द बट्टरफ्लै पीस गार्डन'| इन सभी नुक्कड़ नाट्य-संस्थाओं ने श्रीलंका के जन-आन्दोलन को सशक्त बनाया| श्रीलंका में जन-चेतना जगाने के सशक्त हथियार के रूप में नुक्कड़ नाटक को स्वीकृति मिली|

लाटिन अमरीका

लाटिन अमरीका में युद्धोंपरांत हिस्पानिक समुदाय में थियेटर के क्षेत्र में एक विशेष प्रकार की चेतना उभरकर आयी| सन् 1950 से लाटिन अमरीका में अनेक नाटकों के प्रस्तुतीकरण होने लगे| युद्ध के समय और युद्धोपरांत

कार्यरत एक रंगशाला है 'ईल टीट्रो इंटिमो' (El Teatro Intimo) जिसका मुख्य रंगकर्मी राफेल ट्रुजील्लो-हेरेरा था|

सन् 1965 में लूईस वाल्डेज़ के निर्देशन में एक श्रमिक रंगशाला का प्रस्फुटन हुआ जो अपना अधिकांश नाटक खेतिहानों में करता था| इस रंग-आन्दोलन से काफी लोग प्रभावित हुए और अनेक विद्यार्थी तथा श्रमिक इससे जुड़े होकर सामाजिक तथा राजनीतिक समस्याओं पर नाटक करने लगे| सन् 1970 तक आते-आते ईल टीट्रो कंपनी ने 'टीट्रो चिकानों' नाम से एक अलग शैली की रंगशाला आयोजित की जिसका वास्तविक संबंध नुक्कड़ नाट्यशैली से था|

नुक्कड़ नाट्यशैली से प्रभावित होकर हर कहीं नुक्कड़ नाटकों की प्रस्तुतियाँ होने लगीं| गली,पार्क, गिरिजाघर, स्कूल सभी स्थानों पर श्रमिकों-किसानों की समस्याओं, वियतनाम युद्ध, मद्य-मदिरा-नशा की भीषणता, आदि विषयों पर नुक्कड़ नाट्य प्रस्तुतियाँ होने लगीं|

ईल टीट्रो कंपनी का देश पर्यटन, कृषक आन्दोलन को दिया गया प्रोत्साहन, अक्टोस का प्रकाशन आदि के फलस्वरूप एक देशीय टीट्रो आन्दोल- सा हुआ| सन् 1976 में यह आन्दोलन अपनी ऊचाई पर पहुँचा जिसके फलस्वरूप उस साल आग्लो-समारोह से संबद्ध होकर पाँच टीट्रो-त्योहार मनाये गए| इस नाट्य-मंच ने ब्रेख्त के नाटक की शैली को अपने नाटकों में अपनाया जिसका उदाहरण है 'गुडालुपे आन्ट ला विक्टिम' (The Victim)|

लाटिन अमरीका के नाटककारों में लुयीस वाल्डेज़ तथा ईल टीट्रो के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं| उन्होंने एक सार्थक ग्रास रूट्स थियेटर आन्दोलन को जन्म दिया| मोक्सिको के लोकमानस को आवाज़ देनेवाले नाटकों को इस थियेटर ने प्रस्तुत किया| मोक्सिको की जातीय-जनता जिसका समुदाय 'राजा' नाम से जाना जाता है उससे संबद्ध होकर लोक-चेतना जगाने वाली प्रस्तुतियाँ करने में यह थियेटर सफल हुआ| राजा वर्ग की आत्मा, इतिहास, लोकसाहित्य, अर्थ, तथा संगीत आदि को एकसूत्र में बाँधकर प्रस्तुत किया गया नाटक है 'ला ग्रान कारपा दे ला फमिलिया रस्कूयाची (La Gran Carpa La Familia Rascurchi)| वाल्डेज़ का नाटक "ज़ूटस्यूट' (Zoot Suit) एक सशक्त नाटक था जिसने अमरीका की जनता को उद्वेलित किया|

सन् 1980 के मध्य तक आकर हिस्पानिक थियेटर को ऊर्जा देने के लिए एक संगठन की स्थापना की गयी जिसका नाम था 'द फोर्ड फाउंडेशन"| इस समय उद्भूत अन्य दो नाट्य संस्थाएँ है - 'सौत कोस्ट रेपेर्टरी थियेटर' और 'सान डिगो रेपेर्टरी थियेटर'|

लाटिन अमरीका के नुक्कड़ नाटककारों से प्रेरणा पाकर न्युयोर्क में भी अनेक नुक्कड़ नाट्य संस्थाएँ तथा नुक्कड़ नाटककार उद्भूत हुए| इस कोटि की नाट्य संस्थाओं में 'ईल न्यूवो टीट्रो पोब्र दे लास अमरीकास' (The New Poor People's Theatre of Americas), टीट्रो ओरिल्ला, टीट्रो गुजाबारा,

टीट्रो जुरुटूगो आदि प्रसिद्ध हैं| न्युयोर्क के सबसे प्रमुख नुक्कड़ मंच के रूप में 'द प्रिट' (The Pritt) का नाम लिया जाता है जो सन् 1967 में मिरियम कोलोन के द्वारा स्थापित हुआ| इस मंच ने गलियों में अपनी प्रस्तुतियाँ की|

लाटिन अमरीका के समान अन्य कई राष्ट्रों तथा राज्यों में नुक्कड़ नाटक की लहर अपना ज़ोर पकड़ रहा था| नुक्कड़ नाटक की क्रन्तिकारी शक्ति की लहर भारत में भी आयी जिसके फलस्वरूप भारतीय भाषाओं में नुक्कड़ नाटक लिखे जाने लगे|

विभिन्न भारतीय भाषाओं में नुक्कड़ नाटक : एक परिचय

रूस क्रांति के कुछ वर्ष बाद जन्म लिए नुक्कड़ नाटक ने भारत में भी अहं भूमिका अदा की है| भारत जैसा तो विकासोन्मुख राष्ट्र है ताकि यहाँ कीअधिकांश जनता निम्न वर्ग की है जो अशिक्षित है| अपने समाज में होनेवाली समस्याओं के प्रति इन लोगों को अवगत कराना आवश्यक है जो नुक्कड़ नाटक के ज़रिए संभव है| इसलिए नुक्कड़ नाट्य विधा को अपनाने के लिए अनेक भारतीय नाट्यकर्मी तैयार हुए|

भारत की लगभग सभी भाषाओं में नुक्कड़ नाटक लिखे गए| प्रत्येक राज्य की जनता को समझने लायक नुक्कड़ नाटक उनकी ही भाषा में उनके सामने खेले गए| इन नाटकों के पात्रों में जनता ने स्वयं अपने को देखा, उन्हें लगा कि इन नाटकों के पात्रों की समस्याएँ तो स्वयं उनकी ही है|

नुक्कड़ नाटक के लिए किसी विशिष्ट रंगशाला की जरूरत नहीं होती है| जहाँ कहीं लोग इकट्ठे होते हैं यानी मार्केट सड़क के कोने, चौराहे-वहाँ आम आदमी के बीच ये नाटक खेले जाते हैं| इसी विशेषता के कारण नाटककार ने इस नाट्यविधा को अपनाया|

नुक्कड़ नाटक तो एक ऐसा सशक्त जन नाट्य आन्दोलन है जो सामाजिक अनीतियों के खिलाफ लड़ने के लिए मानव को सशक्त करता है| भारत में इस विधा का मूलभूत रूप लोक नाट्यों में पाया जाता है| इस विधा का प्रारंभ कब हुआ इसकी कोई प्रामाणिक रेखाएँ तो मिलती नहीं है फिर भी भारतीय भाषाओं में लिखित सबसे प्रथम नुक्कड़ नाटक के रूप में 'चार्ज शीट' को माना जाता है| सन् 1951 में कलकत्ता के हर्ज़ा पार्क में हजारों कर्मचारियों के आगे यह नाटक खेला गया| कम्युनिस्ट नेताओं की गिरफ्तारी के विरुद्ध आवाज़ उठानेवाला इस नुक्कड़ नाटक ने जनता पर अपना खूब प्रभाव छोड़ा|

इस नुक्कड़ नाटक की तत्कालीनता और राजनीतिक तीखापन ने बंगला नाटककार उत्पल दत्त को प्रभावित किया| इसके फलस्वरूप वे नुक्कड़ नाटक की ओर मुड़े| उन्होंने तब से लेकर अपने अंतिम समय तक चुनाव-मुहिमों के समय नुक्कड़ नाटक करते रहे| लेकिन उस समय का नुक्कड़ नाटक तो प्रोसीनियम थियेटर का ही दूसरा रूप था| दत्तजी की 'दिन बदलते पल' जैसी नाट्य तो बहुत विस्तृत थी, जो नुक्कड़ नाटक कहलाने योग्य नहीं थी इसीलिए भारत की जनता के मन में इन नुक्कड़ नाटकों का पूरा असर नहीं पड़ा|

समकालीन नुक्कड़ नाटकों की रचना तो सन् 1970 के आसपास हुआ| उस समय कलकत्ता के रंगकर्मियों ने नुक्कड़ नाटकों पर ज़ोर देकर अनेक समसामयिक समस्याओं का चित्रण उनके माध्यम से किया| अनेक नाट्य-मंडलियों ने आपात्काल,कम्यूनिस्टों के विरुद्ध होनेवाले अत्याचार, नक्सलवाद आदि को विषय बनाकर नुक्कड़ नाटक किए|

भारतीय जननाट्य संघ को ही नुक्कड़ नाटक की शुरुआत का श्रेय दिया जाता है| सोवियत संघ की नुक्कड़ नाट्य विधा से प्रभावित होकर इप्टा ने नुक्कड़ नाटकों को अपनाया और उसे जनता के सामने प्रस्तुत किया| इप्टा से जुड़े हुए नाटककारों में भीष्म साहनी, एम.एस.सत्यु, कैफ़ी अजमी आदि के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं| इप्टा के समान भारत की लगभग सभी भाषाओं में नुक्कड़ नाट्य-मंडलियाँ और नुक्कड़ नाटक उत्पन्न हुए|

पंजाब में नुक्कड़ नाटक को लिखनेवाले नाटककारों में गुरुशरण सिंह का नाम प्रमुख है| पंजाब के लोकनाट्य को प्रमुखता देकर उन्होंने समसामयिक सामाजिक स्थिति का चित्रण नुक्कड़ नाटकों के माध्यम से किया| वे एक क्रन्तिकारी समाजवादी नेता थे जिन्होंने जनता में चेतना जगाने हेतु अपनी रचनाओं को प्रस्तुत किया|

गुरु शरण सिंह और उनके सहयोगियों ने पंजाब में घूम-घूमकर नाटक किए| पंजाबी नुक्कड़ नाटकों में 'हमक नगरे दी', 'भाई मना सिंह', 'मिट्टी द मूल' आदि नाटक प्रसिद्ध हैं| इन नुक्कड़ नाटकों में पंजाबी जनता की समस्याएँ

तथा उनका विद्रोह प्रतिबिंबित होते हैं| पंजाब के आमजीवन का जीवन्त दस्तावेज़ था ये नुक्कड़ नाटक| सांप्रदायिकता के दौरान पंजाबी में लिखा गया नाटक है 'हिट लिस्ट'|

पंजाबी भाषा में लिखित नुक्कड़ नाटकों ने पंजाबी जनता को आन्दोलित किया| इन नाटकों के माध्यम से वे अपने अधिकारों को समझने लगे और अपने ऊपर होनेवाले अत्याचारों के विरुद्ध क्रांतिकारी होने लगी| आपात्काल की घोषणा होते ही उसकी भीषणता को विषय बनाकर पंजाब में नुक्कड़ नाटक खेले गए|

सन् 1960 तक आते-आते महाराष्ट्र, कर्नाटका, बंगाल तथा केरल में नुक्कड़ नाटक जन-चेतना को उजागर करने का सशक्त माध्यम बन गया| केरल में नुक्कड़ नाटक का आविर्भाव कम्यूनिस्ट पार्टी के तहत संपन्न हुआ| नुक्कड़ नाटक को ऊर्जा देने में शास्त्र-साहित्य परिषद तथा जनकीय संस्कार वेदी ने अहं भूमिका अदा की है|

मलयालम में लिखे गए नुक्कड़ नाटकों में सबसे ख्याति प्राप्त नुक्कड़ नाटक है 'नाट्टूगद्धिका' इस नाटक की अनेक प्रस्तुतियाँ हो चुकी हैं|

कम्यूनिस्ट पार्टी के नेतृत्व में केरल में नुक्कड़ नाटक का आन्दोलन सा चलाया गया| इस आन्दोलन के फलस्वरूप केरल में केरला पीपुल्स आर्डस क्लब की स्थापना की गयी| तोप्पिल भासी, पी.जे.आन्टनी जैसे महान

नाटककारों की रचनाएँ प्रस्तुत होने लगीं| मलबार केन्द्र कला समिति ने भी अनेक नाट्य प्रस्तुतियाँ की| इन दोनों समितियों के नाटकों का मुख्य विषय किसान, श्रमिक, मज़दूर आदि निम्न वर्ग के लोगों की समस्याएँ थी| इन सभी नाटकों में नुक्कड़ नाटक की छाया हम देख सकते हैं| अब मलयालम में नुक्कड़ नाटक क्षेत्र में कार्यरत मुख्य रंगकर्मियों में ग्रामप्रकाश, जय प्रकाश कुल्लुर, रामचंद्र मुखेरी आदि के नाम प्रसिद्ध है|

कोषिक्कोड़ में आयोजित नाट्य-समारोह ने केरल नाट्य विधा को आन्दोलित किया| उस समारोह के बाद अनेक स्थानों पर जनता के सामने नाटक प्रस्तुत होने लगा जिनमें 'जीवितम', 'निराहार समरम', 'जन्मभूमि', 'प्रभातम चुवन्न तेरुविल', 'मण्णुम पेण्णुम' आदि नाटकों के नाम लिए जाते हैं|

कन्नड़ की 'समुदाया' नुक्कड़ नाट्य मण्डली के उन्नेता प्रसन्ना की उपस्थिति में तृश्शूर में आयोजित 'मई दिवस नाटक अकादमी' तथा 'जनकीय सांस्कारिक वेदी' द्वारा आयोजित नुक्कड़ नाट्य कैम्प आदि केरल में नुक्कड़ नाटक के क्षेत्र में की गई मुख्य प्रवृत्तियाँ है|

मलयालम के समान तमिल में भी नुक्कड़ नाटकों की रचना हो चुकी है| तमिलनाडु में नुक्कड़ नाटक को ऊर्जा मिलने के पीछे नुक्कड़ नाट्य-संस्था चेन्नई कलै कुषु तथा उसका संस्थापक प्रलयन का हाथ है| तमिल में रचित नुक्कड़ नाटकों में 'पयनम' का नाम उल्लेखनीय है| 'पयनम' के बारे में प्रलयन जी

कहता है कि यह हमारा सबसे अधिक प्रसिद्ध नुक्कड़ नाटक है| हमने 200 से ज्यादा इसकी प्रस्तुति की है|

तमिलनाडु के लोगों केलिए नुक्कड़ नाटक उनमें चेतना जगानेवाला सशक्त माध्यम था| किसी विशेष रिहर्सल के बिना लोगों के सामने मार्केट पर, स्कूल मैदान में गलियों में नाट्य प्रस्तुतियाँ होने लगी| प्रलयन की राय में शहरों की अपेक्षा गाँवों में नुक्कड़ नाटक का प्रभाव अधिक पड़ता है क्योंकि उनकी संस्कृति से मिली जुली हुई विधा है यह| समुदाया के संस्थापक प्रसन्ना से प्रेरित होकर ही तमिलनाडु में नुक्कड़ नाटकों की शुरुआत हुई|

तमिलनाडु में नुक्कड़ नाटकों की शुरुआत 'कुत्तु-पि-पट्टारा' से ही माना जाता है जिसका संस्थापक था मुतुस्वामी| मुतुस्वामी ने तमिलनाडु की लोक-नुक्कड़ नाट्य 'तेरु-क-कुतु' का अध्ययन आठ वर्षों तक किया और उसके बाद अपनी नुक्कड़ नाट्य संस्था की स्थापना की|

तमिलनाडु प्रगतिशील लेखक संघ के चेन्नई यूनिट के द्वारा सन् 1984 में निर्मित चेनई कलै कुलु ने स्ट्रीट थियेटर के रूप में राजनैतिक थियेटर के आगमन को उद्घोषित किया| सामाजिक और राजनीतिक समस्याओं को प्रभावात्मक ढंग से अपने नुक्कड़ नाटकों के माध्यम से जनता तक पहुँचानेवाली यह संस्था अब अपने 25 वीं वर्ष में है|

सुधानवा देशपांडे का नाटक 'जार्ज बुश इन न्यू डल्ही' से प्रेरित होकर तमिल में रचा गया नुक्कड़ नाटक है 'बुश वन्तार'| यह नुक्कड़ नाटक तो तमिल

का एक प्रभावात्मक राजनीतिक नाटक है| इराख युद्ध के विरुद्ध आयोजित एक राली के भाग के रूप में इस नाटक की प्रस्तुति चेन्नई के मरीना बीच में हुई| सन् 1968 में तंजावुर में 44 दलित कृषकों की मृत्यु के लिए कारण हेतु घटित घटना को आधार बनाकर चेन्नई कलै कुलु एक नाटक आयोजित कर रहा है जिसका नाम है 'मारुतम'|नुक्कड़ नाटक के ज़रिए जनता की समस्याओं को प्रस्तुत करने का प्रयास तमिलनाडु में अब भी ज़ारी है| इसका प्रभाव जनता पर पड़ रहा है|

नुक्कड़ नाटक का प्रभाव कन्नड़ भाषा पर भी पड़ा था| कन्नड़ भाषा में नुक्कड़ नाटक की शुरुआत का श्रेय 'समुदाया' नामक संस्था को जाता है| समुदाया की स्थापना सन् 1975 में हुई थी| इसका नाटककार था आर.पी.प्रसन्ना| कन्नडा का प्रसिद्ध नुक्कड़ नाटक है 'बेलची' जो बिहार की दलित जाति की दयनीय स्थिति का यथार्थ चित्रण करता है| इंदिरागाँधी के शासन काल में राष्ट्र में व्याप्त अनीतियों के खिलाफ जनता को उजागर करने हेतु कन्नड़ में नुक्कड़ नाटकों की रचना हुई| इंदिराजी की चुनाव-नीतियों को चुनौती देने के लिए समुदाया थियेटर कंपनी ने युवजनों को इकट्ठा करके नाटक किए|राजनीतिक गीतों से युक्त नुक्कड़ प्रस्तुतियों के ज़रिए आपात्काल की भीषणता चित्रित की|

आजकल भी कन्नड़ में नुक्कड़ नाटकों का प्रचार हो रहा है| हर साल समुदाया के ज़रिए वार्षिक सांस्कृतिक समारोह चल रहा है| पिछले साल के

समारोहों में समुदाया थियेटर यूनिटों ने पाँच नाटक प्रस्तुत किए| पिछले साल के समारोह में सुधानवा देशपांडे तथा प्रलयन समाहित थे|'बुद्ध-प्रबुद्धा', ट्रेन टू पाकिस्थान', 'कुलम', 'जलगरा', 'पिनाकिनी तीरदली' आदि नाटकों के साथ बंगलूर यूनिट का नुक्कड़ नाटक 'द्न्वन्तरिया चिकित्से' भी प्रस्तुत किया गया|

भारत की अन्य भाषाओं के समान बंगाली में भी नुक्कड़ नाटकों की रचना हुई है| बंगाली नुक्कड़ नाटककारों में बादल सरकार का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है|

भारत में नुक्कड़ नाटकों की शुरुआत का श्रेय जानेवाली नाट्य संस्था इप्टा की स्थापना बंगाल में हुई थी| कोलकत्ता इप्टा का एक मुख्य केन्द्र थ| भारतीय जनता में कार्षिक जागरण लाना इस संस्था का प्रमुख उद्देश था|

बंगाल की किसान जिन्दगी से मिली जुली हुई रीति-रिवाज़ों में 'नबन्ना' लोक-किसान-सांस्कृतिक पर्व प्रमुख है| इप्टा के प्रमुख नाटकों में एक है 'नबन्ना' नामक नाटक| यह एक बंगाली नाटक है जिसकी रचना विजोंन भट्टाचार्या द्वारा की गयी|

इप्टा का प्रचार प्रसार कुछ समय के बाद समाप्त हुआ था, लेकिन इसका एक यूनिट अब भी पश्चिम बंगाल में कार्यरत है जो अब भी समसामयिक विषयों पर नाटक कर रहा हैं|

बादल सरकार ने बंगाल में नुक्कड़ नाटकों के प्रचार में योगदान दिया है| उनके नाटक अपने पात्र और दर्शक के बीच एक विशेष प्रकार का तादात्म्य रखनेवाले हैं| उन्होंने रंगमंच का एक ऐसा रूप दर्शकों के सामने लाने की कोशिश की जो सरल होते हुए भी गौरवपूर्ण संदेशों का वाहक था| उन्होंने अपने नाटकों की प्रस्तुति खुले मंच पर यानि पार्क, उद्यान, गली आदि स्थानों पर की|

बंगाली में रचित उनके नाटकों में एवं इन्द्रजीत प्रमुख है| उनके अन्य नाटकों में बासी खबर, होट्टोमलार ओपेरा, बाकी इतिहास, मिछिल आदि विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं| उन्होंने दर्शकों और पात्रों के बीच की दूरी हटाकर जनता के ऐन सामने उनमें ही एक होकर अपने नाटकों को प्रस्तुत किया|

निष्कर्ष

विदेशी भाषाओं की तरह विभिन्न भारतीय भाषाओं में नुक्कड़ नाटक रचे और खेले गए| आम आदमी की आवाज़ को बुलन्द करनेवाली विधा होने के कारण जनता ने नुक्कड़ नाट्यविधा को स्वीकारा| अपनी परिस्थिति से होने वाली समस्याओं के खिलाफ लड़ाई करके अपनी जीवन स्थिति बेहतर करने का उपदेश देनेवाले हैं ये नुक्कड़ नाटक|

नुक्कड़ नाटकों की प्रभावात्मक शक्ति से प्रभावित होकर हिन्दी साहित्यकार भी इस विधा की ओर आकृष्ट हुए| हिन्दी साहित्य की एक सशक्त

विधा के रूप में नुक्कड़ नाटक पनपने लगी| हिन्दी में नुक्कड़ नाटकों का उदभव विकास उसके लिए प्रेरक परिस्थितियाँ आदि की चर्चा दूसरे अध्याय में कर रही है|

दूसरा अध्याय

हिन्दी में नुक्कड़ नाटक :- उद्भव और विकास

नुक्कड़ नाटक : – स्वरूप की अहमियत

भारत को जब आज़ादी मिली तब स्वाभाविक रूप से देशवासियों के मन में नई आशाओं का संचार हुआ| भारतीयों ने एक खुशहाल देश का सपना देखा| लेकिन दिन बीतने के साथ-साथ ये सारे सपने ख़ाक में मिलने लगे| देश में भ्रष्टाचार, महंगाई, काला-बाज़ारी, बेरोजगारी जैसी अनेक विसंगतियाँ फैलने लगी| इन विसंगतियों के जाल में फँसकर आम जनता त्रस्त हो गयी| जब विश्वास के सभी तार टूटने लगी तो पिछली सदी के आठवीं दशक में गुजरात और बिहार के कुछ एस.एफ.ऐ. छात्र आन्दोलित हुए जो बाद में जन-आन्दोलन में परिणत होकर सारे देश में फैल गए|

जनवादी आन्दोलन के ज़ोर पकड़ते ही देश-भर में एक क्रांतिकारी चेतना फैलने लगी| इसी आन्दोलन का स्वरूप लेकर नुक्कड़ नाटकों का आविर्भाव हुआ था| इस जनवादी आन्दोलन के दौरान जन-नाट्य की प्रगतिशील परंपरा को पुनर्जीवित करते हुए नाटक एक नयी पहचान के साथ सामने आया| इस पहचान का नया आयाम नुक्कड़ नाटक के रूप में जब सामने आया तब राष्ट्रीय फलक पर विकल्प की राजनीति में सहायक सांस्कृतिक आन्दोलन का महत्वपूर्ण हिस्सा बन गया|

हमारे देश के लिए इस प्रकार का नाटक कोई नई चीज़ नहीं थी| सदियों से देश के प्रत्येक अंचल में नाटकों का प्रदर्शन मुक्ताकाश तले मैदानों या चौपालों में होता रहा| गाँव-गाँव में खेले जानेवाले ये नाटक न केवल

सामान्य जन के क्रियाकलाप दर्शाते हैं, बल्कि इनके माध्यम से अनेक बार लोकोपयोगी संदेश देने या लोगों की समस्याओं को प्रसारित करने का महत्वपूर्ण कार्य भी करते रहे है| ये नाटक पारंपरिक ढंग के नाटक से मंच-सज्जा, रूप-सज्जा, कथ्य और अभिनय की पद्धतियों में भिन्न था|

नुक्कड़ नाटक में देश के राजनीतिक भ्रष्टाचार के प्रति विरोध था और रूढ़ सामाजिक परम्पराओं पर प्रहार था| इन नाटकों ने आम-जनता को उसके अधिकारों के प्रति सचेत करने, शोषण-धर्मी व्यवस्था का विरोध करने और यथास्थिति को बदलने तथा कला को सामाजिक परिवर्तन के महत्तर उद्देश्य से जोड़ने की प्रभावशाली भूमिका निभाई| अस्सी के दशक में पनपे जनाक्रोश को अभिव्यक्त करने हेतु नुक्कड़ नाटक देश भर में खेले जाने लगे|

अस्सी के दशक की राजनैतिक- सामाजिक- हलचलों के दौरान में साहित्य के क्षेत्र में तो कतिपय प्रयासों ने जन-आक्रोश को अभिव्यक्ति दी, किंतु सांस्कृतिक क्षेत्र में शून्यता ही व्याप्त रही| इस शून्यता से उभरने के प्रयास में नाटक प्रेक्षागृहों से निकल सड़क पर आ गया और जन-भावनाओं को अभिव्यक्त करने का उपयुक्त माध्यम बन गया| इसी दशक में जन-आन्दोलन को कुचलने के प्रयास में देश को डेढ़ वर्ष तक आपात्काल का अंधकार झेलना पड़ा| आपात्काल की समाप्ति के बाद से नुक्कड़ नाटक सशक्त विधा के रूप में उभर आया|

नुक्कड़ नाटक सामान्य जनों के लिए किए जाते हैं| नाटक को सामान्य जन से जोड़ने का कार्य नुक्कड़ नाटक अत्यंत सीधे सरल तरीके से करता है|

नुक्कड़ नाटक एक जीवन्त कला है जो निम्न-वर्ग की रक्षा के लिए प्रकट हुई है| नुक्कड़ नाटक जन-साधारण के बीच से निकली हुई जनसाधारण की ही आवाज़ है| मेहनतकशों के अधिकार और प्रतिष्ठा की लड़ाई में यह नाटक शामिल हुआ है| इसका उद्देश्य ही दर्शक को जागृत करना है और बदलाव के लिए संघर्ष करने का आह्वान आम आदमी को देता है|

अशिक्षित जन-समाज में क्रांति-चेतना उत्पन्न करने के लिए नुक्कड़ नाटक के समान एक ऐसी सशक्त विधा नहीं है| नाटक के माध्यम से जन-स्वर को बुलन्द करना, जन-हितों का हनन करनेवाली ताकतों के खिलाफ संघर्ष छोड़ना, उसकी ख़ास विशेषता है| नुक्कड़ नाटक ने जनवादी आन्दोलन के विकास का एक सशक्त माध्यम बनकर भ्रष्ट राजनीति और सत्ता के लिए चुनौती पैदा की है|

नुक्कड़ नाटक एक ऐसी विधा है जो न केवल यथार्थ बोध को विकसित करता है, बल्कि अन्याय के खिलाफ संगठित होने की दिशा में भी प्रेरित करता है| वर्तमान भयावह परिस्थितियों और चरमराते मूल्यों के संकट को उबारने में नुक्कड़ नाटक एक प्रभावी माध्यम है| नुक्कड़ नाटक स्वस्थ समाज और साफ़-सुथरी जन-संस्कृति के निर्माण के लिए प्रतिबद्ध है| इसका कार्यक्षेत्र आम आदमी है|

जनता की भावनाओं को अभिव्यक्ति देनेवाले लोकप्रिय माध्यम के रूप में ही नुक्कड़ नाटकों का जन्म हुआ है| नुक्कड़ नाटक समाज के जागरूक वर्ग

द्वारा ही खेला जाता है| एक व्यवस्थित नाट्यान्दोलन के रूप में उभरा यह नुक्कड़ रंगकर्म अपनी भूमिका में क्रांतिधर्मी है| नुक्कड़ नाटक का मूल स्वर सामाजिक राजनैतिक बदलाव का है|

नुक्कड़ नाटक – परिभाषा

नुक्कड़ नाटक जैसे नए प्रयोग द्वारा नाटक तंग रंगशाला और कृत्रिम रंग-बिरंगे शेडों से मुक्त होकर स्वस्थ और प्रगतिशील मार्ग पर चल निकला है| यह नाटक पारम्परिक ढंग के नाटक से रूपगत दृष्टि से भिन्न था| गली-मोहल्ले, सड़क के किनारे, विद्यालय के प्रांगण से लेकर कारखाने के दरवाज़े तक सभी जगह पर यह नाटक मौजूद था| इन नाटकों में आम आदमी की समस्याओं का चित्रण था, इसलिए यह नाटक वहाँ-वहाँ गया जहाँ-जहाँ नुक्कड़ था|

अंग्रेज़ी शब्द 'स्ट्रीट प्ले' या बर्टोल्ट ब्रेख्त का 'स्ट्रीट कार्नर थियेटर' (street corner theatre) ही चौराहा, सड़क या नुक्कड़ है| नुक्कड़ किसी गली-मोहल्ले या बस्ती के कोने को कह दिया जाता है जहाँ पर आम आदमी, मज़दूर, किसान, दफतर के कर्मचारी, बेरोज़गार और श्रमशील लोग एक दूसरे से मिलते हैं और अपना सुख-दुःख आपस में बाँटते हैं| वास्तव में नुक्कड़ वह जगह है जहाँ देश का वास्तविक जीवन धड़कता है|

"मंचमुक्त सड़क या नुक्कड़ नाटकों की सक्रियता एवं प्रभावशीलता जंगल की आग की तरह फैलती जा रही है| सामाजिक सार्थक और उत्तेजक

कथ्यवाले इन जन-जागरण प्रधान ज़रूरी प्रदर्शनों ने जन-सामान्य में नई हलचल पैदा की है|"[1]

"नई संभावनाओं से गर्भित नुक्कड़ नाटक एक ऐसा प्रयोग है जो सांप्रतिक जन-संघर्ष में आम आदमी की पक्षधरता के साथ केन्द्रीय संवेदना और सोच को जगाता हुआ एक स्वस्थ परंपरा बनाने की सामर्थ्य से समान्वित है|"[2]

नुक्कड़ नाटक जन-संघर्ष में एक सबल हथियार है| जन सामान्य की तकलीफों एवं समस्याओं का जीवन्त प्रस्तुतीकरण, दर्शक-चेतना एवं उनके मन-बदलाव का सशक्त साधन नुक्कड़ नाट्य है| इसका विशिष्ट लचीला फार्म और शिल्प-विधान होता है| इसके चौतरफा संयोजनों और तीव्र गतियों तथा मुद्राओं में स्वच्छन्दता होती है| यह तो आडंबर और तामझाम से एकदम मुक्त विधा है| इसका मुख्य लक्ष्य जनता में जागृति लाना है|

नुक्कड़ नाटक के बारे में जर्मन नाटककार बर्टोल्ट ब्रेख्त ने कहा है कि "नुक्कड़ नाटक बहुत पुरानी विधा है| इसकी उत्पत्ति, इसका लक्ष्य एवं उद्देश्य घरेलू है इसमें कोई शक नहीं कि यह समाज के लिए महत्व की चीज़ है जो उसके सभी तत्वों पर छाया हुआ है|"[3]

---

[1] हिन्दी रंगकर्म दशा और दिशा, जयदेव तनेजा, पृ : 143

[2] पाँचवाँ नुक्कड़ नाटक (संपादक – ब्रजराज किशोर), भूमिका अंश, पृ : 5

[3] हिन्दी नाटक और रंगमंच, ब्रेख्त का प्रभाव, डा.सुरेश वशिष्ट, पृ : 52

यू.के. के रेड लाडर थियेटर कंपनी सन् 1998 में भारत में आए| उन्होंने जननाट्य मंच की सदस्या मलयश्री हाशमी से बातचीत की| इस वार्तालाप के बीच उन्होंने स्ट्रीट थियेटर को इस प्रकार परिभाषित किया :-

"Encapsulated in a public, open situation, a particular aspect of the way the world works that reflects the experience of its audience."[1]

नुक्कड़ नाटक का उदय उस समय हुआ था जब देश का आर्थिक, राजनीतिक और सामाजिक ढंग चरमरा गया था| देश में महंगाई, बेरोज़गारी आसमान छू रही थी और स्थापित राजनीतिक संस्थाएँ जड़ता की शिकार थी| इस हालत में नुक्कड़ नाटक ने राजनीतिक स्वरूप धारण कर विरोध का स्वर बुलन्द किया था| नुक्कड़ नाटक एक ऐसा सचेतन प्रयास का हिस्सा बना था जिसमें बदलाव की चाहत प्रबल थी|

"सत्ताप्रिय किंतु जन-विरोधी ताकतों के घिनौने चेहरों से उनके सिद्धांतवादी खूबसूरत नकाब नोंचकर सच्चाई से हमारा सामना कराने के लिए प्रतिबद्ध यह नाट्य रूप एक ओर व्यवस्था के अभेद दुर्ग को तोड़ने और दूसरी ओर आम-आदमी की मामूली दुनिया में जाने का प्रवेश द्वार होने के कारण नुक्कड़ नाटक ही कहलाने का अधिकारी है|"[2]

---

[1] नुक्कड़ जनम संवाद अक्तूबर 1998 - "where people can come and speak to the people", नोयल ग्रिग

[2] हिन्दी रंगकर्म दशा और दिशा, जयदेव तनेजा, पृ : 142

जन नाट्य मंच दिल्ली के नुक्कड़ रंगकर्मी श्री अरुण शर्मा कहते हैं – "नुक्कड़ नाटक बाकायदा एक विशिष्ट फार्म है जिसमें हमारे शास्त्रीय, पारम्परिक और लोक-रंगमंच की सारी खूबियाँ मौजूद हैं।[1]

आज जिस रूप में हम नुक्कड़ नाटकों को जानते हैं, उनका इतिहास भारत के स्वाधीनता संग्राम के दौरान कौमी तरानों, प्रभात फेरियों और जुलूसों के रूप में देखा जा सकता है। किसी भी गलत व्यवस्था का विरोध और उसके समानांतर एक आदर्श व्यवस्था क्या हो सकती है, यही वह संरचना है जिस पर नुक्कड़ नाटक की धुरी टिकी है। वर्तमान नुक्कड़ नाटक आन्दोलन इप्टा की संघर्षशील यात्रा से स्वतंत्र आठवें दशक की परिस्थितियों की देन है।

आज के नुक्कड़ नाटकों के संबंध में जन नाट्य मंच का कथन है – "नुक्कड़ नाटक आधुनिक शब्द है और सड़कों, मैदानों में खेले जाने वाले वर्तमान के राजनैतिक थियेटर को ही हम नुक्कड़ नाटक कहेंगे।"[2]

नाटक के क्षेत्र-विस्तार और संघर्ष की आवश्यकता को देखते हुए हिन्दी क्षेत्र में सातवें दशक से नुक्कड़ नाटक ने अपना कार्य आरंभ किया और लगातार अपने परिवेश से जुड़ता गया। समाज और काल के प्रति यह नाट्य विधा जागरूक है। नुक्कड़ नाटक दर्शकों की आवश्यकताओं को पहचानते हैं। नुक्कड़ नाटक स्थापित रंगकर्म के सामने एक चुनौती बनकर खड़ा हुआ है।

[1] उत्तर गाथा –अप्रैल-जून-1983, अरुण शर्मा, पृ : 71

[2] चौक-चौक र गली गली में भाग – I, भूमिका से

नुक्कड़ नाटक के बारे में प्रसिद्ध रंगकर्मी सफ़दर हाशमी कहते हैं कि "नुक्कड़ नाटक आधुनिक समाज के अंतर्विरोधों और उनकी मुखालफत का माध्यम है| नुक्कड़ नाटक एक राजनैतिक आवश्यकता के रूप में भले ही एक समय स्वीकार किया गया हो पर अब वह बढ़ते-बढ़ते राजनीतिक,आर्थिक और सामाजिक समस्याओं तक पहुँच गया है|"[1]

नुक्कड़ नाटक :उद्भव : प्रेरक परिस्थितियाँ

जिस समय भारत में राष्ट्रीय स्तर पर स्वाधीनता संग्राम चल रहा था उस समय ब्रिटिश साम्राज्यवाद और अंतर्राष्ट्रीय फासीवाद से लड़ने के लिए जनता को तैयार करने के उद्देश्य से इप्टा की स्थापना हुई, क्योंकि बहुत दिनों से नाट्यकर्मियों की यह कोशिश रही है कि दर्शक और अभिनेता के बीच की विभाजन रेखा को मिटाया जाए, रंगमंच को हटाकर हॉल के फर्श पर नाटक खेले जाने लगे| ये सब नाटक को जनता के निकट ले जाने के, स्वाभाविकता लाने के प्रयोग थे|

इप्टा ने रंगकर्म के माध्यम से जनता में जागृति लाने का प्रयास किया| उसने नाटकों को प्रेक्षागृह तक सीमित नहीं रखा, बल्कि गली-मोहल्लों, सडकों-गाँवों तक पहुँचाया| समकालीन यथार्थ को जनता के सामने प्रस्तुत करने के लिए उसने लोक-नाट्य रूपों का उपयोग किया| इस तरह जन-नाट्य की प्रगतिशील परंपरा को पुनर्जीवित करते हुए नाटक एक नयी पहचान के

[1] सफ़दर हाश्मी, व्यक्तित्व कृतित्व, पृ : 40

साथ सामने आया| इस पहचान का नया आयाम आपात्काल के दौरान नुक्कड़ नाटक के रूप में सामने आया|

वर्तमान समय में अन्य इलक्ट्रोनिक माध्यमों के द्रुत विकास ने नाटकों के प्रति जनाकर्षण को कम कर दिया, तब रंगकर्मियों को अपनी विधा और अपने अस्तित्व को लेकर फिर से सोचना पड़ा| इस सोचने के क्रम में इनका ध्यान हमारे लोक नाटकों की अच्छी खासी परंपरा की ओर गयी| जब इस ओर ध्यान गया तो कई महत्वपूर्ण बातें सामने आती गयी (1) यदि अपने लोक नाट्य रूपों को पुनर्जीवित किया जाय तो आधुनिक नाटक और रंगमंच को एक नया, ताज़ा-आकर्षक आयाम मिलेगा| (2) नाटक पुनः व्यापक जन-मानस के साथ जुड़ सकेगा| (3) नाटक प्रेक्षक गृहों से बाहर आने की एक रोमांचक संभावना से समृद्ध होगा| इस नए चिंतन से लोक नाट्य रूपों और शैलियों की एक नयी रंग-यात्रा शुरू हुई| यह यात्रा आधुनिक भी थी, असरदार भी| यहीं से नुक्कड़-नाटक की वास्तविक यात्रा शुरू होती है|

इसके लिए प्रेरक परिस्थितियाँ निम्न प्रकार की है :-

(1) पाश्चात्य प्रभाव

हिन्दी साहित्य की अन्य आधुनिक विधाओं के समान नुक्कड़ नाटक भी पाश्चात्य प्रभाव से आया हुआ है| नुक्कड़ नाटक के प्रसिद्ध रंगकर्मी सफ़दर हाश्मी के शब्दों में – "जिस रूप में आज हम नुक्कड़ नाटकों को जानते है उसका

सीधा संबंध सन् 1917 की सोवियत क्रांति के तत्काल बाद के वर्षो से ही जुड़ता है| अक्तूबर-क्रांति की पहली जयंती पर व्सेवोलोद मार्यर्होल्द ने टेंट-शो के तत्वों और क्रन्तिकारी कविता को मिलाकर मायकोव्सकी के 'मिस्ट्री बूफे' को नाट्य रूप दिया और उसे कई हज़ार दर्शकों के सामने शहर के बीच में प्रस्तुत किया| यह गलियों, चौराहों, फैक्ट्री गेटों, बाज़ारों जैसे दूसरी जगहों पर खेले जानेवाले नए ढंग के आन्दोलन प्रचारपरक नाटकों का आरंभिक दौर था|"[1]

हमारे यहाँ का नव्यतम नाट्य, नुक्कड़ नाटक शिल्प और कथ्य के स्तर पर कोई आसमान से टपक पड़नेवाली चीज नहीं बल्कि पश्चिम में यथार्थवादी चेतना के साथ ही उसका बीजारोपण हो जाता है| नाटक और रंगमंच के क्षेत्र में इस नवोदित धारा ने नए प्रयोगों और वैज्ञानिक दृष्टिकोण के कारण एक नवीन दृष्टिकोण को विस्थापित कर दिया| जिस प्रकार यथार्थवाद की सीधी टक्कर सामाजिक, आर्थिक और नैतिक रुढियों से रहीं, ठीक उसी प्रकार इब्सन, शा और गाल्सवर्दी जैसे नाटककारों ने न केवल नाटक के प्राचीन मानदंडों को नकारा बल्कि नई मान्यताओं को भी प्रश्रय दिया| यहीं से पाश्चात्य साहित्य विधा 'स्ट्रीट प्ले' की शुरुआत होती है|

उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध और बीसवीं शताब्दी का पूर्वार्द्ध तो एक ऐसा समय है जब रूस, ब्रिटेन और जर्मनी में 'वर्केर्त्स थियेटर मूवमेंट' की शुरुआत हुई| श्रमिक वर्ग और उसके संगठनों को परिवर्तन के संघर्ष की

[1] सफ़दर हाश्मी, व्यक्तित्व कृतित्व, पृ : 42

ऐतिहासिक शक्ति के रूप में देखा गया और उनकी समस्याओं को नाटकों के माध्यम से उठाया गया| इस प्रक्रिया में इस आन्दोलन ने नए नाट्य रूपों की खोज की जो इन नए विषयों को नए प्रदर्शन स्थलों पर समुचित ढंग से अभिव्यक्त कर सके| चाहे वह रूस का 'ब्लू ब्लाउज़ थियेटर' या जर्मनी का 'प्रोलितारियन थियेटर' सभी ने अपने-अपने समाज में परिवर्तन के संघर्ष में उल्लेखनीय भूमिका निभायी और नुक्कड़ नाटक को स्थापित किया जिसका प्रभाव भारतीय साहित्यकारों पर भी पड़ा|

हिन्दी नुक्कड़ नाटक का आरंभ इन्ही पाश्चात्य प्रभावों से हुआ है| पश्चिम के नुक्कड़ नाटककारों का प्रभाव भारतीय नाटककारों पर पड़ा है विशेष रूप से जर्मन नाटककार बर्टोल्ट ब्रेख्त का| बर्टोल्ट ब्रेख्त का 'स्ट्रीट कार्नर थियेटर' ही 'चौराहा', 'सड़क' या 'नुक्कड़' है|

बर्टोल्ट ब्रेख्त और नुक्कड़ नाटक

विश्वयुद्ध के बाद जर्मनी में एक नवीनतम अभिनय शैली का उपयोग किया गया| उस शैली के लिए 'एपिक' शब्द का प्रयोग किया गया| गलियों, चौराहों पर नाटक को प्रस्तुत कर उसके माध्यम से सरल नाटक-शैली की ओर लौटना एपिक थियेटर का उद्देश्य है| इस थियेटर की परिकल्पना जर्मनी के प्रसिद्ध नाटककार बर्टोल्ट ब्रेख्त ने की थी|

विश्वयुद्ध की विभीषिका को देखकर मार्क्सवादी विचारधारा से प्रभावित ब्रेख्त ने यह निष्कर्ष निकाला कि युद्ध जनता के हित में नहीं,

शासकों के हित में लड़ाया गया है| उन्होंने जनता को युद्ध और फासीवाद के विरुद्ध लड़ाने का प्रयास किया| इसके लिए उन्होंने नाटक को माध्यम बनाया| ब्रेख्त ने पश्चिम को रूपवादी कलात्मक रंगमंच से दूर उसे एक नया स्वरूप दिया|

बर्टोल्ट ब्रेख्त तत्कालीन जर्मन थियेटर को एक नए आलोक में, नई दिशा देने के पक्ष में था| उस समय के बड़े तामझाम से युक्त रंगमंच और उस परंपरा के खिलाफ उसने महाकाव्यात्मक रंगमंच (एपिक थियेटर) की परिकल्पना की| "बर्टोल्ट ब्रेख्त अपनी प्रदर्शन शैली को प्रकृतिवादी न मानकर यथार्थवादी कहते हैं और अपनी कृतियों को एपिक थियेटर की संज्ञा देते हैं|"[1] यह रंगमंच यह दिखाता है कि मनुष्य अपने कर्मों का फल स्वयं भोगेगा किंतु उसके लिए हमें ठीक से उन कर्मों को समझ लेना है|

ब्रेख्त ने नाटक को सामाजिक परिवर्तन का औजार माना है| लेखन द्वारा लड़ाई ज़ारी रखने की बात कहते हैं| वह अपने दर्शक को घटनाओं में डूबने से रोकते हैं और अभिनेता और दर्शक के बीच उपदेशात्मक ढंग अपनाते हैं| मुक्त और चुनौती पूर्ण यथार्थ अपनाने की सलाह देते हैं| उनके अनुसार – "इस मूल्य विहीन जगत में कोई न कोई मूल्य छुपा है उसे ही ढूँढ़ निकालना नाटककार की कलात्मकता का प्रमाण है|"[2] ब्रेख्त का कहना था कि नाटकीय

[1] आज का हिन्दी नाटक प्रगति और प्रभाव, दशरथ ओझा, पृ : 80

[2] खडिया का घेरा, ब्रेख्त, अनुवादक, कमलेश्वर, पृ : 120

थियेटर दर्शक को नाटकीय स्थिति में बंध लेता है, जबकि महाकाव्यात्मक थियेटर दर्शक को पर्यवेक्षक में बदल देता है, उसकी कार्यक्षमता को जगा देता है| ब्रेख्त का महाकाव्यात्मक रंगमंच उच्च रंगमंचीय कलाओं से युक्त और सामाजिक सोद्धेश्यता लिए हुए है|

महाकाव्यात्मक रंगमंच में 'स्ट्रीट सीन' के प्रयोग से ब्रेख्त ने राजनैतिक यथार्थ को दर्शकों के चिंतन का विषय बनाने का प्रयास किया| हिन्दी नुक्कड़ नाटक भी दर्शकों को साज-सज्जा और भावुकता में उलझाने की अपेक्षा व्यापक सामाजिक यथार्थ पर चिंतन करने के लिए विवश करते हैं| वस्तु की दृष्टि से नुक्कड़ नाटक और ब्रेख्त के नाटक दोनों शोषणधर्मी व्यवस्था के छद्म को उद्घाटित करते हैं| अपने लेखन में ब्रेख्त का मूल सरोकार पूँजीवादी व्यवस्था में स्वामी और सेवक के पारस्परिक संबंधो में विभिन्न रूपों और धरातल पर व्याप्त शोषण को अभिव्यक्ति देना रहा है| इसीसे प्रेरणा पाकर हिन्दी नुक्कड़ नाटककारों का मूल स्वर भी शोषित जनता की दयनीय स्थिति का रहा है|

बर्टोल्ट ब्रेख्त के एपिक थियेटर में प्रयुक्त होनेवाले स्ट्रीट सीन या स्ट्रीट कार्नर में सामाजिक सरोकारों से लैस दृश्यों का प्रयोग होता था और कहा गया कि – "एपिक थियेटर उच्च रंगमंचीय कलाओं से युक्त है| इसके पास मिली जुली विषय वस्तु है और सामाजिक उद्देश्यों के साथ बहुत दूर तक जुड़ा है| उसकी दृश्य योजना में नुक्कड़ दृश्य बुनियादी तौर पर एक नमूने के रूप में

होता है जिसके द्वारा हम सामाजिक क्रिया कलापों से गुज़रते हैं|"[1] इस दृष्टि से देखें तो नुक्कड़ नाटक भी दर्शक को भावुकता के आवरण में उलझाने के बजाय उसके भीतर की सच्चाई को प्रस्तुत करता है और प्रेक्षक को उस यथार्थ पर सोच विचार के लिए मौका देता है|

शुरुआती दौर में नुक्कड़ नाटकों के विकास में किसी हद तक पश्चिमी प्रेरणा का हाथ था| ब्रेख्त और पोलण्ड के नाटककार ग्रोटोव्स्की के विचारों ने और पश्चिम के स्ट्रीट थियेटर आन्दोलन ने हमारे यहाँ नुक्कड़ नाटकों के विकास में अपनी भूमिका अदा की है| नुक्कड़ नाटक की अंतर्वस्तु और रूप दोनों में ब्रेख्त का प्रभाव दिखलाई देता है| दोनों ही कला के माध्यम से आन्दोलन, संघर्ष के पक्षधर है|

"ब्रेख्त ने नाटक को हमारे समय के सामाजिक यथार्थ द्वारा प्रस्तुत सर्वाधिक समग्र विश्व-दर्शन के स्तर तक लाने और उस संघर्ष में प्रयोग करने का प्रयास किया|"[2] हिन्दी नुक्कड़ नाटक भी यथार्थ उजागर कर जन संघर्ष को दिशा देते है|

इस दृष्टि से देखे तो नुक्कड़ नाटक पर पश्चिमी नाटककारों का प्रभाव अवश्य पड़ा है फिर भी दोनों की परिवेशगत असमानताओं के कारण इन्हीं नाटकों में भी अन्तर है हमारे यहाँ के नुक्कड़ नाटक पश्चिम से प्रभावित तो

[1] जान विलट, बर्टोल्ट ब्रेख्त आन थियेटर, पृ : 23

[2] ब्रेख्त एज़ दे न्यू हिम, जॉन विलेट (सं), पृ : 116

ज़रूर है, फिर भी उसमें हमारी ही प्राचीन लोक नाट्य परंपरा की झलक अधिक है| हमारे यहाँ नुक्कड़ नाटकों के आगमन का मूल कारण हमारी लोक नाट्य परंपरा से जुड़ा है|

(2) लोक नाट्य परंपरा

जीवन को प्राकृत रूप में अभिव्यंजित करनेवाली नाट्य शैली लोक धर्मी नाट्य कहलाती है| लोक नाट्य परंपरा के मूल उत्स खोजने के संदर्भ में यह कहा जा सकता है कि मानव अस्तित्व व मानव सभ्यता के समान्तर ही लोक धर्मी प्रवृत्ति ने जन्म लिया होगा| लोक धर्मी नाटकों में लोक का शुद्ध और स्वाभाविक अनुकरण होता है|

लोक नाटक की अपनी विशेषता यह है कि वह अपनी प्रवृत्ति हेतु विशिष्ट रंगमंच की अपेक्षा नहीं रखता| "वस्तुतः लोक नाट्य सामान्य जन द्वारा सामान्य जन के लिए अभिनय के माध्यम से प्रस्तुत सामान्य जीवन की सहज स्वाभाविक अनौपचारिक, नृत्य, गीत और संगीतमय जीवन्त एवं लोकरंजक अभिव्यक्ति का नाम है|"[1] वेदकालीन नाटकों से लेकर आज के नाटकों के बीच के अंतराल को पूरा करने में लोक नाट्य ने अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभायी है| नाट्य शास्त्र के प्रणेता भरतमुनि ने भी नाटक की मूल प्रेरणा और कसौटी के रूप में लोक जीवन को स्वीकार करके 'लोक' को महत्वपूर्ण माना है|

[1] हिन्दी रंगकर्म दशा और दिशा, जयदेव तनेजा, पृ : 126

लोक जीवन में अपनी पैठ कायम करनेवाली कलाओं में नाट्य अपना विशिष्ट और स्वतन्त्र स्थान रखता है| संस्कृत नाट्य परंपरा के ह्रासोन्मुख होने के समान्तर ही लोक नाट्य परंपरा जन जीवन में स्थान पायी| वह लोक नाटक सदा ही जन साधारण के जीवन से घुल-मिला रहा, समय के साथ-साथ यह अपना रूप बदलता रहा है|

मुक्ताकाशी मंचन की परंपरा हमारे लोक नाटकों में बहुत पहले से ही अपना स्थान ग्रहण किए हुए है| आदिकाल से ही खुले स्थानों, खेत खलिहानों, घर आँगन तथा चौपालों पर संपन्न होनेवाले लोक नाट्य तथा लोक आयोजनों पर दृष्टिपात करते ही आज के नव्यतम नाट्य रूप नुक्कड़ नाटक के रूप सापेक्ष में साम्य की पुष्टि होती है| भारत में हिंदी और अहिन्दी दोनों ही क्षेत्रों में हमें लोक नाट्य की जीवन्त परंपरा देखने को मिलती है| हिंदी क्षेत्र में नौटंकी, स्वांग, ख्याल, रामलीला आदि तथा अहिन्दी प्रदेशों में जात्रा, यक्षगान, तमाशा जैसे लोक नाट्य रूप प्रचलित है|

नुक्कड़ नाटक में लोक नाट्य के तत्वों से जुड़ाव का एक कारण यह भी है कि नुक्कड़ रंगकर्मियों का मानना है कि जो चीज़े लोक में रची-बसी है, जब उन चीज़ों से संबंध जोड़कर आप जनता के सामने बात रखते हैं तो वह तेज़ी से संप्रेषित होती है|

'नुक्कड़ नाटक : परंपरा और प्रयोग' शीर्षक के अंतर्गत डॉ. सनत कुमार लिखते हैं – "मध्यकाल में उत्तर भारत में रामलीला और रासलीला, नाच और नौटंकी आदि लोक कला के विभिन्न रूपों ने जन मानस में अपना निश्चित स्थान बनाया है| इन लोक नाट्यों को खेलनेवाले सामान्य जनता के ही कलाकार होते आए हैं| नुक्कड़ नाटक की प्रेरणा तथा परंपरा इन्हीं लोक नाट्य रूपों से संबंधित है|"[1]

आज हमारे यहाँ प्रचलित नुक्कड़ नाटक की जड़े कहीं बहुत गहरे में अपनी समृद्ध लोक नाट्य परंपरा से जुडी है| चारों ओर बैठ दर्शकों से संवाद और उनकी साझेदारी, सज्जाविहीन खुला रंगस्थल सामाजिक राजनैतिक कमेंट जैसी नुक्कड़ नाटक की कितनी विशेषताएँ हैं जो प्रत्यक्षतः हमारे लोक नाटकों से संबद्ध या प्रभावित हैं|

लोक नाट्य से रूपगत साम्य रखते हुए भी नुक्कड़ नाटक अपनी स्वतंत्र पहचान के साथ अवतरित हुए है| लोकनाट्य की प्रस्तुति-परंपरा नुक्कड़ नाटक के बहुत निकट है और उस परंपरा से नुक्कड़ नाटक प्रभावित भी है| दोनों में एक बुनियादी अंतर यह है कि नुक्कड़ नाटक एक सामाजिक- राजनैतिक चेतना और सरोकार को लेकर चला है, एक आन्दोलन के रूप में, जब कि लोक नाट्य परंपरा जनता के मनोरंजन के लिए रही है|

[1] डॉ. सनत कुमार व्यास, हिन्दुस्तानी, अंक 1-4, पृ : 153

परंपरा के संदर्भ में एक बात यह भी उल्लेखनीय है कि यदि परंपरा को समयानुसार नया आयाम नहीं दिया जाए तो वह रूढ़ी बन जाती है| यह बात नुक्कड़ नाटक के संदर्भ में भी महत्वपूर्ण है| अपने प्राचीन संदर्भों से मुक्त होकर नये संदर्भ को समृद्ध करनेवाली नाट्य-शैलियों पर बल देते हुए सफ़दर ने लिखा है – "हम क्यूँ निकले पारंपरिक शैलियों की तलाश में? वह परंपरा परंपरा नहीं, जिसे चिराग लेकर ढूँढना पड़े| परंपरा वही है जो हमारे वर्तमान परिवेश में, हमारे माहौल में, विद्यमान है| ऐसी परंपरा खुद-ब-खुद हमारी रचना-प्रक्रिया का हिस्सा बनती है|"[1]

रूपगत आयाम पर लोक नाट्य और नुक्कड़ नाटक को एक ही परिधि में रखने का समर्थन मुक्ताकाशी रंगमंच की लोकनाट्य परंपरा के संदर्भ में करना वाजिब है| ".....नुक्कड़ नाटक के लगातार बढ़ते प्रभाव के पीछे निश्चित तौर पर हमारे लोक नाटकों की सुदीर्घ एवं स्वस्थ परंपरा की प्रेरणा रही है| .....पारंपरिक लोक नाटकों से लेकर आधुनिक नाटकों की प्रगतिशील धारा नुक्कड़ नाटक के उत्स माने जा सकते है|"[2]

इस प्रकार देखें तो नुक्कड़ नाटक पर लोक नाट्य परंपरा का प्रभाव तो अवश्य है, लेकिन नुक्कड़ नाटक अपनी स्वतंत्र पहचान के साथ अवतरित हुए हैं| नुक्कड़ नाटक को लोक नाट्य परंपरा का विकास भी नहीं कहा जा

[1] सफ़दर, जन नाट्य मंच, पृ : 57

[2] चन्द्रेश, नुक्कड़ नाटक, पृ : 8

सकता क्योंकि उसका आरम्भ और विकास जनवादी आन्दोलन के साथ हुआ है|

(3) प्रगतिशील लेखक संघ की स्थापना

समाजवादी विचारधारा और सिद्धांतों के जन-जीवन में क्रियान्वित करने की ललक के तहत प्रगतिशील लेखक संघ का आविर्भाव हुआ| इधर भारत में भी अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर चल रही गतिविधियों और संगठनों के प्रति आकर्षण जग रहा था| हिन्दुस्तान में नौजवानों में समाजवाद का प्रचार-प्रसार सन् 1935-36 में अधिक हुआ| इन सभी के फलस्वरूप सन् 1936 में लखनऊ में प्रेमचंद की अध्यक्षता में 'प्रगतिशील लेखक संघ' की स्थापना हुई| इस संगठन की स्थापना के समय प्रेमचंद ने अध्यक्षीय भाषण में बदलते सामाजिक राजनैतिक परिदृश्य में साहित्य के उद्देश्य के बारे में कहा| उनके अनुसार "हमारी कसौटी पर वही साहित्य खरा उतरेगा जिसमें उच्च चिंतन हो, स्वाधीनता का भाव हो.....जीवन की सच्चाइयों का प्रकाश हो जो हममें गति, संघर्ष और बेचैनी पैदा करें, सुलाये नहीं क्योंकि अब और ज्यादा सोना मृत्यु का लक्षण है|"[1]

अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर फासीवाद-विरोधी आन्दोलन, ब्रिटिश शासन के विरोध में भारत में उभर रहे जन आन्दोलनों समाजवादी विचारधारा के तेज़ी से प्रचार आदि कारणों से प्रगतिशील लेखक संघ की स्थापना हुई| यह वही

[1] साहित्य का उद्देश्य, प्रेमचंद, पृ : 26

दौर था जब नाट्य-कला को विशिष्ट वर्ग और विशिष्ट रंगमंच से मुक्त कर सामान्य जन-जीवन तक पहुँचाने की दिशा में अत्यंत ही महत्वपूर्ण कार्य हुआ|

इस बीच हिन्दुस्तान में किसान मज़दूर संगठन साम्राज्यवादी नीति के तहत हो रहे शोषण उत्पीडन के खिलाफ अपनी जेहाद छोड़ चुके थे| ".....मज़दूर आन्दोलन के साथ-साथ किसान आन्दोलन ने भी सन् 1934 के आसपास गति पकड़ी| 'किसान-सभा' नामक किसानों के अखिल भारतीय संगठन की सन् 1934 में स्थापना के साथ किसान आन्दोलन का भी मुख्यांश साम्यवादियों के नेतृत्व में चला गया|"[1]

प्रगतिशील आन्दोलन के उद्भव ने साहित्य की प्रत्येक विधा को प्रभावित किया| इस आन्दोलन के साथ जहाँ साहित्य की अन्य विधाओं में यथार्थ को वरीयता दी गई वहाँ मंचन के संदर्भ में सीधे जनता से संपर्क रखने के कारण नाटकों की ओर विशेष ध्यान दिया गया| लोकनाट्य परंपरा को जिन्दा रखते हुए प्रगतिशील रचनाकारों ने 'जन' से जुड़ने की दिशा में अपने नाट्य-सृजन को नए आयाम दी| नाटक को रंगमंच से जोड़ने की ऐसी नीति अपनायी गयी जिससे जन-रंगमंच का निर्माण संभव हो सके|

इस प्रकार जन नाटकों की रचना और प्रस्तुति ने नुक्कड़ नाटक के लिए ज़मीन तैयार करना प्रारंभ कर दिया था| प्रगतिशील आन्दोलन के दौरान नाटक ने रंगमंच की रूढ़ चहार दीवारी को तोड़ने का अनूठा और सफलतम

[1] यथार्थवाद, डॉ.शिवकुमार मिश्र, पृ : 67

प्रयास किया| इस युग में प्रगतिशील नाटककारों ने नाटक को लोक जीवन के साथ जोड़ने के लिए परंपरागत नाट्य रूपों को महत्व देकर उसे पढ़े-लिखे शहरी समाज तक ही सीमित न रखकर नगरों के सामान्य जन और गाँव तक पहुँचाया| ".....अनेक रचनाकारों ने तो केवल सामान्य जन या सामान्य दर्शकों को केन्द्र में रखते हुए जन-नाटकों की रचना की ओर स्वतः सामान्य जन के बीच उनके मंचन में रुचि ली|"[1]

नाटक लेखन को रंगमंच से जोड़ने की कोशिश भारतेंदु युग में आरंभ हुई थी, उस युग में यथार्थवादी नाटकों के मंचन का जो बीज बोया गया था, वह प्रगतिवादी आन्दोलन के समय पूरी तरह पनपा| इसके बाद इसी जनवादी नाट्य विधा को नुक्कड़ नाटक के रूप में स्थापित करने का प्रयास भारतीय जन नाट्य संघ ने किया|

(4) भारतीय जन नाट्य संघ (इप्टा)

जन नाट्य आन्दोलन की परंपरा की शुरुआत चौथे दशक के अंत में दूसरे विश्वयुद्ध के उत्तेजना से भरे दिनों में हुई थी| दूसरे विश्वयुद्ध के दिनों में जन नाट्य आन्दोलन में एक स्वतः स्फूर्तता थी| इसको बढ़ाने में स्वाधीनता संग्राम की भी भूमिका थी| इसी समय बंगाल में अकाल पड़ा जो प्राकृतिक विपदा नहीं बल्कि मानव निर्मित था| बंगाल के अकाल ने जन-संस्कृति कर्मियों एवं

[1] यथार्थवाद, डॉ.शिवकुमार मिश्र, पृ : 196

जन-संगठनों के सामने एक भरी चुनौती को जन्म दिया| अकाल से उत्पन्न दारुण स्थिति ने हिंदी भाषा के सजग लेखकों को सृजन के लिए प्रेरणा दी|

सबसे पहले बंगाल में जन संगठनों ने एक 'पीपुल्स रिलीफ कमेटी' की स्थापना की और इसके तहत एक 'कल्चरल स्क्वाड' का भी गठन किया गया| इसका सीधा-सा उद्देश्य था – अकाल पीड़ित असहाय जन समुदाय के लिए सहायता राशी जमा करना और यह स्पष्ट करना कि यह अकाल मानव निर्मित है|

सन् 1938 में कलकत्ता में हुए 'अखिल भारतीय प्रगतिशील लेखक संघ' के दूसरे राष्ट्रीय सम्मेलन के पश्चात् 'यूथ कल्चरल इंस्टिट्यूट' की स्थापना की गयी| इसमें शामिल अधिकांश युवक मार्क्सवादी विचारों के थे| जन नाट्य आन्दोलन की शुरुआत का श्रेय इस इंस्टिट्यूट को जाता है| इस संस्था ने देश व्यापी सांस्कृतिक लहर पैदा करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई|

सन् 1940 से 1942 के भीतर साम्राज्यवाद, फासीवाद एवं युद्ध विरोधी चेतना पैदा करने और भारत के मुक्ति संग्राम को नयी दिशा देने के लिए देश के कई हिस्सों में प्रगतिशील नाट्य एवं कला जत्थाओं का निर्माण आरंभ हो गया था| बंगाल के अकाल विरोधी अभियानों ने उसमें और गति उत्पन्न कर दी| इसी के फलस्वरूप उन्नीसवीं शताब्दी के पाँचवें दशक के आरंभिक चरण में बंगलौर में अनिल डिसिल्वा को सचिव बनाकर 'इप्टा' की एक इकाई गठित की गई| सन् 1945 में मुंबई में हुए दूसरे राष्ट्रिय अधिवेशन

में भारतीय जन नाट्य संघ का संविधान पारित हुआ और इसी के अंतर्गत संस्था का नाम 'इंडियन पीपुल्स थियेटर असोसियेशन' स्वीकृत हुआ|

हिंदी नाट्य जगत में विशेष रूप से जन नाटक के क्षेत्र में इप्टा का उद्भव एक अत्यंत ही महत्वपूर्ण घटना रही| कला माध्यमों के द्वारा जनता को स्वस्थ और शिक्षाप्रद मनोरंजन देना तथा देश की जनता द्वारा शांति, जनवाद और सांस्कृतिक अध्ययन के लिए किए जा रहे प्रयासों में तेज़ी लाना इस संस्था का मुख्य उद्देश्य था|

इस पाँचवें दशक के आरंभिक चरण के संदर्भ में सुमित सरकार ने लिखा है – "..... यही वह समय था जब कलकत्ता के मध्यवर्गीय सांस्कृतिक जीवन पर मार्क्सवाद ने जादू कर दिया| पार्टी के महासचिव पि.सी.जोशी लोक संस्कृति के माध्यमों का और सांस्कृतिक रूपों का इस दिशा में कल्पनाशील प्रयोग करने में अग्रणी थे और 1944-45 में इप्टा की स्थापना एक महत्वपूर्ण उपलब्धि थी| इसका एक केन्द्रीय दस्ता भी था जो देश-भर में घूम-घूमकर अकाल पीड़ित बंगाल के लिए धन जुटाता था|"[1]

इप्टा के सांस्कृतिक आन्दोलन ने कला-माध्यमों का प्रयोग सचेत रूप में किया| इप्टा के नाटकों और गीतों में आम जनता के संघर्ष को स्वर मिला| किसान और मज़दूर वर्ग की तत्कालीन दुर्दशा की ओर भी इप्टा के रंगकर्मियों

[1] आधुनिक भारत, सुमित सरकार, पृ : 433

की सहानुभूति और प्रतिबद्धता का रवैया रहा| इप्टा ने अशिक्षित और अनजान जनता को सामयिक मुद्धों से अवगत कराने अपने हितों के प्रति सजग कराने का प्रयास भी किया|

इप्टा के नाटककारों ने नाटकों में अपने-अपने प्रदेशों की लोकशैलियों का समावेश किया| माच, तमाशा, नौटंकी आदि लोक शैलियों को नयी अभिव्यक्ति देकर उसके माध्यम से देश के सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक यथार्थ को प्रस्तुत करने का सफल प्रयास किया| इप्टा के नाटकों का मूलाधार लोक जीवन से जुड़ा रहा है| इसके प्रदर्शन हेतु न तो साज-सज्जा की आवश्यकता थी न ही पृथक प्रेक्षागृह की| इप्टा के अधिकांश नाटक बेहद सादे ढंग से गाँव, कस्बों में आम जनता के सामने खुले आकाश के नीचे खेले जाते थे| इप्टा की नाटक इकायों ने मंच की भव्यता को तोड़ते हुए आसानी से उपलब्ध साधनों के माध्यम से नवीन रंग तकनीकों को खोजने का प्रयास किया|

इप्टा के पहले शो के रूप में श्री प्रभाकर गुप्त और डी.एस.गावनकर के निर्देशन में टी.सरमालकर के मराठी नाटक 'दादा' का मंचन किया गया जो मज़दूरों की जिन्दगी और शोषण पर आधारित था| इस नाटक के अंत में सारे कलाकार जब मंच पर आकर प्रसिद्ध गाना – "नक्कारे से डंका लगा है तू शस्त्र को अपने संभाल' गाते थे तो दर्शक भी उनके स्वर से स्वर मिलाकर गाते थे| इप्टा के नाटक सोद्धेश्य और प्रतिबद्ध नाटक थे| अपनी समाजोन्मुख गतिविधियों के कारण इप्टा ने सामाजिक, आर्थिक विसंगतियों को वर्ग दृष्टि के

आधार पर विश्लेषित करके उसे मंच पर लाने का प्रयास किया| इसका मुख्य कारण यह था कि जनता की राजनीतिक शिक्षा के लिए सर्वाधिक प्रभावशाली माध्यम नाटक ही था|

इप्टा ने फासीवादी साम्राज्यवादी विरोधों को नाटकों का विषय बनाया| अंतर्राष्ट्रीय फलक पर हो रही घटनाओं को भी नाटकों में स्थान दिया गया| इस संबंध में इप्टा के सदस्य हबीब तनवीर ने अपने साक्षात्कार में कहा है – "यह ज़माना सोशल, पोलिटिकल कमिटमेंट का ज़माना था, इप्टा का ज़माना था .....इसी ज़माने में हमने गोर्की, चेखव, स्तानिस्लाव्सकी, इब्सन, बर्नाड शा और जंग के दिनों में यूनिटी थियेटर का नाम सुना, अमेरिका के ग्रूप थियेटर का नाम सुना|..."[1]

इप्टा के स्थापना सम्मेलन द्वारा पारित प्रस्ताव में इस संबंध में कहा गया भारतीय जन नाट्य संघ के तत्वावधान में आयोजित यह सम्मेलन इस बात की ज़रूरत की तीव्रता को महसूस करता है कि समूचे भारत वर्ष में एक जनता का नाट्यान्दोलन संगठित किया जाय, जो रंगमंच और पारंपरिक कलाओं को पुनर्जीवित करने के साधन के रूप में काम करें और साथ ही उन्हें हमारी जनता के स्वाधीनता तथा सांस्कृतिक और आर्थिक न्याय के संघर्ष को अभिव्यक्त करने में मदद करें| इप्टा ने इस बात को सही अर्थो में स्थापित किया|

[1] नटरंग, अर्द्धशताब्दी अंक, मार्च-दिसंबर-1989, पृ : 97

अपने दायित्व की पूर्ति के लिए इप्टा ने रंगमंच का एक ऐसा प्रयोग किया जिससे मंच और दर्शक के बीच की दूरी समाप्त हो गई| इस संदर्भ में बलवंत गार्गी ने लिखा है – ".....यवनिका रंगशाला को दो भागों में बाँटती थी – मंच और दर्शक| पीपुल्स थियेटर इस प्रकार की मंच-व्यवस्था के विरुद्ध खड़ा था| इसने लोक नाटकों के रूप पुनर्जीवित किए और इसमें नये विषय अवतरित किए| मंच और दर्शकों के बीच की खाई को पाट दिया|"[1]

इप्टा ने 1940-42 से 1960 तक कई नाटक और एकांकियों को जनता के सामने प्रस्तुत किया| उसने हिंदी तथा हिंदीतर भाषाओं में अनेक प्रस्तुतियाँ की| उनके प्रदर्शनों में 'ये किसका खून है', सीता का जन्म', 'आज का सवाल', 'लपटों के बीच', 'घायल पंजाब', 'संघर्ष', 'किसान', 'नवान्न', 'जापान के रुकते हूबे', 'प्रतिमा', 'दादा' आदि विशेष उल्लेखनीय हैं| इन नाटकों की प्रस्तुति से इप्टा ने जन-आन्दोलन की गति को तीव्र करने का सफलतम प्रयास किया|

आज का नुक्कड़ नाटक और जनवादी नाट्य आन्दोलन वास्तव में इप्टा की ही देन है| नुक्कड़ नाटक को भारतीय जन नाट्य संघ के नाटकों का विस्तार कहा जा सकता है| कम्युनिस्ट पार्टी के विभाजन ने इप्टा आन्दोलन को शिथिल बनाया| इसी कारण सन् 1960 के आसपास इप्टा आन्दोलन बिखर गया|

[1] रंगमंच, बलवंत गार्गी, पृ : 30

सन् 1960 के दशक के अंत में और आपातकाल से कुछ पूर्व के समय हिंदी साहित्य में प्रगतिशीलता की एक नयी लहर आयी| यह समय सामाजिक राजनीतिक स्थितियों के उथल-पुथल का था जिससे साहित्य में नव प्रगतिवादी जनवादी भाव-धारा विकसित हुई| इसी धारा ने नुक्कड़ नाटकों के लिए ज़मीन तैयार की|

इप्टा ने नाटकों की अंतर्वस्तु और रूप को एक नया मोड़ दिया जिसका विकसित रूप नुक्कड़ नाटकों में दिखाई देता है| आम जनता के बीच खुले आकाश के नीचे संघर्ष की चेतना प्रसारित करने में भी दोनों की भूमिका समान है| इप्टा ने रंगकर्म की शास्त्रीय विधि को नकारते हुए लोक नाट्य शैलियों को अपनाकर नाटक को जन जागरण का माध्यम बनाया था जिसको आगे बढ़ाने का काम नुक्कड़ नाट्य आन्दोलन ने किया|

यह सच है कि युद्ध की समाप्ति के बाद ज्यादा समय तक इप्टा पूरी तरह सक्रिय न रह सका, लेकिन हमारे देश के समकालीन नाट्य आन्दोलन को गति देने की दिशा में अत्यंत ही सराहनीय, महत्वपूर्ण योगदान दिया| सन् 1947 तक इप्टा का पूरे देश में अभूतपूर्व विस्तार हुआ और इसने आज़ादी की लड़ाई में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाहन किया| एक प्रबल दृश्य एवं जीवन्त माध्यम होने के कारण इसने परतंत्र भारतवासियों के मनो-मस्तिष्क को झकझोर कर दिया और आज़ादी की लंबी लड़ाई में सदैव ऊर्जा का स्रोत बनकर विशिष्ट प्रेरक भूमिका का निर्वाहन किया|

(5) अन्य प्रेरक परिस्थितियाँ

पूर्वोक्त बातों के बिना देश में हुई कुछ सामाजिक राजनीतिक आन्दोलनों ने भी नुक्कड़ नाटकों के उदय में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी है|

मज़दूर आन्दोलन

नुक्कड़ नाटक तो आम जनता के संघर्षों को प्रस्तुत करने का ही माध्यम था| इसमें मज़दूरों की समस्याओं को प्रमुख स्थान मिलता था जिसके लिए मूल प्रेरणा देश में मज़दूर आन्दोलन था| आज़ादी के बाद श्रमिक वर्ग की शक्ति को पहचानकर विभिन्न राजनीतिक दलों ने अपने दलों के मज़दूर संगठन बनाए| इन संगठनों में 'एटक' (All India Trade Union Congress, AITUC), 'ऐनटियूसी' (INTUC), 'सीटू' (CITU) आदि के नाम प्रमुख हैं|

सन् 1970 में गठित सीटू ने मज़दूर आन्दोलन में अपनी सशक्त भूमिका निभायी और देश के अनेक ट्रेड यूनियनें इसके अंतर्गत आकर आपातकाल का दमन करने के लिए मज़दूरों को ताकत दी| सन् 1980 के बाद देश के विभिन्न भागों में मज़दूर संगठनों ने अनेक समस्याओं पर व्यवस्था तथा पूँजीपतियों के विरुद्ध आन्दोलन प्रारंभ किए| दिल्ली और उसके आसपास के क्षेत्रों में मज़दूर आन्दोलन बहुत सशक्त था| इसे रेखांकित करते हुए सुशील भट्टाचार्य लिखते हैं – "दिल्ली और उसके आसपास के क्षेत्रों में पिछले कुछ वर्षों में मज़दूर आन्दोलन में अभूतपूर्व विकास हुआ है| इमरजैसी के अनुभव ने मज़दूर वर्ग को संगठन की दिशा में प्रेरित किया है .....मज़दूर आन्दोलन इमरजैसी के बाद तेज़ी से उभरा

है| सीटू की मज़दूर यूनियनों की संख्या भी बढ़ी है| 26 मार्च 1981 की किसान मज़दूर रैली में दिल्ली, गाज़ियाबाद और फरीदाबाद से सीटू के एक लाख से ज्यादा मज़दूरों का शामिल होना इसका एक उदाहरण है|"[1]

मज़दूर ने समाज में अपनी ओर होनेवाली अनीतियों के विरुद्ध आवाज़ उठाई| यह आवाज़ नुक्कड़ नाटकों के माध्यम से और भी मुखरित हुई| वैश्विकस्तर पर नुक्कड़ नाटक की शुरुआत मज़दूर संगठनों के बीच ही हुई| रूस, ब्रिटेन और जर्मनी में उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध और बीसवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में विकसित हुए 'वर्कर्स थियेटर मूवमेंट' ने मज़दूर को संघर्ष की ओर मोड़ा|

नुक्कड़ नाटकों में मज़दूरों की समस्याओं को प्रमुख स्थान मिला है| सारी दुनिया में मज़दूरों के दिन, मई दिवस पर अनेक नुक्कड़ नाटकों के प्रदर्शन होते हैं| नुक्कड़ नाट्य मंडलियाँ रोज़गार, वेतन, छंटनी आदि समस्याओं पर नाटक प्रस्तुत कर रही हैं| हिंदी में 'मशीन', 'संघर्ष करेंगें जीतेंगे', 'मई दिवस की कहानी', 'अब न सहेंगे ज़ोर किसीका' आदि नुक्कड़ नाटकों के माध्यम से शोषक वर्ग की पहचान के साथ मज़दूर को एकजुट करने का प्रयास किया गया है|

किसान – आन्दोलन

आज़ादी के पहले किसान लोग यही सपना देख रहे थे कि आज़ादी मिलने पर उनकी सारी समस्याएँ समाप्त होगी और एक सुन्दर जीवन संभव होग,| लेकिन यह तो केवल सपना ही रहा| शोषण, अत्याचार और भुखमरी

[1] हमारे सामजिक और सांस्कृतिक सरोकार, रमेश उपाध्याय. पृ : 98

का दौर खत्म नहीं हुआ| भारत को स्वाधीनता सिर्फ राजनीतिक ही मिला, स्थानीय भू-स्वामियों द्वारा किये गये दमन से उत्पन्न गरीबी,अकाल, कृषि की दयनीय अवस्था तथा कृषक असंतोष ज़ारी रहे|

भारत के किसान आन्दोलन की कोटि में सन् 1946 में बंगाल के तेभागा आन्दोलन और आंध्रा प्रदेश के तेलंगाना आन्दोलन तो विशेष उल्लेखनीय हैं| सन् 1967 से 1972 तक का समय भारतीय किसान आन्दोलन के इतिहास में नक्सलवादी आन्दोलन के रूप में जाना जाता है|

नक्सलवादी आन्दोलन ने पश्चिम बंगाल, केरल और आंध्रा प्रदेश को अधिक प्रभावित किया| ज़मींदारों द्वारा कब्जाई गई ज़मीनों को छुडाया गया| ज़मींदारी शोषण का अंत करना इस आन्दोलन का उद्देश्य था| सन् 1970 में कलकत्ता को केन्द्र बनाते हुए आन्दोलन को शहरों में लाया गया और सांस्कृतिक क्रांति को इसका लक्ष्य बना दिया गया|

हिंदी के नुक्कड़ रंगकर्मी न केवल नुक्कड़ नाटकों के माध्यम से बल्कि रैलियों, धरनों के रूप में भी इन किसानों पर होनेवाले अत्याचारों का विरोध किया| किसान की दुर्दशा और उनके संघर्ष को सामने लानेवाले नुक्कड़ नाटकों में 'जमीन', नयी बिरादरी', 'हरिजन दहन' आदि विशेष उल्लेखनीय हैं|

इन आंदोलनों के अलावा महिला आन्दोलन, दलित आन्दोलन तथा आपात्काल ने नुक्कड़ नाटकों के उदय के लिए ज़मीन तैयार की| इन सभी

आन्दोलनों से जनता को जागरण का संदेश मिला| आपात्काल में हुई अनीतियों से जनता निराश्रय बन गयी फिर भी सामान्य जनता का व्यापक दमन न किया जा सका| आपात्काल में विपक्षी नेताओं को गिरफ्तार किए गए, जनता के मौलिक अधिकारों को समाप्त किये गये और प्रेस पर प्रतिबन्ध लगा दिया गया| इतना सब कुछ होने पर भी जनता और जनवादी शक्तियाँ अपने लोकतांत्रिक अधिकारों के हनन का लगातार प्रतिरोध करती रही|

उस समय के जनांदोलनों से प्रेरित और प्रभावित होकर साहित्य में भी एक जनवादी आन्दोलन शुरू हुआ| जनता के लिए साहित्य की बात उठी और ऐसे साहित्य की आवश्यकता को ज़ोर मिला जो अनपढ़ जनता तक भी पहुँच सकें| इसी आवश्यकता की पूर्ति नाटकों से संपन्न हुआ| जनवादी दौर में, नाटक मात्र मनोरंजन का साधन न रहकर गहरे जीवन-बोध और जन-जीवन के साथ सच्चे साक्षात्कार का माध्यम बना है| इस धारा के नाटकों में समसामयिक जन जीवन की विडंबनाओं, विभीषिकाओं, विसंगतियों को चित्रित करने का प्रयास रहा है|

सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक, धार्मिक एवं मूल्य विघटन के शिकार जन जीवन की विद्रूपताओं के चित्रण के साथ-साथ जनता को शोषक-शासक वर्ग की नीतियों के खिलाफ संघर्ष करने का आह्वान देता है| जनवादी नाटकों का कार्यक्षेत्र महानगर ही नहीं, अपितु छोटे शहर, कस्बे और गाँव तक होते हैं| जनवादी उभर के साथ प्रकाश में आए नाटकों में प्रमुख रूप से बादल

सरकार का 'जुलूस' हबीब तनवीर का 'आगरा बाज़ार', सक्सेना का 'बकरी' आदि नाटक काफी चर्चित रहे हैं| भले ही इनमें से कुछ नाटक समयावधि और रंगमंचीयता के परिप्रेक्ष्य में नुक्कड़ के अनुबंधों को पूरा न करते हो, लेकिन इनता अवश्य है कि इन जनवादी नाट्य प्रयोगों ने नुक्कड़ नाटक के लिए रास्ता साफ़ कर दिया था|

सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक ज़रूरत के तहत नुक्कड़ नाटक विकसित हुआ| जनवादी चेतना के प्रसार और शोषित जनता के संघर्ष की आवाज़ बने विभिन्न आन्दोलनों ने नुक्कड़ नाटक के उदय के लिए ज़मीन तैयार की| समकालीन हालतों, सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य के दबावों से उभरी परिवर्तनशील चेतना और बोध ने कलात्मक साहित्यिक स्तर पर जिस प्रगतिशीलता को जन्म दिया, वह नाटक के क्षेत्र में नुक्कड़ नाटक को अपनी निजी पहचान और अपने निजी वैशिष्ट्य कायम करने का न्योता दे चुकी थी| एक प्रकार की जड़ता और ठहराव के शिकार भारतीय समाज ने अपने युगीन संदर्भो की अभिव्यक्ति के कारगर माध्यम के रूप में नुक्कड़ नाटक को अपना लिया|

नुक्कड़ नाटक का उदय

भारत में नुक्कड़ नाटकों का आविर्भाव उपनिवेशवाद विरोधी संघर्ष में जनजागरण को खींच लाने के इप्टा के अभियान के माध्यम के रूप में हुआ| स्वतंत्रता के बाद का दिन-ब-दिन उग्रतर होता हुआ भारतीय परिवेश और

मूल्य-संक्रमण, वर्ग संघर्ष, शोषण और शोषित के बीच उभरा तनाव आदि समान रूप से नुक्कड़ नाटक के मूल में निहित रहे हैं| दरअसल "इन नाटकों का पिछले चार दशकों के जनवादी आंदोलनों से गहरा संबंध है, उन्हीं से प्रेरित होकर ये नाटक विकसित हुए है|"[1]

जब साहित्य-रूपी दर्पण में समाज का चेहरा प्रतिबिंबित होने लगता है तो उसे जन-जन तक पहुँचाने के लिए किसी सांस्कृतिक औज़ार की आवश्यकता होती है| नुक्कड़ नाटक उसी सांस्कृतिक औजार के रूप में प्रकट हुआ| भारत में तो उसे लोक नाटक के रूप में पहले से ही अपने पूर्वज उपलब्ध थे| नुक्कड़ नाटकों ने लोक नाट्य परंपरा से जुड़ते हुए भी परंपरा को समयानुसार नया आयाम और नया संदर्भ प्रदान किया है| आज का नुक्कड़ नाटक प्राचीन लोक नाट्य परंपरा से स्वतन्त्र, नवीन अस्तित्व के साथ सामने आया है|

आधुनिक राजनैतिक नुक्कड़ नाटक एक सामाजिक ज़रूरत की पैदाइश है| आपात्काल की समाप्ति के बाद नुक्कड़ नाटकों का सिलसिला चल पड़ा| इस समय तक राजनैतिक दलों को इस विधा की शक्ति का अहसास भली-भाँती हो गया था, इसीलिए राजनैतिक प्रतिबद्धतावले नुक्कड़ नाट्य दलों का संगठन होने लगा| नुक्कड़ नाटक ने शासक वर्ग की कला के कठघरे को तोडा है|

प्रसिद्ध नुक्कड़ रंगकर्मी सफ़दर हाश्मी नुक्कड़ नाटक के वर्तमान रूप को पूँजीवादी तथा सामंतवादीशोषण के अधीन रहनेवाले श्रमजीवी वर्ग की

[1] सव्यवादी, उत्तरार्द्ध (भूमिका) मई 1983, पृ : 3

आवश्यकताओं से जन्मा कलारूप मानते थे| नुक्कड़ नाटक के आविर्भाव के बारे में सफ़दर का कहना है – "वर्तमान पीढ़ी के नुक्कड़ रंगकर्मी अपने पाँचवें और छठे दशक के पूँजीपतियों के विपरीत इसके विशिष्ट आकार रहित स्वरूप के बारे में कहीं ज़्यादा सजग है| अपने रंगकर्म की सैद्धांतिक प्रकृति और राजनैतिक शक्तियों के साथ इसकी खुली पक्षधरता को बिना झिझक स्वीकार करके वे अब इश्तहार नाटक नहीं प्रस्तुत कर रहे हैं|"[1]

नुक्कड़ नाटकों को प्रस्तुत करनेवाली नाट्य-टोली जन नाट्य मंच का मानना है कि इप्टा के दौर में नुक्कड़ नाटक खेले गए परंतु वर्तमान नुक्कड़ आन्दोलन इप्टा की संघर्षशील यात्रा से स्वतंत्र आठवें दशक की परिस्थितियों की देन हैं| 'नाटक से नुक्कड़ नाटक तक' में अरविंद कुमार नुक्कड़ नाटक को आपात्काल से जोड़ते है और लिखते हैं –"वैसे नुक्कड़ नाटकों पर 1967 के किसान आन्दोलन से आये वैचारिक बदलाव का प्रभाव भी है जिससे इन नाटकों को एक राजनीतिक दिशा मिली|"[2]

बड़ी बड़ी रंगमंच शालाओं में अभिजात्य वर्ग के सामने उनकी रुचियों के अनुसार खेले जानेवाले नाटकों के विरोध में नुक्कड़ नाटक का जन्म हुआ जिसमें साधारण आदमी के जीवन उसकी समस्याओं और अभिरुचियों के साथ न्याय करने का सार्थक प्रयास किया गया| "उसका जन्म और विकास हुआ है, जनता

[1] सफ़दर, जन नाट्य मंच (संपादन), पृ : 45

[2] नाटक से नुक्कड़ नाटक तक, राजेश कुमार अरविंद कुमार, पृ : 31

की अपनी कला के रूप में, जिसके ज़रिए जनता स्वयं शिक्षित सचेत और संघर्षशील होना चाहती है| नुक्कड़ नाटक केवल नाट्य रूप ही नहीं बल्कि एक सांस्कृतिक प्रक्रिया भी है|"[1]

पंजाब के जाने माने नुक्कड़ रंगकर्मी गुरु शरण सिंह ने नुक्कड़ नाटक के जन्म के पीछे राजनैतिक ज़रूरतों को माना है| "नुक्कड़ नाटक के जन्म, विकास और लगातार विस्तार पाने का सबसे बड़ा कारण है – सामाजिक परिस्थितियों में अंतर्निहित बौखलाहट, उद्वेलन और इन सबसे उत्पन्न आकुलाहट के साथ अपनी ज़मीन से जुड़ने का भाव|"[2]

देश में उस समय चल रहे जनवादी आन्दोलन का मुख्य लक्ष्य यह था कि साहित्य और साहित्यकारों को जनता के साथ जुड़ाना| हमारे देश की लगभग सत्तर प्रतिशत जनता अशिक्षित थी जो न इन लेखको की पुस्तकें पढ़ सकती थी या उनकी पत्रिकाएँ| इसका एक मार्ग यही हो सकता था कि जनता उनके पास नहीं आ सकती तो वे जनता के पास जाएँ| जनता उन साहित्य को पढ़ नहीं सकी इस लिए इन लेखकों ने अपने साहित्य को दृश्य श्रव्य रूपों में उनके पास लाये| इसी मूलभूत आवश्यकता से उस समय आम जनता के लिए नाटक और नुक्कड़ नाटक लिखे गए| सत्ता की तानाशाही और जनता के अधिकारों की लड़ाई लड़ने के कलात्मक सांस्कृतिक माध्यम के रूप में नुक्कड़ नाटक की शुरुआत हुई|

[1] डॉ.रमेश उपाध्याय, वर्तमान साहित्य, पृ : 17

[2] चंद्रेश, नुक्कड़ नाटक (भूमिका से), पृ : 8

आपात्काल में सत्ता के चरित्र का पर्दाफाश करके शोषण-धर्मी अमानवीय जीवन स्थितियों के विरुद्ध लड़ने के लिए जनता को एक जुट करने के माध्यम के रूप में नुक्कड़ नाटकों का इस्तेमाल किया गया| नुक्कड़, चौपाल जैसे सार्वजनिक स्थलों पर अशिक्षित आम जनता के लिए उसके संघर्षों से जुड़े मुद्दों पर नाटकों का मंचन किया गया| नुक्कड़ नाटक एक ओर शासक वर्गीय अनीतियों का तीव्र विरोध करता है और दूसरी ओर रंगकर्म की अभिजन वादी मानसिकता का भी| प्रसिद्ध लेखक असगर वज़ाहत कहते है कि नुक्कड़ नाटक एक विशेष स्थिति में ख़ास उद्देश्य से लिखा व मंचित किया जाता था, उसकी प्रतिबद्धता पीड़ित मानव समाज के प्रति थी|

हिन्दी में यह नुक्कड़ नाटक सातवें आठवें दशक के संधिकाल, यानी कि सन् 1970 के आसपास अपनी स्वतंत्र पहचान के साथ अवतरित माना जा सकता है| नुक्कड़ नाटक के विकास की संभावनाओं को इंगित करते हुए जन नाट्य मंच, दिल्ली के प्रसिद्ध नुक्कड़ रंगकर्मी सफ़दर कहते हैं – "जहाँ 1978 में कुछ गिनी-चुनी मंडलियाँ नुक्कड़ रंगकर्म की ओर आकर्षित हुई थी वहाँ 1980-81 तक देश भर में उनकी संख्या कई सौ तक पहुँच गई| जहाँ 1977 में नुक्कड़ नाटक ढूँढे नहीं मिलते थे, 1980 तक सैकड़ो स्क्रिप्ट्स छपे रूप में उपलब्ध होने लगी| ....इनके साथ- साथ नाटक के स्वरूप मे भी कई विकास हुए|"[1]

[1] सफ़दर हाश्मी, दीर्घा –दिसंबर 1985, पृ : 25

आजकल जन साधारण इस नयी नाट्य विधा से प्रभावित है जो 'नुक्कड़ नाटक' के नाम से बहुधा प्रचलित है| तत्कालिक विषयों को लेकर खेले जानेवाले ये लघु नाटक 'मंच मुक्त', 'सड़क नाटक' अथवा 'स्ट्रीट प्ले' के नाम से जाने जाते है| इन्हें अभिनीत करने के लिए किसी परंपरागत मंच की तो आवश्यकता होती नहीं, बिना किसी पूर्व तैयारी अथवा रिहर्सल से भी इन्हें खेला जा सकता है| ये नाटक औद्योगिक श्रमिकों के बीच बहुत लोकप्रिय हुए है क्योंकि इनमें वे अपनी दयनीय जीवन स्थितियाँ ही देखते हैं तथा उन स्थितियों से संघर्ष करने की प्रेरणा प्राप्त करते है| सामान्य दर्शकों के बीच अपनी प्रासंगिकता में यह नाट्य लूट-खसौट, जड़ता, पतन, अमानवीकरण और ठहराव के खिलाफ स्वर को मुखर करता है|

प्रमुख नुक्कड़ नाट्य संस्थाएँ और नुक्कड़ नाटककार

जब साहित्यकार जिन्दगी के यथार्थ के अधिक निकट आता है और समाज के परोपकारों को अपना सरोकार समझने लगता है तो उसकी कलम उन सरोकारों को व्यक्त कर पाने के लिए बाध्य हो जाती है| उस स्थिति में स्वाभाविक है कि वह उसी के अनुरूप एक सक्षम विधा का विकास करें| ऐसी एक सक्षम विधा के रूप में नुक्कड़ नाटक नाट्य कर्मियों के हाथ में आया|

बहुत दिनों से नाट्य कर्मियों की यह कोशिश रही कि दर्शक और अभिनेता के बीच की विभाजन रेखा को मिटाया जाए, रंगमंच को हटाकर हाल के फर्श पर नाटक खेले जाने लगे| ये सब नाटक को जनता के निकट ले

जाने के प्रयोग थे| इसी प्रयोग के फलस्वरूप नुक्कड़ नाटक खेले जाने लगे| नुक्कड़ नाटक लिखनेवाले और उसका मंचन करनेवाले नाटककार और नाट्य संस्थाएँ उभरकर आये| नुक्कड़ नाटक में बिना किसी स्थापित रंगमंच के समसामयिक जीवन की समस्याओं को आम दर्शकों के आगे केवल संवादों के ज़रिए प्रस्तुत किया जाता है| यहाँ आकर नाटक पूरी तरह लोककला बन जाता है और अपनी क्षमता से दर्शकों को झकझोरता और सोचने के लिए मज़बूर करता है|

नुक्कड़ नाटक करनेवाली कुछ नाट्य संस्थाएँ तो निम्नलिखित हैं –

(1) जन नाट्य मंच

दिल्ली की एक प्रसिद्ध नुक्कड़ नाट्य संस्था के रूप में जन नाट्य मंच जाना जाता है| इप्टा से प्रेरणा पाकर दिल्ली के कुछ मंचकर्ताओं ने अप्रैल 1973 में जन नाट्य मंच की स्थापना की| इसके उन्नायकों में सफ़दर हाश्मी का नाम प्रमुख रूप से आता है| हाश्मी के अनुसार "सन् 1964 में कम्युनिस्ट पार्टी बिखर गया और सन् 1970 में सी.ऐ.टी.यू. तथा एस.एफ.ऐ. स्थापित हुई| सन् 1973 मार्च में गठित आयोजन में नाटक करने के लिए सि.पि.ऐ. इन लोगों को प्रेरित किया, लेकिन उन्होंने इस आमंत्रण को नकारा| इसके फलस्वरूप वे इन मंचकर्ताओं को कार्यालय से निकाल दिया| इसके बाद उन्होंने 'जनम'को जन्म दिया|"[1]

[1] सुधानावा देशपांडे (सं), पृ : 30

जन नाट्य मंच को ही नुक्कड़ नाटक की शुरुआत का श्रेय दिया जाता है| नाटकों के विषय सर्वहारा से जोड़े गए| भूख,शोषण और गरीबी के खिलाफ जन नाट्य मंच उठ खड़ा हुआ| नाटकों में लोक संगीत प्रयुक्त किया गया और मुख्य लक्ष्य जन जागरण रहा| इस जन नाट्य मंच की सबसे बड़ी देन यही है कि इसने दर्शक और कलाकार की दूरी को काफी कम किया है| जननाट्य मंच के तहत विभिन्न भारतीय भाषाओं में सौ की संख्या के आसपास नाटक लिखे गए और मंचित भी किए गए|

जनम की नुक्कड़ नाट्य यात्रा सन् 1978 अक्तूबर में शुरू हुई| औद्योगिक श्रमिकों के शोषण को प्रस्तुत करनेवाला 'मशीन' जनम का पहला नुक्कड़ नाटक है| इस नाट्य मंच के अन्य प्रमुख नुक्कड़ नाटकों में 'हत्यारे', 'औरत', 'हल्लाबोल', 'मत बाँटो इन्सान को', 'समरथ को नहिं दोष गुस्साई', 'आर्तनाद', 'जिन्हें यकीन नहीं था' आदि के नाम प्रमुख रूप से आते हैं|

सन् 1988 तक जनम ने नुक्कड़ तथा प्रोसिनियम नाटकों को प्रस्तुत किया| सन् 1993 में इस संस्था ने 'नुक्कड़ जनम संवाद' नामक एक पत्रिका शुरू की| सन् 1997 में 'सफर' (सफ़दर रंगमंच) नाम से एक गतिशील रंगमंच का निर्माण किया|

(2) समुदाया, बैंगलूर

नैशनल स्कूल ऑफ़ ड्रामा से स्नातक प्राप्त आर.पी.प्रसन्ना ने समुदाया थियेटर कंपनी को जन्म दिया| इप्टा से भी बढ़कर एक नाट्य संस्था स्थापित

करने के उद्देश्य से वे सन् 1975 में बैंगलूर आये| उन्होंने अपनी इस नाट्य संस्था द्वारा शैक्सपियर तथा ब्रेख्त के नाटकों का मंचन मध्यवर्गीय लोगों के सामने किया| अपनी नाट्य संस्था के लिए उन्होंने ऐसे अभीनेताओं की तलाश की जो अपने स्वाभाविक अभिनय से सामान्य जनता पर प्रभाव छोड़ सकते हैं| यह वही समय था जब देश में आपात्काल की घोषणा की गई थी| समुदाया थियेटर कंपनी ने प्रगतिशील कलाकारों को आपात्काल के विरुद्ध लड़ने के लिए प्रेरणा दी| समुदाया कंपनी की पाँच यूनिटों ने गाँव से गाँव तक साइकिल पर चलकर अपने संगठन का प्रचार किया और प्रत्येक स्थानों पर राजनैतिक चर्चाएँ की| इस यात्रा के तहत उन्होंने कई नुक्कड़ नाटक प्रस्तुत किए| इन नुक्कड़ नाटकों के माध्यम से इंदिरा गाँधी की शासन नीति पर विचार किया गया जिसका असर सामान्य जनता पर पड़ा| इसीके फलस्वरूप तब संपन्न चुनाव में इंदिरा गाँधी को हराकर जनता पार्टी अधिकार पर आयी| यह एक ऐसा समय था जब आज़ादी के बाद पहले पहल नेहरु परिवार के हाथों से अधिकार जनता पार्टी को मिला था|

कुछ ही समय में बहुत सारे काम करने का प्रयास समुदाया थियेटर कंपनी के संचालकों ने किया| आगे चलने पर उस संगठन के सदस्यों की राजनैतिक दृष्टि में विभिन्नताएं आयी जिसके फलस्वरूप कंपनी का पालन ठीक-ठाक रूप से संपन्न करने में प्रसन्ना जी असमर्थ हुए| इसीसे कंपनी को छोड़कर वे दिल्ली चले गए|

(3) निशांत नाट्य मंच, दिल्ली

निशांत नाट्य मंच के उन्नायकों में शम्सुल इस्लाम का नाम प्रमुख रूप से आता है| निशांत नाट्य मंच के संगठन के पहले शम्सुल जी 'मुक्ति', 'जागृति' जैसे संगठनों से जुड़े थे| 'मुक्ति का पहला नाटक महरौली में हुआ था| 'वास्तव शास्त्र' इसका पहला नाटक था, इसके अलावा प्रेमचंद की कहानियों के नाट्य रूपांतर और ब्रेख्त के छोटे छोटे नाटक भी करते थे| आपात्काल के दौरान 'मुक्ति' का नाम बदलकर 'जागृति' कर दिया गया| इसका मुख्य काम सब्जीमंडी में लोगों को पॉलिटीसाइज़ करना रहा| जब इमरजैंसी हटने की बात और चुनाव की बात होने लगी तब भगतसिहं के जन्मदिन पर 'निशांत' के नाम से इन लोगों ने प्रोग्राम किए| शम्सुल इस्लाम के साथ-साथ नीलिमा शर्मा ने भी निशांत के संगठन में भागीदारी दी| निशांत नाट्य मंच का पहला नाटक चेखव की कहानी का रमेश उपाध्याय द्वारा किया नाट्य रूपांतरण 'गिरगिट' था|

निशांत नाट्य मंच के कई कार्यक्रम आन्दोलन आधारित होते हैं जैसे आरक्षण मंडल कमीशन, तहलका इश्यू आदि| इन नाटकों को वे ऐसी जगहों पर खेलते हैं, जहाँ आम आदमी से लेकर बुद्धिजीवी तक मौजूद रहते हैं| कई मध्यवर्गीय बस्तियों में जाकर खेलते हैं| ये नाटक इसी वर्ग के जीवन की समस्याओं पर आधारित होते हैं| निशांत के सदस्य नाटक के लिए निकलते वक्त ढोलक, मंजीरे आदि वाद्य-यंत्रो को बजाते और गीत गाते हुए नाटक

स्थल से काफी पहले गली गली में रुक- रुककर प्रचार करते चलते हैं| रास्ते में पर्चे बाँटकर, एनौसमेंट करते हुए वे नाटक स्थल तक पहुँचते हैं|

निशांत नाट्य मंच व्यक्तिगत और सामूहिक दोनों रूप से लिखे नाटक करते हैं| इस नाट्य मंच की टीम में एक कोर ग्रुप है जो कई प्रदर्शन कर चुका है| इनके साथ-साथ नए कलाकार भी नाटक में अभिनय करते हैं| इनके नाटकों में संगीत की व्यवस्था करने केलिए बहुत सारे वाद्य-यंत्रों का प्रयोग नहीं करते हैं, ढोलक, मंजीरे, डफली आदि का प्रयोग करते हैं| आमतौर पर इनके नुक्कड़ नाटकों के विषय राजनीतिक दृष्टि से प्रेरित होते हैं| राजनीति से अलग वे लोग कुछ नहीं कर पाते, जैसे कथा को प्रतीकात्मक रूप में प्रस्तुत करना या पंचतंत्र की कहानियों को लेकर समसामयिक संदर्भो से उसे जोड़ते हुए रखना आदि|

यह संस्था किसी भी समस्या पर दो घंटे के अन्दर नुक्कड़ नाटक प्रस्तुत करती है| इस संस्था ने 'गिरगिट', 'इन्कलाब जिंदाबाद', 'मौत के सौदागर', 'हम एक है', 'अब न सहेंगे ज़ोर किसी का', 'सरकारी सांड', 'सबसे सस्ता गोश्त' आदि नुक्कड़ नाटकों का मंचन किया है|

(4) दिशा, जन सांस्कृतिक मंच, बिहार

दिशा की स्थापना सन् 1978 में हुई| इस संस्था ने नुक्कड़ नाटकों की प्रस्तुतियों के माध्यम से लोगों को संगठित करके उन्हें अपने अधिकारों के लिए लड़ने के लिए प्रेरित किया| प्रसिद्ध नुक्कड़ रंगकर्मी राजेश कुमार इस संस्था से जुड़े हुए थे| उनकी सक्रियता और कार्य कुशलता ने इस संस्था को अधिक सजीव

बनाया| इस संस्था में मज़दूर, किसान, छात्र तथा शिक्षित नवयुवक भी कार्यरत थे| इस संस्था द्वारा प्रस्तुत नुक्कड़ नाटकों में 'गिरगिट', 'जनता पागल हो गई हैं', 'ज़रा सोचिए', हमें बोलने दो', 'राजा का बाजा' आदि विशेष उल्लेखनीय हैं|

(5) दस्ता, इलाहाबाद

सन् 1979 में स्थापित इस संस्था से डॉक्टर, क्लर्क, विद्यार्थी और बेरोजगार लोग जुड़े हुए हैं| 'जनता पागल हो गई है', 'नई शिक्षा नीति', गिरगिट', 'जंगीराम की हवेली' आदि नुक्कड़ नाटकों की प्रस्तुति इस संस्था ने की है|

(6) तीसरा थियेटर

बादल सरकार ने इस संस्था की स्थापना सन् 1960 में की| बादल सरकार ने रंगमंच, पर्दे, साज-सज्जा, वेश-भूषा आदि को छोड़कर मुक्ताकाशी रंगमंच को अपनाया|

(7) अभिनव जन सांस्कृतिक मंच

आपात्काल के दौरान स्थापित इस संस्था ने दुःस्वप्न', 'कुकड़ू कूँ', जनता पागल हो गई है' आदि नुक्कड़ नाटकों का मंचन किया है|

(8) युवानीति, भोजपुर

सन् 1977 में युवानीति संस्था की स्थापना की गयी| इस संस्था से जुड़े लोगों में समाज के सभी स्तर के लोग थे| 'जंगी की पुकार', 'गिरगिट', सवा सेर गेहूँ' आदि नुक्कड़ नाटक इस संस्था के द्वारा प्रस्तुत किया गया है|

(9) थियेटर यूनियन, दिल्ली

सन् 1970 से लेकर सन् 1990 तक बहुत अधिक सजीव रूप से कार्यरत संस्था थी थियेटर यूनियन| टी.यू. नाम से अधिक प्रसिद्ध हुई इस नाट्य संस्था ने नारी को अपने नुक्कड़ नाटकों में प्रमुख स्थान दिया| दहेज़ प्रथा, नारी शिक्षा, नारी जागरण आदि कई बातों को उन्होंने अपने नुक्कड़ नाटकों का विषय बनाया| इनके द्वारा प्रस्तुत नुक्कड़ नाटकों में 'बलात्कार कानून', 'ओम स्वाहा', 'सती' आदि के नाम प्रमुख हैं|

इस संस्था द्वारा प्रस्तुत किए गए अधिकांश नुक्कड़ नाटकों का निर्देशन अनुराधा कपूर ने किया| इनके साथ-साथ रवि शंकर, कृष्ण त्यागी, रागिणी प्रकाश, माया राऊ, वन्दना आदि के नाम भी आते हैं|

नुक्कड़ नाटक से जुडी अन्य मंडलियाँ

ऊपर बतायी गयी प्रमुख मंडलियों के अलावा अन्य बहुत सारी नाट्य मंडलियाँ नुक्कड़ नाटक कर रही है| इन नाट्य मंडलियों में 'जनम नाट्य मंडली आंध्रा प्रदेश', 'अमृतसर कलाकेन्द्र, पंजाब', 'अनाम, राजस्थान', 'संचेतना बिहार', 'इप्टा, आगरा', 'कला जन्था, इंदौर' आदि के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं|

इन प्रमुख नाट्य मंडलियों के साथ-साथ स्कूलों कॉलेजों तथा अन्य सामाजिक संस्थाओं में भी विभिन्न समसामयिक मुद्दों को लेकर नुक्कड़ नाटक प्रस्तुत किए जा रहे हैं| बाल शोषण, एईड्स, स्त्रियों पर हमला आदि विषयों

को लेकर नुक्कड़ नाटक करने की नीति आज चलती है| आंतकवाद को मुख्य विषय बनाकर आजकल बहुत सारे नुक्कड़ नाटक खेले जाते हैं|

प्रमुख नुक्कड़ नाटककार

सफ़दर हाश्मी

सफ़दर को हम नुक्कड़ नाटक के जन्मदाता के रूप में मान सकते हैं| लगभग 16 वर्षों तक सफ़दर 'जन नाट्य संघ' से जुड़ा हुआ था और उसका सक्रिय कार्यकर्ता रहा था| उसके हाथो में ही नुक्कड़ नाटक की विधा अधिक पनपी है, धारदार और प्रभावशाली बनी है| वे बहुमुखी प्रतिभा संपन्न व्यक्ति थे| एक नाटककार, गीतकार, मंच-निर्देशक और संगठक के रूप में उन्होंने अपनी प्रतिभा दिखायी| इन सभी के साथ-साथ उन्होंने पत्रिकाओं तथा अखबारों में संस्कृति तथा उससे संबद्ध अन्य विषयों पर अनेक लेख लिखे| वे सि.पि.ऐ.एम के सदस्य थे|

सफ़दर का जन्म सन् 1954 अप्रैल में दिल्ली में हुआ| उन्होंने अपनी बाल्यावस्था अलीगढ में व्यतीत की और स्कूली शिक्षा दिल्ली में पूरी की| उन्होंने अंग्रेज़ी में एम.ए. प्राप्त की कुछ समय तक कश्मीर तथा दिल्ली विश्वविद्यालयों में अध्यापन किया| उसके बाद उन्होंने दिल्ली में प्रेस सूचना अधिकारी के रूप में काम किया| फिर सन् 1984 में उन्होंने यह काम छोड़कर पूर्ण रूप से राजनीति तथा सांस्कृतिक कार्यकलापों में व्यापृत हुआ|

सफ़दर ने थियेटर और क्रांति का सपना एक साथ देखा था| उनके प्रायः सभी नुक्कड़ नाटकों के संबंध मेहनतकश जनता की जिन्दगी से थे| उसके लिए वे गाने लिखते थे, अक्सर उनकी धुनें खुद बनाते थे, उन नाटकों में अभिनेता की हैसियत से भाग लेते थे| इतना सारा होने पर भी सफ़दर की हत्या हुई| एक नौजवान और गहरी नज़र रखनेवाला कलाकार, थियेटर आन्दोलन का एक सच्चा और असाधारण लीडर हमारे बीच से चला गया| वह अपना नुक्कड़ नाटक 'हल्लाबोल' प्रस्तुत कर रहा था, जबकि उस पर हमला किया गया| मज़दूरों को उचित वेतन दिलवाने के सिलसिले में अपनी आवाज़ बुलंद करने के कारण या अवाम के गरीब और मेहनतकश-तब्को का हर मौके पर साथ देने के कारण ही शायद उसकी हत्या की गयी|

सफ़दर के द्वारा छोड़े गए सन्देश अब भी हमारे सामने जीवन्त है, मात्र उनका पार्थिव शरीर ही नष्ट हो गया है| उनका यही जीवन्त सन्देश उनके नुक्कड़ नाटकों के माध्यम से जनता के पास अब भी पहुँच रहे हैं|

रमेश उपाध्याय

हिन्दी के नुक्कड़ नाटककारों में रमेश उपाध्याय का नाम उल्लेखनीय है| रमेशजी जब नुक्कड़ नाटक लिखने लगे तब हिन्दी में जनवादी साहित्य का आन्दोलन चल रहा था| जनवादी आन्दोलन का नारा था कि साहित्य को जनता का साहित्य होना चाहिए और साहित्यकारों को जनता से जुड़ना चाहिए| हमारे देश की लगभग सत्तर प्रतिशत जनता निरक्षर थी, इन्हें

प्रभावित करने का एकमात्र मार्ग था नुक्कड़ नाटक| इसी दृष्टि से प्रभाव पाकर रमेश उपाध्याय ने नुक्कड़ नाटक लिखना आरंभ किया|

रमेश उपाध्याय ने सन् 1973 में 'भारत-भाग्य-विधाता' नाम से एक नाटक लिखा था| उसी साल जन नाट्य मंच बना था| ' भारत-भाग्य-विधाता' जन नाट्य मंच का पहला नाटक था| यह नाटक चुनाव से संबंधित था और उस समय चुनाव होनेवाले थे, इसलिए जन नाट्य मंच के लोग एक बस किराए पर लेकर निकल पड़े और उन्होंने कई शहरों और गाँवों में जाकर इसे जनता के बीच प्रस्तुत किया|

रमेश उपाध्याय ने 'भारत-भाग्य-विधाता' मंच के लिए लिखा था| इनका मंचन नुक्कड़ नाटक के रूप में होने के कारण शहरी और देहाती, शिक्षित और अशिक्षित, किसान और मज़दूर, सभी तरह के लोगों ने इस नाटक को देखा और सराहा| रमेशजी ने अपना पहला नुक्कड़ नाटक 'गिरगिट' सन् 1977 में लिखा था| 'गिरगिट' चेखव की कहानी का भारतीय नाट्य रूपांतर था| यह नुक्कड़ नाटक उन्होंने दिल्ली के 'निशांत नाट्य मंच' के लिए लिखा था| निशांत ने ही नहीं, दूसरी कई नाट्य संस्थाओं ने भी इसकी प्रस्तुतियाँ की| पंजाबी, राजस्थानी, गुजराती, मराठी, तेलुगु, नेपाली आदि अन्य भाषाओँ में इसके अनुवादों की भी असंख्य प्रस्तुतियाँ हुई|

इसके फलस्वरूप रमेशजी को लगा कि लोगों तक सीधे अपनी बात पहूँचाने का यह बड़ा बढिया माध्यम है| इसके बाद उन्होंने 'हरिजन-दहन', 'राजा की रसोई', ब्रह्म का स्वाँग' आदि नुक्कड़ नाटक लिखे|

शिवराम

नुक्कड़ नाटक के आरंभिक लेखकों में शिवराम का नाम आता है| उन्होंने मार्क्सवाद का अध्ययन किया था| उनके मन में इस मार्क्सवाद को जनता के बीच पहुँचाने का विचार था जिसके लिए सही माध्यम के रूप में उन्होंने रंगमंच को स्वीकार किया| सन् 1970 से उन्होंने नाटक लिखना और खेलना शुरू किया| उनकी पहली स्क्रिप्ट थी 'आगे बढ़ो'| उसके बाद सन् 1973 में 'जनता पागल हो गयी है' और आपात्काल के समय 'कुकड़ू कूँ' को लिखा|

शिवरामजी ने नुक्कड़ नाटक लिखने के साथ-साथ उनकी प्रस्तुति के लिए रामगंजमंडी में 'जागृति मंडल मंच' नाम से एक संस्था भी बनायी| शिवरामजी के सभी नाटक लोक नाट्य परंपरा से जुड़े हुए हैं| शिवरामजी ने अपनी मंडली के माध्यम से अनेक नुक्कड़ नाटकों को खेला| मात्र उनके ही नहीं बल्कि सफ़दरजी के 'मशीन' 'औरत' आदि नाटकों को भी प्रस्तुत किया|

शिवरामजी का मानना है कि नुक्कड़ नाटक एक नया कलारूप के रूप में हमारे सामने तब आया जब हमें एक ऐसे माध्यम की आवश्यकता आयी जो बिना ताम-झाम के, बिना प्रेक्षागृह के सीधे जनता के बीच पहुँच सकते हैं| वे

नुक्कड़ नाटक की आन्दोलनकारी भूमिका के पक्षधर है| जहाँ-जहाँ उनके नुक्कड़ नाटक खेले गए वहाँ वहाँ आन्दोलन भी खड़े हो गए|

स्कूल की लड़कियों के लिए शिवरामजी ने एक नाटक लिखा जिसका नाम है 'लम्बे हत्थेवाला झाड़ू'| इस नाटक का मुख्य प्रतिपाद्य विज्ञान के छोटे छोटे आविष्कार है जिसके साथ उन्होंने अपसंस्कृति की ओर परिवर्तन की बात भी की है|

शिवरामजी की राय में नुक्कड़ नाटक आज भी जनता के बीच प्रभावशाली माध्यम है क्योंकि कस्बों महानगरों के बीच नुक्कड़ नाटक का प्रभाव अलग अलग है| जहाँ कस्बों में नाटक पूरी रात चलता है वहाँ महानगरों में इसकी समयावधि पन्द्रह-बीस मिनट है| जनता की समस्याओं को स्वाभाविकता से प्रस्तुत करने में नुक्कड़ नाटक सफल माध्यम ही है|

स्वयंप्रकाश

स्वयंप्रकाश मानते है कि नुक्कड़ नाटक एक आवश्यक सन्देश के प्रेषण के लिए है| हिन्दी में नुक्कड़ नाटक की शुरुवात वे कंचन कुमार के एक प्रयास से मानते हैं, और कहते हैं कि यह ज़रूर हैं कि जिसने एक विधा के रूप में नुक्कड़ नाटक को परवाना चढ़ाया – सफ़दर हाश्मी और जनम|

स्वयंप्रकाश जी वामपंथी विचारधारा के व्यक्ति थे| उन्होंने सामाजिक समस्याओं से सामान्य जनता को अवगत कराने के लिए नुक्कड़ नाटक लिखे|

उन्होंने पूँजीवादी सामन्ती व्यवस्था को अपने नुक्कड़ नाटकों में तरह-तरह से अलग-अलग कोणों से उठाया है| इनके प्रसिद्ध नाटकों में 'नयी बिरादरी', 'सबका दुश्मन', 'अशोक चक्रवाली साइकिल' आदि के नाम लिए जाते हैं|

उनके अनुसार नाटक का शिल्प और उसकी भाषा कथ्य पर निर्भर करती है| नुक्कड़ नाटक के प्राण-तत्व के रूप में वे व्यंग्य को मानते हैं| वे नुक्कड़ नाटककार होने के साथ-साथ कहानीकार भी थे| वे मानते है कि लिखना उनके लिए मिशन है, प्रसिद्धि नहीं|

अरविंद गौड़

अरविंद गौड़ एक ऐसे भारतीय मंच निर्देशक हैं जो अपने सामाजिक तथा राजनीतिक रूप से प्रासंगिक मंच के लिए प्रसिद्ध है| उनके नाटक समसामयिक तथा चिंतन जनक होने के साथ-साथ सामाजक और राजनीतिक समस्याओं को प्रस्तुत करनेवाले भी हैं| उनके नाटकों का मुख्य विषय सांप्रादायिकता, धार्मिक समस्याएँ, पूँजीवाद, अनीति, सामाजिक असमानता, सत्ता अधिकारियों का खोखलापन आदि हैं|

वे दिल्ली की नाट्य संस्था अस्मिता के नेता है| अरविन्दजी नाटककार होने के साथ-साथ अभिनेता-प्रशिक्षक, सामाजिक-कार्यकर्ता, कहानीकार और नुक्कड़ नाट्यकर्ता भी हैं| उन्होंने पच्चीस से अधिक नुक्कड़ नाटकों का निर्देशन किया है| उनका प्रथम नुक्कड़ नाटक 'विदेशी आया है', जिसका मंचन उन्होंने

ज़ाकिर हसाईन से मिलकर किया था| फ़िलहाल उसकी नाट्य संस्था सामाजिक समस्याओं को लेकर नुक्कड़ नाटकों की एक श्रेणी प्रस्तुत की थी|

अनुराधा कपूर

अनुराधा कपूर अध्यापिका तथा रंगकर्मी है| उसने अनेक नाटकों में विभिन्न पात्रों की भूमिकाएँ अदा की है| कपूरजी ने पढ़ाई के दौरान 'हयवदन', 'मदर करेज' आदि नाटकों का अभिनय और निर्देशन किया| सन् 1989 में उनका हिन्दी रंगमंच का दौर शुरू हुआ| अनुराधाजी ने थियेटर यूनियन के ओम स्वाहा, द रेप बिल तथा अम्बा आदि नुक्कड़ नाटकों का निर्देशन भी किया| उन्होंने कालिन्दी देशपांडे, ज्योति म्हापसेकर, आदि के साथ मिलकर नारी को केन्द्र में रखकर अनेक नुक्कड़ नाटक किए जिसके माध्यम से नारी समाज की विभिन्न समस्याएँ हमारे सामने आती हैं|

नुक्कड़ नाटकों को जनप्रिय नाट्य विधा बनाने में इन नाटककारों ने सराहनीय काम किया है| इनके अलावा हिन्दी के अन्य कुछ नाटककारों ने भी इस क्षेत्र में अपनी कामयाबी दिखायी है| सर्वेश्वर दयाल सक्सेना के नाटक 'बकरी' में नुक्कड़ नाट्य देख सकते हैं| हबीब तनवीर के कुछ नाटकों में भी नुक्कड़ नाटकों की विशेषताएँ दिखाई देती हैं|

हिन्दी के अन्य नुक्कड़ नाटककारों में चंद्रेश, कुसुम कुमार, असगर वज़ाहत आदि के नाम भी उल्लेखनीय हैं| कुसुम कुमार का 'चूहे' नामक नुक्कड़

नाटक तथा चंद्रेश द्वारा संपादित 'पाँच नुक्कड़ नाटक' आदि से नुक्कड़ नाट्य विधा को काफी प्रचार मिला है|

इन प्रमुख नाटककारों के अलावा जन नाट्य संघ से जुड़े हुए कई नाटककारों की सक्रिय भागीदारी नुक्कड़ नाटक के विकास में मौजूद है| नुक्कड़ नाटक एक व्यक्ति विशेष का काम नहीं है बल्कि उनके मंचन के पीछे एक जन समाज ही रखता है| वास्तव में नुक्कड़ नाट्य विधा सामूहिकता से उपजी नाट्य विधा है|

निष्कर्ष

अब ज़ाहिर है कि नुक्कड़ नाटक एक सशक्त नाट्य विधा है| हिन्दी में इसका उद्भव पश्चिमी प्रेरणा से हुआ था, लेकिन इसकी मूल जड़े हमारी लोकनाट्य परंपरा से जुडी हुई है| इसका जन्म और विकास जनवादी नाट्य आन्दोलन के साथ-साथ हुआ है| एक स्वस्थ समाज एवं व्यवस्था के निर्माण के लिए नुक्कड़ नाटक ने राजनैतिक बदलाव की घोषणा की है|

जनता में चेतना जगानेवाले एक नाट्यान्दोलन के रूप में उभरे नुक्कड़ नाटक आज भी हमारे समाज के भाग है| समसामायिक मुद्दों को प्रस्तुत करने में नुक्कड नाटककार तथा नुक्कड़ नाट्य मंडलियाँ सक्रिय भागीदारी निभाते हैं| नुक्कड़ नाटक शोषक शासक वर्ग की वास्तविकता को उजागर करके जनता को उस कडवे सत्य से साक्षात्कार कराने को मज़बूर करता है|

तीसरा अध्याय

हिन्दी नुक्कड़ नाटकों में चित्रित सामाजिक समस्याएँ

स्वातंत्र्योत्तर सामाजिक परिवेश

स्वातंत्र्योत्तर भारतीय समाज अतीत-वर्तमान, पुरातन-नवीन, परंपरा-आधुनिकता के बीच की एक ऐसी कड़ी है जो इन सारी प्रवृत्तियों का प्रतिनिधित्व करता है| इस समय का समाज पुरातन मूल्यों-मान्यताओं का अनुगामी रहने के साथ-साथ समसामयिक परिस्थितियों से प्रभावित होकर सामाजिक संघर्षों और आंदोलनों की ओर भी उन्मुख रहा है|

आज़ादी मिलने के बाद भारतीय समाज में आये परिवर्तनों के मूल में राजनीति और अर्थ दो प्रमुख तत्व रहे हैं, जिसके चक्कर में आकर अन्य सारी शक्तियाँ प्रभावित और परिवर्तित होती गयी है| सामाजिक रूप से असमानता वह चाहे जाति के नाम पर हो या अर्थ के नाम पर या कोई अन्य बात पर क्यों न हो, वह संघर्ष को उत्पन्न करती है|

स्वातंत्र्योत्तर भारतीय परिवेश ने व्यक्ति और समाज दोनों को बखूबी प्रभावित किया है| व्यक्ति परिवार की एक महत्वपूर्ण इकाई होता है और परिवार समाज की एक महत्वपूर्ण कड़ी होता है| पारिवारिक विघटन इस समय की एक सामाजिक प्रवृत्ति ही बन गयी| वास्तव में परिवार की स्थिरता और सुख-शांति पर ही एक स्वस्थ समाज निर्मित होता है| लेकिन इस दृष्टि से भारतीय समाज बलहीन होने लगा| सामान्य परिवारों में भी संघर्ष और बिखराव की स्थिति ही दिखाई देने लगी|

"स्वातंत्र्योत्तर भारतीय सामाजिक परिवेश से उपजे व्यक्तिवाद अहंवाद और पारिवारिक विघटन, बिखराव और दूरियों के मूल में यदि देखा जाए तो समकालीन सामाजिक एवं राजनैतिक विकार, औद्योगिक क्रांति की वजह से विकसित यांत्रिकता और परंपरागत मूल्यों के प्रति हीनता और अनास्था जैसी प्रवृत्तियाँ प्रमुख रूप से दिखाई देती है|"[1]

भारतीय समाज से पुरातन मूल्य एक-एक होकर गायब होते जा रहे हैं| आज का मानव बहुत अधिक स्वार्थी बन गये हैं| किसी भी प्रकार से धन कमाना उनका एकमात्र लक्ष्य बन गया है| समाज से स्नेह, आर्द्रता, करुणा जैसे मूल्य गायब हो गए हैं और सर्वत्र अन्याय, अनीति, भ्रष्टाचार आदि का फैलाव हो रहे हैं| समाज में दिन-ब-दिन बढ़ते गए भेद-भाव, शोषण, अन्याय आदि के विरुद्ध सामाजिक क्रांति की आवश्यकता पर नव-युवकों ने बल दिया|

"देश की प्राकृतिक शक्तियों के उच्चतम प्रयोग अत्पादन की वृद्धि तथा वितरण की समानता लानेवाली आर्थिक क्रांतियों के साथ समाज की कुप्रथाओं को मिटाने, दलित और अवहेलित वर्गों को मर्यादापूर्ण स्थान देना तथा वर्तमान परिस्थितियों से विषमता रखनेवाले नियमों और रीतियों में परिवर्तन लाने के लिए सामाजिक क्रांति ही आवश्यकता रही है|"[2]

---

[1] डॉ. मदन मोहन शर्मा, स्वातंत्र्योत्तर युगीन परिप्रेक्ष्य और नुक्कड़ नाटक, पृ : 66

[2] डॉ. बाबू राम मिश्र, स्वतंत्र भारत की एक झलक, पृ : 223

आज़ादी के बाद के भारतीय समाज पर नज़र डालने से हम कह सकते हैं कि इस समय जहाँ व्यक्ति ने संबंधो के दायरे को तोड़ने का प्रयास किया हैं वहीं समसामयिक उग्र परिस्थियों ने उसमें आक्रोश भी ला दिया है| फलस्वरूप साहित्यिक और कलात्मक गतिविधियों की भाषा भी आक्रोश की भाषा बन गयी| साहित्य तो समाज का दर्पण है| इसीलिए इन सारी प्रवृत्तियों का प्रतिफलन साहित्यिक रचनाओं में भी हुआ| साहित्यकारों ने अपनी रचनाओं में सामाजिक यथार्थ का चित्रण करने लगा|

नुक्कड़ नाटककारों ने भी अपने नाटकों में सामाजिक समस्याओं का चित्रण किया| इसकी ओर प्रकाश डालने का प्रयास आगे किया जा रहा है|

नुक्कड़ नाटकों में सामाजिक समस्याएँ

नुक्कड़ नाटक एक ऐसी कला है जो अपने कथ्य को जनता से लेकर जनता में ही बाँट देती है| भारतीय समाज में कोई ऐसी समस्या नहीं होगी जिसका चित्रण नुक्कड़ नाटकों में नहीं किया गया होगा क्योंकि नुक्कड़ नाटक का कथ्य सामाजिक यथार्थ को व्यापकता में ग्रहण करता है|

नुक्कड़ नाटककारों ने सामान्य जन-जीवन से जुडी हुई सामाजिक समस्याओं को लेकर उसे इस तरह अपने नाटकों में प्रस्तुत करते हैं कि दर्शक स्वयं अपनी हालत के बारे में सोचे और कुछ करें| आम-जनता में चेतना जगाने के उद्देश्य से उद्भूत होने के कारण नुक्कड़ नाटकों में सामाजिक समस्याओं के चित्रण होने के साथ साथ उसके विरुद्ध लड़ने का आह्वान भी होगा|

किसानों और मज़दूरों के शोषण का चित्रण

आज़ादी के बाद समाज में उच्च वर्ग - निम्न वर्ग के बीच की दूरियाँ अधिक होने लगी थी| उच्च वर्ग ने पूँजीवादी-सामन्ती व्यवस्था को अपनाते हुए विलासिता पूर्ण जीवन को बरकरार रखने का बराबर प्रयास किया| निम्न वर्ग तो निम्न से निम्न स्तर होता चला गया| इसके फलस्वरूप सामाजिक एकता के स्थान पर वर्ग-भेद अधिकाधिक रूप से स्पष्ट हुआ है|

मज़दूर के शोषण की त्रासद स्थिति का चित्रण नुक्कड़ नाटकों में हुआ है| किसान मज़दूर, जिनके बल पर किसी भी राष्ट्र की अर्थ- व्यवस्था बहुत कुछ निर्भर करती है, नुक्कड़ नाटकों में अपनी मूल संवेदनाओं के साथ प्रस्तुत होते हैं| समाज में व्याप्त होने वाले असमानता, अन्याय के लिए ज़िम्मेदार शोषक वर्ग का चित्रण भी नुक्कड़ नाटक में हैं|

जन-नाट्यमंच, दिल्ली द्वारा सामूहिक रूप से तैयार किए नुक्कड़ नाटक 'गाँव से शहर तक' के माध्यम से मज़दूरों की वास्तविक स्थिति को उभारा गया है| मज़दूरों की स्थिति इतनी दयनीय है कि उन्हें अपनी रोज़मर्रा की ज़िन्दगी चलाना भी मुश्किल हो गया है| इस नाटक में बताया गया है कि घर-घर की यही कहानी है| बेरोज़गारी, महंगाई, भुखमरी, तिस पर वेतन कटौती, जबरन डिपोजिट, बोनस चंदा आदि की दरख्वास्तों से यूनियन के दफ्तर भरे हुए हैं| बड़े पद-ओहदों पर विराजमान मालिक लोग मज़दूरों के प्रति कैसा रवैया अपनाता है इसका पता हमें सूत्रधार के शब्दों से मिलता है :-

"सूत्रधार : बोनस के मामले में मालिक से लेकर लेबर कमिश्नर तक सबका एक ही रवैया है – बातचीत चल रही है, थोडा सब्र कीजिए| -----हमने जाकर मिनिस्टर से शिकायत की तो उल्टा हमें ही धमकाने लगा, तुमने कंपनी के गुप्त कागज़ात क्यूँ पढ़े|"[1]

इस प्रकार के अन्याय होने पर भी अपने लिए यूनियन बनाने अथवा इन अन्यायों के खिलाफ संघर्ष करने का अधिकार भी इन लोगों को नहीं दिया जाता है| अन्याय का विरोध करने का साहस जुटानेवाला 'रामप्रसाद' जैसे लोगों को मालिकों ने काम से निकाल दिया और गुंडों से मरम्मत भी करवाई| अपने आपको सर्वशक्तिशाली मान बैठे मालिक यही प्रश्न उठाते है –

"यूनियन की आवश्यकता ही क्या है? यह श्रमिकों का चित्त-चंचल करती है, उन्नति के पथ में बाधा डालती है|"[2]

"गाँव से शहर तक" नुक्कड़ नाटक में बताया गया है कि कोई एक भी मज़दूर नहीं, जिसे मालिकों ने परेशान न किया हो| सत्ता वर्ग हमेशा मालिकों-पूँजीपतियों के वश में होते हैं|

मात्र लाभ और लोभ की चिंता में डूबे हुए व्यापारी वर्ग की मानसिकता का परिचय 'मालिक' के शब्दों से मिलता है –

[1] गाँव से शहर तक, नुक्कड़ जनम सवाद अंक 16-17, पृ : 24

[2] गाँव से शहर तक, नुक्कड़ जनम सवाद अंक 16-17, पृ : 25

"व्यापार में मंदी को देखते हुए यह आवश्यक हो गया है कि वेतन-वृद्धि के हिंसात्मक स्वरूप को परिमित किया जाए|"[1]

औद्योगीकरण के फलस्वरूप भारत में जो नयी आर्थिक-नीति तथा काम-विभाजन प्रयोग में आये उसके तहत मज़दूरों को कई यातनाएँ झेलनी पड़ी| मज़दूर तथा किसान तन तोड़ मेहनत करने पर भी उन्हें अपनी रोज़मर्रा ज़िन्दगी के लिए पैसा नहीं मिलता है| वे शोषक वर्ग की आज्ञा पर काम करते हैं और दिन-रात उनकी मार पिटाई खाते हैं|

जन-नाट्यमंच का पहला नुक्कड़ नाटक 'मशीन' में मज़दूर वर्ग की समस्याओं का चित्रण हुआ है| इस नाटक का शीर्षक प्रतीकात्मक है| दिन-रात काम करने वाले मज़दूर वर्ग का प्रतिक है मशीन| नाटक में बताया गया है कि यह मशीन दिन-रात चलती है, कभी भी रुकती नहीं है|

"सूत्रधार : जी हाँ यह है मशीन| लोहे की मशीन कारखाने की मशीन, मशीन का है एक मालिक और बहुत से पुर्जे यानि कि मज़दूर| दिन भर चलती है और रात को भी|"[2]

इस नुक्कड़ नाटक में मशीन को कामधेनु की बहन कहा गया है| यह ऐसी कामधेनु है जो अपने मालिक की सारी आशाओं और आकांक्षाओं की पूर्ति करने के लिए बाध्य है और जिनकी अपनी कोई आशा-आकांक्षा नहीं है|

[1] गाँव से शहर तक, नुक्कड़ जनम सवाद अंक 16-17, पृ : 24

[2] मशीन, नुक्कड़ जनम सवाद अंक 16-17, पृ : 18

लेकिन मालिक की सभी आज्ञाओं का पालन करने पर भी इनको मार-पिटाई खानी पड़ती है| मालिक लोग इन्हें अपना नौकर मानकर इनपर बरस पड़ता है| मज़दूरों पर होनेवाले इस प्रकार की शारीरिक पीडाओं का अंकन भी इस नाटक में है|

"मज़दूर : लात खाते-खाते भेजा ही खराब हो गया| बताना ही भूल गया|"[1]

दिन-रात काम करने और मालिकों की लात सहने पर भी इन मज़दूरों को कई आर्थिक तंगियाँ झेलनी पड़ती है| कारखाने में दम घुटने वाले परिवेश में काम करने के लिए मज़बूर एक आदमी की बेचैनी और मानसिक तनाव उनकी वाणी में गूँजता है -

"मैं दयाल पेपर मिल में मशीन मैन हूँ| मेरा नाम राधेश्याम है| मुझे हर महीने दो-सौ रुपये मिलते हैं| अगर आफिस के इंचार्ज बाबू नाराज़ हो जाएँ, तो इसमें से दो-तीन दिन की तनख्वाह कट जाती है| बाबू नाराज़ ही रहते हैं| डेढ़-सौ के बीच झूलती हुई तनख्वाह और घर के चार सदस्यों का पेट, उनकी ज़रूरतें|"[2]

हाथ में अधिक संपत्ति न होने के कारण इन मज़दूरों को अपना पेट भरने का एक मात्र सहारा राशन ही है| लेकिन ये पूँजीपति लोग सरकार की सहायता से राशन सामाग्रियों को खरीदते हैं और उन्हीं सामाग्रियों को अधिक

[1] मशीन, नुक्कड़ जनम सवाद अंक 16-17, पृ : 18

[2] बोल री मछली कितना पानी, अरविंदकुमार, मुक्ति से, पृ : 127

कीमत पर बेचते हैं| राशन कार्ड मिलने के लिए भी लोगों को कई ऐसी कारवाईयों से गुज़रना पड़ता है, जिन पर तीखा व्यंग्य उठाने का प्रयास 'समरथ को नहिं दोष गुसाई' नामक नुक्कड़ नाटक में किया गया है|

"जमूरा : ..... राशन कार्ड हम जैसे रोज़ कमाकर खानेवालों का नहीं बना करता| राशन कार्ड तो उनका बनता है जिनके पास रहने का पक्का ठिकाना हो|"[1]

इस नुक्कड़ नाटक में एक दूसरी बात भी चित्रित की गयी है कि गेहूँ के बाज़ार में मंदी आ गई है और मज़दूरों को खाना बनाने के लिए गेहूँ मिलता नहीं हैं, दूसरी ओर लाला अपने गोदाम में गेहूँ की दो-चार माल गाड़ियाँ बंदकर आउट ऑफ स्टॉक का बोर्ड लगा दी है|

जन नाट्यमंच का एक नुक्कड़ नाटक "जब चोर बने कोतवाल" में ऐसे पूँजीपति वर्ग का चित्रण हुआ है जो अपनी स्वार्थ-पूर्ति केलिए मज़दूरों की हत्या करने के लिए भी तैयार है| नाटक में बताया गया है कि सेठ लोगों ने पत्थर को इतना छोटा-छोटा टुकड़ा बनाया है ताकि उसे दालों में मिलायें और वही दाल जनता को दे दें| जनता की जान के साथ ऐसी घिनौनी खिलवाड़ करने से भी ये चुकते नहीं है|

किसानों की स्थिति भी मज़दूरों से भिन्न नहीं है| आज़ादी के सतसठ साल बीतने के बाद भी भारत के कई गाँवों में आज भी असंख्य बदनसीब बच्चे

[1] समरथ को नहिं दोष गुस्साई, नुक्कड़ जनम संवाद अंक 16-17, पृ : 35

हैं, जो दो जून रोटी के लिए तरसते है| कई दिनों तक घर में चूल्हे भी न जलते हैं| ऐसी एक कुटिया में किसुन और शंकर जैसे दो भूखे बच्चे के फ़रियाद नाटककार हमें सुनाता है –

"किसुन (निरीह भाव से) : माँ बोलती है, अब दोपहर का खाना नहीं बनेगा| एक बार रात को रोटी बनेगी| ....

शंकर : जा, माँ से कहना, अगर आटा हो तो दो रोटियाँ अभी बना दो|

किसुन : माँ, मुझे भूख लगी है| रोटी दो, ... चूल्हा जलाओ न माँ भूख से पेट दर्द कर रहा है|"[1]

भारतीय न्याय-व्यवस्था भी अब मज़दूरों के विरुद्ध हो गयी है| किस प्रकार न्याय-व्यवस्था के उच्च पदों में विराजमान व्यक्ति पूँजीपतियों से चंदा लेकर मज़दूरों को पीटते हैं, इसका चित्रण जन नाट्य मंच के नुक्कड़ नाटक "एक मज़दूर की स्वाभाविक मौत" में हम देख सकते हैं| इसमें चित्रित किया गया है कि एक पूँजीपति के बेटे के मोटोर कार से टक्कर लेकर एक मज़दूर की मृत्यु हो जाती है| लेकिन जब मुकदमा अदालत में पेश की जाती है तो वह एक स्वाभाविक मौत बन जाता है| जज ने रिश्वत लेकर उस हत्या को एक स्वाभाविक मौत बनाया|

कारखानों में काम करनेवाले मज़दूरों की दर्दनाक स्थिति की ओर इस नाटक में संकेत है| कारखानों में काम करनेवाले मज़दूरों को पहनने के लिए

[1] बोल री मछली कितना पानी, अरविंदकुमार, मुक्ति से, पृ : 132

मास्क नहीं देते हैं| वहाँ की दूषित धुआँ को लेकर इनके फेफड़े तो खराब हो गये हैं| वहाँ केवल सुपरवाईज़र तथा मालिक को ही मास्क दिया जाता है, बाकी सब इसी धुँआ लेने के लिए अभिशप्त हैं|

मालिक लोगों के दुष्ट व्यवहार से यदि मज़दूर लोगों को कुछ हो जाए तो ये इनसे हाथ धो बैठते हैं| इस प्रकार की एक घटना का चित्रण "अन्धेरा अफताब माँगेगा" नामक नुक्कड़ नाटक में देख सकते हैं| कारखाने के सुपरवाइजर ने एक मज़दूर को पार्ट सरक्यूटवाले मशीन पर काम करवाया जिसकी वजह से उसकी मृत्यु हो जाती है| लेकिन यह मानने के लिए सुपरवाइज़र तैयार नहीं है| अपनी त्रुटी को छुपाने के लिए वह उस मज़दूर के बेटे को उस कारखाने में नौकरी देता है|

अपनी त्रुटि को छिपाने के लिए वह उस मज़दूर के बेटे से कहता है –

".....वह मेरी बात समझता ही नहीं था| कहता था – जब तक मैं काम नहीं करता न बाऊजी, मुझे रोटी में स्वाद नहीं आता, मैं इस मशीन पर काम करना चाहता हूँ| ये काम ही उसका काल बन गया|"[1]

मज़दूर लोग यदि एकता के साथ रहेंगे तो वह मालिकों के लिए खतरा बन जाएगा| इसलिए मालिक लोग हमेशा मज़दूरों के बीच विभागीयता लाने की कोशिश करते हैं| एक साथ होकर यदि मज़दूर लोग हड़ताल करेंगे तो इन

[1] अन्धेरा अफताब माँगेगा, नुक्कड़ जनम संवाद अंक 16-17, पृ : 96

मालिकों के कारखाने बंद हो जायेंगे| ऐसा न होने के लिए मालिक लोग कुछ न कुछ वादा देकर मज़दूरों को अपने वश में लाने का प्रयत्न करते हैं| यदि हड़ताल में भाग न लेंगे तो डबल वेज़ देने का वादा देते हैं तो कुछ मज़दूर लोग इनके जाल में फँस जाते हैं|

मालिकों की साजिश में फँसनेवाले मज़दूरों का चित्रण जन नाट्यमंच के नुक्कड़ नाटक 'जिन्हें यकीन नहीं था' में हुआ है| कारखाने के बाहर मज़दूरों का हड़ताल चल रहा है और कारखाने के अन्दर कुछ मज़दूर लोग काम कर रहे हैं| इन लोगों को डबल वेतन देने का वादा किया गया है|

कुछ मज़दूर लोग मालिकों की इस साजिश से अनभिज्ञ है| वे सोचते हैं कि उनके प्रति विशेष लगाव के कारण ही मालिक उन्हें डबल वेज़ दे रहा है| इस नुक्कड़ नाटक के माध्यम से मालिकों की साजिश से मज़दूरों को अवगत कराने का प्रयास भी किया है| नाटक में 'शब्बो' नामक पात्र इस बात को व्यक्त करता है|

"शब्बो : .....हमें डबल वेज़ इसलिए मिल रहा है क्योंकि बाहर हड़ताल है और हम अन्दर काम कर रहे हैं|"[1]

मज़दूरों के शोषण के विरुद्ध प्रतिरोधात्मक स्वर

नुक्कड़ नाटकों की एक अहमियत यह है कि उन्होंने मज़दूरों की समस्याओं का चित्रण करने के साथ-साथ इन शोषणों के विरुद्ध आवाज़ उठाने

[1] जिन्हें यकीन नहीं था, नुक्कड़ जनम संवाद अंक 16-17 , पृ : 104

का आह्वान भी दिया है| कई नुक्कड़ नाटक ऐसे हैं जो मज़दूरों को अपने शोषकों के विरुद्ध धावा बोलने के लिए उकसाता है|

जन नाट्यमंच का नुक्कड़ नाटक 'हल्लाबोल' इस प्रकार का एक नुक्कड़ नाटक है जिसका शीर्षक ही शोषितों को आंदोलित कर देनेवाला है| इस नाटक का प्रतिपाद्य श्रमिकों की विवशपूर्ण जीवन स्थितियाँ तथा उन स्थितियों से मुक्ति पाने के लिए संघर्ष की तैयारी है|

श्रमिकों के हित के लिए श्रमिक-संगठनों की आवश्यकता की ओर इस नुक्कड़ नाटक में संकेत है| नाटक में सूत्रधार मज़दूरों को सावधान करता हुआ कहता है : "जिन फैक्ट्रियों में यूनियन नहीं है वहाँ के पक्के-मज़दूरों का भी यही हाल है – मालिक 562 पर अंगूठा लगवाकर 300-400 पकड़ा देता है|"[1]

'गाँव से शहर तक' नामक नुक्कड़ नाटक में मज़दूरों में क्रांति चेतना लाने की कोशिश की गयी है| नाटक में सूत्रधार देश के श्रमिकों को ललकारता है क्योंकि इस शोषक-अन्याय-व्यवस्था से न्याय की याचना करना, आशा करना व्यर्थ है| श्रमिकों में छिपी हुई शक्ति पर सूत्रधार को पूरा भरोसा है, इसीलिए वह उन्हें उस शक्ति को जागृत कर उसका सदुपयोग करने का सुझाव देता है|

[1] हल्लाबोल, नुक्कड़ जनम संवाद अंक 16-17, पृ : 75

"सूत्रधार : "मेरे देश के मज़दूरो, मेरी धरती के लालों मेरे देश के आवारा बच्चो आओ एक जुट हो जाओ और पहचान लो कि केवल एक ही रास्ता है – मेहनतकश एकता का रास्ता|"[1]

बिल्कुल ऐसी ही एक चेतना का प्रसार 'मशीन' नामक नुक्कड़ नाटक में भी हैं| प्रस्तुत नाटक में मिल-मालिक श्रमिको पर गोलियाँ चलवाता है| बहुत से मज़दूर गिर पड़ते हैं किन्तु फिर बहुत से उठ खड़े होते है और मालिक तथा सुरक्षा अधिकारी को घेर लेते है| इस संघर्ष में उनकी वर्ग चेतना स्पष्ट झलकती है| यहाँ नाटक दर्शक श्रमिको में उत्साह जागृत करता है कि यदि वे सब एकबद्ध हो जाए तो शोषण व् अन्याय से अपनी मुक्ति तो वे स्वयं प्राप्त कर सकते हैं|

इस नुक्कड़ नाटक में सूत्रधार आह्वान करता है : "बढती ही जायेंगी यह इन्कलाबी टोलियाँ, कौन रोकेगा इन्हें? कौन रोक सकता है मज़दूरों को? कौन? कौन?"[2]

जन नाट्यमंच का एक अन्य नुक्कड़ नाटक 'समरथ को नहिं दोष गुस्साई' में भी अपने शोषकों से मज़दूरों को अवगत कराने का प्रयास किया गया है| इस नुक्कड़ नाटक में सूत्रधार की भूमिका मदारी ने की है|

[1] गाँव से शहर तक, नुक्कड़ जनम संवाद अंक 16-17, पृ : 25

[2] मशीन, नुक्कड़ जनम संवाद अंक 16-17, पृ : 20

"मदारी : ".....आज जो कुछ मैं ने दिखाया वह हाथ की सफाई नहीं, जादू टोना नहीं बल्कि पिछले 40 साल के हिन्दुस्तान की सच्चाई है ..... मैं ने जो मंत्री आज इस मंच में पेश किया .....वो हिन्दुस्तान का समाजवादी शहनशाह है| .....यह मंत्री, यह सेठ, यह पुलिस – यह आपको रोज़ मिलेंगे| आपको अपनी आँखे खुली रखनी होंगी, आपको अपने दिमाग रोशन रखने पड़ेंगे, आपको सोचना होगा, आपको फैसला करना होगा कि आपके असली दुश्मन कौन है|"[1]

'संघर्ष करेंगे जीतेंगे' नामक नुक्कड़ नाटक में 'संघर्ष' नामक एक प्रतीकात्मक पात्र चित्रित है जो समाज में व्याप्त सभी अनीतियों के विरुद्ध संघर्ष करने की प्रेरणा देता है| इस नुक्कड़ नाटक का अंत इसी नारे के साथ हुआ है कि "हर ज़ोर जुल्म की टक्कर में संघर्ष हमारा नारा है|"

शंकर/फूलवती : तुम लाख कर लो जुल्म
संघर्ष रुक न पाएगा
काफिला जो चल पड़ा है
अब न रोका जाएगा
गोलियों की गूंज से आवाज़ दब न पाएगी
जंग यह जीने की है अब नहीं रुक पाएगी|"[2]

(सभी गाना गाते हैं|)

[1] समरथ को नहिं दोष गुस्साई, नुक्कड़ जनम संवाद अंक 16-17, पृ : 42

[2] संघर्ष करेंगे जीतेंगे, नुक्कड़ जनम संवाद, अंक 16-17, पृ : 92

उसी प्रकार शिवरामजी ने अपने नुक्कड़ नाटक 'जनता पागल हो गयी है' में शोषकों के प्रति अपना विद्रोह प्रकट किया है| नाटक में जनता का प्रतिनिधि बने पात्र जिसको 'जनता' नाम ही दिया गया है, वह पूँजीपति वर्ग के शोषण के खिलाफ विद्रोह करती है| पूँजीपति 'जनता' को कारखाने में काम दिलाता है और सलाह देता है कि जनता परिश्रम करें और फल की अपेक्षा न रखें| दिन-रात कठोर परिश्रम करनेवाली जनता कुछ दिनों के बाद जब हड़ताल करती है तो पूँजीपति मिलिटरी बुलाकर जनता पर गोली चलाता है, लेकिन सत्तर करोड़ जनता हुंकार उठती है|

शिवराम ने यही आह्वान दिया है कि संघर्ष में जीतने के लिए जनता को साहस जुटाना है| कभी-भी बुजदिल न बनना है| एक आदमी पर गोली दागने से पूरी जनता पराजित नहीं हो जायेगी| उस मृत आदमी के रक्त की एक-एक बूँद से उससे भी शक्तिशाली हज़ारों लाखों करोड़ो जनता जन्म लेगी| इसकी ओर संकेत करते हुए नाटककार कहता है –

"और जनता चुन लेंगे| मर जाने दो जनता को| अरे कोई एक आदमी का नाम है जनता| देश के सत्तर करोड़ मेहनतकश लोगों का नाम है जनता, किस किसको मारोगे?"[1]

[1] उत्तरार्द्ध, मई 1983, पृ : 55-56

शैक्षिक क्षेत्र में व्याप्त अनीतियों का चित्रण

समाज सुधार में शिक्षा महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है| शिक्षा प्राप्त करने पर ही एक व्यक्ति अपने ऊपर होनेवाले अत्याचारों को समझ सकते हैं, और उसके खिलाफ आवाज़ उठा सकते हैं| इसीलिए शिक्षा की आवश्यकता और प्रधानता पर बल देने की प्रवृत्ति नुक्कड़ नाटककारों की ओर से भी हुई है|

वास्तव में शिक्षा के दो प्रमुख उद्देश्य हैं| पहला उद्देश्य यह है कि शिक्षा सामाजिक परिवर्तन की दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है| दूसरा उद्देश्य यह है कि शिक्षा का असर व्यक्ति के सर्वांगीण-विकास में होता ही रहता है| ज्ञान अथवा शिक्षा तो दुनिया को बदलने की शक्ति ही है| शिक्षा जीवन के तीव्र अंतर्विरोधों को पहचानने में और नये समाज के सृजन में क्रान्तिकारी भूमिका निभाती हैं| सारांश यह है कि सामाजिक परिवर्तन के साथ नये समाज के निर्माण में शिक्षा का स्थान अत्यंत सराहनीय है|

साक्षरता-अभियान पर आधारित जन नाट्यमंच, दिल्ली के नाटक 'पढना लिखना सीखो' इस दृष्टि से एक उल्लेखनीय नुक्कड़ नाटक है| इस नाटक में मास्टर नामक एक प्रतीकात्मक पात्र की सृष्टि करके उसके माध्यम से शिक्षा की ज़रूरत पर ज़ोर डाली गयी है| इस नाटक के भीतर शिक्षा की भूमिका को लेकर गाँववाले नाटक तैयार करते हैं| मास्टर नामक पात्र गाँव-गाँव घूमकर बच्चों को इकट्ठा करता है और पढ़ाने का इंतज़ाम करता है| लोगों को शिक्षित करने की दिशा में मास्टर को कड़ी चुनौतियों का सामना करना पड़ता है|

इस नुक्कड़ नाटक में एक ऐसे गाँव का चित्रण किया गया है जहाँ के गाँववालों का सारा ध्यान किसी तरह दो जून रोटी जुटाने में लगता रहता है| ऐसे लोग सहज ही प्रश्न करेगा – "जब पेट की भूख आँखे नोंचती है तो दिमाग के बारे में कौन सोचता है?"[1]

उस गाँव में कुछ ऐसे लोग भी है जो शिक्षा की महिमा नहीं जानते हैं| ये लोग अपने बच्चों को स्कूल भेजने के लिए तैयार नहीं है, विशेषकर लड़कियों को|

'पढ़ना लिखना सीखो' नाटक की चंदा नामक लड़की भारत की उन हजारों अभागिन लड़कियों की प्रतिनिधि बनकर आती है जिन्हें पढने का शौक होते हुए भी एक स्कूल का दरवाज़ा तक देखने का नसीब नहीं मिला है| चंदा के पिता गोकुल की राय में – "यहाँ लड़कियाँ यूँ न निकला करे हैं बाहर| क्या करेंगी पढ़ लिखकर? संभालना तो इसे चूल्हा ही है|"[2]

शिक्षा के प्रति गाँववालों का रवैया भी इस नुक्कड़ नाटक में प्रस्तुत है| गाँववालों के लिए शिक्षा बिल्कुल गौण ही है| वे यही मानते हैं कि पढ़ लिखकर भी कुछ नहीं करना है| उनकी ज़िन्दगी हमेशा यही रहेगी| पढाई-लिखाई का गांववाले इसलिए बकवास मानते है कि कई पढ़े-लिखे लोगों को फैक्ट्रियों में खटते हुए उन्होंने देख लिया है –

[1] नुक्कड़ जनम संवाद जनवरी-जून 2003 जन नाट्यमंच दिल्ली (सं) पृ : 95
[2] नुक्कड़ जनम संवाद जनवरी-जून 2003 जन नाट्यमंच दिल्ली (सं) पृ : 96

"..... पर पढ़-लिखकर तो हमें रहना तो मंज़ूर ही है| गाँव में, खेतों में, ...फैक्टरी में"[1]

जनम के इस नुक्कड़ नाटक में शहर में हुई ठेका मज़दूरों की हड़ताल का ज़िक्र है| इस हड़ताल में मज़दूरों के अनपढ़ होने का लाभ उठाकर उन्हें बहकाया जाता है कि यह हड़ताल उनके पक्ष में नहीं है| यह बात सुनकर मज़दूर लोग हडतालियों का साथ देना छोड़ देते हैं| हड़ताल के विरोधी, उद्योगपति के साथी, अनपढ़ मज़दूरों को हड़ताल संबंधी पर्चे की सच्ची बात नहीं बताते हैं|

जब 'मास्टर' नामक पात्र हडतालियों का उद्देश्य मज़दूरों से बताता है तभी इन लोगों की आँखे खुलती हैं| मास्टर शिक्षा की महिमा की ओर संकेत करते हुए बताता है कि अगर तुम पढ़ना जानते हो तो अपने हक़ की बात करनेवाले को पहचान लेते, तुम्हें वक्त निकालकर पढ़ना-लिखना सीखना चाहिए|

शिक्षा के क्षेत्र में होनेवाले भ्रष्टाचार अनैतिकताओं को व्यक्त करने का प्रयास 'राजा का बाजा' नामक नुक्कड़ नाटक में किया गया है| किस प्रकार शिक्षा विभाग के उन्नत पदों में विराजित लोग समाज के उच्च वर्ग के हितों की पूर्ति के लिए अपने पदों का दुरुपयोग करते हैं, इसकी ओर भी इसमें इशारा किया गया है|

[1] नुक्कड़ जनम संवाद जनवरी-जून 2003 जन नाट्यमंच दिल्ली (सं) पृ : 95

"वाइस चान्सलर : उत्तेजित न हो बेटे, तुम मेरे पास अपनी समस्याएँ लेकर कभी नहीं आए| मैं तुम्हारे पिताजी की जगह हूँ और यूनिवर्सिटी का वाइस चान्सलर भी| काश तुम .... यूनियन के बहकावे में न आकर मेरे खिलाफ नारेबाज़ी न करते तो ऐनमुमकिन था कि मैं तुम जैसे होनहार लड़के के लिए किसी भी हद से दुज़र जाता|

रामेश्वर : आपकी हद मैं ने देखी है वाइस चान्सलर साहब| मिनिस्टर के भतीजे को स्कालरशिप देने के लिए आपने यूनिवर्सिटी के सारे कायदे कानून बदल दिए, सेठ साहब के लड़के को एडमीशन की खातिर अक्ल के सारे घोड़े दौड़ा दी| .....आप किस हद तक मेरी मदद कर सकते हैं, मालूम है|"[1]

जनम का यह नुक्कड़ नाटक 'राजा का बाजा' शिक्षा क्षेत्र में व्याप्त सारी अनीतियों को हमारे सामने लाते हैं| नाटक में प्राध्यापक, प्रिंसिपल, डीन, हेड सभी प्रतीकात्मक पात्र हैं, जिसके माध्यम से महाविद्यालयों में पढ़नेवाले गरीब विद्यार्थियों की ओर इनकी तरफ से होनेवाले अत्याचारों का पोल खोला गया है|

स्कूल, महाविद्यालय और विश्वविद्यालय में पढनेवाले कई छात्र होते हैं, जो अपने परिवार की आर्थिक तंगी के कारण एक किताब भी खरीद नहीं सकते| "रामेश्वर ऐसे छात्रों का प्रतिनिधि बनकर नाटक में आता है जो अपने विभागाध्यक्ष से आर्थिक मदद माँगता है, तो उसका झट उत्तर है :

[1] राजा का बाजा, जन नाट्यमंच, नुक्कड़ जनम संवाद जनवरी-जून 2003, पृ : 52

".....नोट्स बनाने के लिए किताबें जुटाने का कर्तव्य तुम्हारा है, अध्यापक वर्ग का नहीं|"[1]

दरअसल इस विभागाध्यक्ष के लिए एक गरीब छात्र की मदद करना, एक बोझ नहीं| नैतिक मूल्यों को तरजीह देनेवाला एक अध्यापक, अपने शिष्य को ज्ञान परोसने के साथ साथ उसकी आर्थिक परेशानी को भी बाँटता है|

नुक्कड़ नाटकों में नारी समस्याएँ

भारत में ही नहीं, विश्व भर में नारी-शोषण की परंपरा पुराने ज़माने से लेकर चली आ रही है| हमारी पौराणिक कथाओं में इसके लिए कई उदाहरण मिलते हैं, जैसे सीता, अहल्या, रेणुका, द्रौपदी, शूर्पनखा आदि| ये सारी औरतें जो समय-समय पर हिंसा की शिकार बनी और हिंसा के लिए उन्हीं को ही ज़िम्मेदार ठहराया गया|

स्वातंत्र्योत्तर भारत में तो नारियों की रूढ़िगत स्थिति में तो बहुत अधिक परिवर्तन आया, फिर भी वह पुरुषों के शोषण की शिकार रही| आज़ादी मिलने के बाद भारतीय नारी वर्ग रुढ़ी-जाल से मुक्त होने की दिशा में स्वाभिमान के साथ सक्रिय हुआ|

औद्योगीकरण के फलस्वरूप भारत में जो नवीन काम-विभाजन आ गया, उसमें नारी भी कामकाजी हो गयी| जहाँ पुराने ज़माने में स्त्रीयों का

[1] नुक्कड़ जनम संवाद जनवरी-जून 2003, पृ : 52

दायित्व मात्र परिवारवालों का देखभाल करना था, वहाँ आधुनिक युग में आकर जब वह कामकाजी हो गई तो उसका दायित्व दुगुना हो गया| इस नयी दुनिया में नारी को कई यातनाएँ झेलनी पड़ी|

नुक्कड़ नाटक नारी शोषण की कहानी को मूर्त करते हैं| नुक्कड़ नाटकों में चित्रित नारी भिन्न-भिन्न भूमिकाएँ लेकर आती हैं, जिनके द्वारा नारी समाज की विभिन्न समस्याओं का अंकन किया गया है|

नारी शोषण – शारीरिक शोषण – बलात्कार

नारी चाहे पुरुष के समान और उतनी मात्रा में काम करें, फिर भी उसे कम वेतन दिया जाता है| पुरुष के समान वेतन उसे नहीं मिलता है| लगभग सभी कारखानों में यही नीति चली आ रही है| अगर उसे अधिक वेतन मिलना है तो मिल के मालिकों तथा सुपरवाइज़रों के सामने अपना ईमान गिरवी रखनी पड़ती है|

नारी शोषण के इसी मुद्दे का चित्रण जन नाट्य मंच के नुक्कड़ नाटक 'एक मज़दूर की स्वाभाविक मौत' में किया गया है| इसमें 'रजनी' नामक पात्र मिलों में काम करनेवाली नारियों का प्रतीक है| वह जिस कारखाने में काम कर रही हैं, वहाँ के अफसर लोग उसे भोग की दृष्टि से देखते हैं|

"रजनी : तो हरामी सुपरवाइजर मेरा हाथ पकड़कर कहने लगा, पूरा वेतन लेना है तो आफिस बंद होने के बाद शाम को आइए, साथ में इनाम भी देगा।"[1]

हंसराज ड्रामेटिक सोसाइटी के नुक्कड़ नाटक "जीना है तो लड़ना होगा" में भी इसी बात को उठाया गया है। इसमें भी ऐसी एक नारी पात्र का चित्रण है, जिसका नाम है फूलमती। फूलमती को वेतन 864 रुपये मिलते हैं। लेकिन उससे 1562 पर अंगूठा लगाने को कहता है। जब वह इसके लिए तैयार नहीं होती है तो मालिक का दूसरा रूप प्रकट होता है। मालिक उसे अपनी मीठी वाणी के जाल में फँसाने की कोशिश ज़ारी रखता है – "अरे रानी 1562 क्या तू कहें तो और दे दूँ। कबसे कह रहा हूँ अपनी इन प्यार भरी नज़रों से एक बार देख ले ज़ालिम। बस एक रात की तो बात है, फिर तू जितना कहेंगी, उतना दूँगा।"[2]

समाज के हर एक क्षेत्र से नारी को इसी प्रकार के बदतमीज व्यवहार ही मिलते हैं। इंटरव्यू के लिए जाते वक्त भी नारियों की शैक्षि- योग्यता पर नहीं बल्कि उसकी शरीर-क्षमता पर ही मालिकों की नज़र पड़ते है। जन-नाट्य मंच के नुक्कड़ नाटक 'औरत' के ये वाक्य सच्चाई के विभिन्न परतों से खोल देता है।

"औरत : एक जगह से इंटरव्यू का बुलावा आ गया। .....कल तक कालिज में आवारागर्दी करनेवाला एक सेठ का लड़का आराम कुर्सी पर बैठा था। वही मालिक था, उस दफ्तर का, जहाँ नौकरी मिलती थी। लेकिन मैं

[1] नुक्कड़ जनम संवाद अंक 16-17, पृ : 127

[2] नुक्कड़ जनम संवाद अक्तूबर 2005 – मार्च 2006, पृ : 45

समझ नहीं पायी कि इंटरव्यू लेने वाला मेरी डिग्री में दिलचस्पी रखता था या मेरे शरीर में|"[1]

भारतीय समाज में अधिकांश रूप से सामंती मानसिकता ही चलती है जो नारी को किसी पुरुष के नियंत्रण में रखती है, और उसे आज़ादी नहीं देती है| इसी व्यवस्था के तहत स्त्री की सार्थकता उसे एक अच्छे पति मिलने पर ही है और उस पति के अधीन होकर उसे जीना भी चाहिए| जो नारी इसके लिए तैयार नहीं होती हैं उसे पुरुष अधीन समाज से थपेड़े ही मिलते हैं| 'औरत' नामक नुक्कड़ नाटक में चित्रित किया गया है कि दिहाड़ी पर काम करनेवाली एक औरत जब अपने मेहनताने पर आवाज़ उठाती है तो उसे नौकरी से निकाल दी जाती है|

नारियों को घूरकर देखना मानो पुरुष अपना अधिकार मानते हैं| जन नाट्य मंच के नुक्कड़ नाटक 'ये भी हिंसा है' में इस बात की ओर संकेत हैं –

"देखेंगे हर बच्ची को, जवानी को, बूढ़ी को, हर औरत को, स्कूल में, सड़क पर, बाज़ार में, कॉलेज में, घर में, आफिस में ..... यहाँ तक की मृत्यु की शय्या पर भी घूरेंगे उसे| इसमें हर्ज़ ही क्या है? ये तो हमारा मौलिक अधिकार है, आखिर एक आज़ाद देश के आज़ाद बाशिंदे हैं|"[2]

[1] औरत, नुक्कड़ जनम संवाद जनवरी-जून 2003, पृ : 48

[2] ये भी हिंसा है, नुक्कड़ जनम संवाद अक्तूबर 2005 – मार्च 2006, पृ : 73

नारी को जीवन के हर क्षेत्र से इसी प्रकार की बुरी नज़र का सामना करना पड़ता है| अब हमारा समाज एक ऐसे निम्न तब्के की ओर चल रहा है कि छोटी बच्ची को भी लोग काम लिप्सा की दृष्टि से ही देखते है| प्रतिदिन हम अखबारों में पढ़ते हैं कि दो-तीन पाँच आयु से लेकर हमारी बच्चियाँ शोषण की शिकार बनी रही है|

इसी बात का चित्रण जन नाट्यमंच के नुक्कड़ नाटक 'औरत' में है| इसमें एक बच्ची जो स्कूल में पढ़ रही है जब दूकान में उधार में आटा लेना चलती है तो दूकानदार उसे भोग लिप्सा की दृष्टि से देखते हैं|

जन नाट्यमंच ने दिल्ली में 'बाल यौन शोषण के विरुद्ध पीपल्ज़ फोरम' के अभियान के लिए 'आर्तनाद' नामक एक नुक्कड़ नाटक किया था| हमारी छोटी बच्चियों पर होनेवाले यौन शोषण का चित्रण करके उसके विरुद्ध आवाज़ उठाने का आह्वान देनेवाला नुक्कड़ नाटक है यह|

"कांस्टेबल : .....उन्होंने बताया कि हमारी लड़की के साथ हो गया है बलात्कार| लड़की का नाम प्रीति, उमर 10 साल, राजकीय बाय एन्ड गर्ल विद्यालय में पढ़ती है| जो ट्यूशन पढाता है उसीने बलात्कार कर दिया|"[1]

इस बलात्कार के लिए प्रीति का दादा, प्रीति और उसकी माँ को ही दोषी ठहराते हैं| प्रीति की माँ से दादाजी कहते हैं कि प्रीति के कारण उन

[1] नुक्कड़ जनम संवाद जनवरी-जून 2003, पृ : 108

सबकी नींद हराम हो गयी है| लेकिन बेला इसे मानने के लिए तैयार नहीं है| अपनी बेटी पर हुए अत्याचार के विरुद्ध लड़ने की इच्छा है उसके मन में|

"बेला : .....वो कमीना पवन कुमार उसका कुछ नहीं| सारा कसुर मेरी बच्ची का ही है|

दादा : सारा कुसूर तुम्हारा है| तुम दोनों का दोष है| कितनी बार समझाया, मत भेजो लड़के-लड़कियों को एक साथ स्कूल में| छोटी छोटी स्कर्ट पहनाकर भेज देंगे स्कूल में अब भुगतो|"[1]

'औरत' नुक्कड़ नाटक में एक पढ़ी लिखी लड़की का चित्रण हुआ है| पढ़ी लिखी होने पर भी वह शोषण से बचती तो नहीं है| नाटक में चित्रित है कि शहर तो गुंडे से भरे हुए है, और सड़क से जाने वाली हर एक नारी पर ये लोग भेडियों की तरह झपटते है| पुलिस भी इनके पक्ष लेती है|

कॉलेज से घर लौटनेवाली लड़की का रास्ता रोककर उसके साथ छेड़खानी करने वाले गुंडों के बारे में पुलिस से शिकायत करते ही लड़की पर पुलिस बरस पड़ता है क्योंकि गुंडे पुलिस की जेब भरते हैं|

"ऐसी ही सती-सावित्री है तो घर में बैठो| क्यों भटक रही है गली-कूचों में? और यह सब पसन्द नहीं तो टैक्सी में आया जाया कर|"[2]

[1] नुक्कड़ जनम संवाद जनवरी-जून 2003, पृ : 109

[2] नुक्कड़ जनम संवाद जनवरी-जून 2003, पृ : 48

आजकल नारियों की इज्जत पर आक्रमण एक सामान्य बात है| घर में बाप, भाई से लेकर समाज के हर एक पुरुष स्त्री को काम-लोलुपता की आँखों से देखते हैं| सबसे दुखी बात यह है कि जब कभी-भी इस प्रकार की हमला होता है, अधिकांश लोग औरत को ही उस के लिए ज़िम्मेदार कहते हैं| लोगों की इस प्रकार की क्रूर मानसिकता का अंकन 'ये भी हिंसा है' नामक नुक्कड़ नाटक में है –

"औरत 2 : दरिन्दे के इस शहर में जब किसी औरत पर हिंसा होती है, तो हम उस औरत को ही दोषी ठहराते हैं, और गुनाहगार साफ़ बच निकलता है|"[1]

इसके विरुद्ध आवाज़ उठाने का प्रयास भी इस नुक्कड़ नाटक में हुआ है| इस नाटक का अंत ऐसे एक आह्वान के साथ ही होता है| नारी वर्ग पर होनेवाले अत्याचारों के खिलाफ लड़ने का आह्वान दिया गया है कि

"अगली बार अगर इस तरह की घटना किसी लड़की के साथ होती है तो उसे नहीं चाहिए आप लोगों का तरस, आपकी हँसी, आपकी दया| उसे चाहिए केवल इंसाफ, बराबर का व्यवहार, सर उठाकर जीने का अधिकार| आपके मुहल्ले में, गली में, दफ्तर में, सड़क पर, कही पर अगर किसी औरत पर, हिंसा होती है, तो चुप न रहिए, उसे रोकिए|"[2]

[1] नुक्कड़ जनम संवाद अक्तूबर 2005 – मार्च 2006 जन नाट्यमंच दिल्ली (सं), पृ : 77

[2] नुक्कड़ जनम संवाद अक्तूबर 2005 – मार्च 2006, पृ : 77

लड़का-लड़की का भेदभाव

बचपन से लेकर नारी को दूसरे दर्जे की हैसियत ही मिलती है| इतना ही नहीं जब बच्ची का जन्म होता है तो घरवाले बहुत दुखी होते हैं| परंपरा से लेकर आनेवाली एक बात है यह| थियेटर यूनियन ने लोगों की इसी मानसिकता को लेकर 'बच्ची आयी है' नाम से एक नुक्कड़ नाटक किया है| इसमें चित्रित है कि लड़की को जन्म देने के कारण एक स्त्री को उसके पति, सास-ससुर एक साथ मिलकर कोसते हैं| स्वयं नारी होने पर भी सास उस नारी का साथ नहीं देती है|

घर में लड़की और लड़के के पालन पोषण में भेद किया जाता है| इस बात की ओर इशारा करने का प्रयास 'औरत' नुक्कड़ नाटक में हुआ है|

" : गले में लटका के मर क्यों नहीं जाती कम्बख्त? तेरी माँ मर गयी है, तू भी मर जा, पीछा छूटेगा| एक लड़का है, किसी तरह पाल लूँगा| कहाँ से लाऊँ तेरे लिए|"[1]

लड़का चाहे जो भी कर सकता है, अपनी इच्छा के अनुसार कहाँ भी घूम सकता है| लेकिन नारी को ऐसी कोई आज़ादी नहीं दी जाती है| पढने के लिए, खेलने के लिए, कुछ भी करने के लिए उसे बाहर जाने की अनुमति नहीं दी जाती है| अगर मिली तो भी अँधेरा होने के पहले-ही पहले घर लौट आना पड़ता है|

[1] नुक्कड़ जनम संवाद जनवरी-जून 2003, पृ : 45

"सुषमा : हमारा कबड्डी का मैच है| रात को नौ-साढ़े नौ तक घर लौटूँगी| फिकर मत करना|

मंगला : ..... कितनी बार कहा कि तू है लड़की, तुझे दिया बत्ती से पहले घर के अन्दर होना चाहिए|" .....नई नवेली उमर में लड़की को चाहिए कि सजधज करें, इतराए ..... कल से सूरज डूबते-न-डूबते घर के अन्दर होना पड़ेगा|"[1]

शादी शुदा नारी की समस्याएँ तथा दहेज प्रथा के कारण होने वाले नारी शोषण

शादी को लेकर स्त्रीयों के जीवन में आ जानेवाली समस्याओं की गिनती ही असंभव है| दहेज के नाम पर सास ससुर का शोषण तथा पति की दुष्प्रवृत्तियों का सहन करने के लिए विवश नारी वर्ग की त्रासद ज़िन्दगी का अंकन कई नुक्कड़ नाटकों में हम देख सकते हैं| नारी को सामंती संस्कारों की चक्की में पीसा जाता है साथ ही दहेज के लिए प्रताड़ित भी किया जाता है| स्त्री को बिना प्रतिवाद किए घर बाहर के दायित्वों को निभाना पड़ता है|

शादी के पहले नारियों को इतना अधिक सलाह अपने माइके से दिए जाते हैं कि ससुराल में उसे कैसा व्यवहार करना चाहिए? वहाँ जो भी दुविधाएँ होंगी उन सबको कैसे सह लेना चाहिए आदि| सास ससुर भी अपनी नयी बहु को ऐसे अनेक सलाह देते हैं|

[1] नुक्कड़ जनम संवाद अप्रैल-सितंबर 2007, पृ : 107

शादी के बाद ससुराल में कदम रखते ही उसकी अग्निपरीक्षा शुरू होती है| पंडित की, सास-ससुर की, पति की, न जाने किन किन लोगों की आज्ञा का पालन करने के लिए वह कटिबद्ध है|

पण्डित का उपदेश है कि – "सास ससुर की आज्ञा मानोगी, पति को साक्षात भगवान जानोगी| पहले उन्हें खिलाओगी, फिर खुद खाओगी| पति ससुर अन्याय भी करें तो उसे न्याय मानोगी| कभी पलटकर जवाब नहीं देगी| आँखें सदा नीची रखोगी| घर कामकाज संभालेगी|

पति की आज्ञा है – "फ़ौरन ही कोई काम तलाश करोगी| सबेरे ही सब्जी मंडी से साग तरकारी लाओगी .... बाबा का हुक्का भरोगी| झाड़ू-पोंछा, चौका-चक्की सब तुम्ही संभालोगी|

ससुर का हुक्म है - "इस घर में काम करने आई हैं आराम करने नहीं| सास ससुर को पूरा आराम दोगी| घर का सारा काम संभालोगी|"[1]

थियेटर यूनियन द्वारा सामूहिक रूप से रचित नुक्कड़ नाटक 'ओमस्वाहा' में तो दहेज के नाम पर लड़कियों की ज़िन्दगी में आनेवाली समस्याओं का अंकन ही हुआ है| इस नाटक के आरंभ ही एक ऐसे दृश्य से होता है कि दूल्हा बेचे जा रहे है – वे भी तरह तरह के आई.ए.एस. बैकर, बिजेनसमैन, डाक्टर, इंजीनियर, टीचर आदि|

[1] जन नाट्यमंच नुक्कड़ जनम संवाद जनवरी-जून 2003, पृ : 46

आगे बताते हैं कि दूल्हा चाहे कोई भी मिल सकते हैं, लेकिन सभी को अपनी पद प्रतिष्ठा के अनुसार दहेज देना ही है| दहेज देने के लिए जो तैयार नहीं है उसे दूल्हा भी नहीं है|

"एक : जो लोग दहेज न दे सके, वे अप्लाई न करें|"[1]

दहेज न देने के कारण या दिये हुए दहेज कम हो जाने के कारण लड़कियों को ज़िन्दा जलाती है| यह तो पीढ़ी-दर-पीढ़ी से होकर चली आ रही बात है| 'ओम स्वाहा' के माध्यम से इसी बात का चित्रण हुआ है| इसमें 'दीपा' नामक लड़की को उसके ससुरालवाले जिन्दा जलाते हैं और उसकी लाश पड़ते ही दूसरी शादी करने की बात करने से भी उसके पति हिचकते नहीं है|

दिल्ली के घर-घर में होनेवाली स्त्री हत्याओं की परंपरा की ओर हमारा ध्यान आकृष्ट करने का प्रयास भी इस नुक्कड़ नाटक में हैं| महानगरीय सभ्यता में ऐसा है कि पड़ोस में जो भी घटित हो जाय हम नहीं जानते है| पड़ोस में किसी लड़की को ज़िन्दा जला दी जायें, कोई नहीं जानते|

"सूत्रधार : सिर्फ दिल्ली में ही पिछले साल 200 लडकियों को जलाकर मार दिया गया| और उसमे से सिर्फ 5 केसों में सजा हुई| ..... वजह यह है कि इन पड़ोसियों ने न कुछ देखा, न सुना, न यह कुछ कह सकते हैं|"[2]

[1] नुक्कड़ जनम संवाद अप्रैल-सितंबर 2007, पृ : 71

[2] नुक्कड़ जनम संवाद अप्रैल-सितंबर 2007, पृ : 73

माँगे हुए दहेज देने पर भी लड़की को ससुराल में शांति मिलती नहीं है| दिन-ब-दिन ससुरालवालों की माँगे बढती जाती हैं| दहेज के नाम पर हर रोज़ पिटाई होती रहती हैं| रोज़ जली कटी बातें, नई माँगे और सब कुछ चुपचाप सहकर रहना आदि बातों से न जाने हर एक बहु की ज़िन्दगी इतनी दयनीय हो जाती है|

दहेज के नाम पर ससुरालवालों से होनेवाले अत्याचारों का सहन करके करके जब वह माइके वापस आती है तो भी उसे वहाँ शांति नहीं मिलती है क्योंकि घरवाले उसे समझाते हैं कि शादी के बाद पति का घर ही उसका घर है|

"पिता : बेटी, शादी के बाद लड़की अपनी ससुराल में ही अच्छी लगती है| तू यहाँ वापिस आकर क्या मेरी नाक कटवाना चाहती है| तू वहाँ वापिस जाकर अपना काम काज ध्यान से, मन लगाकर कर सब ठीक हो जाएगा|"[1]

पढ़ी लिखी होने पर भी कभी-कभी लड़की को उसके लिए योग्य न होनेवाले लड़के से शादी करनी पड़ती है| लड़की के घरवाले जो है वे लड़की की इच्छा कभी पूछते तक नहीं है| ऊँचे घर परिवार का लड़का है तो वे और कुछ नहीं सोचते हैं|

कालिंदी देशपांडे का नुक्कड़ नाटक 'सती' जो एक प्रतीकात्मक नुक्कड़ नाटक है वह एक ऐसी लड़की की कहानी बताती है जिसे दहेज के नाम पर विवश

[1] नुक्कड़ जनम संवाद अप्रैल-सितंबर 2007, पृ : 77

होकर सती होनी पड़ी| उसकी इच्छा न होने पर भी पति की मृत्यु के बाद उसके माँ बाप और ससुरालवाले मिलकर उसे सती बनाते हैं क्योंकि उनका मन अंधविश्वास में फँस गया है| यह सोचना कि सती होते ही बहु देवी बनेगी, लोग उसकी पूजा करेंगे और उसके दोनों कुल सात जन्म तक अक्षय कीर्ति पाएंगे|

हमारी रुढ़ीवादी परंपरा में सड़ी गली मान्यताओं पर कठोर प्रहार करते हुए सती जो कुछ कहती है वह बिलकुल सच है -

"अपने स्वार्थो के लिए पहले औरत का दमन करना ज़रूर पड़े तो उसे जिंदा जलाना और बाद में उन्हें देवी का नाम देकर उनके गुण गाना यह तो हमारे समाज की पुरानी परंपरा है|"[1]

असगर वज़ाहत के नुक्कड़ नाटक 'आग' में भी दहेज प्रथा को उठाया गया है| शादी में बहुत अधिक दहेज मिलने पर भी दूसरी शादी करने के लिए पत्नी को जला देता है| जलाने में एक डाक्टर पति की मदद करता है और इसके बदले दहेज की रकम का 26% ले लेते है|

यांत्रिक सभ्यता ने जिस वित्तीय सभ्यता को जन्म दिया, इसमें पैसा ही परमेश्वर है| पारिवारिक रिश्ते पैरों तले कुचलते जा रहे है| पति और ससुर की लालच की शिकार बन जाती है एक मासूम नारी| डाक्टर की मदद से पत्नी का काम तमाम कर देने के बाद पति और ससुर, हत्या में अपने मददगार

[1] नुक्कड़ जनम संवाद अप्रैल-सितंबर 2007, पृ : 89

डाक्टर से उसके मेहनताना के लिए मोल-टोल करते हैं| इन्सान के भीतर की हैवानियत यहाँ प्रकट होती है| डाक्टर के लिए तो यह पैकेज डील है क्योंकि इसमें पुलिस, वकील आदि सभी का कमिशन है –

"मतलब, इसी में पुलिस का कमिशन, वकील की फ़ीस, पंचनामे का खर्च, स्टैम्प, पैपर वगैरे का खर्चा, दाह-संस्कार का खर्चा सब शामिल है|"[1]

नारियों पर दहेज के नाम पर होनेवाली इन्ही कुरीतियों का चित्रण करने के साथ साथ इसके विरुद्ध लड़ने का आह्वान भी इन्ही नुक्कड़ नाटकों में है| ऐसी समस्याओं को लेनेवाले लगभग सभी नुक्कड़ नाटकों का अंत इन्ही के खिलाफ लड़ने के लिए आह्वान देनेवाले गानों के साथ ही हो जाता है –

".....

उठो भाई जाग उठो
ये जलती नारी का तुम्हे ऐलान है
तलाक पीड़ितों का ये फरमान है
दहेज पीडितो की हैं ये पुकार
इन कपटियों का आज हमें करना है संहार
.....
नर-नारी में न कोई भेद-भाव हो
जाग उठो, भाई जाग उठो....."[2]

[1] सबसे सस्ता गोश्त, असगर वज़ाहत, पृ : 67

[2] नुक्कड़ जनम संवाद अप्रैल-सितंबर 2007, पृ : 92

इसी तरह का एक दूसरा आह्वान देखिए –

"औरत : .....भाइयों और बहनों हमारे साथ दो| वादा करो कि आप अपने बेटे की शादी में दहेज की मांग नहीं करेंगे| नौजवान साथियों शपथ लो कि आप अपनी बीवी को इंसान की ज़िन्दगी देंगे| .....इस वादे के साथ हम चलेंगे तो हम तोड़ सकेंगे यह दुष्ट रूढि|"[1]

इसी तरह का एक दूसरा गाना यहाँ प्रस्तुत है –

सूत्रधार/कोरस : ...लड़की लड़के में हां-हां
कुछ भेद न रखे हां-हां
दोनों की पढ़ाई हां-हां
हम एक सी रखे हां-हां
जायदाद में हिस्सा हां-हां
दोनों का रखे हां-हां"[2]

नारी शिक्षा

नारी होने के नाते शिक्षा लेने के अधिकार से भी वे वंचित रह जाती है| गाँववाले लडकियों को स्कूल भेजने के लिए तैयार नहीं होते हैं क्योंकि वे लड़कियों को घर संभालनेवाली मानते हैं|

[1] नुक्कड़ जनम संवाद अप्रैल-सितंबर 2007, पृ : 86
[2] नुक्कड़ जनम संवाद अप्रैल-सितंबर 2007, पृ : 79

लडकियों को अधिक शिक्षा न देने का एक दूसरा कारण यह है कि यदि वह अधिक पढ़ी लिखी हो, तो उसके लिए योग्य लड़का ढूँढना होगा जिसे अधिक दहेज भी देना होगा| ये सब तो गरीब माँ-बाप के हाथों में आनेवाली बातें नहीं है| जन नाट्यमंच के नुक्कड़ नाटक 'औरत', कालिंदी देशपांडे के नुक्कड़ नाटक 'मैं हूँ लड़की' आदि में इस बात का ज़िक्र किया गया है –

माँ : .....तू पागल तो नहीं हो गई? अब तक तुझे पढ़ाया यही हमारे लिए बहुत है| ये पढने लिखने की तेरी चाह बढ़ गई तो तुमसे ज़्यादा पढ़ा लिखा होगा उतना ही रेट ज़्यादा| ना बाबा ना| हमारे बस की बात नहीं है|"[1]

"मंगला : ... तू अगर कॉलेज पढ़ लेगी ज़्यादा पढ़े वर की गरज होगी वो शर्ते पेश करेगा बोझ दहेज का सर पर होगा हम डूब जायेंगे क़र्ज़ में इससे अच्छा बैठ तू घर में|"[2]

माँ-बाप की एकमात्र चिंता यही है कि बेटी है तो वह दूसरे घर की संपत्ति है| सयानी होने पर किसी न किसी प्रकार लड़की की शादी कराना ही उनका एक मात्र लक्ष्य है| लड़की के मन में पढने लिखने की इच्छा होने पर भी उनके माँ-बाप उसे अनुमति नहीं देते हैं|

[1] नुक्कड़ जनम संवाद अप्रैल-सितंबर 2007, पृ : 81

[2] नुक्कड़ जनम संवाद अप्रैल-सितंबर 2007, पृ : 108

"सुषमा : माँ, मैं जाऊँगी कॉलेज माँ|

मंगला : अरी, रक्खा क्या तेरे पढने में|

सुषमा : माँ, मुझे नौकरी ही करनी है, अपने पाँवों पे खड़ा होना है|

मंगला : नहीं, नहीं, नौकरी करना, ससुराल तुझे हैं जाना-ससुराल तुझे है जाना|"[1]

अगर शादी के बाद पढने की इच्छा प्रकट की तो भी ससुरालवाले इसके लिए अनुकूल नहीं होंगे| सास ससुर और पति के लिए बहु घर संभालने के लिए आयी हुई नौकरानी सी है| 'बेटी आई है' नामक नुक्कड़ नाटक में सुजाता नामक एक बहु का चित्रण जो अब सरकारी दफ्तर में काम कर रही है| अब उसकेलिए प्रमोशन का समय आया हुआ है, और उसके लिए एक और परीक्षा उत्तीर्ण करनी थी| लेकिन उसके पति इसके लिए उसे अनुमति देते नहीं है|

"सुजाता : किस काम का प्रोमोशन! रोटी पानी चाय-नाश्ता, बच्चे का होमवर्क, मेहमानों की आव-भगत, बाज़ार-बैंक, इतना सब चौकस करके अगर प्रोमोशन मिलता हो तो चाहे ले लो ..... वर्ना ये सब खटराग कौन करेगा?"[2]

इससे मालूम होता है कि नारी होने पर अपनी बुद्धि पर, अपनी क्रिया शक्ति पर, अपनी सारी करतूतों पर, पाबंदी लगाना ही बेहतर है|

[1] नुक्कड़ जनम संवाद अप्रैल-सितंबर 2007, पृ : 108

[2] नुक्कड़ जनम संवाद अप्रैल-सितंबर 2007, पृ : 112

पीढ़ियों से लेकर स्त्री की नियति यही है| हमारी दादी-माँ से लेकर इसी शोषण की कहानी चली आ रही है| चूल्हा बच्चा संभालकर सभी थपेड़ों को सहकर अपने-आप में सिमटकर रहने वाली नारी की त्रासद स्थिति का चित्रण इस गीत के माध्यम से हुआ है|

मंगला और कोरस : पीढ़ी दर पीढ़ी यही ढर्रा रहा है
माता, दादी और परदादी ने सहा है
छोरी, तुझे यही करना पड़ेगा
चूल्हा और बच्चा संभालना पड़ेगा
फालतू बातें पूछे ही मत
ऊँचे सुर में बोले ही मत
जोश न खोना, मत इतराना
बरत लिया है भूल न जाना
औरतपन तू भूल न जाना|"[1]

शिक्षा की महिमा से अवगत होते हुए भी लड़कियों को शिक्षा न देनेवाले माँ बाप को उसके लिए प्रेरणा देने की ओर भी नुक्कड़ नाटकों ने कार्य किया है| जनम का नुक्कड़ नाटक 'पढ़ना लिखना सीखो', 'औरत', आदि इसके उदाहरण है|

घर बाहर हर कहीं होनेवाले शोषणों को सहकर एक प्रकार की अभिशप्त ज़िन्दगी जीनेवाली नारी का वास्तविक चित्र 'ये भी हिंसा है' नुक्कड़

[1] नुक्कड़ जनम संवाद अप्रैल-सितंबर 2007, पृ : 108

नाटक में खींचा गया है| इसमें 'औरत' नामक पात्र बीच में खड़ी रहती है और पाँच पात्र (सभी मर्द है) एक-एक करके अपना संवाद करके औरत को थप्पड़ मारते हैं| ये पात्र क्रमशः औरत का बाप, उसका बायफ्रैंड, उसका पति, उसका बेटा और उसका ससुर है| इन मर्दों ने औरत से जो संवाद किए हैं उससे स्पष्ट हैं कि सबके सब नारी को अपने इशारे पर नचाना चाहता है –

"पात्र 1 : जब देखो एम.टी.वी. देखूँगी, घर के काम में माँ की मदद करने में हाथ टूट जाते है तेरे?

पात्र 2 : दुपट्टा ओढ़कर क्यों नहीं आई? इतनी देर से इंतज़ार कर रहा हूँ| कहाँ थी अब तक?

पात्र 3 : मैं रात को कितने बजे भी घर आऊँ पूछनेवाली तू कौन होती है? तेरे बाप से एक गाडी ही तो माँगी थी? तो अब तक क्यूँ नहीं आई?

पात्र 4 : मेरा जीन्स क्यों प्रेस कर दी? कॉलेज के लिए देर हो रही है, अब तक ऑमलेट क्यों नहीं बनाया?

पात्र 5 : घर की बहु बेटी ऊँची आवाज़ में बात नहीं करती| तेरी माँ ने तुझे रोटी बनानी नहीं सिखाई|"[1]

माइके में तथा ससुराल में नारी की ज़िन्दगी में भेद नहीं है| बाप से लेकर बेटे तक सभी नारी को अपनी आवश्यकताओ की पूर्ति करानेवाला

[1] ये भी हिंसा है, जन नाट्यमंच नुक्कड़ जनम संवाद अक्तूबर 2005 – मार्च 2006, पृ : 75

साधन मानते हैं| कोई भी नहीं सोचते हैं कि नारी भी इंसान है, उसका भी अपना दिल और दिमाग है, उसे भी प्यार चाहिए|

नुक्कड़ नाटकों में चित्रित अन्य सामाजिक समस्याएँ

समाज की निम्न जाती के लोगों यानी दलितों की समस्याओं के अंकन करने का प्रयास भी नुक्कड़ नाटकों में दिखाई देता है| आज के दौर में जो दलित उत्पीडन है वह तो सदियों से चला आ रहा है| आज़ादी के बाद तो इनकी स्थितियों में थोडा परिवर्तन तो ज़रूर आया, फिर भी इनका उत्पीडन अब भी होता रहता है|

समाज में सदियों से आ रहे इस जातीय उत्पीडन को कम कराने के लिए बहुत अधिक प्रयास तो चलते रहते हैं| लेकिन उच्च वर्ण के लोगों की मानसिकता में उतना बदलाव तो नहीं आया है| दलितों या समाज की निम्न जाती के लोगों को जो आरक्षण दिया जाता है, उसे अधिकांश लोग ठीक नहीं समझते हैं और उसका विरोध करते है| इस आरक्षण की बात पर देश भर में तीव्र विरोध तो किया गया|

समाज के उच्च वर्ग की इसी मानसिकता का चित्रण करने का प्रयास निशांत नाट्यमंच के नुक्कड़ नाटक 'टुकड़ा नहीं पूरी रोटी लेंगे' में किया गया है| इस नाटक का एक पात्र कुँवर तो निम्न जाति के लोगों को दिए जानेवाले आरक्षण के विरोध पक्ष में है|

कुँवर : अब देखिए, इस आरक्षण की वजह से कितने अयोग्य लोग आ जायेंगे| देश में योग्यता का हनन हो जायेंगा| अभी कल की बात है, मेरे दोस्त का बेटा बीमार था, वह उनका इकलौता बेटा था, उसे सरकारी अस्पताल में ले जाया गया जहाँ दो घंटे में ही उनकी मृत्यु हो गयी| ....जिस डाक्टर ने उसका इलाज किया था, वह आरक्षण से आया था, कोटे से बहाल हुआ था|"[1]

जातीय उत्पीडन को नुक्कड़ नाटकों में अत्यंत सराहनीय ढंग से चित्रित किया गया है| भारत में दलितों के प्रति होनेवाले अत्याचारों को चित्रित करके उसके विरुद्ध आवाज़ उठाने में नुक्कड़ नाटकों ने अहं भूमिका अदा की है| इस कोटि में आनेवाले नुक्कड़ नाटकों में 'हरिजन दहन', 'नयी बिरादरी' आदि के नाम विशेष उल्लेखनीय है|

रमेश उपाध्याय के नुक्कड़ नाटक 'हरिजन दहन' में 'जंगी' नामक एक पात्र है जो दलित वर्ग का प्रतिनिधि बनकर आता है| अपने ऊपर होनेवाले अत्याचारों के विरुद्ध आवाज़ उठानेवाला जंगी एकत्रित होकर संघर्ष करने की बात करता है| जंगी को इस नुक्कड़ नाटक में एक क्रांतिकारी के रूप में चित्रित किया है|

नाटक में हम देख सकते है कि पंडित जंगी को ज़मीन खाली करने के लिए कहता है| लेकिन जब वे यह मानने के लिए तैयार नहीं होते है, तब पंडित-महाजन मिलकर हरिजनों के झोपड़े पर आग लगा देते है|

[1] अब नहीं सहेंगे ज़ोर किसी का, निशांत नाट्यमंच दिल्ली (सं), पृ : 105

इस घटना के विरुद्ध जंगी अपना विद्रोह प्रकट करता है| जंगी को अफ़सोस इस बात में है कि उनके जैसे दलितों के साथ इतना ज़ोर जुल्म क्यों हो रहा है वह सवाल उठाता है - "सवाल ये हैं कि हमारे साथ ऐसा क्यों होता है? .....वे आज्ञा देते है हम आज्ञा का पालन करते है| .....वे हमें मारते है और हम पिट लेते है, क्यों होता है ऐसा? हम अनाज पैदा करते है, और वे आराम से बैठे खाते हैं| ....और फिर भी हम नीच कहलाते है, और वे ऊँच| ....जबकि होना चाहिए कि हम इंसान की ज़िन्दगी जीने के लिए लड़े, संगठित होकर उनका मुकाबला करें|"[1]

दलितों की त्रासद ज़िन्दगी का चित्रण करने वाली कहानी है 'ठाकुर का कुआँ'| प्रेमचंद की इस कहानी का नाट्य रूपांतर 'एक गाँव की कहानी' के नाम से जागृति मंच ने किया था| इसमें भी दलितों पर होनेवाले शोषण को ही चित्रित किया गया है|

भारतीय समाज में दलित स्त्री की स्थिति तो अधिक खराब हैं| स्त्रियाँ उच्च वर्ग के लोगों के उत्पीडन की शिकार बनती है| वे उनके साथ शारीरिक अत्याचार और यौन शोषण करते हैं| नारियों पर होनेवाली ऐसी कुरीतियों का ज़िक्र भी इस नाटक में है|

समाज में व्याप्त जातीय भेद-भाव की भावना को दूर करके समाज के निम्न तब्के के लोगों को ऊपर उठाने का भरसक प्रयास नुक्कड़ नाटककारों की ओर से हुआ है|

[1] उत्तरार्द्ध, जनवादी नाटक विशेषांक 1983, पृ : 77-78

दलितों की समस्याओं के अलावा अन्य अनेक समस्याओं के चित्रण भी नुक्कड़ नाटकों में दिखाई देते है जैसे परिवार नियोजन, जन संख्या-विस्फोट, शराब का दोष, पानी की समस्या आदि| इस कोटि में आनेवाले नुक्कड़ नाटकों में 'पूरा प्यार', 'हम दो हमारा एक', 'काफिला अब चल पड़ा है', 'अचूक दवा' आदि प्रमुख है|

असगर वज़ाहत का नुक्कड़ नाटक 'पूरा प्यार', गिरिराज शरण अग्रवाल का नुक्कड़ नाटक 'बीस बीघा ज़मीन', चन्द्रकिरण सक्सेना का नुक्कड़ नाटक 'इंतज़ार' आदि में परिवार नियोजन की बात कही गयी है| 'पूरा प्यार' में पिता स्वयं कहता है कि उनके जीवन में सबसे बड़ी गलती हुई कि उन्होंने अनगिनत बच्चे पैदा किए| वे अपने पुत्र को सलाह देता है कि वे कभी भी अपने पिता की तरह न हो जाए|

"पिता : .....ये हकीकत है कि अगर आपसे ऐसी गलती हुई, मतलब मेरी तरह अनगिनत बच्चे पैदा किए तो बर्बाद हो जायेंगे आप भी और बच्चे भी|"[1]

'इंतज़ार' नाटक में तो दिखाया गया है कि जमीला के पति युसूफ अपना परिवार नियोजन का आपरेशन करवा लेता है क्योंकि जमीला को घर के काम तथा छोटे बच्चों को संभालने का फुरसत नहीं है|

[1] सबसे सस्ता गोश्त, असगर वज़ाहत, पृ " 127

जन नाट्यमंच के नुक्कड़ नाटक 'काफिला अब चल पड़ा है' में मुरुगन नामक एक सरकारी करेक्टर को चित्रित किया गया है जो सरकारी दाम से ज़्यादा पैसे में पानी बेचता है| इतना ही नहीं वह धमकियाँ भी देता है| इस नाटक के माध्यम से पानी की समस्या को ही उठायी गयी है|

निष्कर्ष

सभी साहित्यिक विधाओं में सामाजिक गतिविधियों का प्रतिफलन ही दिखाई देता है| नुक्कड़ नाटक भी इस तथ्य का अपवाद नहीं| समाज में व्याप्त लगभग सभी समस्याओं शोषणों का उल्लेख अपने नाटकों के माध्यम से करने में हिन्दी नुक्कड़ नाटककार सफल निकले हैं|

नुक्कड़ नाटक का कथ्य यदि अपनी नवीनता के क्रम में कहा जायें तो जन जीवन के साथ एक साक्षात्कार है| नुक्कड़ नाटक का कथ्य सामाजिक यथार्थ को व्यापकता में ग्रहण करता है| आम आदमी, नारी वर्ग, दलित वर्ग आदि समाज के निम्न तब्के के लोग अपनी मूल संवेदनाओं के साथ नुक्कड़ नाटकों में चित्रित है|

चौथा अध्याय

हिन्दी नुक्कड़ नाटकों में चित्रित राजनैतिक – धार्मिक समस्याएँ

स्वातंत्र्योत्तर राजनैतिक – परिस्थिति

राजनीति जैसा कि नाम से द्यातव्य है हर देश के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है| प्रत्येक देश की अलग-अलग राजनीति होती है, जिसकी नींव पर उस देश की सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, आर्थिक, साहित्यिक, सारी परिस्थितियाँ बनायी जाती है| देश की उन्नति या अवनति दोनों में राजनीति का हाथ होता है|

भारत के बारे में कहते वक्त स्वातंत्र्योत्तर तथा स्वतंत्रता पूर्व राजनीति में एक स्पष्ट भिन्नता या अलगाव हम देख सकते हैं क्योंकि आज़ादी मिलने के पहले हम अंग्रेज़ो के अधीन में थे| इसलिए भारत की राजनैतिक परिवेश पर अंग्रेज़ों का वास्तविक दबाव था| अपनी राय व्यक्त करने या स्वतंत्र रूप से बोलने तक का अधिकार भारतीयों को नहीं था| लेकिन आज़ादी मिलने के बाद भारतीय राजनैतिक-क्षेत्र इतना बदला गया कि भारत विश्व का ही सबसे बड़ा लोकतंत्र देश बन गया|

हमारे संविधान का निर्माण हुआ जिसके अंतर्गत देश के हर नागरिक को स्वतंत्र रूप से जीने का, बोलने का अधिकार दिया गया| देश की गतिशील चालन के लिए अनेक कानून बनाए गये| हमारी आर्थिक-व्यवस्था को बनाये रखने के लिए पंचवर्षीय योजनाएँ तैयार की गई|

'जनतंत्र राष्ट्र' यह तो केवल नाम ही रहा कि आज़ाद भारत में अधिकार एक विशिष्ट वर्ग ने हड़प लिया जिसके अंतर्गत राजनेता, पूँजीपति, सामंती

लोग आते थे| देश की सामान्य जनता की उन्नति के लिए जो योजनाएँ बनायी गयी वे सब कागज़ी योजनाएँ ही रही| इन सारी योजनाओं का प्रसार करने के पीछे राजनीतिज्ञों की स्वार्थ पूर्ति ही कार्यरत थी| सरकार के नाम पर होने वाली प्रवृत्तियों के पर्दे के पीछे इन लोगों की जेब भरने लगी| आम जनता का जीवन अधिक कष्टपूर्ण होने लगा|

राजनीतिज्ञों का एकमात्र लक्ष्य धन कमाना हो गया तो समाज में शोषण की शुरुआत हुई| आम जनता को लगा कि उन्हें आज़ादी नहीं मिली है बल्कि वे विदेशी शासकों के हाथ से देशी शासकों के अधीन में आयी|

लोकतंत्र में सर्वाधिकार जनता को ही है, लेकिन यहाँ भारत में जिन जिनको अधिकार की कुर्सी मिली, उच्च अधिकार उनके हाथ में ही रहा| अधिकार के बल पर स्वार्थ इच्छाओं की पूर्ति करके अपना जीवन स्वस्थ बनाने की होड़ में देश की आम जनता के बारे में सोचने का समय राजनीतिज्ञों को नहीं मिला|

जीवन का हर क्षेत्र राजनीति से प्रभावित होता है| यही वह धुरी है जिस पर राष्ट्र का चक्का घूमता है| भारत की बात में भी यह सच है| लेकिन आज के राजनैतिक भ्रष्टाचार, पद लोलुपता तथा राजनैतिक अनीतियों को हम नज़रन्दाज़ नहीं कर सकते हैं|

डॉ.श्यामशर्मा ने स्वातंत्र्योत्तर राजनैतिक अराजकता से उत्पन्न विभीषिका का जिक्र करते हुए लिखा है – "प्रगति के नाम पर जो योजनाएँ बनायी गयी, अधिकांश रूप से वह कागज़ों, फाइलों तक ही सीमित रह गई| .....आम-आदमी भूख और रोज़गार से पीड़ित होकर दम तोड़ता दिखाई दिया|"[1] इस प्रकार देखें तो स्वतंत्रता के बाद तेज़ी से उभरे जन आक्रोश के मूल में स्वातंत्र्योत्तर राजनैतिक परिदृश्य ने अहं भूमिका अदा की है| अब राजनीति में नैतिकता और राष्ट्र या समाज सेवा का स्थान अवसरवादिता, स्वार्थ परता, सत्ता लोलुपता ने ग्रहण कर लिया है|

राजनीतिज्ञ अब जनता को अपने हाथ की कठपुतली मानते हैं| जनतंत्र व्यवस्था के तहत जनता ही इन्ही लोगों को अपने शासक के रूप में चुनती है| चुनाव के समय ये लोग जनता के सामने आते हैं और उन्हें अपने वश में लाते हैं| लेकिन गद्धी मिलने के बाद ये जनता को देखते तक नहीं है| अपनी सुख सुविधाओं की पूर्ति करना इनका एकमात्र लक्ष्य बन गया है| इन लोगों का ध्येय जन-कल्याण नहीं, बल्कि स्व-कल्याण हो चुका है|

नुक्कड़ नाटक : वर्तमान राजनीति का दस्तावेज़

राजनीति किसी भी राष्ट्र का एक अत्यंत महत्वपूर्ण अंग है| भारत तो एक जनतंत्रात्मक देश है| लेकिन स्वतंत्र भारत में भोग का अधिकार एक

[1] डॉ. श्यामशर्मा : आधुनिक हिन्दी नाटकों में नायक पृ : 62

विशिष्ट वर्ग में ही सीमित हो गया है| एक जनतंत्रात्मक राष्ट्र होते हुए भी भारतीय समाज पूंजीवाद पर आधारित समाज है|

राजनैतिक ज़रूरतों के तहत जन्मे नाट्यरूप है नुक्कड़-नाटक| इसलिए इन नाटको में राजनैतिक समस्याओं का चित्रण प्रमुख रूप से हुआ है| आज की दूषित राजनीति के शिकंजे में फँसी जनता के आक्रोश को नुक्कड़ नाटक अभिव्यक्ति देते हैं| नुक्कड़ नाटकों की अंतर्वस्तु राजनैतिक क्षेत्र के सभी पक्षों को प्रभावशाली ढंग से हमारे सामने लाती है|

अवसरवादिता

मौजूदा समाज में भ्रष्ट राजनीति तथा राजनीतिज्ञों का फैलाव हो रहे हैं| ये राजनीतिज्ञ गद्धी पर बैठने के लिए जनता के पास जाकर उन्हें अनेक आशाएँ देते हैं, लेकिन गद्धी पर बैठ जाने के बाद उन्हें वहाँ तक पहूँचायी आम जनता को वे भूल जाते हैं | राजनीतिज्ञों की इसी दूषित नीति का चित्रण नुक्कड़ नाटकों में हुआ है|

जन नाट्यमंच के एक नुक्कड़ नाटक 'समरथ को नहिं दोष गुस्साई', जिसमें पहली बार जमूरा-मदारी के प्रचलित माध्यम का प्रयोग हुआ है, इसी समस्या से जुडा हुआ है| यह नाटक तो सामयिक तथा तत्कालिकहै|

मौजूदा राजनैतिक क्षेत्र में सत्ता पर बैठने वाले संपत्ति को ही सलाम देते है| प्रस्तुत नाटक ऐसे राजनीतिज्ञों के चरित्र की असलियत का पर्दाफाश करता

है| मंत्री और मदारी के बीच जो संवाद चलता है इससे मंत्री के चरित्र में छिपी कूटनीति स्पष्ट हो जाती है| बिना किसी हिचक के, वह मदारी से कहता है –

"मेरे सेठ, साहूकार, सरमायेदार, ज़मीनदार|"[1]

चुनाव से पहले देश की जनता के पीछे हाथ जोडके घूमने का उद्देश्य भी वह खुल्लमखुल्लम मदारी से कहता है –

"वोट की खातिर उस्ताद| वक्त पे तो गधे को भी बाप बनना पड़ता है"|[2]

मालमसिंह चन्द्रवंशी के नुक्कड़ नाटक 'प्रजातंत्र सड़क पर' में स्वाधीन भारत की राजनीतिक पार्टियों की धूर्तताओं और अनीतियों से जनता का परिचय कराते हुए छद्म जनवाद के विरोध में एक गीत है –

"ये प्रजातंत्र नहीं, लूट तंत्र है
लूट तंत्र है, भ्रष्ट तंत्र है
इन सबको सबक सिखाना है
अपने हक पहचानना है
ये शोषण बंद कराना है
समता का देश बनाना है|"[3]

[1] समरथ को नहिं दोष गुस्साई, नुक्कड़ जनम संवाद अंक 16-17, पृ : 41
[2] समरथ को नहिं दोष गुस्साई, नुक्कड़ जनम संवाद अंक 16-17, पृ : 41
[3] प्रजातंत्र सड़क पर मालम सिंह चंद्रवंशी, पृ : 20

आज की राजनीति जनता की आँखों पर पट्टियां बांधे आँखमिचौनी खेल रही है और नुक्कड़ नाटक जनता को इससे सजग, सचेत बनाने के लिए प्रतिबद्ध है| इसी प्रतिबद्धता का उदाहरण हरीश भादानी के नुक्कड़ नाटक 'रोटी नाम सत है' में दृष्टव्य है|

जुलूस राजनीति का अंग बन चुका है| किसी पार्टी को बनाने में या बिगाड़ने में जुलूस की अहं भूमिका है| जुलूस ऐसा एक सशक्त हथियार है जो किसी राजनीतिक दल या पार्टी की ताकत दिखाने में सक्षम है| 'मुनादी' इस तथ्य की ओर ही संकेत करता है –

"कल शाम को राजधानी में बड़ा जुलूस निकलेगा गाँव-गाँव से आदमी औरतें, बूढ़े-जवान, मज़दूर किसान... सब एक साथ राजधानी जायेंगे| वहाँ विराट सभा होगी| बड़े-बड़े नेता पधारेंगे, ज़ोरदार भाषण देंगे, समाजवाद समझायेंगे, गरीबी हटाने का रास्ता बताएँगे|"[1]

बोलने के लिए एक मंच और आगे बड़ी भीड़ मिले तो कोई भी राजनीतिज्ञ, अपनी जीभ का जादू दिखाना शुरू करेगा| जोश आवेश में वह जनता के सामने बड़ी-बड़ी बातें बकेगा| जनता को झूठा वादा देगा कि जनता का भविष्य सुनहला करना उनका मकसद है| आम आदमी के प्रतिनिधि के

[1] रोटी नाम सत है, हरीश मदानी, उत्तशर्द्ध मई 1983, पृ : 117

रूप में नाटक में आनेवाला मलंग, जिसे नेताओं के व्यर्थ भाषण पर भरोसा नहीं, सही बात कहता है –

"भाषण नहीं रोटी दो..... रजिस्टर का नंबर नहीं, रोजी दो|"[1]

जनता की वोट से ही शासकों को गद्धी मिलती है| इसीलिए किसी न किसी प्रकार जनता की आँखों में धूल डालकर उन्हें अपने वश में लाने का प्रयास राजनीतिज्ञ करते हैं| इसके लिए ये लोग यह करने की वह करने की चेष्टा करते है और जनता इनके चक्कर में आती है जो लोग इनके चक्कर में नहीं आते हैं उन्हें धमकियाँ देकर अपने वश में लाने की कोशिश करते है|

पुराण काल से लेकर शासको की यही नीति चली आ रही है| उसकी दृष्टि में वह ही सब कुछ है| उसकी आज्ञा के बिना कुछ भी नहीं चलेगा यही उसका विश्वास है|

एक जनतंत्र राष्ट्र होने के नाते भारत के प्रत्येक वयस्क को चुनाव का अधिकार है| लेकिन आज के नेतागण जो है वे जनता के पास जाकर झूठा वरदान देकर उन्हें अपने वश में लाते हैं| नेता चुनाव के दिनों में जनता के सबसे बड़े हिमायती और चुनाव के बाद उसके प्रबल शत्रु के रूप में बदल जाते हैं|

नेता लोगों की इसी अवसरवादिता का चित्रण शिवराम के नुक्कड़ नाटक 'जनता पागल हो गयी है' में देख सकते हैं –

[1] रोटी नाम सत है, हरीश मदानी, उत्तशर्द्ध मई 1983, पृ : 117

"सरकार : नहीं-नहीं इस बार हम तुम्हारा भाग्य बदल देंगे| महँगाई को रोक देंगे| रोज़गार बढायेंगे, बेकारी मिटा देंगे| स्कूलों में बच्चों को दोपहर का भोजन देंगे| .... सबको एक एक फ़स्ट क्लास घर और ब्याह के लिए, खेती के लिए बिना ब्याज का क़र्ज़ हम देंगें|"[1]

जन-नाट्यमंच के नुक्कड़ नाटक 'समरथ को नहिं दोष गुसाई' में भी नेताओं की इसी अवसरवादिता का चित्रण है| यहाँ उदाहरण प्रस्तुत है –

"मंत्री : भाइयों बहिनों ..... मुझे तो गद्धी चाहिए थी, सो मिल गई| अगर आप सोचते हैं कि मैं लालाजी की दूकान से माल निकालकर उचित दामों पर आप में बाँट दूँगा तो माफ़ कीजिए आप घनघोर चूतिया है|"[2]

जन नाट्यमंच का एक अन्य नुक्कड़ नाटक 'है लाल हमारा परचम' में भ्रष्टाचार नामक प्रतीकात्मक पात्र को चित्रित किया है –

"भ्रष्टाचार : मैं सरकार का हूँ कारिन्दा, भ्रष्टाचार है नाम, सौदेबाजी घुस, दलाली, ये हैं मेरे दाम|"[3]

आज के राजनीतिज्ञ के लिए राजनीति या नेता पद धनोपार्जन का साधन बन चुका है| अपनी स्वार्थ पूर्ति के लिए वे राजनीति का इस्तेमाल

[1] जनता पागल हो गयी है, पृ : 16

[2] समरथ को नहिं दोष गुस्साई, नुक्कड़ जन्म संवाद पृ : 42

[3] चौक-चौक पर गली-गली में, जन नाट्यमंच, पृ : 96

करते हैं और वैयक्तिक प्रगति को राष्ट्र की प्रगति का जामा पहनाकर जनता की आँखों में धूल डालते हैं|

असगर वजाहत ने अपने नुक्कड़ नाटक में राजनीतिज्ञों का घिनौना चरित्र हमें दिखाया है| नब्बे प्रतिशत राजनीतिज्ञ देश सेवा के नाम पर या देश की प्रगति के बहाने खुद अपनी उन्नति या अपने वालों के भविष्य को बिल्कुल सुरक्षित रखने की योजनाएं बनाते हैं| आज़ादी की लंबी अवधि के बाद भी पिछड़ेपन की ओर सरकनेवाले अपने देश के भविष्य के प्रति चिंतित आम आदमी से मंत्री का कहना है – "अरे मूर्ख .... होटल मैं ने देश में खोला है ... चाँद पर नहीं .... ये देश की तरक्की हुई न ... अगले साल मैं कपडा मिल लगाऊँगा ... उसके बाद खाद का कारखाना लगाऊँगा|"[1]

स्वार्थ-पूर्ति

अलीगढ में काम कर रही नाट्य संस्था दृष्टि नाट्य मंच के नुक्कड़ नाटकों में भी वर्तमान राजनीति का वास्तविक चित्रण दृष्टव्य है| उनका एक नुक्कड़ नाटक है 'रंग सियार' जिससे सियार जो समय के अनुकूल अपनी आदत बदलता है – वर्तमान राजनीतिज्ञों का प्रतीक है| इस नुक्कड़ नाटक में राजनीति और राजनीतिज्ञों का वास्तविक रूप प्रस्तुत करके उन लोगों के अवसरवाद, स्वार्थ, रिश्वतखोरी आदि अमानवीय वृत्तियों की ओर संकेत किया गया है|

[1] देश आगे बढाओ, असगर वज़ाहत, उत्तरार्द्ध 1983, पृ : 67

इस नुक्कड़ नाटक में चित्रित किया गया है कि देश में धर्म के नाम पर झगडा करानेवाला, ग़रीबों का पैसा लूटनेवाला, देश का असली चोर रंगा सियार ही है अर्थात राजनेता ही| लेकिन इन्हें पकड़ना तो मुश्किल है क्योंकि वह स्वार्थसिद्धि के लिए नीला, काला, पीला वेश बदलता रहता है| बेकारी, भुखमरी, अशिक्षा, सांप्रदायिकता आदि को बनाये रखने में इन राजनेताओं के हाथ हैं क्योंकि तब ही वे नेता बनकर जनता का शोषण कर सकते हैं|

राजनीतिज्ञ आम आदमी को उल्लू बनाना चाहते है| उन्हें यथार्थ से कोसों दूर ले जाते हैं| अधिकांश राजनीतिज्ञ भ्रष्टाचार के उस्ताद है| अपने आपको युधिष्ठिर से भी बड़ा सत्यवान सिद्ध करने की जो चाल एक नेता चलाता है इसका सही वर्णन असगर वज़ाहत ने यों किया है –

"नेता – और नीतियाँ हमारी वही है जो गाँधीजी की यानी बुरा मत देखों, बुरा मत कहो..... हमारे सामने कोई चाहे जितना बुरा काम करें, हम नहीं देखते| भ्रष्टाचार की शिकायत लेकर आनेवालों को हम डांट देते हैं कि उन्होंने भ्रष्टाचार देखा ही क्यों|"[1]

नुक्कड़ नाटकों ने अपने कथ्य के माध्यम से राजिनीतिज्ञों की स्वार्थ-परता का चित्रण करने का प्रयास किया है| राजनीति की आड़ में राजिनीतिज्ञ अपनी सुख सुविधाओं की पूर्ति करते हैं| नेताओं की इसी प्रवृत्ति का चित्रण

[1] सबसे सस्ता गोश्त, असगर वज़ाहत, उत्तरार्द्ध, मई 1983, पृ : 56

जन नाट्य मंच के नुक्कड़ नाटक 'जब चोर बने कोतवाल' में भी दृष्टव्य है| इस नाटक का शीर्षक ही इतना प्रतीकात्मक है कि नाटक के शीर्षक सुनने पर जनता पर नाटक का सीधा असर पड़ता है|

'जब चोर बने कोतवाल' में चित्रित किया है कि 'मंत्री' नामक पात्र मंत्री बनने के एक साल के भीतर-भीतर अपना एक फाइव स्टार होटल खड़ा कर देता है| अपनी कुर्सी का दुरुपयोग करके वे अपने स्वार्थ हितों की पूर्ति करते हैं| इस नुक्कड़ नाटक में चित्रित एक दूसरी बात है कि समाज में भ्रष्टाचार फैलानेवाले उच्चवर्गीय लोगों को भ्रष्टाचार विरोध समिति का नेता बनाना| यह तो आज समाज में होनेवाली एक विरुद्धात्मक वृत्ति ही है|

एक बार शासन की नशा चढने के बाद फिर कभी उस नशे से उतरने केलिए शासक तैयार नहीं होते हैं| किसी न किसी प्रकार अपनी गद्धी को सुरक्षित बनाये रखने का प्रयास वे करते रहते हैं| आज के शासकों की स्थिति भी इससे भिन्न नहीं है| जनता की हालत कैसी भी हो? इन नेताओं को मात्र अपनी सुख-लोलुपता की चिंता ही होती है|

जन नाट्य मंच के नुक्कड़ नाटक 'संघर्ष करेंगे जीतेंगे' में ऐसे एक शासक का चित्रण द्रष्टव्य है| इस नाटक में 'नरसिंहा' नामक पात्र अपनी गद्धी को बनाये रखने की कोशिश करता है| नाटक में दिखाया गया है कि जनता जब अपनी समस्याओं को बताने लिए मंत्री के पास जाती है तो उन्हें अन्दर घुसने

की अनुमति नहीं मिलती है| जनता की वोट के बल पर ही वह मंत्री बन चुका है लेकिन अब जनता की बात सुनने की फुर्सत उन्हें नहीं है|

"मनमोहन : क्या बात है नंबर वन|

ब्लैक कमांडो : सर ये लोग.....

मनमोहन : कौन है ये लोग?

ब्लैक कमांडो : सर, ये लोग प्रधानमन्त्री से मिलना चाहते हैं|

मनमोहन : क्या आप मिलेगे सर|

नरसिंहा : हाँ-हाँ| हमें पाँच साल पूरे करने हैं|"[1]

शासक लोगों की एक दूसरी मनोवृत्ति का चित्र जन-नाट्यमंच के नुक्कड़ नाटक 'हम हैं झुग्गीवाले' में दिखाई देती है| हम देखते हैं कि हमारे नगरों में बहुत सारी अट्टालिकाएँ होती है जिनमें उच्चवर्ग के लोग सुख-सुविधाओं से जीवन बिताते हैं| लेकिन इन महलों के आमने सामने जो बस्तियाँ या झुग्गियाँ होती हैं वहाँ रहनेवाले लोगों की ज़िन्दगी बहुत दर्दनाक हैं| इन्हीं अट्टालिकाओं में रहनेवाले शासक लोगों के लिए ये बस्तियाँ तो अपनी शान-शौकत में बाधा डालनेवाली है|

उपर्युक्त नुक्कड़ नाटक में ऐसी एक झुग्गी तथा उसका सर्वनाश करने के लिए आया हुआ एक शासक का चित्रण है| इस नाटक में नेताओं की दल बदले राजनीति का चित्रण भी है| इसमें जिस शासक का चित्रण हुआ है वह तो

[1] नुक्कड़ जन्म संवाद अंक 16-17, पृ : 91

केवल एक दल में नहीं बल्कि अनेक दलों में विश्वास रखनेवाला है| आज यह एक सामान्य प्रवृत्ति ही हो गयी है कि जो नेता आज एक राजनैतिक दल में है कल वह दूसरे दल में होगा| नेताओं की इसी दिखावटी पर व्यंग्य कसने का प्रयास इस नाटक में हुआ है|

नेताओं की साजिश का चित्रण भी इस नाटक में हैं| षड्यंत्र रचकर वे जनता को अपने वश में लाते हैं| अशिक्षित जनता नेताओं की इसी साझेदारी में फँस जाती हैं| इस नुक्कड़ नाटक में अपनी स्वार्थ पूर्ति के लिए एक झुग्गी के लोगों पर अत्याचार करने आये नेता से हमारी मुलाकात होती है| नेता बेचारी जनता को बार बार विश्वास दिलाता है कि वे उनके रक्षक हैं| उनका झंडा, जनता की ढाल हैं| लेकिन नेता के रक्षक रूप अंदरुणी भक्षक रूप का परिचय हमें तभी मिलता है जब वह कहता है –

नेता : ढाल है| यह झंडा आप लोगों की ढाल है| इसलिए आप लोगों को इस शहर के प्रदूषण से बचाने के लिए शहर की बीमारियों से बचाने के लिए आप लोगों को दिल्ली शहर से बाहर भेजा जा रहा है|"[1]

भारत में जहाँ स्वतंत्रता के पहले अंग्रेज़ी शासकों ने बाँटकर शासन करने की जो प्रवृत्ति लागू की थी उसका एक दूसरा रूप स्वातंत्र्योत्तर भारतीय शासकों ने हडप लिया है| जनता को एकत्र होकर अन्याय के विरुद्ध लड़ने का

[1] नुक्कड़ जन्म संवाद अंक 16-17, पृ : 125

अधिकार नहीं दिया जाता है| सत्ता द्वारा जनता की संगठित शक्ति को दबाया और विरोध को कुचला जाता है| इस प्रवृत्ति का चित्रण रमेश उपाध्याय के नुक्कड़ नाटक 'राजा की रसोई' में दृष्टव्य है| नाटक में राजा से असंतुष्ट होकर हड़ताल में शामिल चारों रसोइयों को कैद कर लिया जाता है|

यूनियन बनानेवालों को सख्त सजा देने की प्रवृत्ति स्वातंत्र्योत्तर भारतीय समाज में दिखाई देती थी| शासक और पूँजीपति पुलिस की सहायता से मज़दूरों की यूनियनों पर पाबंदी लगाता है| जन नाट्य मंच के नुक्कड़ नाटक 'काला कानून' में इसका चित्रण मिलता है|

पूँजीपतियों के साथ गठबंधन

वर्तमान भारतीय समाज में राजनीति, प्रशासन तथा पूँजीवादी ताकत एक होकर चलते हैं जिनकी शिकार आम जनता ही है| भ्रष्ट राजनीतिज्ञ अपनी स्वार्थ-पूर्ति के लिए पूँजीपतियों से हाथ मिलाते हैं और पूँजीपति भी अपनी हित पूर्ति के लिए राजनीतिज्ञों के सहायक बनते हैं| इन दोनों ताकतों की सहायता के लिए पुलिस भी तैयार हो जाती है|

जन-नाट्यमंच का प्रथम नुक्कड़ नाटक 'मशीन' पूँजीपति वर्ग का सही खाका खींचता है| नाटक के मालिक की वाणी यों गूँजती है – ".....ओ मेरे माल के खरीदारों, मैं मालिक हूँ मिल का| बड़ी सख्त ज़िन्दगी है मेरी| पूँजी को जुटाता हूँ, मंत्री को पटाता हूँ ,पुलिस को पटाता हूँ, वकील को

भौंकवाता हूँ, मज़दूर को धमकाता हूँ, मशीन को चलवाता हूँ, तब जाकर कहीं लंदन से विह्स्की मँगवाता हूँ| लेकिन आप खफा न हो मेरे महरबान, मेरे कदरदान, आप पर कुरबान मेरी जान| आप के लिए एक लाइब्रेरी, दो अस्पताल, तीन कब्रिस्तान बनाऊँगा ..... अगले चुनाव कराने की मोहलत दे दीजिए, फिर देखिए मैं क्या क्या गुल खिलाता हूँ ..... अब और क्या कहें, अपनी तो यही जिन्दगानी है|"[1]

पूँजीपतियों के साथ गले मिलाकर राजनीतिज्ञ आम आदमी का शोषण करते हैं| व्यवस्था और पूँजीवाद के गठबंधन से समाज में होनेवाली कुरीतियों की ओर जनता का ध्यान आकर्षित करने का प्रयास अरविंद कुमार के नुक्कड़ नाटक 'बोल री मछली कितना पानी' में किया गया है| उसी प्रकार शिवराम के नुक्कड़ नाटक 'जनता पागल हो गयी है' में चित्रित किया गया है कि जनता राजनीतिज्ञ और पूँजीपतियों के खेल की असलियत को पहचानकर उनका असहयोग करती है|

जन नाट्यमंच के नुक्कड़ नाटक 'जब चोर बने कोतवाल' में दिखाया गया है कि सेठ धन्नामल तथा शराब बेचनेवाले राजा धनगरज को, मंत्री श्रेष्ठ लोग मानते हैं| ये लोग समाज के पूँजीपति वर्ग के प्रतीक है| आज के राजनीतिज्ञों के प्रतीकात्मक पात्र 'मंत्री' इन्ही लोगों से पैसा लेकर आवश्यक साधनों की कीमतें बढाते हैं और काला बाज़ारी को ऊर्जा देते हैं|

[1] नुक्कड़ जन्म संवाद अंक 16-17, पृ : 18 - 19

इस नुक्कड़ नाटक में चित्रित किया गया है कि समाज में भ्रष्टाचार चलानेवाले सेठ धन्नामल तथा राणा धनगरज को ही भ्रष्टाचार को नामो निशान करने के लिए बनायी गयी उच्च स्तरीय समिति के प्रमुख बनाये हैं|

"मंत्री : .....हमारा इस बार का फैसला है कि हफ्ते भर के अन्दर-अन्दर अपने जिले की पवित्र भूमि से भ्रष्टाचार का नामो निशान मिटा देंगे| इस महान कार्य को संपन्न करने के लिए हमने एक ..... उच्च स्तरीय समिति नियुक्त की है जिसमें आपके शहर के दो नेक, शरीफ, इज्ज़दार और कर्मठ महापुरुषों को शामिल किया गया है| ..... वे हैं सेठ धन्नामल टनाटन और राणा धनगरज|"[1]

जनता की बदहाली शोषण और बेकारी में सरकार और पूँजीपतियों के साथ पुलिस तंत्र भी अपनी सहायता देता है| ये लोग अपने विरोधियों को भगाने के लिए पुलिस का इस्तेमाल करते हैं| पुलिस को पैसा देकर उन्हें अपने वश में लाते हैं और उनसे मज़दूरों को दबाते हैं|

जन नाट्यमंच का नुक्कड़ नाटक 'हल्लाबोल' पुलिस की इसी नीति पर प्रश्न उठाता है| पुलिस सदैव शोषकों का साथ देती है क्योंकि वे उस व्यवस्था के प्रति वचनबद्ध होती है, जो व्यवस्था सत्ता में होती है| पुलिस स्वयं यही मानती है कि पूँजीपतियों के साथ रहना ही उनकेलिए सहायक सिद्ध होगा| 'हल्लाबोल' नुक्कड़ नाटक में दिखाया गया है कि जब पात्र यूनियन बनाने,

[1] नुक्कड़ जन्म संवाद अंक 16-17, पृ : 52

हड़ताल करने, मज़दूरी बढवाने आदि की बातें करते हैं तो पुलिसवाला बीच में हस्तक्षेप करता है क्योंकि इन सारी बातों से मालिकों की बुराई होगी| 'इन्कलाब जिंदाबाद, सीटू जिंदाबाद' का नारा गूँजते ही पुलिस नारा लगानेवालों को धमकी देता है –

"...सात दिनवाली हड़ताल के टेम से ही सख्ती के आदर आ गए है| एस.एच.ओ साब का आर्डर है कि जो साला सीटू का नाम लेता दिखे फ़ौरन हवालात में डाल दो.....|"[1]

जन नाट्यमंच का एक नुक्कड़ नाटक 'पुलिस चरित्रम' जो है पुलिस की नीति पर व्यंग उठानेवाला है| वास्तविक अपराधी शासक या पूँजीपति वर्ग के लोग है स्वयं यह जानकर भी पुलिस इनको पकड़ते नहीं है| इन लोगों की सेवा के लिए उपस्थित पुलिस लोग समाज के सामान्य लोगों को धमकियाँ देकर उन्हें डराते हैं| सेठ के हाथ से घूस लेते हुए पुलिस सेठ के पक्ष में और मज़दूरों के विपक्ष में बोलती है - "पुलिस का काम है औद्योगिक शांति बनाए रखना, ... गैर ज़िम्मेदार मज़दूर राष्ट्रीय संपत्ति को नुकसान न पहूँचायें| कानून अपने हाथ में न ले|"[2]

इस नुक्कड़ नाटक में दिखाया गया है कि बिना किसी कारण पुलिस मज़दूरों पर गोली चलाती है| पुलिस इसके बाद सेठ को सलाम करती हैं|

[1] हल्लाबोल, नुक्कड़ जन्म संवाद अंक 16-17, पृ : 67

मज़दूरों द्वारा किए गए अपराध को सही सिद्ध करने के लिए पुलिस, अपनी कारवाई की सफाई यो दे रही है –

"हिंसा, आगज़नी और तोड़-फोड़ पर उतारू यूनियन के गुण्डों की एक भीड़ को काबू करने के लिए पुलिस को गोली चलानी पड़ी|"[1]

पुलिस नारियों पर हमला करती है| शासक वर्ग या पूँजीपति वर्ग अपनी इच्छा पूर्ति के लिए स्त्रियों पर हमला करते है| लेकिन पुलिस वर्ग इन्हें पकड़ने के लिए तैयार नहीं होती हैं| इस नुक्कड़ नाटक में चित्रित किया गया है कि तीन गुंडे एक लड़की का बलात्कार करते हैं, यह बात पुलिस देखती है| लेकिन गुंडे पुलिस को घूस देते हैं| पुलिस गुण्डों को बिना दंड देकर छोड़ देती है और आगे चित्रित किया गया है कि स्वयं पुलिस एक फेरीवाली औरत पर हमला करती है|

ज़ाहिर है कि स्वतंत्रता के बाद तेज़ी से उभरे जन आक्रोश के मूल कारण स्वातंत्र्योत्तर राजनैतिक परिदृश्य की मूल्यहीनता है| "जन सेवा के स्थान पर आज के राजनीतिज्ञों का ध्येय स्व-कल्याण हो चुका है| अब राजनीति में नैतिकता और राष्ट्र या समाज सेवा का स्थान अवसरवादिता, स्वार्थ-परता, सत्ता लोलुपता ने ग्रहण कर लिया है, जिससे व्यक्ति, साधन की पवित्रता को त्याग कर साध्य प्राप्त के लिए प्रयासरत होने लगा है|"[2]

[1] पुलिस चरित्रम, नुक्कड़ जन्म संवाद, पृ : 65

[2] स्वातंत्र्योत्तर युगीन परिप्रेक्षय और नुक्कड़ नाटक, मदन मोहन शर्मा, पृ : 81

भारतीय समाज में व्याप्त राजनैतिक भ्रष्टाचार का चित्रण करने में नुक्कड़ नाटक सफल हुए है| मौजूदा राजनैतिक व्यवस्था में फँसे हुए आम आदमी को उससे ऊपर उठाने के लिए ही इन्हीं नाटकों की रचना हुई है| अशिक्षित जनता को अपनी वर्तमान स्थिति से अवगत कराने का सशक्त माध्यम है नुक्कड़ नाटक| स्पष्ट रूप से देखे तो हम कह सकते हैं कि यदि हमारी राजनैतिक व्यवस्था इतनी दूषित नहीं थी तो शायद ही नुक्कड़ नाटक का जन्म हुआ होगा|

स्वातंत्र्योत्तर धार्मिक परिदृश्य

भारत के लोग पुराण काल से लेकर धर्म में आस्था रखनेवाले हैं| स्वातंत्र्योत्तर परिवेश में आकर धर्म के मूल्यों में कुछ परिवर्तन तो आ गया| पहले धर्म में जो कट्टरवादिता थी उसकी तो धीरे धीरे नाश होने लगा| पुराने ज़माने में अछूतों को देखना तक पाप माना जाता था, लेकिन आजकल 'हरिजन' कहे जानेवाले इन्हीं लोगों को ऊपर उठाने का प्रयास चल रहा है|

स्वातंत्र्योत्तर युग में धर्म से जुड़े व्यक्तियों तथा धार्मिक संस्थाओं का अधिक प्रचलन हो रहे हैं| इसका एक कारण तो यह रहा है कि राजनीतिज्ञ धार्मिक संस्थाओं को अपनी उन्नति की सीढ़ी मानते हैं| एक विशेष राजनीतिक पार्टी में विश्वास करनेवाले लोग एक विशेष धर्म के होंगे तो इन्हीं राजनीतिज्ञों को अधिक वोट मिलेगा| इसलिए सत्ता हमेशा धर्म के पक्षधर रहेगी|

धर्म से जनता का अधिक संबंध होता है| धर्म के नाम से उनमें चेतना जगाना आसान कार्य है| जनता की इसी कमज़ोरी को जानते हुए ये धर्मान्ध लोग उन पर शोषण करते हैं| धर्म के नाम पर जनता की आँखों में धूल डालकर वे अपनी उल्लू सीधा करते हैं|

स्वातंत्र्योत्तर भारत में धर्म के नाम पर बहुत अधिक हल्ला मचाया गया था| मुस्लिम बहुलतावाले प्रदेशों क्षेत्रों को उनकी माँग के अनुसार पाकिस्तान घोषित कर दिया गया| धर्म के नाम पर भारत-माता को विभाजित किया गया| हिन्दुस्तान-पाकिस्तान विभाजन के फलस्वरूप भारत में सांप्रदायिक दंगे शुरू हुए| अनेक लोगों की हत्याएँ हुई| भारत माता की वीर-भूमि में जहाँ भारतीय एकजुट होकर आज़ादी के लिए लड़े वहाँ स्वतंत्रता मिलने के बाद वे स्वयं धर्म के नाम पर आपस में हत्या कांड करने लगे|

भारत में हिन्दू-मुस्लिम सांप्रदायिक दंगे भड़के| इन दंगों पर काबू पाने का पूरा प्रयास तत्कालीन सरकार और गाँधीजी की ओर से हुआ, लेकिन वे सारे प्रयास असफल रहे| 26 जनवरी 1950 को जब भारतीय संविधान लागू हुआ तब से ही भारत को धर्म निरपेक्ष राज्य का दर्जा हासिल हुआ और हर भारतीय नागरिक को धार्मिक स्वतंत्रता का अधिकार मिला|

इसके बाद भारतीय धार्मिक परिवेश में पूरा बदलाव आ गया| धर्म में व्याप्त अंधविश्वासों, छुआछूत आदि को दूर करने की प्रवृत्तियाँ शुरू हुई|

हरिजनों को धार्मिक और सामाजिक, सार्वजनिक स्थानों में प्रवेश दिलाने का कार्य समाज सुधारक संस्थाओं द्वारा किया गया|

इस क्षेत्र में हमारे राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी का योगदान सराहनीय है| वे हरिजन समस्याओं के निदान के लिए व्यक्तिगत रूप से हरिजन समाज से जुड़े| ब्रह्म समाज, आर्यसमाज जैसे सामाजिक संघों ने धार्मिक क्षेत्र में व्याप्त कुरीतियों को जड़ से उखाड़ फेंकने की दिशा में सराहनीय कदम उठाए| राजा राममोहन राय, दयानन्द सरस्वती जैसे समाज सुधारकों ने धार्मिक क्षेत्र में व्यक्तिगत स्वतंत्रता को अधिक महत्व देकर धर्म को नवीन सामाजिक आवश्यकताओं के अनुसार ढालने की बातों पर ज़ोर दिया|

इतना सब कुछ होने पर भी भारत विभाजन के समय भारत में सांप्रदायिकता का जो बीजवपन हुआ था वह आज अधिक ज़ोर पकड रहा है| समय समय पर धर्म के नाम पर सांप्रदायिकता को उकसाया जाता रहा है| इसी के फलस्वरूप देश के भिन्न-भिन्न भागों में सांप्रदायिक दंगे, बंब स्फोटन आदि हो रहे हैं| कभी-कभी तो भौतिक या आर्थिक कारणों से होने वाले झगड़ों को भी सांप्रदायिकता का जामा पहनाने की कोशिश भी ज़ारी है जिसके पीछे राजनीतिज्ञों की कूट नीति ही है|

भारत में बाबरी मस्जिद तथा अयोध्या के नाम पर चल रही बातें सांप्रदायिक तनाव की जीती जागती सबूत है| उसी प्रकार मुंबई, दिल्ली,

हैदराबाद जैसे महानगर कितने बार आतंकवादियों, सांप्रदायिक दंगे आदि के शिकार हो गए हैं? कितने मानव जीवन इसके लिए नष्ट हो गए है|

सांप्रदायिकता के कारण देश मानवीय अस्तित्व की दृष्टि से भी एक गहरे संकट से गुज़र रहा है| शासक, धर्म तथा सांप्रदायिकता का इस्तेमाल करके जनता का शोषण करते हैं| जनता पर होने वाले धार्मिक शोषणों का चित्रण नुक्कड़ नाटकों में हुआ है|

नुक्कड़ नाट्य वस्तु : धार्मिक सांप्रदायिक समस्याओं के संदर्भ में

नुक्कड़ नाटक अंधविश्वासों, धार्मिक रूढ़ियों, पाखंडों से जनता को अवगत कराते हुए इन सबके उन्मूलन के लिए आह्वान देते हैं| समाज में धार्मिक सांस्कृतिक तनावों से पनपनेवाली कुरीतियों पर तीखा व्यंग्य करते हुए एक स्वस्थ समाज का निर्माण करने के लिए जनता को तैयार करने का प्रयास नुक्कड़ नाटककारों द्वारा ज़ारी है|

आज धर्म तथा शासन के बीच एक विशेष प्रकार का गठबंधन है जिसके बल पर वे आम जनता के शोषण करते हैं| इस समस्या का चित्रण जन नाट्यमंच के नुक्कड़ नाटक 'काला कानून' में हुआ है| इस नुक्कड़ नाटक में रानी नामक एक चरित्र की प्रस्तुति हुई है वह तो आज की धार्मिक सत्ता का प्रतीक है| रानी पूँजीपतियों तथा राजनीतिज्ञों के पक्षधर हैं| वह जनता को महामूर्ख मानती है, क्योंकि जनता से कुछ भी कहे, बिना सोचे उसे स्वीकारती है|

'काला कानून' में धार्मिक सत्ता की विनाशकारी शक्ति का चित्रण है| नाटक में कहा गया है कि देवीजी की मर्जी के बगैर पत्ता भी नहीं खडकेगा| यहाँ धर्म सत्ता की शक्ति कितनी है यह तो दृष्टव्य है| रानी को उद्योगपतियों, अफसरों-सेठों और ज़मीन्दारों की प्रिय मित्र कहा गया है| अर्थात धर्म सत्ता इन्हीं लोगों की मित्र है आम-आदमी की नहीं|

रानी : "हम ने अवतार लिया है इस देश की दीन हीनजनता, अर्थात् मज़दूर-धर्म से पीड़ित लखपतियों और करोड़पतियों के उद्धार के लिए|"[1]

पूँजीपति लोग पैसा देकर अपनी सहायता के लिए धर्म सत्ता का इस्तेमाल करते हैं| धर्म सत्ता के आगे नतमस्तक होने वाले पूँजीपति की विनती है –

"हे रानी तेरी सेवा में यह काली गठरी रखते हैं| हम सबकी श्रद्धा का तोफा हम पेश तुझे यह करते हैं| इस गठरी में है गुप्त अस्त्र जादू टोने और जाप तंत्र| धन्ना सेठों के प्रेम पत्र जिनसे चलता है प्रजातंत्र|"[2]

अपने हथियारों को छुपाने की जगह के रूप में ये पूँजीपति लोग धार्मिक संस्थाओं को ही चुनते हैं क्योंकि वह जगह सुरक्षित है| वहाँ पर कोई हमला नहीं होगा क्योंकि धर्म तथा धार्मिक संस्थाओ से जनता को आदर है| पुलिसवाले भी प्रवेश नहीं करेंगे| लेकिन इन धार्मिक केन्द्रों में चलनेवाले अनाचारों से आम जनता अनभिज्ञ है| यही इन्हीं शोषकों की शक्ति है|

[1] काला कानून, नुक्कड़ जन्म संवाद अंक 16-17, पृ : 44

[2] काला कानून, नुक्कड़ जन्म संवाद अंक 16-17, पृ : 44

रानी के महल में आम आदमी को प्रवेश नहीं दिया जाता है| रानी को देखने का अधिकार समाज के उच्च वर्गीय लोगों को ही दिया जाता है| जनता रानी जी से मिलने के लिए जाती है तो रानी जी का चमचा उन्हें रोकता है|

चमचा : "यह रानी जी की महल है, यहाँ पढ़े लिखे ऊँचे खानदानी लोग ही जा सकते हैं, तुम्हारे जैसे उजड्ड नहीं|"[1]

रानी के अत्याचार से अनभिज्ञ होने के कारण जनता उसकी शरण में जाती है| रानी जी तब जनता को ठीक रास्ते पर लाने की दृष्टि रखकर उनसे कहते है कि वे हड़ताल करना बन्द कर दें| यहाँ रानी जी जनता को प्रतिक्रिया विहीन बनाना चाहती है| उन्हें मालूम है कि जनता उसकी बात ज़रूर मान लेंगी क्योंकि गरीब जनता धर्म में अधिक विश्वास रखती है| जनता की इसी कमज़ोरी से लाभ उठाना रानीजी का लक्ष्य है| इसके लिए शासक वर्ग की सहमति भी है| जनता को यथार्थ से दूर भडकाते हुए रानी उपदेश देती है –

"आज ज़रूरत है अनुशासन और कठोर परिश्रम की, आंदोलनों की नहीं| देश के कदम मज़बूत कीजिए फिर आपकी माँगों पर विचार होगा|"[2]

यहाँ रानी जनता को हड़ताल बन्द करने का आह्वान देती है| यदि हड़तालें ज़ारी रहेगी तो कारखाने बन्द हो जाएगी जिससे पूँजीपतियों को नष्ट

[1] काला कानून, नुक्कड़ जन्म संवाद अंक 16-17, पृ : 45

[2] काला कानून, नुक्कड़ जन्म संवाद अंक 16-17, पृ : 45

मिलेगा| लेकिन उनके कहने पर जनता नहीं मानती है तो रानी उस पर हमला छोडती है| पूँजीपतियों की रक्षा के लिए वह कुछ नीतियों को प्रस्तुत करती हैं|

चमचा : "आज से कर्मचारियों के बोनस पर रोक लगाईं जाती है तथा वेतन जाम किया जाता है| ..... किसी भी उद्योग में अपनी माँगों को लेकर इकट्ठा होना गैर कानूनी है|"[1]

धर्म के नाम पर जनता पर हमला करने की नीति आज भी मौजूद है जिसके विरुद्ध आम जनता पर प्रभाव डालने का प्रयास इस नुक्कड़ नाटक के माध्यम से हुआ है|

छः पैसे का रुपैया' नामक नुक्कड़ नाटक में एक ऐसे पंडित का चित्रण किया गया है जो मात्र पैसा कमाने के लिए ही पूजा करता है| जनता की भलाई नहीं अपनी स्वार्थ पूर्ति ही उनका लक्ष्य है| जब वह एक शादी की पूजा करता है तो अग्नि में डालने के बदले घी को अपनी दक्षिण में डालने को कहता है|

पंडित : "वर और कन्या का मुँह मीठा करवाओ|"

पिता : मीठा तो कुछ है नहीं| वो आपकी दक्षिणावाली चीनी में से करा दूँ|

पंडित : ना भैया न दूर से दिखा भर दीजिए काम चल जाएगा|"[2]

[1] काला कानून, नुक्कड़ जन्म संवाद अंक 16-17, पृ : 47

[2] छः पैसे का रूपया, नुक्कड़ जन्म संवाद अंक 16-17, पृ : 81

इस नुक्कड़ नाटक में चित्रित पंडित जो पूजा ठीक तरह से किये बिना अपनी ही आवश्यकताओं की पूर्ति करता है, धार्मिक शोषकों का उदाहरण है| शादी की पूजा ठीक तरह से हो जाए या नहीं इसकी उसे कोई परवाह नहीं है| घरवाले चाहे गरीब हो या अमीर उन्हें अपनी दक्षिणा सही मात्रा में मिलनी ही चाहिए| गरीब लोगों को इन्ही पंडितों को दक्षिणा देने के लिए कठिन मेहनत करनी पड़ती है क्योंकि इनकी दक्षिणा आम आदमी की पकड़ से भी ज़्यादा है|

सांप्रदायिक समस्याओं का चित्रण

"भारत के सामाजिक सांस्कृतिक विकास और राष्ट्रीय एकता अखंडता में सबसे बड़ा बाधक तत्व सांप्रदायिकता है| इसी समस्या के कारण देश मानवीय अस्तित्व की दृष्टि से भी एक गहरे संकट से गुज़र रहा है|"[1] स्वाधीनता प्राप्ति के बाद सांप्रदायिक सद्भाव और सभी धर्मों के प्रति आदर की भावना रखनेवाली व्यवस्था को सत्ता द्वारा विस्थापित किया गया| पीछे यह उद्देश्य रहा कि जनता द्वारा देखे गए सपने, सपने ही रह जाए, उसकी आशाएँ और आकांक्षाएँ मूर्त न हो पायें, उसके अधिकारों और उनके लिए उठने वाली आवाज़ को दबाया जायें|

आर्थिक संकट से जनता का ध्यान हटाने और जन असंतोष को गलत दिशा देने के लिए शासक वर्ग धार्मिक संकीर्णताओं को बढ़ावा देता है| शासक

[1] नुक्कड़ नाटक रचना और प्रस्तुति, प्रज्ञा, पृ : 120

वर्ग की इस कूट-नीति को चित्रित करते हुए धार्मिक सांप्रदायिक सद्भावना स्थापित करने का प्रयास नुक्कड़ नाटकों में हुआ है|

रमेश उपाध्याय के नुक्कड़ नाटक 'राजा की रसोई' में सांप्रदायिक समस्या तथा सांप्रदायिकता की आड़ में अपनी स्वार्थ पूर्ति करनेवाले शासकों का यथार्थ चित्रण है| नाटक का आरंभ ही नाट्य-मंडली द्वारा आयोजित एक समूह गान से होता है जिसमें हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई धर्मों के लोग, उन धर्मों के सांप्रदायिक रूप तथा उसके पीछे छिपी शक्तियों की सांकेतिक चर्चा में लगे हुए है - "देखो-देखो रे भाई धरम करम की माया इसने भाई का भाई से कैसे गला कट वाया|"

इस नुक्कड़ नाटक में पहले राजा को धर्म-निरपेक्ष राजा के रूप में चित्रित किया हैं, लेकिन जब तक जनता अपने अधिकारों की बात नहीं कहती मात्र तब तक वह धर्म निरपेक्ष राजा बना रहता है| किन्तु जब उनके रसोइये अपने काम के लिए उचित वेतन, काम की जगह की स्थिति आदि पर शिकायत करते है तब उनके अधिकारों के दमन के लिए राजा उनके बीच धर्म के नाम पर फूट डालता है|

राजा : ".....जीवन में सबसे बड़ी और सबसे प्यारी चीज़ है आदमी का धर्म| धर्म के लिए आदमी जान दे सकता है, दूसरे जान ले सकता है| .....हम सोचते हैं कि सांप्रदायिक दंगों को राष्ट्रीय पर्व घोषित कर दे और उन

दंगों में जो लोग सबसे ज़्यादा जानें लेकर दिखाये उन्हें धर्मवीर चक्र प्रदान करें|"[1]

यहाँ एक ऐसे शासक का चित्रण हुआ है जो विद्रोह और जन क्रान्ति को धर्म के माध्यम से दबाना चाहता है| स्वयं वे कहते हैं कि वे जनता के रक्षक है| लेकिन वही रक्षक स्वार्थ पूर्ति के लिए धर्म की आड़ में जनता का शोषण करते हैं| शासक वर्ग की इसी प्रवृत्ति का चित्रण इस नुक्कड़ नाटक में हुआ है|

सांप्रदायिकता को मुख्य विषय बनाकर लिखे गए नुक्कड़ नाटकों में धर्मांधता, अंधविश्वास,रूढ़ियों आदि का विरोध किया गया है| ऐसे नुक्कड़ नाटकों के माध्यम से नाटककार यही बात सिद्ध करना चाहते हैं कि आम जनता जो है वह वास्तव में सांप्रदायिक सद्भाव ही चाहती है|

जनता के मन में धर्म के प्रति जो विशेष आस्था है उसे सांप्रदायिकता की ओर मोड़कर प्रत्येक धर्म के लोगों के बीच झगड़ा कराने की कोशिश शासक करते हैं| आज का जन प्रतिनिधि यानि शासक सांप्रदायिकता की आग में घी डालने का कार्य करता है|

रमेश उपाध्याय के नुक्कड़ नाटक 'राजा की रसोई' में शासकों की इस बद-नीति का वास्तविक चित्रण है| सत्ता द्वारा पोषित दूषित न्याय-व्यवस्था सत्ता की यथास्थिति बनाये रखने के सर्वथा योग्य है| नाटक में गुलाम अली

[1] राजा की रसोई, रमेश उपाध्याय उत्तरगाथा (जनवरी-अप्रैल) 1982 पृ : 81

और मि.वेस्टर्न का अल्प संख्यकों का नेता होना, धर्मांतरण की बात करना, दंगों में सक्रिय होना, नेकरदास का हिन्दू नेता और किरपान सिंह का खालसा पंथ का नेता होना, छुआछूत जातिवाद को प्रमुखता देना इस बात की पुष्टि करता है| यह सांप्रदायिक तत्व आम जनता को अधिकारों की लड़ाई लड़ने से रोकते हैं| नुक्कड़ नाटक का यह अंश देखिए –

"गुलाम : देखिए साहिबान, इन बेकार की बातों से कोई फायदा नहीं| बाबर्चीखाने में रियासत की कोई बात नहीं होनी चाहिए| काम कीजिए और ठीक तरह से कीजिए| राजा साहब को आप लोगों से बहुत शिकायतें हैं|[1]

इस नुक्कड़ नाटक में राजा द्वारा स्थापित नयी व्यवस्था जो अमानवीय है, समाज में बढती उन सांप्रदायिक शक्तियों का प्रतीक है जो आगे चलकर देश रूपी रसोई को संभालेगी| यह नाटक राष्ट्र की ही नहीं, अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर चल रही, धर्म की नीति का चित्रण करता है| ये शक्तियाँ मात्र विनाश या ध्वंस जानती है – आम जीवन की शांति नष्ट करती है, कहीं मस्जिद गिर्वाती है तो कही मंदिर| इनकी काली करतूतों की शिकार के रूप में भारतमाई का चित्रण इस नुक्कड़ नाटक में लिया गया है जो प्रतीकात्मक है|

जन नाट्य मंच के प्रमुख रंगकर्मी सफ़दर हाश्मी द्वारा लिखित नुक्कड़ नाटक 'अपहरण भाईचारे का' भी सांप्रदायिकता को विषय बनाकर लिखा

[1] उत्तरगाथा, सांप्रदायिकता विरोधी अंक (जनवरी – अप्रैल 1982), पृ : 77

गया है| इसमें नाटककार मदारी जमूरे के खेल के माध्यम से देश में गहरे पैठी सांप्रदायिकता की जड़ों को एक-एक कर उखाड़ता है| इस नुक्कड़ नाटक में चित्रित किया गया है कि जिस भाईचारे के कारण देश की जनता ने आज़ादी हासिल की थी, उसी भाईचारे का अपहरण आज के धार्मिक संगठनों और इनसे जुड़े लोगों ने कर लिया है| नाटक में चित्रित किया गया है कि देश में हिन्दू-मुस्लिम-सिख तीनों के लिए धार्मिक संगठन बन गए हैं| इनको बनाये रखने के लिए तथा धर्म के नाम पर दंगा भडकाने के लिए अमेरिका जैसे देशों से पैसा आता है या लाया जाता है|

इस नुक्कड़ नाटक में 'भाईचारे' को एक प्रतीकात्मक पात्र के रूप में चित्रित किया गया है| नाटक का भाईचारे कहता है –

"आज अगर मैं मर जाऊँ तो
युद्ध होगा कल से|
आओं भारत देश के वीरों
आ मुझको आज़ाद करो|
आओ मेरे बंधन तोड़ो
अमन को फिर आबाद |"[1]

आज के संदर्भ में देश में फैलनेवाले सांप्रदायिक धार्मिक मूल्य विघटन से उभरी अशांति की ओर ध्यान देने पर हमें सर्वत्र एक बिखराव नज़र आता है|

[1] अपहरण भाईचारे का, सफ़दर,उद्भावना जनवरी-मार्च 1987 पृ : 33

कहीं पर धर्म की आड़ में खालिस्तान बनाने पर ज़ोर दिया जाता है तो कहीं पर रामजन्म भूमि और बाबरी मस्जिद के नाम पर हल्ला मचाया जाता है| इस क्रम में जन नाट्य मंच के नुक्कड़ नाटक 'अपहरण भाईचारे' का एक दूसरा अंश प्रस्तुत है –

"एक : जागो, जागो हिंदुओं, अपनी नींद से
जागो, उठो, हिन्दू राष्ट्र का निर्माण करो|
यह देश, यह भारतवर्ष तुम्हारा है|
अपने देश में पहले दर्जे के नागरिक
के अधिकार को पाने के युद्ध -
घोषणा करो| उठो गर्व से बोलो,
'हम हिन्दू हैं और त्रिशूल धारण करो|"[1]

असगर वजाहत के नुक्कड़ नाटक 'मुजरिम कौन है, तथा 'दोनों मारे जायेंगे', ये दोनों धार्मिक संकीर्णताओं पर केंद्रित हैं| नाटककार इन नाटकों में धर्म की आड़ में पालनेवाली बुराइयों, अधार्मिक वृत्तियों, धार्मिक संकीर्णताओं को उजागर करता है| उनका एक दूसरा नाटक 'सबसे सस्ता गोश्त' में इंसानियत की, मानवीयता की लड़ाई का मोर्चा संभाले दिखाई देता है| नाटक में चित्रित किया गया है कि आज के तथा कथित राजनेता जो न हिन्दू

[1] अपहरण भाईचारे का, जन नाट्य मंच.दिल्ली, उद्भावना जनवरी-मार्च 1987, पृ : 33

है, न इस्लाम, धर्म के नाम पर देश की भोली भाली जनता को गुमराह करके वोट बटोरने के लिए एक से बढ़कर एक चाल चलाते हैं|

इस नाटक में चित्रित किया गया है कि धर्म के नाम पर आदमियों की हत्या की जाती है, लेकिन उसे भी पुण्य कर्म मानी जाती है| ये लोग गाय या सूअर के गोश्त से तो मंदिर और मस्जिद को अपवित्र मानते है लेकिन इंसान की लाश से मंदिर या मस्जिद अपवित्र नहीं बनते हैं, यही उनकी मान्यता हैं| "मंदिर अपवित्र नहीं हुआ .... ये गाय का नहीं .... आदमी का गोश्त है| नापाक नहीं हुई..... ये सूअर का नहीं आदमी का गोश्त है|"[1] इसी के माध्यम से नाटककार व्यक्त करना चाहता है कि जहाँ मानवीयता को वरिष्ठता देनी चाहिए वहाँ क्रूरता, बर्बरता, सांप्रदायिक दंगा आदि को महत्व दिया जाता है|

हमारा भारतीय समाज धर्म और संप्रदायों के आधार पर बाँटा हुआ है| मानवीयता की दृष्टि से देखने पर यह बँटवारा ही गलत है| राजनीतिज्ञों के षड्यंत्र या साजिश के कारण ही हमारे भारत में सांप्रदायिकता के नाम पर दंगाये होती हैं| सुरेश वशिष्ट के नुक्कड़ नाटक 'गलत फैसला' में इसी बात का चित्रण हुआ है| नाटक का एक पात्र बाल धर कहता है – "हमें क्या लेना किसी के नमाज़ पढने या पूजा करने से, हमें तो अपने मकसद पर पहूँचना है| लोग हिन्दू मुस्लिम सिखों में दंगे फसाद करा वोट बटोरते हैं|"[2]

[1] संपादक सुभाष चौधरी, मुजरिम कौन है?, गलत फैसला, पृ : 78

[2] ग़लत फैसला, सुरेश वशिष्ठ मुजरिम कौन है?,पृ. 68

सुरेश वरिष्ठ ने अपने एक दूसरे नुक्कड़ नाटक 'हुकूमत उनकी' में भी धर्म की संकीर्ण मनोवृत्ति पर प्रहार किया है| धार्मिक संकीर्णता के नाम पर स्त्री को पर्दे के पीछे की वस्तु समझा जाता है| नाटककार कहता है – "चिंता इन्हें है कानून धर्म की जिसमें सिर नंगा नहीं चलेगा| छाती उघडी नहीं चलेगी|"[1]

राजेश कुमार ने अपने एक नुक्कड़ नाटक 'हमें बोलने दो' में सांप्रदायिकता के नाम पर होनेवाले दंगों पर विचार किया है| इस नाटक का एक अंश उदाहरण के लिए प्रस्तुत है –

"सांप्रदायिक दंगों के दौरान चालीस लोगों के घर जलाकर स्वाहा|"[2]

हिन्दू गुण्डा : "असंभव ..... हिन्दू और मुसलमान साथ-साथ पूजा और नमाज़ कर रहे है ..... अरे मूर्खो! हमारे देश में तो मंदिर और मस्जिद तक साथ-साथ नहीं बन सकते ....मंदिरों और मस्जिदों में लगातार युद्ध चलता रहा है|"[3]

नुक्कड़ नाटककारों ने सांप्रदायिक तथा धार्मिक समस्याओं का चित्रण करने के साथ-साथ इस दिशा की ओर शांति स्थापित करने की कोशिश भी की है| जन नाट्यमंच के नुक्कड़ नाटक 'अपहरण भाईचारे का' में इसका उदाहरण है –

[1] संपादक सुभाष चौधरी, मुजरिम कौन है?, गलत फैसला, पृ : 184
[2] संपादक सुभाष चौधरी, मुजरिम कौन है?, गलत फैसला, पृ : 166
[3] संपादक सुभाष चौधरी, मुजरिम कौन है?, गलत फैसला, पृ : 31

"भाईचारा : खामोश, खामोश, खामोश| नहीं बंटेंगे यहाँ पर त्रिशूल, नहीं उठेंगे, खालीस्थान के नारे, नहीं निकलेगी महज़बी तलवारें| ये हिन्दोस्तान है| यहाँ पर सब अमन चैन से रहेंगे, हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई भाई भाई की तरह रहेंगे|

"..... न हिन्दू राष्ट्र
न खालिस्तान
एक रहेंगा हिन्दोस्तान
एक रहेंगे हिन्दुस्तानी,
एक रहेंगा हिन्दोस्तान|
दीन धरम के नाम पे देंगे कोई नहीं कर पाएगा|
अब के लड़ाई लाने वाला बचके न जाने पाएगा|
जो हमको लड़वाएगा मर जाएगा हैवान,
न हिन्दू राष्ट्र, न खालिस्तान, एक रहेगा हिन्दुस्तान|"[1]

निष्कर्ष

निष्कर्ष के रूप में हम कह सकते हैं कि नुक्कड़ रंगकर्मियों ने जनता में व्याप्त सांप्रदायिकता और धर्मान्धता को जड़ से खत्म करने का आह्वान दिया है| उन्होंने दिखाया है कि सांप्रदायिकता तो एक ऐसी विषैली चीज़ है जो धीरे-धीरे भारत के प्रत्येक भाग में फैलकर एक दिन भारत माता को पूर्ण रूप

[1] अपहरण भाईचारे का, जन नाट्य मंच, उद्भावना जनवरी-मार्च1987 पृ : 33

से नष्ट कर देगी| आज हमारे देश में हर कही सांप्रदायिक दंगे की भीती है| विदेशी ताकतें सांप्रदायिक दंगे भड़क रही हैं इसी भडकन को शांति में परिवर्तित करने के लिए नुक्कड़ रंगकर्मियों ने शानदार कार्य किया है|

पाँचवाँ अध्याय

हिन्दी नुक्कड़ नाटकों में चित्रित आर्थिक – सांस्कृतिक संकट

स्वातंत्र्योत्तर आर्थिक परिवेश

स्वतंत्रता के बाद का समय विश्रृंखलता और बिखरावट का युग है| सारा युग व्यक्तिवादी व्यक्ति-चेतनवादी हो गया है| भारत में स्वतंत्रता के पश्चात् का परिवेश ही आधुनिक-विघटन के लिए प्रमुख रूप से उत्तरदायी है| आज हम जिस सामाजिक,धार्मिक, राजनीतिक, आर्थिक - विघटन या विसंगतियों से गुज़र रहे हैं, उसकी पैदाइश स्वातंत्र्योत्तर परिवेश की ज़मीन से ही है|

आज़ादी के बाद भारतीय आर्थिक परिवेश में बहुत अधिक परिवर्तन दिखाई देता है| वर्तमान युग में अर्थ एक जीवन मूल्य बन गया है| आज व्यक्ति के मूल्यांकन का मानदण्ड उसकी प्रवृत्ति या व्यक्तित्व न होकर उसकी आर्थिक स्थिति ही है|

आज मानव किसी न किसी तरह अपनी वैयक्तिक सुख सुविधाओं की पूर्ति के लिए पैसा जुटाने की होड़ में है| इसी होड़ में एक दूसरे की बात समझने का फुर्सत उनके पास नहीं है| अर्थात् आधुनिक मानव के मन से मानवीयता गायब हो चुकी है और वैयक्तिकता या स्वार्थता ने मानवीयता का स्थान हासिल किया है|

आधुनिक युग में अर्थ ने मानव-मानव के बीच के संबंधो को तोडा है| स्वातंत्र्योत्तर भारत के राजनैतिक सामाजिक सांस्कृतिक सभी क्षेत्रों में व्याप्त भ्रष्टाचार के मूल कारण भी यही अर्थ लोलुपता है| इस अर्थ प्रधान व्यवस्था ने नैतिक संबंधो पर आघात किया है|

अर्थ के आधार पर मानव की हैसियत निश्चित करने के कारण समाज में स्पष्ट रूप से दो वर्ग दिखाई देने लगे अमीर वर्ग और गरीबवर्ग| स्वतंत्रता ने अमीर गरीब के बीच की खाई कम करने की बजाय उसे और अधिक बना दिया|

धर्मवीर भारती के शब्दों में – "हमने समाजवादी समाज-व्यवस्था का संकल्प तो किया, किंतु पिछले सताईस वर्षों में गरीब लगातार गरीब होता चला गया, अमीर लगातार अमीर .... एक ओर जहाँ देश की सत्ताईस करोड़ जनता अति दरिद्रता में जी रही है, वहीं दूसरी और मुट्ठी भर लोग ऐशोआराम की ज़िन्दगी जी रहे हैं|"[1]

स्वातंत्र्योत्तर भारत में लोगों का ध्यान कृषि की ओर कम और नौकरी की ओर ज़्यादा है| आज के युग में नव्य शिक्षा प्रणालियों का उपयोग धनोपार्जन हेतु किया जाता है| जीवन के चारों ओर फैली आर्थिक संसाधनों की लालसा और भौतिकवादी होड़ आज की एक प्रवृत्ति बन गयी है|

स्वातंत्र्योत्तर भारतीय समाज में एक विशेष वर्ग का उद्भव हुआ है जिसे मध्यवर्ग के नाम से अभिहित किया जाता है| इस मध्यवर्ग ने निम्नवर्ग की पूरी तरह की उपेक्षा की है| इन लोगों ने उच्च वर्ग तक ऊपर उठने के प्रयास में कई आर्थिक विषमताओं विसंगतियों को जन्म दिया है| वे लोग अधिक से अधिक

[1] विश्वनाथ, धर्मयुग 3, नवंबर 1973, पृ : 13

भौतिक साधन, सुख सुविधाएँ और शान-शौकत के संसाधन जुटाने में तत्पर है|

"स्वाधीनता के बाद के भारत का पूँजीपति वर्ग एक ओर सामंतवाद से और दूसरी ओर साम्राज्यवाद से समझौता किए रहने के कारण जन चेतना के विकास में अनेक प्रकार की बाधाएँ उत्पन्न करता रहा है|"[1]

स्वातंत्र्योत्तर भारतीय परिवेश की ओर दृष्टि डालने पर हम समझ सकते है कि भारतीयों के मन में भौतिक सुख-सुविधाओं पर एक विशेष लगाव उत्पन्न हुआ है| इस प्रकार की सुख-लोलुप ज़िन्दगी ने व्यक्ति को उसकी क्षमता और सामर्थ्य से बाहर की चीज़ों को जुटाने की प्रेरणा देकर ज़्यादा धनोपार्जन के लिए भी उसे विवश बना दिया है| इतना ही नहीं आज के लिए उपयुक्त सभी भौतिक चीज़े शायद ही भारत में मिलती होगी नहीं, तो उसे बाहर से निर्यात करनी पड़ेगी| इस प्रकार की विदेशी आयात-निर्यात नीति ने भी हमारी अर्थ व्यवस्था को एक हद तक प्रभावित किया है|

आजकल के आर्थिक परिदृश्य पर नज़र डालने पर पता चलता है कि रुपये की कीमत में अंतर्राष्ट्रीय बाज़ार में उत्तरोत्तर कमी आई , जो अर्थ-व्यवस्था के कमज़ोर होते जाने का सबूत है| स्वातंत्र्योत्तर युगीन अर्थ शास्त्रीय आँकडे बताते हैं कि भारत में एक ओर महँगाई तेज़ी से बढ़ रही है तो दूसरी ओर बेरोज़गारी भी|

[1] डॉ. रमेश उपाध्याय, नया पथ अंक 3, 1987, पृ : 4

नुक्कड़ नाटकों में चित्रित आर्थिक संकट

वर्तमान भारतीय जन-जीवन पर ज़्यादा असर डालने वाली हमारी आर्थिक- व्यवस्था ने उसे अधिकतर समस्याएँ या उलझनें भी दी है| हमारी अर्थ-व्यवस्था में दिखाई देने वाली असमानताएँ जन जीवन को पूरी तरह से अपने शिकंजे में ली हुई हैं| आर्थिक-दृष्टि से सक्षम होने की होड़ में आज के मानव के मन से मानवीयता कहीं गायब हो चुकी है|

आर्थिक-दृष्टि से स्वातंत्र्योत्तर भारतीय जन-जीवन में काफी परिवर्तन आया है| अर्थ ने मानव- मानव के बीच के संबंधो को तोडा है| इतना ही नहीं सामाजिक और राजनीतिक भ्रष्टाचार के मूल में अर्थ लोलुपता अपनी सक्रिय भूमिका अदा करती है| आज़ादी के बाद भारत की आर्थिक स्थिति जब कमज़ोर हो गयी तब आई.एम.एफ., विश्व बैंक संस्थाएँ भारत को क़र्ज़ देने के लिए तैयार हो गई| लेकिन इसी सहायता के पीछे छिपे हुए षडयंत्र को पहचानने में हम असमर्थ हुए, और उन लोगों ने भारत को अपने हाथ की कठपुतली बनायी|

अर्थ-व्यवस्था में आयी दूषित वृत्तियों के कारण भारत में बेरोज़गारी, महंगाई, भुखमरी आदि की संख्या दिन-ब-दिन बढ़ती गयी| भारत में आई इन्हीं आर्थिक स्थितियों का चित्रण करने का प्रयास नुक्कड़ नाटकों में हुआ है|

किसानों मज़दूरों का आर्थिक संकट

किसानों पर होनेवाले आर्थिक शोषण का चित्रण जन नाट्यमंच के नुक्कड़ नाटक 'गाँव से शहर तक' में हुआ है| इस नाटक में दिखाया गया है कि कलुआ

जो एक गरीब किसान है, आर्थिक-विपन्नता में तड़प रहा है| घर में उनके बच्चे भूख से रो रहे हैं, लेकिन उनके पास एक पैसा भी नहीं है| वह पैसा क़र्ज़ लेने केलिए महाजन के पास जाता है| महाजन कलुआ से कहता है कि पहले लिए क़र्ज़ तथा असके ब्याज को वापस करना है, तभी उसे और क़र्ज़ देगा| उस पैसे के नाम पर महाजन ने पैसे के बदले कलुआ का खेत छीन लेता है| अब कलुआ की आर्थिक-स्थिति का चित्रण एक गान के ज़रिए नाटक में चित्रित है –

"सूत्रधार – खेत छीना गया, काम सारा गया,

ज़िन्दगी का अकेला सहारा गया|

वो जो हमदर्द थे उसके बनते कभी,

थे तबाही में वह उसकी शामिल सभी|"[1]

पूँजीपतियों तथा राजनीतिज्ञों की गलत आर्थिक-नीती का चित्रण करने की दिशा में भी नुक्कड़ नाटकों ने पहल की है| जन नाट्यमंच, दिल्ली द्वारा प्रस्तुत नुक्कड़ नाटक 'समरथ को नहिं दोष गुस्साई' में बढ़ती महंगाई के लिए पूँजीपतियों, सरकार की मिली-भगत और गलत-वितरणप्रणाली को ज़िम्मेदार ठहराया है|

इस नुक्कड़ नाटक में 'लाला' नामक एक पात्र है जो पूँजीपति वर्ग का प्रतिनिधित्व करता है| वह मंत्रियों, राजनीतिज्ञों तथा समाज के उच्च पद पर

[1] गाँव से शहर तक, नुक्कड़ जनम संवाद, जुलाई-दिसंबर 2002, पृ : 23

विराजित अन्य लोगों को पैसा देकर उसे अपने वश में लाकर अपना उल्लू सीधा करता है| उसकी चालाकी उसके इन शब्दों में गूँजती है –

"हैलो कौन? मिस्टर खरबंदा?क्या गेंहू के बाज़ार में मंदी आ गई है? अरे तो इतना घबराने की क्या बात है? दो-चार माल गाड़ियाँ बंद कर दो गुदाम में और 'आउट आफ स्टाक' का बोर्ड लगा दो| फायदा? अरे यही कोई डेढ़ दो लाख का तो हो ही जाएगा|"[1]

मज़दूर वर्ग की आर्थिक स्थिति तो इतनी दयनीय है कि उन्हें अपना घर चलाने के लिए उपयुक्त वेतन तक मिलते नहीं है| 'मिल के चलो' नुक्कड़ नाटक हमें उन बदनसीब ग़रीबों के पास ले जाता है जिनकी झुग्गी झोपड़ियों में रोटी पकाने के लिए तेल नहीं, सब्जी या दाल नहीं| चूल्हे जलाने के लिए लकड़ी भी नहीं| तन ढांपने को कपडे नहीं| एक मज़दूर अपने दोस्त से अपनी करुण-कहानी कह रहा है - ..... "यहाँ तो भैया कभी भूख है तो कभी मौत, मेरे बाबा बीमार हुए तो लाख चाहने पर भी दवा न करा सका|"[2]

मज़दूर लोग दयनीय ज़िन्दगी जी रहे हैं| उनके घरों में हर दिन गरीबी ही है यानी कि भूख, प्यास से तडपने वाले घरवालों की स्थिति देखकर हम भी तड़प जाते हैं|

[1] समरथ को नहिं दोष गुस्साई, नुक्कड़ जनम संवाद, जुलाई-दिसंबर 2002, पृ :36

[2] मिल के चलो, नुक्कड़ जनम संवाद, जुलाई-दिसंबर 2002, पृ :29

महंगाई

आर्थिक-शोषण का दूसरा पक्ष है महंगाई| गरीबी की मार से पीड़ित जनता पर बढ़ती महंगाई का बोझ उसे असहाय बना देता है|

जन नाट्यमंच के नुक्कड़ नाटक 'है लाल हमारा परचम' में महंगाई को एक प्रतीकात्मक पात्र के रूप में रखा गया है| महंगाई के कारण जनता कितनी विवश हो गयी है इसका बखूबी चित्रण नाटक में है|

'महंगाई' और 'जनता' के बीच में जो वार्तालाप चलता है उसके द्वारा आम जनता के बेचारापन खुल जाता है| जनता के हाथ में रसद की लम्बी लिस्ट और जेब में बारह रुपये देखकर 'महंगाई' उनपर व्यंग कसती है –

"हाँ आ जाएगा| एक दो दाने चीनी के, डेढ़ चम्मच तेल, आधी कटोरी आता और घी सुबह शाम आकर सूँघ जाना|"[1]

महंगाई के कारण जनता का जीवन दूसर हो गया है| आज की स्थिति भी इससे भिन्न नहीं है| आज हम हर दिन अखबार में पढ़ते हैं दैनिक ज़िन्दगी केलिए उपयोगी चीज़ों की कीमत आसमान छू रही है| पेट्रोल, गैस, सब्जियाँ, चावल, न जाने सभी चीज़े बहुत अधिक महंगी हो गई है| प्रेमचंद की कहानी 'सवासेर गेंहू' का नुक्कड़ नाट्य-रूपान्तर राजेश कुमार ने किया था| उस नाटक का एक पात्र है 'मंगल' जो एक गरीब किसान है| वह कहता है –

[1] नुक्कड़ जनम संवाद, जनवरी-जून 2003, पृ : 81

"किरासन तेल कितना महँगा हो गया है| सुनते हैं सरकार ने इलेक्शन लड़ने के लिए पैसा जमा किया है और पेट्रोल, गैस, मिट्टी तेल पर डाल बढ़ा दिया है|"[1]

राष्ट्रीय स्तर पर असमान जन जीवन, बढ़ती महंगाई, काला-बाज़ारी और सरकार की गलत आर्थिक-नीतियों ने जनता की स्थिति कष्टमय बना दी है| आर्थिक असमानता के शिकार वर्गों, चरित्रों को लेकर, नुक्कड़ नाटक व्यंग्यपूर्ण तरीका अपनाते हुए उसके लिए ज़िम्मेदार लोगों को भी जनता के सामने प्रस्तुत करते हैं|

स्वयंप्रकाश अपने नुक्कड़ नाटक 'सबका दुश्मन' में एक बड़े व्यापारी सेठ करोड़ीमल से हमारा परिचय कराता है जिसके लिए पैसा ही बापू है, पैसा ही महतारी है| भारत के कई गाँवों में ऐसे हज़ारों करोड़मल है जिनके गोदाम गेंहू से भरा है और हज़ारों गरीब किसान गेंहू के लिए बिलख रहे है|

गुरुशरण सिंह ने अपने नुक्कड़ नाटक 'जन्गिराम की हवेली' में प्रतीकात्मक ढंग से देश की आर्थिक स्थिति तथा उसके लिए ज़िम्मेदार लोगों को प्रस्तुत करने की कोशिश की है| नाटक में चित्रित किया गया है कि देश में गरीबी की बीमारी है| लेकिन भगवान का आशीर्वाद होने के कारण गरीबी का सामना करने में जनता सक्षम निकली है| नेता लोगों से जब जनता अपनी

[1] नुक्कड़ नाटक, चंद्रेश (सं), पृ : 21

माँगे कहती हैं तो वे लोग कानों में ऊँगली डालते हैं और उन्हें केवल आश्वासन देते हैं| जनता विवश होकर बेकारी, भुखमरी, गरीबी को झेलती है|

आज भारत की अर्थ-व्यवस्था की स्थिति इतनी सराहनीय है कि इसमें पैसा ही ईमान है और जनहित को ताक पर रखकर सूदखोरी, काला बाज़ारी आदि चल रही है| ऐसी स्थिति में मानव मानव के बीच के आपसी रिश्ते में भी दरार आ चुकी है|

महंगाई के कारण तड़पने वाली जनता का चित्रण करने का प्रयास जन नाट्यमंच के नुक्कड़ नाटक 'है लाल हमारा परचम' में किया गया है| इस नाटक में जनता एक प्रतीकात्मक पात्र है जिसके ज़रिए भारतीय मज़दूरों ग़रीबों की विवशता उनके मुँह से सुनेंगे -

"जनता : कमर तोड़ दी महंगाई ने
छटनी ने कर दिया बेकार
दुत्कारा है उस ज़ालिम ने
जो हमने बनाई थी सरकार
इस महंगाई बेकारी में
हम पेट कहाँ भर पाएंगे
सिसक सिसक कर बिलख बिलख कर
भूखे ही मर जायेंगे|"[1]

[1] नुक्कड़ जनम संवाद, जनवरी-जून 2003, पृ : 82

जन नाट्यमंच का एक उल्लेखनीय नुक्कड़ नाटक 'छः पैसे का रुपया' में भी महंगाई का ज़िक्र है| इसमें दिखाया गया है कि मज़दूर लोग महंगाई के विरुद्ध जुलूस निकालते हैं| वे कहते हैं कि नरसिम्हा राव सरकार की नीतियों के कारण बढ़ी महंगाई ने घरेलू बजट पर जबर्दस्त हमला कर दिया है| खाने पीने, पहनने, बच्चो की शिक्षा आदि में तंगी महसूस करते हैं|

सरकार ने राशन के दाम से लेकर बच्चो की फीस, बसों का किराया, रेल का भाडा सभी कुछ बढ़ा दिया | इन्ही बातों को दिखाकर इस नुक्कड़ नाटक में महंगाई और सरकार की जन विरोधी नीतियों के विरुद्ध लड़ने का आह्वान भी दिया गया है| जनता के नारे यो गूँज उठते है –

"महंगाई को दूर करो, हमको सस्ता राशन दो
ज़माखोरी को खत्म करो, गाँव गाँव में राशन दो|"[1]

अर्थ के आधार पर मानवीय रिश्तों को मापने की स्थिति आ गई है| बाप बेटी जैसे आत्मीय संबंध भी आज अर्थहीन हो गया है| स्वयंप्रकाश के नुक्कड़ नाटक 'सबका दुश्मन' का सेठ ऐसा एक ममताहीन पिता है जो अपने जमाई को भी सिर्फ ग्राहक समझता है, यही नहीं गेंहू खरीदने के लिए उसके पास पैसा नहीं यह सुनते ही उस पर ताना मारता है – "पैसा नहीं है तो फिर गेंहू लेने कैसे चले आये? कोई खैरात बंट रही है क्या?"[2]

[1] नुक्कड़ जनम संवाद, जुलाई-दिसंबर 2002, पृ : 77
[2] उत्तरार्द्ध जनवादी नाटक विशेषांक 1983, द्वितीय खण्ड, पृ : 118

वह एक ऐसा निर्मम पिता है जो यह कहने में हिचकता नहीं कि गेंहू खरीदने के लिए पैसा नहीं तो घर में जाकर बेटी कमला के गहने गिरवी रखे| जमाई को संदेह होता है कि उसका ससुर इंसान है या शैतान| वह पूछ बैठता है – "ये आपकी इंसानियत है|"[1]

सेठ का जवाब उनके जैसे हज़ारों सेठ साहूकारों के चरित्र की कलई खोलता है - "इसमें इंसानियत की क्या बात है? भई देखो रिश्तेदारी, रिश्तेदारी की जगह, इसमें बुरा मानने की बात नहीं है| यह व्यवहार की बात है|"[2]

जन नाट्य मंच दिल्ली द्वारा आयोजित नुक्कड़ नाटक 'है लाल हमारा परचम' में भारत की अर्थ व्यवस्था पर प्रश्न चिह्न लगाया गया है| वर्तमान युग में यहाँ के नेता गण विदेशियों से क़र्ज़ लेकर भारत को उनके चरणों पर न्योछावर कर दिया है| अब वे लोग ही हमारी आर्थिक राजनैतिक व्यवस्था को संभाल रहे हैं| विदेशों से क़र्ज़ के बहाने देश द्रोह करनेवाले ऐसे कुकर्मी नेताओं के चरित्र का पर्दाफाश करने का प्रयास भी इस नाटक में दिखाई देता है|

"नेता 2 –महंगाई पूरे विश्व में है, चारों तरफ इन्फ्लेशन है| इसलिए हमेशा विदेशियों से कर्ज़ लेना पड़ता है| इस स्थिति पर काबू पाने के लिए

[1] उत्तरार्द्ध जनवादी नाटक विशेषांक 1983, द्वितीय खण्ड, पृ : 118

[2] उत्तरार्द्ध जनवादी नाटक विशेषांक 1983, द्वितीय खण्ड, पृ : 118

हमें और आपको कड़ी मेहनत करनी पड़ेगी| इसलिए पांडे आयोग ने काम के घंटे बढाए है|"[1]

आज के युग में महंगाई तो आसमान छू रही है| पेट्रोल, डीसल तथा गैस की कीमत प्रति हफ्ते बढ़ रही है| दैनिक जीवन के लिए आवश्यक चीज़ों का दाम इतना बढ़ गया है कि गरीब लोग इन चीज़ों को खरीद ही नहीं सकते हैं| महंगाई के साथ साथ नुक्कड़ नाटकों में चित्रित एक दूसरी समस्या है बेरोज़गारी| आज हमारे अधिकांश युवा वर्ग बेरोज़गार है| बेरोज़गारी की बात नुक्कड़ नाटक में कैसे चित्रित है इसकी ओर प्रकाश डालने का प्रयास आगे किया जा रहा है|

बेरोज़गारी का चित्रण

आज के युग की एक अन्य ज्वलंत समस्या है बेरोज़गारी| नौकरी के क्षेत्र में तो आजकल छीना-झपटी का खेल या भाई-भतीजावाद ही चलता है| इस समस्या की ओर इशारा करने वाले नुक्कडे नाटकों में 'राजा का बाजा' 'देश आगे बढ़ाओ' 'औरत' आदि के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं|

'राजा का बाजा' नामक नुक्कड़ नाटक में रामेश्वर नामक एक पात्र है जो शिक्षित बेरोज़गार नव युवकों का प्रतिनिधित्व करता है| वह अनेक बार नौकरी के लिए साक्षात्कार देते हैं, लेकिन कहीं भी नौकरी नहीं मिलती है|

[1] नुक्कड़ जनम संवाद, जनवरी-जून 2003, पृ : 82

नौकरी के क्षेत्र में चलनेवाली अनीतियों का ज़िक्र इस नाटक में हैं| सिफारिश या पैसे के बल पर अयोग्य उम्मीदवार नौकरी हड़प लेते हैं तो रामेश्वर जैसे गरीब युवक को मूक गवाह बनना पड़ता है| नौकरी की खोज में भटकते भटकते बिल्कुल हताश और निराश बनते शिक्षित बेरोज़गार युवकों की मानसिकता का सही परिचय रामेश्वर के शब्दों में - "यह संसार अनंत और असीम है| यहँ से वहाँ तक रेगिस्तान है बेरोज़गारी का| मुझे बताओ, कब बेरोज़गारी दूर होगी| क्या मुझे रोज़गार मिलेगा? नहीं तो गेटआउट आफ हेयर| बट व्हेअर शैल आई गो? मैं कहाँ जाऊँ ? हर रोज़ इन्हीं उम्मीदों के सहारे घर से निकलता हूँ कि आज अपोइन्टमेंट लेटर लेकर ही घर लौटूँगा| अपने बूढ़े बाप के चेहरे पर सकून देखूँगा| लेकिन.....|"[1]

बेरोज़गारी के कारण कभी कभी नई पीढी इतना निराश हो जाती है कि उन्हें अपना जीवन ही व्यर्थ सा लगेगा| शिक्षा प्राप्त करने के लिए उन्हें जो कुछ पैसा खर्च करना पड़ा वह पैसा नौकरी मिलने के बाद घर पर लौटाने की उनकी आशा है| नव जवानों की इसी निराशा का चित्रण अरविंद कुमार का नुक्कड़ नाटक 'बोल री मछली कितना पानी' में हुआ है|

"दो : मुझे नौकरी नहीं मिल रही| घर के हर सदस्य की आशाओं पर पानी फिरता जा रहा | हर कोई मुझसे नाराज़ है| कोई भी ठीक से बात नहीं करता..... पर मैं क्या करूँ? इसमें मेरा क्या कसूर है? नौकरी कोई पेड़ पर

[1] राजा का बाजा, जन नाट्यमंच दिल्ली नुक्कड़ जनम संवाद, पृ : 55

लगा फल तो नहीं है कि पेड़ पर चढ़ गए और तोड़ लिया ..... इंटरव्यू देकर थक गया हूँ मैं|"[1]

'औरत' नुक्कड़ नाटक में इस मुद्दे की ओर संकेत किया गया है कि सत्ता और सत्ता के पहरेदार इन बेरोजगारों की समस्याओं को सुलझाने की पहल करने के बजाये इन बेचारे को और भी उलझाते हैं| बेरोजगारों के जुलूस में भाग लेने के अपराध में कई युवक युवतियों को जेल में दंगा करने के अपराध में डाल दिया|

बेरोज़गारों की समस्या के लिए एक अजीब ढंग का समाधान ढूँढ निकालने वाले एक होशियार किस्म के मंत्री को असगर वजाहत ने अपने नाटक 'देश आगे बढ़ाओं' में प्रस्तुत किया है| वह अपने परिश्रम का बयान करते हैं कि उन्होंने जब सिनेमा की टिकटें ब्लैक में बेची तब वे चार सिनेमा हाल के मालिक बने, शहर में नया होटल खोला|

स्वातंत्र्योत्तर भारतीय जन जीवन में अर्थ ने अपना गहरा प्रभाव छोड़ा है| भूमंडलीकरण के दौर में लागू की गयी नयी आर्थिक- नीतियों के कारण भारतीय आज बहुत अधिक तनाव तड़प तंगी का अनुभव कर रहे हैं|

स्वातंत्र्योत्तर सांस्कृतिक -परिवेश

किसी भी राष्ट्र की संस्कृति वहाँ के युगीन परिवेश के अनुसार परिवर्तनशील होती रहती है| सांस्कृतिक दृष्टि से स्वातंत्र्योत्तर युग तो

[1] बोल री मछली कितना पानी, अरविंद कुमार, मुक्ति, पृ : 127

संघर्षशील रहा है जिसमें भारतीय पाश्चात्य विचारधाराओं और चिंतन दृष्टियों के बीच टकराहट दिखाई देती है| भौतिकवादिता की होड़ में पश्चिम का अन्धानुकरण भारतीयों की एक आम प्रवृत्ति बन गयी है| इसी अन्धानुकरण के फलस्वरूप हमारे सांस्कृतिक मूल्यों में भी विघटन और परिवर्तन आ गए हैं|

भारत, पश्चिमी संस्कृति के पीछे पड़कर अपनी परंपरागत सांस्कृतिक विरासत को खो चुका है | हमारे अमूल्य सांस्कृतिक मूल्यों को पहचाने बिना हम नए मूल्यों को जोड़ने में व्यस्त है| "हमारी युवा पीढ़ी ने विदेशी संस्कृति से कुछ वर उधार लिए हैं, आयातित-जीवन- दर्शन की कुछ मुद्राएँ ओढ़ी हैं| हम अपने अतीव समृद्ध मूल्यकोश से स्वयं वंचित होकर भटकाव में दिशाहीन हुए एक दूसरे से टकरा रहे है| समकालीन युवक समाज और युवती वर्ग सर्वथा संस्कार शून्य होकर अनेक विसंगतियों का शिकार हो रहा है|"[1]

स्वातंत्र्योत्तर भारत में एक नए प्रकार की संस्कृति ने जन्म लिया जिसे उपभोक्ता संस्कृति के नाम से अभिहित की जाती है| इस संस्कृति ने समूचे भारतीय जन जीवन को बदल दिया यानी कि मानव के रहन सहन, विचार, जीवन आदर्श सब कुछ पर इसी संस्कृति का प्रभाव पड़ा| वस्तुतः यह संस्कृति तो राष्ट्रीयता और जनवाद का दुश्मन है|

[1] डॉ. चंद्रशेखर, हिन्दी नाटक और लक्ष्मी नारायण लाल का रंगपात्र, पृ : 121

उपभोक्ता संस्कृति पूँजीवादी और सामंतवादी शक्तियों के बल पर हमारे शासक वर्ग तक को अपने हाथ का खिलौना बनाकर अपनी मर्जी के अनुसार उन्हें नचाती हैं| इसी कारण देश विकास के नाम पर हमारे शासक वर्ग जो- जो योजनाएँ बनाते हैं, उन सभी का लाभ इसी सामंती पूँजीपति वर्ग को ही मिलते हैं| इन्ही योजनाओं से आम जनता को शायद ही कोई प्रयोजन मिलेगा|

स्वातंत्र्योत्तर भारतीय संस्कृति-सभ्यता पर दृष्टि डालने से हम समझ सकते हैं अब हम एक प्रकार की यांत्रिक सभ्यतावाले बन गए हैं| जीवन में मशीनों के अति उपयोग ने मानव जीवन को कठिनाइयों से भर दिया| अठारहवीं-उन्नीसवीं सदी में उद्योगों में मशीनों ने मानव श्रम को नकार दिया| मशीनीकरण जीवन में संघर्ष तथा बेरोज़गारी का कारण बना| उन्नीसवीं-बीसवीं सदी में उद्योगों की स्थापना के लिए बैंको से ऋण उपलब्ध करवाया जाता था| इस प्रकार औद्योगीकरण का विकास तेज़ी से हुआ|

आज हम एक ऐसी प्रतिस्पर्धा के युग में जी रहे हैं जिसमें ठहराव कहीं नहीं है| आज मनुष्य की स्पर्धा मशीन से है| इसीलिए मानव भी यंत्र में परिवर्तित हो गया है| उसकी स्वाभाविक इच्छाएँ, भावनाएँ और संवेदनाएँ समाप्त हो गयी है| मशीन ने मानव की अस्मिता को ही प्रश्नांकित कर दिया है| भौतिकता की चरम उपलब्धियों को पाने की लालसा में मानव अब तड़प रहा है|

इक्कीसवीं सदी में भारत में विकास के नाम पर अनेक बहुराष्ट्रीय कंपनियों का आगमन हुआ| यह तो भेड के वेष में भेड़िया का आगमन है|

इन्हीं बहुराष्ट्रीय कंपनियों का संजाल तो साम्राज्यवाद का रूपांतरण ही है| हमारे उद्योग कारखानों और उत्पादन को बंद करवाकर हमें केवल उपभोक्ता बना डालना है इनका मुख्य उद्देश्य|

आज हम ऐसी परिस्थिति से गुज़र रहे है, जहाँ हर एक आदमी बिकाऊ माल में परिवर्तित हो गया है और हर आदमी व्यापारी| सभी भारतीय एक दूसरे के विपणन में संलग्न है|

सांस्कृतिक संकट-नुक्कड़ नाटकों में

भूमंडलीकरण और हिन्दी नुक्कड़ नाटक

भूमंडलीकरण या ग्लोब्लाइज़ेश्न शब्द का प्रयोग तो सन् 1960 के आसपास हुआ है| ऐसा कोई भी कार्य या प्रसंग, जिसका प्रभाव समूची दुनिया को अपने घेरे में लपेट लेता हो 'ग्लोब्लाइज़ेश्न' का केन्द्र है| भूमंडलीकरण की एक व्यंजना सामन्य रूप में स्वीकृत है, वह यह है कि आज हमारी धरती 'विश्व ग्राम' है|

'अमरिका की अगुआई में विश्व साम्राज्यवाद का हमला तेज़ हो रहा है| इस हमले के तीन पहलू हैं आर्थिक, फौजी, और विचारधारात्मक| वैश्वीकरण की प्रक्रिया इसका आर्थिक चेहरा है और आई.एम.एफ. वर्ल्ड बैंक जैसे संगठन इसके हथियार|"[1]

[1] नुक्कड़ जनम संवाद, जुलाई-दिसंबर 2002, पृ : 3

वास्तव में भूमंडलीकरण की प्रेरक प्रभावक बहुराष्ट्रीय कम्पनियाँ है, जो सारी धरती को अपना बाज़ार मानती हैं| तीसरी दुनिया के अल्पविकसित और अविकसित देशों के प्राकृतिक संसाधनों, सस्ते श्रम बाज़ार पर एकाधिकार स्थापित करने की अमेरिका बहुराष्ट्रीय कंपनियों के कुत्सित अभियान को यह अवधारणा पूरा समर्थन देती है|

सूक्ष्म दृष्टि से देखने पर हम समझ सकते हैं कि भूमंडलीकरण के नाम पर अमरीकन साम्राज्यवाद को फैलाने का प्रयास ही चल रहा है| देश में 'पानी' जैसी चीज़ की बिक्रि और उससे जबरदस्त मुनाफा कमाने के अभियान से भूमंडलीकरण के दुष्परिणामों को हम समझ सकते हैं| पानी तो हमारे भारत का और मुनाफा तो विदेशी कंपनियों को ही मिलता है|

भारत में भी वैश्वीकरण की प्रक्रिया के ज़रिए साम्राज्यवादी और पूँजीवादी लूट ज़ारी है| जनता की पूँजी से बनाए गए पब्लिक सेक्टर को अब कौड़ियों के दाम बेचा जा रहा है| वैश्वीकरण के इस चक्कर में देश भर में बहुराष्ट्र कंपनियों ने अनेकानेक कॉल सेन्टर खोल दी हैं| हमारे भारत के नौजवान तो बहुराष्ट्रीय कंपनियों के शोषण के हथियार रूपी इन कॉल सेंटरों में रात दिन एक बनाकर काम करने के लिए अभिशप्त हैं| ये कम्पनियाँ हमारे नौजवानों का शोषण करके मुनाफा जोडती हैं|

वैश्वीकरण के कंधो पर चढ़कर आई नीतीयाँ, देशी कल-कारखानों को ही नहीं, खेती को भी चौपट कर रही है| भारत के किसान आज आत्महत्या करने

के लिए मज़बूर है| इक्कीसवीं सदी में विश्व बैंक, एशियन बैंक आदि आदि व्यापारिक संस्थान, खेती में उनके बीज का इस्तेमाल करके अपनी फसल को ब्रांड बनाने के लिए ऋण उपलब्ध करवा रहा है| इन विकटतम परिस्थितियों के कारण किसान कर्ज़ में डूबा हुआ है| इक्कीसवीं सदी की घटनात्मक विसंगति यह है कि देश में पच्चीस हज़ार किसानों ने आत्महत्या का रास्ता अपना लिया| भारत में जो वैश्वीकरण की प्रक्रिया सन 1991 में शुरू हुई है उसका उद्देश्य न तो गरीबी और बेरोज़गारी को कम करना है, न लोगों की बुनियादी ज़रूरतें पूरी करना| इसका मुख्य उद्देश्य राष्ट्रीय पूँजीवादी विकास पथ को ऐसे विकास पथ में बदल देना है जो स्पष्ट रूप से अंतर्राष्ट्रीय पूंजीपति वर्ग के लिए सहायक हो|

वैश्वीकरण और उदारीकरण के नाम पर भारत ने उन वैश्विक बाज़ार शक्तियों के आगे घुटने टेक दिए हैं जिन पर बहुराष्ट्रीय निगमों का आधिपत्य है| इस प्रकार के वैश्वीकरण की प्रक्रिया में शक्तिशाली देश कमज़ोर देशों को अपने आधिपत्य में लेकर उन्हें अपने उपनिवेश नहीं बनाते बल्कि मुक्त बाज़ारवाली अर्थ व्यवस्था के नियमों का पालन करने की शर्तों में बाँध लेते है|

संक्षेप में हम कह सकते हैं कि इस वैश्वीकरण के अंतर्गत दुनिया में असमानता बनी रहेगी, शोषण चलता रहेंगा, दुनिया की लूट में हिस्सा बाँटनेवाले साम्राज्यवादी देश परस्पर युद्धतर रहेंगे, वह युद्ध सेनाओं द्वारा लड़ा जानेवाला युद्ध न होकर आर्थिक, वैज्ञानिक, तकनीकी, वैचारिक तथा सांस्कृतिक शस्त्र अस्त्रों से लड़ा जानेवाला युद्ध होगा|

नुक्कड़ नाटक अपनी ज़मीन से जुड़कर, जन-साधारण की संस्कृति, रहन-सहन और हावभाव को अपने अन्दर समेटकर समाज के अंतर्विरोधों को रचना के केन्द्र में रखते हैं| जन आन्दोलन या संघर्ष के साथ जुड़कर उनकी आशा आकांक्षाओं को पूरा करने में नुक्कड़ नाटक सतत प्रयत्नशील है|

आज के ज़माने में बहुराष्ट्र कम्पनियाँ खतरनाक ढंग से भारत की आर्थिक स्थिति को प्रभावित कर रही हैं| सबसे दुखनीय बात तो यह है कि देश का सत्तावान उपभोक्ता समूह बहुराष्ट्रीयता के सामने नतमस्तक हो रहे हैं| एक सौ पच्चीस साल पहले भारतेन्दु हरिश्चन्द्रजी ने अपने नाटक 'अंधेर नगरी' में इन सारी बातों की ओर प्रकाश डाला था|

'अंधेर नगरी' नाटक के माध्यम से भारतेन्दु ने हमें यह आह्वान दिया था कि समस्त नैतिक विवेकवादी मूल्यों को छोड़कर भोगवादी संस्कृति के पीछे भड़कने में तो खतरा है| भारतेन्दु ने अपने नाटक में एक अनोखी नगरी के जिस अजीब बाज़ार का खाका खींचा था, उससे सौ गुना अजीब बन गया है वर्तमान समय का बाज़ार| भारतेन्दु ने अपने शिष्य गोवर्धन को एक पल भी उस बाज़ार में न ठहरने की जो चेतावनी दी थी वह आज के भूमंडलीकरण बाज़ारीकरण उदारीकरण के ज़माने में सौ गुनी सार्थक निकली है|

नुक्कड़ रंग कर्मियों ने अपने नुक्कड़ नाटकों की प्रस्तुतियों के माध्यम से जनता को इस तथ्य से अवगत कराने की कोशिश की है कि वैश्वीकरण की प्रक्रिया विश्व पूँजीवाद की अन्तर्निहित प्रक्रिया है और यह चेतावनी भी दी जा

रही है कि बाज़ारवादी भूमंडलीकरण के मौजूद दौर में समाजवादी स्वप्न का ह्रास हो रहा है| नुक्कड़ रंग कर्मियों ने आम आदमी का प्रवक्ता बनकर उनकी अंतर्वेदना को ही अपने नाटकों में वाणी दी है|

भारत के प्रत्येक नागरिक के जीवन में यह भूमंडलीकरण अपना प्रत्यक्ष या परोक्ष प्रभाव डालता है| भारतीयों की मामूली सी दिनचर्याओ में दखलन्दाज करके हर पल साए के समान हमारा पीछा करनेवाली नव औपनिवेशिक-मानसिकता का चित्रण जन नाट्यमंच के नुक्कड़ नाटक 'छः पैसे का रुपया' में देख सकते हैं| इसमें दिखाया गया है कि किस प्रकार नव साम्राज्यवाद द्वारा बिछाए गए जाल में तीसरी दुनिया में भारत जैसे कई देश उलझ गए है और उपभोक्तावाद की चपेट में फँस गए है|

नाटक में कहा गया है – "वर्ल्ड बैंक भी कहता है दवाएँ महँगी करो आबादी अपने आप कम हो जाएंगी|"[1] इस वाक्य के माध्यम से विश्व बैंक की कूटनीति का परिचय हमें मिलता है| विश्व बैंक जैसी संस्थाएँ भारत की सहायता करने की दिखावा करती है लेकिन अपना मुनाफा ही उनका एकमात्र लक्ष्य है|

शासन की बागडोर संभालनेवाले शासकों को ऐसी आर्थिक-नीति अपनानी चाहिए जिससे देश और जनता की भलाई हो| लेकिन स्वार्थ पूर्ति

[1] नुक्कड़ जनम संवाद अंक 16-17, पृ : 76

मात्र लक्ष्य बनानेवाले शासक विश्व बैंक की शर्तों को आँखे मूँदकर स्वीकार करते हैं, जिसका परिणाम निकलता है देश का आर्थिक दिवालीयापन| शासकों की इसी सोची समझी साजिश पर नाटक कठोर प्रहार करता है|

"छः पैसे का रुपैया' नाटक में तत्कालीन प्रधानमन्त्री नरसिंह राऊ तथा वित्त मंत्री मनमोहन सिंह को एक-एक पात्र बनाया हैकर्ज़मिलने के लिए आई.एम.एफ. के चरणों पर सब कुछ न्यौछावर करनेवाले राजनीतिज्ञों का पोल खोलने का प्रयास तो इस नाटक में किया गया है|

"प्रधानमन्त्री/वित्तमंत्री : ..... आप तीसरी दुनिया के अन्नदाता हैं| .....हम पर संकट है, देश की बुरी गत है|

आई.एम.एफ. : .....पर इसके लिए आपको हमारा डॉल बनना पड़ेगा| डॉल का मतलब जानता है?

मन्नु : एस सर गुड़िया| सर हम गुड़िया, बुढिया, पुडिया सब कुछ बनने के लिए तैयार है सर| हम देश का सारा सोना बिच देंगे| देश को गिरवी रख देंगे| बस हमारा दोस्त मि.राओ गद्धी पर बना रहना चाहिए .....|"[1]

इस नाटक में विश्व बैंक तथा अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष की सारी कूटनीतियों की ओर इशारा करने का प्रयास किया गया है| इनके हाथ की कठपुतली बनकर अपने देश तथा वहाँ की जनता को खतरे में डालनेवाले राजनीतिज्ञों

[1] नुक्कड़ जनम संवाद, जुलाई-दिसंबर 2002, पृ : 78

की नीति पर व्यंग्य उठाया गया है| नाटक में आई.एम.एफ. कहता है कि अगर क़र्ज़ लेना है तो उसके लिए देश में अनेक कार्य करने चाहिए| सरकारी कंपनियों को बेचना होगा, सबसिडी नहीं , बेकारी बढ़ाना होगा, राशन पानी को कम कराना होगा, आदि सलाह आई.एम.एफ. की ओर से होते हैं|

नाटक में रुपैया स्वयं एक पात्र बनकर आता है और अपने मूल्य कम करनेवालों की ओर इशारा करता है|

"रुपैया : अबे तू उसके कर्जे की असलियत नहीं जानता| उसने हमारे मुल्क के सामने एक शर्त रखी थी कि हमारी सरकार अपने खर्चे कम कर दें और कर्ज़ा ले जाए|

रुपैया : ..... सैकड़ो सरकारी कारखाने बंद| लाखों मज़दूर बेकार| और तो और सरकारी कर्मचारियों की भी छुट्टी|

अफसर : ओमप्रकाशजी मिनिस्ट्री से आर्डर आ गए है जितना स्टाफ है उनकी छुट्टी कर दी जाए| जो लोग 55 साल से ऊपर हैं उन्हें रिटायर कर दीजिए.....|"[1]

आई.एम.एफ. से क़र्ज़ लेने के लिए सरकार ने जनता को रियायत देनेवाली हर चीज़ पर कटौती करना मंजूर कर लिया है| ताकि आई.एम.एफ. के लोन का सूद चुकाया जा सके| इन सारी बातों का असर तो आम जनता

[1] नुक्कड़ जनम संवाद, जुलाई-दिसंबर 2002, पृ : 79

की जिन्दगी पर पड़ेगा क्योंकि दवाओं के दाम, रेल के भाड़े, बसों का किराया, राशन के दाम, सब कुछ बढ़ जायेंगे| अब मज़दूर के घर में ही नहीं बाबू के घर में भी छंटनी और बेकारी आ जाएंगी|

नाटक में रुपैया स्वयं कहता है कि आई.एम.एफ ने उसका मूल्य कम कर दिया है|

"रुपैया : .....इस बार तो मुझे अंतर्राष्ट्रीय बनिए ने छोटा किया है| नाम जानती है उसका आई.एम.एफ. यानी अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष|"[1]

नरसिंह सरकार ने अमरिका जैसे राष्ट्रों के सुझाव पर नयी आर्थिक-नीतियाँ भारत पर लागू कराई जिसके तहत आम आदमी का भरपूर शोषण हुआ| इस नयी आर्थिक- नीति के दौरान महंगाई बढ़ गयी| ये नीतियाँ केवल नरसिंह सरकार की ही नहीं बल्कि आज के शासकों की नीतियाँ भी इनसे भिन्न नहीं है| आज दिन-ब-दिन चीज़ों की कीमतें बढ़ती जा रही है|

भूमंडलीकरण के इस ज़माने में इंसानी सभ्यता सौदागरी सभ्यता में तब्दील हो रही है| बाज़ारू उपभोगवादी संस्कृति में संवेदाओं को कहीं भी स्थान नहीं है| मुनाफा ही सबका एकमात्र लक्ष्य है| हर आदमी यही सोचते हैं कि वे किस प्रकार उनसे लाभ उठा सकते हैं| इसी बात का उल्लेख नाग्बोड्स के नुक्कड़ नाटक 'कंपनी' में देखा जा सकता है| नाटक का शीर्षक ही

[1] नुक्कड़ जनम संवाद, जुलाई-दिसंबर 2002, पृ : 80

प्रतीकात्मक है जो हमारे यहाँ चलनेवाली बहुराष्ट्रीय कंपनियों की नीतियों की ओर इशारा करता है| इस नाटक में चित्रित कंपनी अपने अफसरों को बहुत अधिक पंचनक्षत्रीय सुविधाएँ प्रदान करती है| इनका उद्देश यह है कि अफसर सुविधाओं में डुबकी लगायें और अपनी मानवीय संवेदाओं को खो जाएँ|

जन नाट्यमंच का नुक्कड़ 'संघर्ष करेंगे जीतेंगे' में भूमंडलीकरण की कूटनीति पर विचार किया गया है| हमारी रोज़मर्रा ज़िन्दगी पर प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से आई.एम.एफ. का दबाव पड रहा है| आम आदमी की जीवन यात्रा के हर पड़ाव में आई.एम.एफ. का प्रत्यक्ष दबाव न तो सही परोक्ष दबाव पड़ता है|

इस नुक्कड़ नाटक में 'संघर्ष' नामक एक छोटा लड़का है| मात्र वह ही आई. एम.एफ. को देख पाता है| आई.एम.एफ. के बारे में वह दूसरों से कहता है|

"संघर्ष : .....यह तो हर जगह मौजूद है, पाउडर के दूध में, टूथपेस्ट में, अंकल चिप्स में, पेप्सी- कोला में| स्कूल से यह वर्दी और किताब ले जाता है| यह राशन खा जाता है| फैक्ट्री में छंटनी करवाता है| यह रेडलाइन का वह पहिया है जो अपने मुनाफे की खातिर सबको कुचलता चला जाता है|"[1]

आई.एम.एफ. से क़र्ज़ लेकर हमारे राजनीतिज्ञ अपने देश को ही बेच लेते है| अपनी गद्धी को बनाया रखना उनका एकमात्र उद्देश्य है| अपने देश के लोगों को उपभोक्ता मात्र मानकर विदेशी चीज़े आयात करके वे अपने देश को खतरे में

[1] नुक्कड़ जनम संवाद, जुलाई-दिसंबर 2002, पृ : 91

डालते है| इस नेता-वर्ग के लिए आई.एम.एफ. तो तीसरी दुनिया के अन्नदाता है| अपने देश के पब्लिक सेक्टर को बेचने, बिजली, पानी तथा रेल को भी गिरवी रखने के लिए वे तैयार हो जाते हैं| इन राजनीतिज्ञों के लिए आई.एम.एफ. तो मेहमान ही है| इन सभी बातों का चित्रण 'संघर्ष करेंगे जीतेंगे' में देख सकते हैं|

"नरसिंहा : जी हाँ सर, अब सब लहर पेप्सी पीते हैं 'लियो' खिलौनों से खेलते हैं, दीयों देखते है| सर हमने सब कुछ स्कीम के मुताबिक़ ही किया है|

नरसिम्हा : डी.टी.सी. तो बस बंद ही समझो| डेसु (बिजली विभाग) भी हम बेच रहे है|

मनमोहन : तमाम पब्लिक सेक्टर को हम बेचने की सोच रहे हैं| बिजली पानी और रेलवे को भी गिरवी रखने का इरादा है|"[1]

नेता लोगों की राजनैतिक-नीति इन वाक्यों से मालूम होता है| आई.एम.एफ. के प्रति सम्मान भाव प्रकट करने के लिए ये नेतागण चाहे कुछ भी कर सकते है| जन नाट्यमंच के एक दूसरे नुक्कड़ नाटक 'नहीं क़ुबूल' में इस बात की ओर संकेत है| इसमें मिनिस्टर आफ प्रैवेटाईजेशन और मिनिस्टर आफ ग्लोबलाइज़ेश्न नाम से दो मंत्रियो को प्रस्तुत किया गया है जो हमारे शासक वर्ग के प्रतिनिधित्व करते है|

"दोनों : ....ये विश्व है एक ग्राम, तुम हो इसके स्वामी|

[1] नुक्कड़ जनम संवाद, जुलाई-दिसंबर 2002, पृ : 90

हम है दास तुम्हारे क़ुबूल हमें गुलामी
नई सदी के नए स्वामी स्वागतम
नई सदी की नई गुलामी को सलाम
स्वागतम महामहिम तुझे प्रणाम|"[1]

अमरिका की तुलना में देखें तो भारतीयों के मन में संवेदनाओं के लिए अधिक स्थान है| भूमंडलीकरण के ज़माने में आकर ये सारी संवेदनाएँ गायब हो रही है| आई.एम.एफ. की दृष्टि में भारतीयों का दिल बहुत नरम है| उनकी रवैया यह है कि आज की आर्थिक- राजनीतिक-नीतियों को लागू करने के लिए नेताओं के मन में थोड़ी भी संवेदना या नरमी का भाव नहीं होना चाहिए|

"महामहिम : .....तुम्हारा दिल, तुम्हारा हार्ट बहुत साफ़ है| बहुत नरम है| तुम अपनी जनता के साथ बहुत नरमी से पेश आता है|"[2]

वैश्वीकरण के ज़माने पर आकर आज भारत अपने खेतों में बोने के लिए बीज तो विदेशों से खरीदते हैं| पैसा देकर वे ऐसे बीज खरीदते है जिससे बढ़िया फसल मिलने की आशा है| हमारे यहाँ के किसानों की जिन्दगी तो बहुत गरीबी में ही बिता रही है| ऐसे समय इस प्रकार से आयातित बीज को वे कैसे खरीद सकते है?

[1] नुक्कड़ जनम संवाद, जुलाई-दिसंबर 2002, पृ : 115
[2] नुक्कड़ जनम संवाद, जुलाई-दिसंबर 2002, पृ : 115

'नहीं कुबूल' नामक नाटक में 'बीज' स्वयं एक पात्र बनकर आता है| वह स्वयं अपनी खूबियों और बखूबियों को कहता है| इसी बीज को भारत देश में बोया जा रहा है| विदेश से आये बीज के संग में कीड़ा भी आया है जिसका बीड़ा तो फसल खाना ही है|

"बीज : बोर्न इन द यु.एस.ए.....
भूख गरीबी बदहाली, खत्म होंगे सब रोग
बीज हूँ बड़ा भयंकर, जय जय प्रलयंकर
नाम है मेरा टर्मिनेटर (मिनिस्टर कहते हैं)
हम है इसके डिस्ट्रीब्यूटर
सीचेंगे तुम अमृत से, काटोगे पर विष का प्याला|[1]

इस नाटक में चित्रित किया गया है कि विदेश से खरीदे ये बीज एक किसान ने अपने खेत में बोये जब फसल काटने का समय हो गया तो फसल को कीड़ा मारता है| देशी दवा से कीड़ा का नाश नहीं होता है और विदेशी दवा कीड़े पर डालता है तो कीड़ा भाग जाता है| लेकिन फसल काटने लगे तो 'लाला'साठ रुपये पर खरीदना चाहता है| जब किसान इसके लिए तैयार नहीं होता है तो लाला अपना क़र्ज़ वापस करने को कहता है| अंत में किसान और उस की पत्नी फाँसी लगाकर मर जाते हैं|

[1] नुक्कड़ जनम संवाद, जुलाई-दिसंबर 2002, पृ : 116

भूमंडलीकरण के इस ज़माने में हर भारतीय किसान की स्थिति इससे भिन्न नहीं है| उन्हें लगता है इस तरह की बेशर्मी ज़िन्दगी जीने से तो अच्छा मरना ही है|

"किसान : .....अब मैं क्या मूँह दिखाऊँ किसी को| ऐसी ज़िन्दगी से तो मौत ही बेहतर है| दोनों फाँसी लगाकर मर जाते है|"[1]

जन नाट्यमंच का हर- एक नुक्कड़ नाटक वैश्वीकरण और अमरिका की शासन नीति का विरोध करते हैं| मुक्तिबोध की यह उक्ति कि भारत के प्रत्येक स्थान पर एक अमरिका रहता है, बिल्कुल सच निकली है| अब अमरिका विश्व के सबसे शक्तिशाली राष्ट्र बनकर भारत जैसे राष्ट्रों का शासन कार्यों में भी दखलन्दाज कर रहा हैं| हमारे शासक इनका आज्ञानुवर्ती बन गया है| इस बात पर व्यंग्य उठाने का प्रयास जन नाट्यमंच के नुक्कड़ नाटक 'नारे नहीं तो नाटक नहीं' में किया गया है|

"बंटी : मैं प्रधानमन्त्री से मिलूँगा और कहूँगा मुझे नौकरी दो|

माँ : तू अमरिका का राष्ट्रपति है , जो प्रधानमन्त्री तेरी बात मान लेगा?"[2]

इक्कीसवीं सदी में भारत में तेज़ी से हो रहे विकास कार्यक्रमों की ओर व्यंग्य उठाने का प्रयास जन नाट्य मंच के नुक्कड़ नाटक 'डी.टी.सी. की धांधली'

[1] नुक्कड़ जनम संवाद, जुलाई-दिसंबर 2002, पृ : 117

[2] नुक्कड़ जनम संवाद, अक्टूबर-दिसंबर 2006, पृ : 42

में किया गया है| वैश्वीकरण के नाम पर नयी- नयी योजनाएँ बनती जा रही है, लेकिन आम जनता का इनसे कोई संबंध नहीं है|

"दूसरा : देख लिया बाऊजी| दिस इज़ हाऊ कंट्री गो इन इक्कीसवीं सदी| बस जाए आगे, पैसिंजर रह गए पीछे, कंट्री गो आगे, जनता रिमेन पीछे|"[1]

इस नुक्कड़ नाटक में सरकार की एक और नीति पर भी प्रश्न चिह्न लगाया गया है| अब सरकार ने अधिकांश बसों को डीलक्स बना दिया है क्योंकि डीलक्स में ज़्यादा पैसा देना पड़ता है और समाज के निम्न तब्के के लोगों के पास इतने पैसे भी नहीं होंगे|

"सब : .....आगे बढ़ भई यहाँ किसी के पास फालतू पैसे नहीं है डीलक्स में बैठने के| हर दूसरी बस को तो डीलक्स बना दिया है| ये नयी तरीका निकला है सालों ने किराए बढाने का|"[2]

आई.एम.एफ. तथा विश्व बैंक के चक्कर में आकर भारतीय शासक प्राइवेट सेक्टर को अधिक शक्तिशाली बनाने की कोशिश में है| बिजली, पानी आदि सब कुछ बेचने के लिए वे तैयार है| दिल्ली ट्रांसपोर्ट सर्विस को भी प्राइवटबना देने की इनकी नीति तो आम आदमी की रोज़मर्रा ज़िन्दगी पर चाकू लगानेवाली है|

[1] नुक्कड़ जनम संवाद, जनवरी-जून 2003, पृ : 41

[2] नुक्कड़ जनम संवाद, जनवरी-जून 2003, पृ : 41

'डी.टी.सी. की धांधली' नामक नुक्कड़ नाटक तो दिल्ली परिवहन निगम द्वारा अचानक किरायों में भारी बढ़ोत्तरी के खिलाफ एक व्यापक जनांदोलन के रूप में तैयार किया गया था| इस नाटक में एक पात्र 'मैनेजर' है जिसे दिल्ली-परिवहन निगम के मैनेजर के रूप में चित्रित किया है| वह स्वयं कहता है कि किस्मत ने ही उसके लिए यह गद्धी दिलवाई यानी कि घर बैठे बम्पर लॉट्री खुलवाई जैसी है अब उसकी ज़िन्दगी|

इस नाटक में मैनेजर कहता है कि अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष तथा वर्ल्ड बैंक के सलाह पर डी.टी.सी के किरायों को बढाया है| वैश्वीकरण से जनता पर आनेवाली मुसीबतों की ओर भी यहाँ इशारा है|

"मैनेजर : .....अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष और वर्ल्ड बैंक के विशेषज्ञों ने हमें यह सलाह दी है कि महानगरीय जनता की Public Utility Services पर निर्भरता को खत्म करना चाहिए क्योंकि इससे उनमें lethargy बढ़ रही है| ..... Private Sector को growth की opportunities नहीं मिलने के कारण हमारी economy backward हो रही है| .....हमने आपको सुविधा के लिए, बसों में भीड़ कम करने के लिए, DTC की service को improve करने के लिए किरायों में वृद्धि का फैसला किया है|"[1]

[1] नुक्कड़ जनम संवाद, जनवरी-जून 2003, पृ : 43

"तीसरा : .....किराए बढ़ाने की हिदायत सीधे वर्ल्ड बैंक और आई.एम.एफ. से आई है| उसी हिदायत के तहत राशन के दाम बढे है, उसी के तहत पेट्रोल के, डीजल और गैस के|"[1]

सन् 1979 में तो यह नाटक खेला गया था| अब सन् 2013 में आकर ये सारी बाते सच निकली है| आज हमारी स्थिति यह है कि हर हफ्ते पेट्रोल और डीज़ल के दम बढ़ते जा रहे है| गैस तो अब सब्सिडी के तहत ही मिल रहे हैं, वह भी न जाने कब तक|

विज्ञापनों का इस्तेमाल

बाज़ारीकरण की प्रवृत्ति आज के युग की अहं प्रवृत्ति बन गयी है| विदेशी ताकतों के लिए हमारा देश मुनाफा उठाने लायक बाज़ार ही है| इस ज़माने में हर एक व्यक्ति को उपभोक्ता मान सकते हैं| मानव अब एक उपभोक्ता के रूप में तब्दील हो गया है|

बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ अपनी चीज़ों को बेचने के लिए लोगों को उसकी ओर आकृष्ट करने के लिए विज्ञापनों का सहारा लेते हैं| आकर्षक ढंग से अपने विज्ञापनों को प्रस्तुत करने में वे चतुर है| हम लोग तो इन विज्ञापनों से आकर्षित होकर उन चीज़ों को खरीद लेते हैं जिससे एम.एन.सी. को ही मुनाफा मिलते है|

[1] नुक्कड़ जनम संवाद, जनवरी-जून 2003, पृ : 43

जहाँ पहले हम अधिकांश रूप में हमारे ही देश में उत्पन्न होनेवाली चीज़ों का इस्तेमाल करते थे, वहाँ अब ऐसा करना तो हमारे लिए अपनी प्रतिष्ठा की बात बन गयी है| पहले हम चूल्हे पर खाना पकाते थे, नारियल हमारे घर में थे, बर्तनों को माँजने के लिए राख का उपयोग करते थे| लेकिन आज ये सब करने से हम हिचक जाते हैं| हमारा रवैया यह है कि समाज के निम्न तब्के के लोग भी आज विदेशी चीज़ों का इस्तेमाल करते हैं तो हम क्यों अपनी पुश्तैनी का पालन करें?

विज्ञापनों का दुष्प्रभाव छोटे बच्चों से लेकर बूढ़े लोगों तक पर पड़ता है| टी.वी. तथा अन्य संचार माध्यमों के ज़रिए ये विज्ञापन प्रसारित होते है तो हर एक भारतीय इसके चक्कर में आ जाते हैं| गरीब लोग भी पहले इसके प्रभाव पर आते है, लेकिन फिर अपनी बेचैनी यानी कि हाथ में पैसे की कमी के कारण इन्हें खरीद नहीं सकते हैं|

"लाला : - हर चीज़ इतनी महँगी हो गई है कि चीज़े बेचने में अब पहले जैसा मज़ा नहीं रहा|

चाची : तो लालाजी सारा सामान आधा कर दीजिए| और वो कोलगेट जैल भी निकाल दीजिए| दांत कोयले से ही मांझ लेंगे|"[1]

आज के ज़माने में लोगों की मानसिकता यह है कि देशी चीज़ों को लेने से समाज में उनकी प्रतिष्ठा कम हो जाएगी| इसीलिए वे पानी के स्थान पर

[1] नुक्कड़ जनम संवाद, जुलाई-दिसंबर 2002, पृ : 80

कोकाकोला या पेप्सी पीते हैं, अपनी जूते से लेकर मोबाइल तक विदेशी कंपनियों की चीज़ें ही खरीदते हैं| लोगों की इस प्रवृत्ति पर व्यंग्य उठाने का प्रयास 'अंधेरा अफताब माँगेगा' नुक्कड़ नाटक में है|

"बेटा : सो वाट डैड, डोंट वरी| हम इसी टेड़ी-एड़ी पर छोटा-सा फ्लोरोसेंट प्लास्टिक स्टिकर चिपकाएंगे और मार्किट में कुछ इस तरह से पेश करेंगे ये न्यू कांसेप्ट इन द फुटवियर इंडस्ट्री| डैड, इसे कहते हैं, मॉडर्न मार्केटिंग टेक्नोलोजी|[1]

समाज में उच्च स्थानों पर विराजनेवाले कलाकारों साहित्यकारों, और अन्य व्यक्तित्वों को विज्ञापनों में प्रस्तुत करते हैं और उन्हें कंपनियों के 'अम्बसिडर' बनाते है| जनता इन विज्ञापनों की जाल में फँस जाती है जिससे कंपनियों को मुनाफा मिलते है |

विज्ञापनों की आड़ में चलनेवाली इस तरह की दुष्ट-नीतियों की ओर लोगों का ध्यान आकर्षित करने का प्रयास नुक्कड़ नाटककारों की ओर से हुआ हैं |

पूँजीवादी संस्कृति से जुडी समस्याएँ

आज हमारा देश एक ऐसे सांस्कृतिक परिवेश से गुज़र रहा है जिसमें सत्य, न्याय, समता, स्वतंत्रता, जनवाद और समाजवाद का कोई अर्थ नहीं रह

[1] नुक्कड़ जनम संवाद, जुलाई-दिसंबर 2002, पृ : 98

गया है| अब हमारे निजीकरण, उदारीकरण, वैश्वीकरण की नयी नीतियाँ आ गयी है| आज का वैश्विक पूँजीवाद ही आज का परम सत्य है|

भारत सांस्कृतिक स्तर पर ऐसे परिवर्तित हुए है कि सचमुच युग बदल-गया-सा लगता है| आज हर एक चीज़ विदेश से आयातित होती हैं| विदेशी लोग हमारा ही कच्चा माल लेकर और हमारी श्रम शक्ति कौड़ियो के मोल खरीदकर हमें सौगुने दामों पर बेचने लगे हैं|

पूँजीवाद का तो कोई विकल्प नहीं है| वह सर्वज्ञ है क्योंकि उसके पास अत्यंत, उन्नत तकनीक वाले सूचना तंत्र और संचार माध्यम हैं| वह सर्वव्यापी है, क्योंकि वैश्विक बाजारों, बहुराष्ट्रीय निगमों, विश्व बैंक और अंतर्राष्ट्रीय मुद्राकोष जैसी संस्थाओं के ज़रिए उसने अखिल भूमंडल पर अपना प्रभुत्व और वर्चस्व कायम कर लिया है|

"आम लोगों की क्रियाशाक्ति छठें और सातवें दशकों के मुकाबले आज बहुत कम हो गयी है जबकि पूँजीपतियों के मुनाफे बेहिसाब बढ़ गए हैं| आम जनता की ज़रूरत की चीज़ों का उत्पादन बढ़ना बहुत कम हो गया है, जबकि बैंकों, शेयर बाज़ारों तथा अन्य वित्तीय कारोबारों में पूँजी निवेश बहुत ज़्यादा बढ़ गया है| इसका असर आम लोगों पर भी पड़ रहा है|"[1]

पूँजीवादी अर्थ व्यवस्था की तमाम विसंगतियों के उद्घाटन और उनके द्वारा जनता पर किए गए दमन के बावजूद नुक्कड़ नाटक लगातार संघर्षरत हैं|

[1] आज का पूँजीवाद और उसका उत्तर आधुनिकतावाद, रमेश उपाध्याय, पृ : 34

वे हमेशा समाजवाद की प्रासंगिकता को जनता के सामने रखते हुए पूँजीवादी साम्राज्यवाद का तीव्र विरोध करते हैं| पूँजीवाद पोषित अर्थ व्यवस्था में जनता पर अतिरिक्त करों का बोझ, महंगाई और निजीकरण जैसी गलत नीतियों की बोझ डाली जाती है|

पूँजीवादी संस्कृति के प्रचार होने पर हमारे देश में पूँजीपतियों का बोलबाला ही चल रहा है| पूँजीपतियों के साथ है हमारी सत्ता भी| इसलिए पूँजीपति वर्ग चाहे कुछ भी कर सकते हैं| कोई उनसे पूछनेवाला नहीं है| पुलिस तथा यहाँ की नीति व्यवस्था भी इनकी आश्रयदाता है|

जन नाट्यमंच के नुक्कड़ नाटक 'मई दिवस की कहानी' में 'जे गोल्ड' नामक एक पात्र है जो पूँजीपति वर्ग का प्रतिनिधि बनकर आता है| वह तो कई रेल कंपनियों का मालिक था| टेलीग्राफ कम्पनियाँ और समुद्री-जहाज कम्पनियाँ उसकी पूँजी के साम्राज्य का हिस्सा थी| जे गोल्ड तो एक ऐसे व्यक्ति थे जो उन मज़दूरों को जिनकी मेहनत के बल पर वह मालदार बना था, ढोर डंगरों से ज़्यादा कुछ नहीं समझता था| इनके लिए अपने कर्मचारी उनकी सुविधा के मुताबिक इस्तेमाल की जानेवाली चीज़ थी|

यह नुक्कड़ नाटक सन् 1986 को खेला गया था| जे गोल्ड तो अमरिका के पूँजीपति थे| नाटक में एक पात्र उन्नीसवीं सदी के अमरीकन मज़दूर का प्रतिनिधित्व करके पूछता है कि उसके ज़माने से सवा सौ साल बाद हमारे यहाँ सरमायेदारों के रवैया में कुछ बदलाव आया है क्या?

"सूत्रधार : कौन कहता है बदल गया है? वो आज भी हमें जानवर समझते हैं?"

एक चिरंतन सत्य हमारे आगे खुलता है कि पूँजीपति वर्ग चाहे किसी भी ज़माने में हो मज़दूरों का शोषण करेंगे| अपनी पूँजी के बल पर आम आदमी की गरीबी से लाभ उठाना मात्र है उनका लक्ष्य| इस बदलते परिवेश में तो पूँजीवादी सत्ता अधिक शक्तिशाली बन रही है|

पूँजीवादी सत्ता की गुलामी से मज़दूरों को मुक्ति दिलाने का सबसे पहला कदम अमेरिका के मज़दूरों की ओर से हुआ था| अमरिका के मज़दूरों ने पहली मई, सन् 1986 को पूरे देश में हड़ताल करने का फैसला किया लेकिन इस हड़ताल को रोकने के लिए पूँजीपति वर्ग ने पुलिस की सहायता ली| पुलिस तो इस वर्ग के लोगों की आज्ञा का पालनकरनेवाली है| पूँजीपति और पुलिस के इस गठबंधन की ओर इशारा करने का प्रयास 'मई दिवस की कहानी' नामक नुक्कड़ नाटक में किया गया है|

"पूँजीपति : मई डे के स्ट्राइक से वरकर्ज़ की हिम्मत बहुत बढ़ गई है| उन्हें लाइन पे लाना होगा|

पुलिस : सर, 3 मई मैकमिर्की हार्वेस्टर वर्क्स में मज़दूरों की एक और मीटिंग है|

पूँजीपति : तुम अपने सिपाहियों को लेकर वहाँ पहूँचो मैं पिकर्टन एजेंसी से गार्डों को बुलवाता हूँ| उन्हें ऐसा सबक सिखाएंगे कि फिर कभी सर न उठा सकें|"[1]

आज के दौर में तो पूँजीपति वर्ग पैसा देकर सामाजिक-राजनैतिक नेताओं को अपने वश में लाते हैं| इनके पास जो पूँजी है वह तो ठीक ढंग से मिली हुई नहीं होगी| जनता की आँखों में धूल डालने के लिए वे कुछ न कुछ करेंगे| सत्ता वर्ग तो इन पूँजीपतियों की ही बात मानते हैं|

"लाला : .....मैं ने हर इलेक्शन से पहले और बाद में लाखों रुपए चंदे में दी हैं, सफ़ेद टोपीवालों को| .... मुझे सरकार की तरफ से थोक व्यापार करने का परमिट मिला हुआ है|"[2]

"मंत्री : मेरे मालिक, सेठ, साहूकार, सरमायेदार, जमीन्दार|"[3]

पूँजीपति जो है ऐशो आराम की ज़िन्दगीजी रहे हैं| आज के ज़माने की एक विशेषता यह है कि समाज के एक वर्ग के हाथ में पूँजी एकत्रित हुई है| ये लोग अपनी मर्ज़ी के अनुसार सुख लोलुपताओं में डूबकर जी रहे हैं| इनके पास तरह-तरह की गाड़ियाँ होंगी| बाहर जाने के लिए न जाने कितने आडंबर मोटर कार होंगे, इस बारे में आम आदमी सपना तक नहीं देख सकते हैं|

---

[1] नुक्कड़ जनम संवाद, जुलाई-दिसंबर 2002, पृ : 61

[2] नुक्कड़ जनम संवाद, जुलाई-दिसंबर 2002, पृ : 38

[3] नुक्कड़ जनम संवाद, जुलाई-दिसंबर 2002, पृ : 41

"बेटा : पापा एस्टीम ले जाऊँ?

मालिक : नहीं उसका ए.सी. काम नहीं कर रहा, सिएरा ले जा|"[1]

पूँजीवादी संस्कृति का एक भाग बनकर आज भारत में पनपनेवाली बात है मॉल की संस्कृति| आजकल पूँजीपति लोग तरह- तरह की वस्तुओं से भरे मॉल खोलते हैं, जिसके माध्यम से लोगों की उपभोक्तावादी मानसिकता का शोषण हो रहा है| जहाँ पहले हम दूकानों में जाकर अपनी आवश्यकतानुसार चीज़े लेते थे, वहाँ आज इन मॉल में आकर्षक ढंग से सज्जित चीज़े हमें उनकी ओर घसीटती है|

मॉल के आगमन से भारत में दीर्घकाल से पुश्तैनी पेशा करके आनेवाले लोगों को बहुत अधिक मुसीबतें आ पहुँची है| अब हमारे देश की हर जगह पर इस प्रकार के मॉल या मार्जिन फ्री मार्केट सुलभ है और जहाँ लोगों की भीड़ भी है|

हमारे देश में बहुत अधिक झुग्गियाँ या बस्तियाँ हैं जिसमें समाज के निम्न तब्के के लोग रहते हैं| पूँजीपति लोग तो इन झुग्गियों को बुलडोज़र से तोड़कर वहाँ पर शौपिंग काम्प्लेक्स या मॉल खोलते हैं जिनसे उसे अधिक मुनाफा मिलते है| इन झुग्गियों में बसनेवाले लोगों की स्थिति तो बहुत दयनीय है| सरकार भी इन पूँजीपतियों के पक्ष में है|

[1] नुक्कड़ जनम संवाद, जुलाई-दिसंबर 2002, पृ : 101

ऐसी झुग्गियों पर बसनेवाले लोगों की त्रासद स्थिति का चित्रण 'हम है झुग्गीवाले' नामक नुक्कड़ नाटक में हुआ है| इसमें तो दिल्ली की एक झुग्गी पर आग लगाई है, ऐसा दिखाया गया है| मात्र इतना नहीं, इस बस्ती को खाली करके वहाँ एक कंपनी खोलने की बात भी कही गयी है|

"चाँदनी " यु नो, बदबू, ये गंदे गंदे झुग्गीवाले, सुन्दर सुन्दर हरे भरे पार्क को लैट्रिन की तरह इस्तेमाल करते है| हमें कुछ करना होगा|

मोहन : वर्ना कोई मल्टीनैशनल कंपनी इस शहर में आने को तैयार नहीं होगी|

बुलडोज़र : बुलडोज़र मैं महाबली हूँ, झुग्गी ले लूँ, बस्ती निगलूँ सर्विस हूँ तत्काल|[1]

बस्तियों में जीनेवाले लोगों को एक हेय दृष्टि से ही पूँजीपति लोग देखते हैं| पूँजीपति लोगों की राय में ये झुग्गीवाले ही शहर में गन्दगी फैलाते हैं| इनसे बचने के लिए ये लोग अपने महलों के चारों ओर ऊँची दीवार बना देते हैं| मानव मानव के बीच में जो समता व स्नेह आर्द्रता का भाव होना है उसके विरुद्ध अब मानव मानव के बीच घृणा का भाव ही अधिक बढ़ता जा रहा है| 'हम है झुग्गीवाले' में चित्रित किया गया है कि झुग्गियों को साफ़ करने के लिए और उसे महकी बनाने के लिए कई बाते की जाती है| झुग्गी में बसे

[1] नुक्कड़ जनम संवाद, जुलाई-दिसंबर 2002, पृ : 123

लोगों को वहाँ से निकालने के लिए वे एक उपाय भी रचते हैं| उस दृश्य पर ज़रा नज़र डाले –

"नेता : .....आप लोगों को शहर के प्रदूषण से बचाने के लिए, शहर की बीमारियों से बचाने के लिए, शहर की गन्दगी से बचाने के लिए आप लोगों को दिल्ली शहर से बाहर भेजा जा रहा है|"[1]

इन सभी कार्यवाइयों के पीछे भूमंडलीकरण का काली हाथ ही है| अमरिका अपनी मुनाफा बढ़ाने के लिए भारत की झुग्गियों बस्तियों को खाली करके वहाँ एम.एन.सी या शौपिंग मॉल शुरू करता है, जिससे उसकी आर्थिक स्थिति बढ़ती है|

जन नाट्य मंच का नुक्कड़ नाटक 'रेहड़ी पटरी वाले नहीं हटेगी' जिसका मंचन सन् 2006 में हुआ था, में समाज की इन बदलती हुई परिस्थियों की ओर इशारा करता है| इस नाटक में 'लाला' नामक पात्र आज के पूँजीपति वर्ग का प्रतिनिधित्व करनेवाला है| वह तो एक मॉल शोरूम चलाता है जिसके आगे रेहड़ी पटरीवाले जी रहे हैं| लाला की दृष्टि में ये लोग उनके शोरूम के आगे गन्दगी फैलानेवाले हैं|

रेहड़ी पटरी वाले हर चीज़ बेचते हैं,और इन चीज़ों के दाम तो लाला के शोरूम की अपेक्षा कम भी है| इसलिए अपना धंधा बचाने के लिए लाला इन

[1] नुक्कड़ जनम संवाद, जुलाई-दिसंबर 2002, पृ : 125

रेहड़ी पटरी वालों को वहाँ से खाली करा देना चाहता है जिसके लिए वह पुलिस, मुख्यमंत्री तथा चाँदनी की सहायता लेता है| चादनी तो मल्टीनैशनल कापरेशन स्पेंड तोर की एशिया डिविज़न चीफ है, जिसकी कंपनी दुनिया की सारी कनज़्यूमर आइटम बेचती है|

बाज़ारीकरण की ओर भी हमारा ध्यान आकृष्ट करने का प्रयास इस नाटक में है| इसमें चित्रित कंपनी तो आज की बहुराष्ट्रीय कम्पनियों तथा शोपिंग मॉल का प्रतिनिधित्व करता है|

"चाँदनी : हमारी कंपनी का कारोबार पाँचो कॉन्टिनेंटस में फैला है|

जस्टिस : जहाँ जहाँ है मार्कट.....

चाँदनी : वहाँ वहन है हमारी कंपनी स्पेड मोर|

लाला : जहाँ जहाँ है बाज़ार.....

चाँदनी : वहाँ वहाँ फैला है हमारा व्यापार|"[1]

'जस्टिस' तो हमारी नीति-व्यवस्था के खोखलेपन को चित्रित करनेवाला प्रतिनिधि पात्र है| वह तो इन एम.एन.सी. बाते माननेवाले हैं| वह तो इन विदेशी ताकतों के वशीभूत होकर हमारे देश की गरीब जनता पर आक्रमण करता है| गाँधीजी ने कहा था कि भारत की आत्मा गाँवों में रहती है तो अब इस ज़माने में हम हमारे गाँवों को विश्वग्राम में तब्दील कर रहे हैं और गाँववालों को वहाँ से भगा रहे हैं|

[1] नुक्कड़ जनम संवाद, अक्टूबर-दिसंबर 2006, पृ : 43

"जस्टिस : ....ये रेहड़ी पटरी वाले सड़कों पर फैला देते है अपनी दूकान .....यहाँ की पूरी ब्यूटी को बिगाड़ रखा है | शहर को ग्रीन और क्लीन रखने के लिए इन रेहड़ी पटरी वालों का.....

तीनों : कुछ करना होगा|"[1]

पूँजीवादी संस्कृति के फैलाव होने पर व्यक्ति-व्यक्ति के बीच से समता का भाव खो गया है| आज समाज के उच्च वर्ग के लोग अपनी शान शौकत के अनुसार अधिक महँगी गाड़ियों में यात्रा करते है और कुत्तों को पालते हैं| इन लोगों को कुत्तों से ज़्यादा प्यार है|

'मिल के चलो' नुक्कड़ नाटक में पूँजीपति वर्ग के कुछ लोगों का चित्रण किया गया है| ये लोग अपने कुत्तों का जन्मदिन मनाते हैं, उस दिन बड़ी पार्टी तैयार करते हैं| समाज के उच्च वर्ग के लोगों को आमंत्रित करते है|

"सेठ : .....बचपन से ही हम इसे अपने बच्चे की तरह मानते हैं| .....जब कभी हमारी गोद में बैठ जाता है तो हम इन्कमटैक्स लेकर मज़दूरों की हड़ताल तक सब कुछ भूल जाते है| पाटा महज़ एक कुत्ता नहीं एक प्रतीक ... प्रेम का, मानवता का, ...|"[2]

सबसे उल्टी बात यह है कि जहाँ ये लोग कुत्तों को मानवता का प्रतीक मानते हैं वहाँ ये स्वयं मज़दूरों से मानवताहीन व्यवहार करते है| कुत्ते की

[1] नुक्कड़ जनम संवाद, अक्टूबर-दिसंबर 2006, पृ : 43

[2] नुक्कड़ जनम संवाद, जुलाई-दिसंबर 2002, पृ : 27

हड्डी टूटने की बात करने पर ये लोग इतना घबराते है कि मानो किसी रिश्तेदार है कुत्ता उसका|

"मि. झंझानिया : क्या कहा? कुत्ते की हड्डी टूट गई? औरन जसलोक हॉस्पिटल फोन करो| बड़े डाक्टर को पहली फ्लाईट से बुला लो|

गार्ड : मेम साब, कुत्ते के नहीं मज़दूर को चोट आई है|"

मिस जालमिया : कैसे लोग है, ज़रा सी बात का बतंगड़ बना रहे हैं| आखिर हड्डी ही टूटी है, मर तो नहीं |"[1]

निष्कर्ष

स्वातन्त्रोतर भारत में फैल रही अपसंस्कृति का चित्रण करने में नुक्कड़ नाटककार सफल निकले हैं | हर दृष्टि से अब हम मूल्य-च्युति की ओर जा रहे है| भारतीय संस्कृति की महिमा का गायन विश्व-भर के लोगों ने की है, वही भारतीय आज अपनी संस्कृति को भूलकर पश्चिमी संस्कृति के पीछे भाग रहे हैं| इसी बात की ओर हमारा ध्यान आकर्षित करने का प्रयास नुक्कड़ नाटककारों की ओर से हुआ हैं|

भारत की आर्थिक तथा सांस्कृतिक क्षेत्रों में व्याप्त लगभग सभी समस्याओं का उल्लंघन हिंदी नुक्कड़ नाटकों में हुआ है | विकास के नाम पर

[1] नुक्कड़ जनम संवाद, जुलाई-दिसंबर 2002, पृ : 28

देश में लागू की जानेवाली ग़लत नीतियों से आम-जनता को अवगत करने का प्रयास नुक्कड़ नाटककारों की ओर से हुआ हैं|

छठा अध्याय

नुक्कड़ नाटकों का शिल्प-पक्ष

नुक्कड़ नाटक-रूप पक्ष

नुक्कड़ नाटक आम-आदमी के बीच का आम जन जीवन और आम-आदमी की रोज़मर्रा की जिन्दगी से जुड़ा नाटक है| नुक्कड़ नाटक का अपना एक रंग शिल्प होता है जो मंच नाटक से अलग तरीके का है| नुक्कड़ नाटक का रंगशिल्प जन-आन्दोलनों के दौरान के बीच से निकलकर आया है| इसलिए यहाँ की ज़मीन से जुडी जन-साधारण की संस्कृति रहन- सहन,हाव-भाव को अपने अन्दर समेटे हुए ही नुक्कड़ नाटक का रंगशिल्प हमारे सामने उठ खड़ा हुआ है|

नुक्कड़ नाटक अपने रूप-पक्ष को लेकर लोक नाट्य से बिल्कुल जुड़ता है| इसका कारण यह है कि मुक्ताकाशी मंचन की परंपरा ने हमारे लोक नाटकों में बहुत पहले से अपना स्थान ग्रहण किया है| "जब भी लोक जीवन में सामाजिक उत्सव, आयोजन, पर्व, प्रतिष्ठान आदि ने प्रवेश पाया होगा तभी से लोक मानस इन आयोजनों को आकाश के नीचे संपन्न करने का आदि हो चुका होगा| ..... आदिकाल से ही खुले-स्थानों, खेत-खलियानों, घर-आँगन तथा चौपालों पर संपन्न होनेवाले लोक-नाट्य तथा लोक-आयोजनों पर दृष्टिपात करते ही आज के नव्यतम नाट्य रूप नुक्कड़ नाटक के रूप सापेक्ष साम्य की पुष्टि होती है|"[1] इसलिए यह और भी ज़रूरी हो जाता है कि हम कथ्य, अभिनय और टेकनीक को एक मज़बूती प्रदान करके जोकि निसंदेह वर्ग की

[1] स्वातंत्र्योत्तर युगीन परिप्रेक्ष्य और नुक्कड़ नाटक, मदन मोहन शर्मा, पृ : 121

छत्रछाया में फुल रही संस्कृति से बेहतर होना चाहिए, नुक्कड़ नाटक को कला की दृष्टि से पूर्णता प्रदान करने का प्रयास करें"[1]

नुक्कड़ नाटककारों ने अपने नाटकों माध्यम से मानव के करीब आने की कोशिश की है| इसीलिए उसके लिए उपयुक्त मंचों का इस्तेमाल करने का प्रयास भी किया है|

नुक्कड़ नाटक का रंगमंच

अपने समूचे शिल्प को लेकर नुक्कड़ नाटक नव्यतम रूप होते हुए भी परंपरागत नाट्य शिल्प का अनुगामी है| लोक नाट्य शैली और पश्चिम की ब्रेख्त शैली का प्रभाव इसमें स्पष्ट रूप से दिखाई देता है| नुक्कड़ रंगकर्मियों ने जन साधारण की सुविधा का ख्याल रखते हुए अपनी बात को वहाँ तक संप्रेषित करने की कोशिश की है, इसलिए उन्होंने उसी शिल्प में नुक्कड़ नाटकों को ढाला है जो जन का अपना शिल्प हो सकता है|

नुक्कड़ नाटक की बुनावट इस प्रकार की होती है कि उसकी प्रस्तुति को लेकर किसी मंचीय उपकरण के इस्तेमाल की ज़रूरत न पड़े| प्रस्तुति-स्थल का चयन नुक्कड़ रंगकर्मियों के लिए आवश्यक मुद्धा है| नुक्कड़ नाटक में मुक्ताकाशी रंगमंच का ही इस्तेमाल होता है| किसी नुक्कड़, चौराहे का एक कोना, सड़क का एक किनारा, मैदान या गली, भवन का बरामदा, किसी पेड़

[1] चौक-चौक पर गली गली में भाग-1, जन नाट्यमंच दिल्ली भूमिका से

के नीचे, इन्हीं स्थानों पर ही नुक्कड़ नाटक का मंचन होता है| नुक्कड़ नाटक के मंचन के लिए वही जगह सर्वोतम मानी जाती है जो जगह खुली हो, जहाँ सभी आसानी से पहूँच सकते हो, तथा इस जगह नज़र पड़ती हो|

नुक्कड़ नाटकों में अभिनेता तथा दर्शक

अभिनेता तथा दर्शक किसी भी नाटक के अभिन्न अंग है| किसी भी नाटक के लिए अभिनय ऐसा तत्व है जिसके बल पर उसकी गुणवत्ता का भी निर्धारण होता है| नाटक में अभिनय पक्ष की कमज़ोरी अपनी अन्य विशिष्टताओं के होने पर भी नाटक को प्रभावहीन बना देता है|

"नुक्कड़ नाटक का प्रदर्शन अनियंत्रित वातावरण और अनपेक्षित परिस्थितियों के बीच होता है| .....दर्शक वर्ग को नाटक देखने के लिए बुलाना बिठाना, समझाना और नाटक के अंत तक बिठाए, रखने का पूर्ण दायित्व अभिनेताओं पर ही होता है|"[1]

नुक्कड़ नाटक को अपनी प्रस्तुति पक्ष को लेकर पूरी तरह से पात्र संवाद योजना और अभिनय पक्ष पर ही निर्भर रहना होता है, जबकि मंचीय नाटक तो अभिनय पक्ष की कमज़ोरी पर भी अपने तामझाम या मंच सज्जा से पर्दा डाल सकते है| सशक्त और जानदार अभिनय के अभाव में नुक्कड़ नाटक की प्रस्तुति ही असंभव्य हैं|

[1] नुक्कड़ नाटक रचना और प्रस्तुति, प्रज्ञा, पृ : 134

नुक्कड़ नाटकों में वाचिक, आंगिक, आहार्य अभिनय देखे जा सकते हैं| जहाँ तक नुक्कड़ नाटकों में वाचिक अभिनय की बात है तो अभिनेता के भीतर यह गलतफहमी है कि उसे खुले में हमेशा चीख चिल्लाकर ही बोलना पड़ेगा| यह तो केवल एक भ्रांति ही है| इन्हीं चुनौतियों को निपटने के लिए आज नुक्कड़ नाट्य मंडलियाँ 'चुप्पी भाषा' पर विचार कर रही हैं| इसी दिशा में हुई प्रगति का एक उदाहरण जन नाट्यमंच के एक नुक्कड़ नाटक में द्रष्टव्य है| उन्होंने 'आर्तनाद' नामक नाटक में पैतालीस सैकेंड की चुप्पी रखी है जो नाटक के कथ्य को ही नहीं, अभिनय को भी सघनता प्रदान करती है|

अभिनय के संदर्भ में जन नाट्य मंच का कहना है - "नुक्कड़ नाटक के प्रदर्शन में किसी तरह की 'सूक्ष्म' हरकत दर्शकों तक नहीं पहूँचती है| इसलिए ज़रूरी है कि कलाकार स्टाईलाज़्ड और अतिरंजित किस्म के एक्शन करे| लेकिन इस बात का भी ध्यान रखना है कि 'एक्शन' ज़रूरत से ज़्यादा ही बढ़ा चढ़ाकर न किए जाए| हर 'एक्शन' और भाव का एक मतलब होना चाहिए और वो साफ़ तौर पर नज़र आना चाहिए| नुक्कड़ नाटक में 'एक्शन' और 'संकेत' बॉडी लाइन से बाहर होने चाहिए, घुटनों के स्तर से ऊपर होने चाहिए, ताकि वो चारों तरफ के दर्शकों को दीखें|"[1]

बुलन्द आवाज़वाले अभिनेता ही नुक्कड़ नाटक के लिये उपयोगी होते हैं| उनमें फुर्ती और लचीलापन होना आवश्यक है| नुक्कड़ नाटकों में चित्रित परिवेश,

[1] चौक-चौक पर गली गली में भाग-1, जन नाट्यमंच दिल्ली भूमिका से

घटना, दृश्य आदि को अभिनेता अपने हाव भाव और अंग चालन से जीवन्त बनाते हैं| यहाँ हम जन नाट्य मंच के पहले नुक्कड़ नाटक 'मशीन' का उदाहरण ले सकते हैं| इस नाटक के आरंभ में चारों पात्र विभिन्न दिशाओं की ओर मुँह करके, एक दूसरे से सटकर खड़े होते हैं| हाथों का तीव्र संचालन और खट्-खटाखट्-खट् जैसी ध्वनी से वे मशीन का बिम्ब सफलता पूर्वक प्रस्तुत कर देते है|

नुक्कड़ नाटक के अभिनय की चर्चा करते समय जावेद अख्तर खां के ये वाक्य उल्लेखनीय है – "नुक्कड़ नाट्य-प्रदर्शन में आंगिक और वाचिक अभिनय पर ज़ोर रहता है| सधे हुए अंग संचालन और ओजपूर्ण वाचिक अभिनय के लिए निरंतर कठोर अभ्यास की ज़रूरत पड़ती है| नृत्य मूलक गतियों और विशिष्ट देह-मुद्राओं के साथ लयात्मक वाचिक अभिनय की ओर ध्यान दिए बिना कोई भी नुक्कड़ नाट्य प्रदर्शन प्रभावशाली नहीं होता|"[1]

पात्राभिनय की महत्ता के परिणामस्वरूप ही मंच तथा मंचीय सामग्री के अभाव होने पर भी नुक्कड़ नाटक में संरचना कौशल को जन्म दिया है| अभिनेता नुक्कड़ नाटक का एक ऐसा तत्व है जो उसके कथानक को अधिकाधिक सरल और सहज संप्रेषणीय बनाने में सहायक सिद्ध होता है|

नुक्कड़ नाटक के पात्र किसी वर्ग विशेष के प्रतिनिधि बनकर आते है| शोषक तथा शोषित वर्ग के प्रतिनिधित्व करनेवाले पात्रों को नुक्कड़ नाटकों में

[1] नाटक से नुक्कड़ नाटक तक, राजेश कुमार, अरविंद कुमार, पृ : 50

देखे जा सकते हैं| इन्हीं पात्रो के ज़रिए आम जन जीवन का सही चित्र दर्शकों के सामने प्रस्तुत होता है| उदाहरणस्वरूप हम देख सकते हैं कि "जब चोर बने कोतवाल' नामक नुक्कड़ नाटक में जहाँ धन्नामल और राणा धनगरज शोषक वर्ग के प्रतिनिधि है वहाँ कलुवा, रामसेवक आदि क्रांतिकारी युवावर्ग के प्रतिनिधि है|

नुक्कड़ नाटक में कलाकार और दर्शक की भूमिका अलग-अलग नहीं रहती| इसमें दर्शक मात्र दर्शक न रहकर उस नाटक का अंग बन जाता है| अभिनेता उन्हीं में से निकला हुआ व्यक्ति होता है| अभिनेता और दर्शक के बीच किसी भी प्रकार की दूरी न रहने के कारण दर्शक उसे जल्दी आत्मसात कर सकता है| उन्हीं की समस्याओं का मंचन ही वे देखते हैं, इसलिए अपनी वास्तविक स्थिति को समझने में नुक्कड़ नाटक दर्शक को समर्थ बनाता है| नुक्कड़ नाटक के पात्र व्यक्ति विशेष की नहीं अपितु वर्ग-विशेष की पहचान होते है|

चारों तरफ से घेरकर एकत्रित हुए दर्शकों के बीच का रंगमंच होने के कारण नुक्कड़ नाटक में दर्शक की हिस्सेदारी महत्वपूर्ण होती है| दर्शकों को नाटक का एक अंग बनाने की जबरदस्त कोशिश अभिनेताओं की ओर से होती है| वह दर्शोकों से ताली बजाने के लिए कहता है और उनको भी नाटक में सक्रिय साझेदारी निभाने के लिए प्रेरित करता हैं|

इसके उदाहरणस्वरूप हम 'समरथ को नहिं दोष गुस्साई' नामक नुक्कड़ नाटक को ले सकते हैं|

प्रस्तुत नुक्कड़ नाटक में मदारी तथा जमूरा के प्रचलित माध्यम का इस्तेमाल हुआ है| नाटक में मदारी कहता है – "मेहरबान, कद्रदान मेरे जमूरे में एक बहुत बुरी आदत है| जब तक पब्लिक ज़ोर से ताली नहीं बजाती यह साला खेल नहीं शुरू करता| हाँ तो ज़ोर से ताली बजाना|"[1] यहाँ तो द्रष्टव्य है कि किस प्रकार अभिनेता दर्शक को नाटक का अंग बनाने की कोशिश करते हैं|

नुक्कड़ नाटकों में ऐसे चरित्रों की सृष्टि की गयी है जो निम्न वर्ग का प्रतिनिधित्व करने में सफल निकले हैं| नुक्कड़ नाटकों में निम्नवर्ग के लोगों का चित्रण हुआ है| डॉ. चन्द्रेश लिखते है – "पिछले वर्षों के दौरान देश की शोषित, पीड़ित जनता की आशा आकांक्षाओं और देश भर में चल रहे विभिन्न जन आन्दोलनों से तादात्म्य स्थापित कर जिस कला ने समाज के विभिन्न तब्के के लोगों का ध्यान अपनी ओर आकृष्ट किया है वह है – 'नुक्कड़ नाटक'|"[2]

नुक्कड़ नाटक में प्रस्तुत प्रायः सभी चरित्र प्रतीकात्मक है| वे अपने वर्ग के प्रतिनिधि बनकर आते हैं और अपनी वास्तविक स्थिति की पहचान कराते हैं|

[1] समरथ को नहिं गुस्साई, (नुक्कड़ जनम संवाद-अंक 16, पृ : 34

[2] चन्द्रेश – नुक्कड़ नाटक भूमिका, पृ : 7

'मशीन' नामक नुक्कड़ नाटक में तो मशीन को मज़दूरों के प्रतीक के रूप में प्रस्तुत किए है| उसी नाटक में चित्रित सिक्युरिटी अफसर पुलिस वर्ग का, मालिक पूँजीपति वर्ग का प्रतिनिधित्व करता है|

सशक्त नारी पात्रों की सृष्टि भी नुक्कड़ नाटककारों ने की है| 'अँधेरा अफताब माँगेगा' नामक नुक्कड़ नाटक की 'शालू' तथा 'हल्लाबोल'की 'पारबती' आदि इसके उदाहरण हैं| ऐसी सशक्त नारी पात्रों के ज़रिए नुक्कड़ नाटककार नारी-वर्ग पर नयी चेतना लाये हैं|

इस प्रकार देखें तो नुक्कड़ नाटक चरित्र की दृष्टि से वैविध्यता रखता है| दर्शकों के मन पर अधिक प्रभाव डालने में नुक्कड़ नाटक के चरित्र (पात्र) सफल निकले हैं|

नुक्कड़ नाटकों की भाषा शैली एवं संवाद

वे तमाम नाटक जो अन्याय अत्याचार और शोषण के विरुद्ध आम-आदमी को जागरूक बनाने के उद्देश्य से गली, सड़क, नुक्कड़, चौराहे, पार्क या स्कूल पर सामान्य जन के बीच जन सामान्य की भाषा में प्रस्तुत किए जाते हैं, नुक्कड़ नाटक कहे जाते हैं| सामयिक मुद्धों पर दर्शकों को उत्तेजित करना, उस पर सोच-विचार करने को उन्हें प्रेरित करना,नुक्कड़ नाटक का उद्देश्य होता है| इसी के अनुरूप उसकी भाषा-शैली का चयन किया जाता है| वस्तुतः इस विधा में भाषा शैली के सभी प्रचलित नियम एकाएक टूट गए हैं|

नुक्कड़ नाटक के संदर्भ में भाषा नाटक में केन्द्रीय स्थान रखती है| नुक्कड़ नाटकों की भाषा किसी विशेष आग्रह के तहत गढ़ी हुई भाषा नहीं होती, बल्कि सामान्य बोलचाल की भाषा होती है| सीधी, सरल, सपाट भाषा का प्रयोग नुक्कड़ नाटकों के लिए अपेक्षित है, ताकि कथ्य के संप्रेषण आम दर्शक तक आसानी से पहूँच सके| क्लिष्ट शब्दों का प्रयोग नाटक के संप्रेषण में बाधक हो जायेंगे, इसलिए सहजता के साथ लोक मानस तक पहूँचने वाले शब्दों का ही प्रयोग करना चाहिए|

नुक्कड़ नाटक की भाषा, विषय के सर्वथा अनुकूल होनी चाहिए| नुक्कड़ नाटक की भाषा को जनता की भाषा मानी गयी है| जनता की भाषा कलात्मक होना भी ज़रूरी है, क्योंकि इसके अभाव में नुक्कड़ नाटक की भाषा मात्र प्रचारात्मक होकर रह जाएगी| नुक्कड़ नाटक की भाषा सीधी, सहज, आम आदमी की भाषा होती है| इस प्रकार के नाटकों की भाषा में मुहावरे, व्यंग्य, प्रतीक बिम्ब आदि सभी विशिष्टताएँ सरलता और सहजता के साथ आती है|

नुक्कड़ नाटक की भाषा आम जीवन की भाषा होती है| जैसे राजेश कुमार के नाटक 'मुझे बोलने दो' की भाषा का यह अंश –

"एक : भई एक देना तो.....

हाकर : लीजिए साब, पढ़िए सब, आज की ताज़ा खबर| खेती के लिए खाद-पानी बीज-बिजली माँगनेवाले किसानों पर लाठी चार्ज....."[1]

हिन्दी नुक्कड़ नाटकों में प्रयुक्त होने वाली भाषा हर तरह की मिली जुली भाषा ही है| नुक्कड़ नाटककार अपने नाटक को किसी भाषिक परिधि में कैद नहीं रखना चाहता, बल्कि उर्दू, अंग्रेजी आदि भाषाओं की शब्दावली का धडल्ले के साथ प्रयोग करता है| वह अपने नाटकों में रोज़मर्रा की जिन्दगी में काम आनेवाली भाषा का खुलकर प्रयोग करता है क्योंकि उसे अपनी भाषा के ही माध्यम से नाटक को आम आदमी के बीच ले जाना होता है|

".....जनता में प्रचलित बोली अपने पूरे तेवर के साथ इन नाटकों में विद्यमान हैं| मंचीय नाटकों की अभिजात्यपूर्ण भाषा से भिन्न देशी कहावतों, मुहावरों, बोली गाली से नुक्कड़ नाटकों की ज़बान बनी है| इसमें देशी ज़बान का मिठासपूर्ण अपनापन तथा आक्रमण तेज़ी दोनों है|"[2]

जन नाट्यमंच ने नुक्कड़ नाटकों की संवाद योजना संबंधी अपने अनुभव को इस प्रकार व्यक्त किया है –"नाटक में संवाद लंबे और बोझिल नहीं बल्कि हल्के-फुल्के, तेज़-तर्रार और संक्षिप्त होना चाहिए| भाषा जटिल न होकर सरल और खूबसूरत होनी चाहिए| मुक्तछन्दों का प्रयोग भी हमने सवादों के

[1] नुक्कड़ नाटक रचना और प्रस्तुती प्रज्ञा, पृ : 128

[2] सनत कुमार, हिन्दुस्तानी अंक 1-4, पृ : 155

रूप में किया है| प्लॉट इस तेज़ी से विकसित होना चाहिए कि दर्शकों को हर क्षण कोई नयी अनुभूति होती रहे|"[1]

पात्रानुकूलित भाषा का प्रयोग नुक्कड़ नाटकों की और एक विशिष्टता है| प्रत्येक पात्र के परिवेश को उद्घाटित करने का अधिकांश दायित्व भाषा पर ही होता है क्योंकि इस कोटि के नाटकों में पात्रानुकूल वेश-भूषा का प्रयोग बहुत कम ही रहता है| पात्रानुकूल भाषा के प्रयोग का एक उदाहरण द्रष्टव्य है –

"माँ : और यहाँ किसको आराम है? सुबह होते ही चूल्हे-चौके में भिड़ जाओ| दिन रात दाई की तरह खटते रहो| दाई को भी दो पल आराम मिल जाता है| भला मैं ने कौन सा सुख इस घर में पाया? ज़िन्दगी नरक हो गयी|"[2]

इस प्रकार देखें तो समझ सकते है कि नुक्कड़ नाटकों में तो पात्रानुकुलित भाषा का ही प्रयोग होता रहता है| ग्रामीण परिवेश के लोगों की समस्या को उठानेवाले नाटकों की भाषा में ग्राम जीवन के शब्दों और मुहावरों का प्रयोग अधिक रहता है| शहरी जीवन के पढ़े-लिखे लोगों की भाषा में अंग्रेज़ीपन रहता है| रमेश उपाध्याय के नाटक 'राजा की रसोई' में हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई पात्रों के अनुरूप हिन्दी, उर्दू, पंजाबी, अंग्रेज़ी भाषाओं के शब्दों का प्रयोग हुआ है|

[1] चौक-चौक पर गली गली में भाग-1, जन नाट्यमंच दिल्ली(संपादक) भूमिका से

[2] सुजाता मायने पैसा, राजेश कुमार, मुक्ति जून 1985, पृ : 53

नुक्कड़ नाटक के दर्शकों को नाटक की ओर खींचने का मुख्य कार्य भाषा ही करती है| चुस्त, संक्षिप्त और तेज़ तरार संवाद दर्शक को भटकने से रोकते हैं| इस तरह की एक संवाद योजना का उदाहरण देखिए –

"पूँजीपति : (गर्व से हँसता है) पता चला देश किसका है?

जनता : आपका अन्नदाता

पूँजीपति : पुलिस किसकी है?

जनता : आपकी माई बाप|"[1]

मुहावरेदार भाषा का भी प्रयोग नुक्कड़ नाटकों में किया गया है| लोक-जीवन के मुहावरों का सार्थक प्रयोग नुक्कड़ नाटकों की एक विशेषता है| इसके उदाहरण स्वरूप 'नयी बिरादरी' नुक्कड़ नाटक का यह अंश उल्लेखित है –

"ठाकुर : चोप्प बदमाश साला| ज़बान चलाता है? अपनी औकात देखी है? तेरे बाप दादे हमारी जूतियाँ चाटते हुए मर गए और तुम साले.....तुम्हारे पंख निकलने लगे हैं| .....खाल खींचकर भूसा भर दूँगा|"[2]

नुक्कड़ नाटकों में व्यंग्यात्मक भाषा का प्रयोग भी हम देख सकते है| इसके साथ साथ नुक्कड़ नाटकों में प्रतीक और रूपक का भी प्रयोग मिलते हैं|

[1] जनता पागल हो गयी है, शिवराम, पृ : 2

[2] उत्तरार्द्ध जनवादी नाटक विशेषांक 1983 द्वितीय खेड, पृ : 156

बहुत अधिक नुक्कड़ नाटक जैसे 'जनता पागल हो गई है', 'है लाल हमारा परचम', 'कुकडूँ कूँ' 'जब चोर बने कोतवाल' प्रतीकात्मक है| 'मशीन', 'राजा की रसोई' जैसे नुक्कड़ नाटकों में रूपक का बहुत अच्छा प्रयोग किया गया है|

'राजा की रसोई' नामक नुक्कड़ नाटक में रसोई पूरे देश का रूपक है और उसमें काम करनेवाले चार बावर्ची विभिन्न धर्मों के रूपक हैं| इन्ही रूपकों के माध्यम से यही बात दिखायी गयी है कि जिस प्रकार सत्ता धर्म के नाम पर लोगों में अलगाव पैदा करती है|

"पंडित : .....जब अंग्रेज़ से झगडा चल रहा था अपने ये राजा साहब और वो नवाब साहब, दोनों हमसे ये कहते थे कि अंग्रेज़ के कब्जे से रसोई छूट गयी तो तुम लोगों को इसका मालिक बना देंगे|

मुल्लाजी : और हुआ क्या? वे दोनों इस पर अपना अपना हक़ जताने के लिए आपस में तो लड़े ही, हम लोगों को भी लडवा दिया|"[1]

नुक्कड़ नाटकों में प्रयुक्त होनेवाले अधिकांश संवाद आम बोलचाल की भाष के ही होते हैं| हास्य व्यंग्य, लोक-जीवन के मुहावरों से युक्त इन संवादों की सबसे बड़ी विशिष्टता उनकी क्षिप्रता है| कभी-कभी संवादों को विशिष्ट रूप देने के उद्देश्य से उसमें लोक नाट्य शैली के तत्वों को भी मिलाया जाता है|

[1] उत्तरगाथा (सांप्रदायिकता विरोधी अंक) 1983 सव्यवाची, पृ : 67

आमतौर पर नुक्कड़ नाटक के संवाद आम बोलचाल के ही होते है लेकिन अपनी तल्खी में वह सीधे तीर की तरह एक संप्रेष्य सनसनाहट लिए हुए होते हैं तथा तथ्यों को ज्यों का त्यों प्रस्तुत करने की उनकी अद्‌भुत क्षमता होती है|

शैली को लेकर नुक्कड़ नाटकों में मिला जुला रूप देखने को मिलता है| नुक्कड़ नाटकों पर लोकनाट्य शैली, ब्रेख्तीय शिली, प्रतीकात्मक शैली आदि का प्रभाव स्पष्ट रूप से झलकता है| अधिकांश नुक्कड़ नाटक लोक नाट्य शैली के तत्वों को लेकर उनमें समकालीन अर्थ भरते हैं|

लोक नाटकों की कथा गायन शैली का प्रयोग 'सवा-सेर गेहूँ' 'हिंसा परमो धर्म' जैसे नाटकों में किया गया है तो 'संघर्ष करेंगे जीतेंगे' में बारहमासा का सार्थक प्रयोग किया गया है| इन उदाहरणों को देखकर हम कह सकते हैं कि सुविधा और उद्देश्य के अनुसार विभिन्न शैलियों का मिश्रित प्रयोग नुक्कड़ नाटकों में कर सकते हैं|

नुक्कड़ नाटकों का स्थल-चयन तथा मंच संरचना

नुक्कड़ नाटकों की विशेषता यह हैं कि जहाँ मंचीय नाटक विधि विधानों की सीमा में खेले जाते हैं वहाँ नुक्कड़ नाटक इन सीमाओं से परे आकाश और हवा की भाँती मुक्त है| इन नाटकों की मूल प्रेरणा जनप्रतिबद्धता है जो निर्धारित करती है इन नाटकों का स्थल या मंच|

किसी भी नुक्कड़ नाटक की प्रस्तुति झटपट और त्वरित नाटकीयता से परिपूर्ण होने के साथ ही धडाकेदार होती है| प्रस्तुति स्थल का चयन भी नुक्कड़ रंगकर्मियों के लिए आवश्यक बात है|

"कहने को लोग आवेश में कह देते हैं कि नुक्कड़ नाटक कही भी, किसी भी जगह मंचित किया जा सकता है, पर अभिनय स्थल के चुनाव में हम सचेत न रहें तो सीधा असर प्रस्तुति पर पड़ेगा| ..... इसलिए अभिनय स्थल या प्रस्तुती की जगह के चुनाव का सवाल बड़ा महत्वपूर्ण है|"[1]

नुक्कड़ नाटक को खेलने का स्थान कहीं भी मिल सकता है क्योंकि इसके लिए बहुत पहले से किसी मंच विशेष या थियेटर की ज़रूरत नहीं होती| खुला स्थान, सार्वजनिक उपयोग की जगह ही उसका थियेटर होता है| शहर, गाँव, क़स्बा जहाँ कहीं भी नुक्कड़ नाट्यमंडलियाँ प्रस्तुति के लिए पहूँचती है वहाँ अनेक स्थान होते हैं लेकिन प्रत्येक स्थान नुक्कड़ नाटक के लिए उपयुक्त नहीं हो सकता|

जन नाट्य मंच ने नुक्कड़ नाटकों के अनेक प्रदर्शन किए हैं| अपने इसी कार्यानुभव के तहत नुक्कड़ नाटकों के मंच के संबंध में उन्होंने कहा है – "नुक्कड़ नाटकों का प्रदर्शन शुरू करने से पहले यह निहायत है कि हम सही प्रदर्शन स्थल को चुने| यह सही है कि नुक्कड़ नाटक चौक-चौक पर गली-गली में किया

[1] गिरगिट, रमेश उपाध्याय, चंद्रेश, पृ : 42

जा सकता है, लेकिन जहाँ पर भी हम नाटक करने जाए हमें यह ध्यान रखना है कि प्रदर्शन स्थल किसी ऐसी जगह पर न हो जहाँ आसपास का शोर कलाकारों की आवाज़ को दबा दें| ऐसी जगह मिल पाना कई बार मुमकिन नहीं होता|"[1]

नुक्कड़ नाटकों का प्रेक्षक उसे देखने सुनने के लिए नाटक तक नहीं आता बल्कि स्वयं नुक्कड़ नाटक प्रेक्षक वर्ग के बीच पहुँचता है| वैसा कि नुक्कड़ नाटक का दर्शक पूर्व निश्चित न होकर आकस्मिक दर्शक होते हैं| अभिनय स्थल का चयन करते समय नुक्कड़ नाटककारों को इसी बात पर अधिक ध्यान देना होता है| अभिनय स्थल अत्यधिक यातायात से भरी सड़क से एक निश्चित दूरी पर होना अधिक उचित है ताकि बिना शोर शराबे के अभिनेता अपने संवाद बोल सकें और दर्शक सुन सकें|

अभिनय स्थल के चयन के संदर्भ में राजेश कुमार ने लिखा है – "शहरों में किसी नुक्कड़ चौराहे का एक कोना, स्टेशन का रिक्शा-पड़ाव, सड़क का एक किनारा, सड़क के बगल का मैदान या गली, पार्क, स्कूल कॉलेज का मैदान, आफिस का अहाता, कॉलोनी मिल के बाहर का खुला मैदान, किसी पेड़ के नीचे, भवन का बरामदा, मोहल्ले के अन्दर या कोई सार्वजनिक जगह नुक्कड़ नाटक के लिए सबसे उचित होती है|"[2]

[1] चौक-चौक पर गली गली में भाग-1, जन नाट्यमंच दिल्ली भूमिका से

[2] राजेश कुमार नट रंग अंक 46, पृ : 37

नुक्कड़ नाटकों के लिए मुख्य हाई-वे से थोडा सा भीतर की ओर जाकर अभिनय स्थल चुनना अधिक अच्छी बात है क्योंकि वहाँ दर्शक मिलेंगे और शांति भी मिलेंगी| कभी-कभी नुक्कड़ नाटकों की शुरुआत के पहले दर्शकों का ध्यान आकर्षित करने के लिए हल्के-फुल्के शोरगुल का सहारा भी लिया जाता है| इसी बात की ओर संकेत करनेवाला यह उद्धरण देखिए – ".....कभी कभी हम नुक्कड़ नाटक खेलने से पूर्व अपना प्रेक्षक जुटाने के लिए ढोल पीपे कनस्तर इत्यादि को ज़ोर ज़ोर से बजाकर लोगों का ध्यान अपनी तरफ खींचते है और इस तरह के प्रयोग से सफलता भी मिलती हैं|"[1]

अभिनय स्थल के चयन करने के बाद नुक्कड़ रंगकर्मी अपने लिए उचित रूप में उस स्थल की संरचना करते हैं| अभिनय स्थल चौकोर, अंडाकार, त्रिभुजाकार, अर्द्धचंद्राकर आदि रूपों में संरचित किए जाते हैं| अभिनय स्थल का दायरा हमेशा आवाज़, अभिनय संरचना प्रभाव आदि को ध्यान में रखकर बनाता है| गोलाकार अभिनय स्थल है तो दर्शक वर्ग गोल घेरे की परिक्रमा में फ़ैल जाता है और नुक्कड़ नाटक के ऐसे कुछ कलाकार जिनकी भूमिका नाटक आरंभ होने के कुछ समय बाद निश्चित होती है वह दर्शक वर्ग में ही खड़े रहते है|

नुक्कड़ नाटक में मंच और दर्शक के बीच 'यवनिका' जैसी कोई चीज़ नहीं होती, इसी लिए अभिनेताओं को अभिनय स्थल में दर्शकों की भीड़ को

[1] अरुण शर्मा, जन नाट्यमंच पृ 28

चीरकर आना होता है| अभिनय के बाद वह दर्शकों की भीड़ में सम्मिलित हो जाता है| अभिनय स्थल के चारों तरफ दर्शकों के पीछे का भाग उसका नेपथ्य है, जहाँ से कभी चीख, घोषणा, घर के अन्दर किसी के बोलने की आवाज़ इत्यादि का इस्तेमाल किया जाता है|

नुक्कड़ नाटक का पात्र अभिनेता के साथ-साथ स्वयं दर्शक भी है और नुक्कड़ नाटक का दर्शक एक अभिनेता| यह अनुभूति अभिनेता और दर्शक के बीच काफी गहरी रिश्ता, आत्मीयता स्थापित करती है|

इस प्रकार अभिनय स्थल का चयन नुक्कड़ नाटक की प्रस्तुति में एक महत्वपूर्ण बात है|

पात्रों की वेश-भूषा

अपनी प्रस्तुति की प्रक्रिया में नुक्कड़ नाटक कभी-भी मंचीय नियमों या नाट्य शास्त्रीय व्याकरण का अन्धानुकरण नहीं करता है| नुक्कड़ नाटकों में वेशभूषा तैयार करने की पद्धति एवं उसे व्यवहार में लाने की प्रक्रिया में अत्यंत विशिष्टता है| इसका कारण यह है कि नुक्कड़ नाटक के अभिनेता साज सज्जागृह (ग्रीन रम) में नहीं बल्कि दर्शकों में ही होते हैं और दर्शकों से निकलकर ही प्रस्तुति के दौरान शिरकत करता है|

" .....एक आम धारणा है कि नुक्कड़ नाटक कंगाली का नाटक है, इसमें कास्ट्यूम्स, प्रापर्टीज़ वगैरह के लिए कोई स्थान नहीं है| पिछले एक

दशक के अपने अनुभवों से हमने जाना है कि कास्ट्यूम्स और प्रापर्टीज़ केवल इसलिए नहीं होने चाहिए कि उनके होने से हम एक यथार्थ का भ्रम उत्पन्न रहे हैं| इसका कार्यशील होना ज़रूरी है|"[1]

नुक्कड़ नाटकों में मंच नाटकों की तरह पात्र को असली रूप में पेश करने के लिए असली वेशभूषा तैयार करने की अपेक्षा पात्र की असलियत को प्रस्तुत करने का भरसक प्रयास रहता है| पात्र की वेशभूषा की तमाम चीज़ों को जुटाने के बजाय, उससे जुडती हुई एक साम्रगी, वस्त्र या शारीरिक हाव भाव द्वारा ही यह प्रकट करने का प्रयास किया जाता है कि वह क्या है?

नुक्कड़ नाट्य प्रस्तुतियों के दौरान रंगकर्मियों का अधिकाधिक प्रयास यही रहता है कि पात्र की वास्तविकता को जहाँ तक हो सके, बिना साज सज्जा के, अभिनय के माध्यम से ही दर्शक तक पहूँचा जाए| इसके लिए पात्र की तमाम वेशभूषा को जुटाने के बजाय किसी एक चीज़ को उपयोग में लाया जाता है ताकि प्रतीक के रूप में वह चीज़ पात्र के चरित्र को अभिव्यक्ति दें|

उदाहरण स्वरूप – "जब जमींदार आता है तो तुरंत उनमें से एक अभिनेता उठकर जमींदार बन जाता है, धोती का एक पल्लू उठाकर हाथ

[1] `चौक-चौक पर गली गली में भाग-1, जन नाट्यमंच दिल्ली(सं) भूमिका से

में थमा, दूसरे हाथ में छड़ी और मुँह को ऐसे चलाने लगता है माने पात्र चुभला रहा हो| .....इस तरह साधारण वेश भूषा में ही कुछ हेर-फेर से तरह तरह की भूमिकाओं को दर्शकों के सम्मुख उपस्थित किया जाता है|"[1]

नुक्कड़ नाटकों में वेशभूषा और प्रोपर्टीज़ का प्रयोग सार्थकता और प्रतीकात्मकता को ध्यान में रखकर किया जाता है| जन नाट्य मंच का नुक्कड़ नाटक 'औरत' से इसकेलिए उदाहरण मिलता है| इस नुक्कड़ नाटक में औरत की तीन भूमिकाओं में दुपट्टे का प्रयोग तीन ढंग से किया गया है| स्कूल की लड़की के लिए दुपट्टा यूनिफार्म बन जाता और विवाह के समय वह घूँघट के लिए प्रयुक्त होता है| बूढ़ी मज़दूर और औरत की भूमिका करते समय उसे सिर पर रखा जाता है|

वेशभूषा की दृष्टि से नुक्कड़ नाटक यथार्थवादी शैली के बदले प्रतीकात्मकता को अपनाने पर अधिक ज़ोर दिया जाता है| इस संदर्भ में डॉ. प्रज्ञा के ये वाक्य उल्लेखनीय है – "जैसे नेता की भूमिका निभानेवाले पात्र के लिए खादी टोपी का प्रयोग, पुलिस के चरित्र को निभाने में टोपी, बेल्ट और डंडे का प्रयोग, किसान मज़दूर को दिखाने में गमछे का प्रयोग, गुंडे के चरित्र के लिए रंगीन रूमाल और काले चश्मे का प्रयोग, डाक्टर के लिए स्टेथोस्कोप,

[1] राजेश कुमार, नटरंग, अंक 46, पृ : 38

पंडित के लिए रामनामी चादर और माला, राजा के लिए मुकुट आदि के प्रतीकात्मक प्रयोग से पात्रों की वास्तविकता दर्शकों पर प्रकट हो जाती है|"[1]

वेशभूषा का इस्तेमाल करते समय अभिनेताओं को उस नाटक का कथ्य एवं अगल बगल के वातावरण के रंग का अवलोकन सूक्ष्मतापूर्वक करने की ज़रूरत है| वेशभूषा का रंग ऐसा हो कि अगल बगल के माहौल के बीच दबें नहीं और लोगों का ध्यान अपनी तरफ बराबर खींच सके| नुक्कड़ नाटकों में कथ्य और वेशभूषा दोनों को एक साथ चलने की ज़रूरत है| दोनों का संबंध अविछिन्न रहता है, न कथ्य की अवहेलना, संभव है, न वेशभूषा की| एक के बिना दूसरे का अस्तित्व नहीं| इसलिए दोनों के बीच सामंजस्य, समन्वय लाना ज़रूरी है|

कभी-कभी एक दिन में एक ही नुक्कड़ नाटक के दो चार प्रदर्शन भिन्न भिन्न स्थलों पर होते है| ऐसी स्थिति में पात्रों की पूरी वेश-भूषा और नाटक के लिए आवश्यक अन्य प्रापर्टीज़ ढोकर चलना संभव नहीं होता| इसलिए अधिकांश नुक्कड़ नाटकों में इन दोनों का सांकेतिक प्रयोग ही किया जाता है|

नुक्कड़ नाटकों के लिए प्रयुक्त होनेवाले प्रोपर्टीज़ के विषय में अधिक सतर्कता बरतना आवश्यक हैं| ऐसी चीज़ों का उपयोग करना चाहिए जिन्हें आसानी से ढोया जा सकें और जो आसानी से सुलभ भी हो| इस संदर्भ में

[1] नुक्कड़ नाटक, रचना और प्रस्तुति, डॉ. प्रज्ञा, पृ : 145

जनम का यह अनुभव है – "मुखौटों का इस्तेमाल भी हमने बखूबी किया है, 'मई दीवसकी कहानी' के 'रीगन', 'हिटलर', पूँजीपति और नात्सी सिपाहियों के मुखौटे सब अपना असर छोड़ते है| इसके अलावा पोस्टरों और बैनरों का प्रयोग भी हमने नाटकों में किया है| 'हिंसा परमो धर्म' में जब जामिद शहर में पहूँचता है और मंदिर देखता है तो एक बैनर पर मंदिर का दृश्य उभरता है, इसके साथ ही केसरिया रंग का झंडा उठाकर मंदिर का माहौल पैदा किया जाता है|"[1]

इस प्रकार देखें तो कथ्य के साथ वेशभूषा और प्रोपर्टीज़ का सामंजस्य हो जाने पर नुक्कड़ नाटक की अर्थवत्ता और भी बढ़ जाती है| अभिनेताओं के कुशल अभिनय और नाटक का चुस्त कथ्य होने के कारण वेशभूषा के पूरे तामझाम की कमी की ओर दर्शक ध्यान न देंगे| यही नुक्कड़ नाटक की सफलता है|

नुक्कड़ नाटक की दृश्य रचना

नाटक चाहे कैसा भी हो उसके कथ्य को उभारने एवं उसमें गति प्रदान करने के लिए दृश्य रचना आवश्यक है| यह रंग शिल्प का महत्वपूर्ण अंग है| नुक्कड़ नाटक की दृश्य रचना की लोक नाटक से काफी समानता है| जिस प्रकार लोक नाट्यों का पारम्परिक दृश्य विधान सूत्रधार-शैली प्रयोग से

[1] चौक-चौक पर गली गली में भाग-1, जन नाट्यमंच दिल्ली (सं) भूमिका से

दर्शक-भोक्ता के मानस-पटल पर घटनानुकूल दृश्यबिम्ब निर्मित किया जाता है, ठीक उसी तरह नुक्कड़ नाटक की दृश्य रचना भी सशक्त अभिनय निर्देशों से ही हर घटना स्थिति के दृश्य को प्रस्तुत करने की अद्‌भुत क्षमता से परिपूर्ण होती है|

मंचीय नाटकों में तो बाह्य साधनों के प्रयोग से दृश्य की रचना संभव है| नुक्कड़ नाटकों में दृश्यबंध को रचित करने का उत्तरदायित्व अभिनेताओं को सौंपा जाता है| "अभिनेताओं की आंगिक क्रियाओं, संवाद वाक्य, हाव भाव के द्वारा आभास उत्पन्न किया जाता है नाटक के कथ्य को उभारने, चित्रात्मक बनाने के लिए जिससे देखने वालों के सामने नाटक के स्थान वातावरण, काल, मौसम का पूरा प्रभाव हाज़िर हो जाए अहसास हो जाए कि उनके सामने कौन सा कैसा दृश्य है|"[1]

नुक्कड़ नाटकों की दृश्य सज्जा मंचीय नाटकों की दृश्य सज्जा की अपेक्षा कम खर्चीली और मंच उपकरणों की भरमार से मुक्त होती है| नुक्कड़ नाटकों का ध्येय किसी दृश्य विशेष को महत्व न देकर उसके भीतर तक की सच्चाई को सामने लाना होता है इसलिए दृश्यगत आकर्षण और चकाचौंध उसके लिए निरर्थक चीज़ है| फलस्वरूप नुक्कड़ नाटक दर्शक प्रेक्षक को दृश्य सज्जा न देकर दृश्य बिम्ब प्रदान करता है और यही उसका दृश्यगत वैशिष्ट्य है| उदाहरण के लिए, यदि किसी नुक्कड़ नाटक में बाज़ार का दृश्य प्रस्तुत करना है तो उसके

[1] राजकुमार, अरविंद कुमार (सं) नाटक से नुक्कड़ नाटक तक, पृ : 58

लिए दुकानों लारी-गल्ला या स्टोर्स दिखाना आवश्यक नहीं है| पात्रों के संवाद, शोरगुल और सूत्रधार का निर्देश ही उसके लिए काफी है|

कई नुक्कड़ नाटकों में दृश्य विधान में कल्पना से भी काम लिया जाता है| उदाहरण स्वरूप 'सबका दुश्मन'(स्वयं प्रकाश) नामक नुक्कड़ नाटक में काल्पनिक गोदाम की रचना की गयी है| दर्शक पात्रों के संवादों और अभिनय द्वारा स्वयं उस दृश्य बंध में गोदाम की कल्पना कर लेते हैं| इसी काल्पनिक गोदाम नुक्कड़ नाटक में चित्रित है फिर भी दर्शक वर्ग गोदाम के अस्तित्व और बढ़ती कालाबाज़ारी को अनुभव करता है|

निशांत नाट्यमंच द्वारा कृश्नचंदर की कहानी के नाट्य रूपांतर में काल्पनिक गड्ढे की योजना की गयी है| 'गड्ढा' में गड्ढे में गिर गयी औरत की पीड़ा उसके अभिनय से व्यक्त होती है जो गड्ढे से निकलने की जी तोड़ कोशिश करती है| नुक्कड़ नाटकों की दृश्य रचना के संदर्भ में नुक्कड़ नाट्यकर्मी राजेश कुमार ने लिखा है – "नुक्कड़ नाटक की इस तरह की दृश्य-रचना दर्शकों के अन्दर एक वैज्ञानिक चिंतन पैदा करती है, कल्पनाशक्ति विकसित करती है तथा चेतना के स्तर पर उन्हें निरंतर मजबूत बनाती है|"[1]

नुक्कड़ नाटकों में दृश्य परिवर्तन सूत्रधार, कथा वाचक किसी पात्र द्वारा गोल के एक चक्कर, प्रस्थान आगमन द्वारा होता है| नुक्कड़ नाटकों में दृश्य

[1] नाटक से नुक्कड़ नाटक तक, राजेश कुमार, अरविंद कुमार (सं), पृ : 59

परिवर्तन के विषय में निशांत नाट्यमंच के रंगकर्मी नीलिमा शर्मा का कहना है – ".....यदि दृश्य परिवर्तन करते है तो हम ब्रेख्त की और संस्कृत नाटकों की परंपरागत शैली का प्रयोग करते है जैसे सूत्रधार का प्रवेश, गायन मंडली का आना आदि| पोस्टर आदि के माध्यम से भी दृश्य परिवर्तन की सूचना देते हैं|"[1]

नुक्कड़ नाटक का रचना विधान छोटा होते हुए भी अपने में अनेकानेक दृश्यों का समन्वय करता है| ये सब दृश्य पात्रों के अभिनय, सूत्रधार के निर्देश और संवाद योजना पर ही निर्भर करता है| अधिकांश नुक्कड़ नाटक एक से अधिक दृश्यों का समायोजन किए रहते हैं| 'गिरगिट' 'राजा का बाजा', - जैसे नुक्कड़ नाटक इस कोटि में आनेवाले हैं|

नुक्कड़ नाटकों का दृश्यत्व उसकी प्रस्तुति के दौरान पात्रों, संवादों तथा अभिनय पक्ष पर निर्भर करता है| प्रेक्षक के मानस पटल पर दृश्य बिम्बों को मूर्त या अंकित करना उसके दृश्य विधान का अपना वैशिष्ट्य है| उदाहरण के तौर पर देखें तो 'मशीन' नामक नुक्कड़ नाटक में एक ऐसी दृश्य योजना है –

"एक एक करके पाँच अभिनेता ताल में चलते हुए आते है और मिलकर यांत्रिक अंदाज में हाथ पैर हिलाकर मुँह से मशीन के चलने की आवाज़

[1] नीलिमा शर्मा से साक्षात्कार, परिशिष्ट नुक्कड़ नाटक रचना और प्रस्तुति, पृ : 3

निकालते हुए मशीन का अभिनय करते हैं|"[1] इसी एक दृश्य योजना से दर्शकों के मन पर एक मशीन देखने का ही प्रभाव पड़ता है|

कभी-कभी नुक्कड़ नाटकों में गीतों के माध्यम से भी परिवेश का परिचय दर्शकों को दिया जा सकता है| कई नुक्कड़ नाटकों में अनेक दृश्यों की योजना होती है| इन्हीं नाटकों में जहाँ दृश्य बदलता है वहाँ गीतों की योजना होती है| उदाहरण के लिए 'औरत' नुक्कड़ नाटक में घर का दृश्य, विवाह का दृश्य, दफ्तर, फैक्ट्री जैसे कई दृश्य बंध है और दृश्य परिवर्तन के लिए सूत्रधार द्वारा एक गीत प्रस्तुत किया जाता है|

संक्षेप में कहें तो उपकरणों के तामझाम के बिना भी नुक्कड़ नाटकों में दृश्य संरचना बखूबी से किया जाता है| इन्हीं नाटकों में सामाजिक यथार्थ की तहें खोलनेवाली अंतर्वस्तु का सही गठन दर्शकों को दृश्य सज्जा की मंचीय अवधारणा पर विचार ही नहीं करने देता|

प्रकाश/ध्वनी – योजना

नुक्कड़ नाटक बहुधा शहर, कस्बे के स्कूल, कॉलेज नुक्कड़, चौराहे, आदि सार्वजनिक जगहों पर, दिन में ही हुआ करता है तथा यही समय अनुकूल भी होता है| पर गाँवों में दिन का समय उचित नहीं| दिन भर गाँव के लोग खेतों खलिहानों में किसी-न-किसी काम में व्यस्त रहते हैं| शाम को ही वे फुर्सत

[1] मशीन (नुक्कड़ जनम संवाद अंक 16-17), पृ : 18

पाते हैं| इसलिए रात का वक्त गाँवों में नुक्कड़ नाट्य प्रदर्शन के लिए ज़्यादा बेहतर होता है| अतः नुक्कड़ नाटक में प्रकाश के लिए इन जगहों का ख्याल रखना ज़रूरी है|

दिन में नुक्कड़ नाटक जब खुली जगहों पर होता है तो सूर्य का प्रकाश ही सब कुछ होता है| फ़िलहाल नुक्कड़ नाटक अधिकतर शाम को ही होते हैं – चार से छ बजे के बीच| इस वक्त सूर्य का प्रकाश सबसे उचित होता है| सूर्य की रोशनी में अभिनय करने से एक बात दर्शकों के सामने स्पष्ट रहती है क्योंकि नाटक में जो कुछ हो रहा है उनके सामने हो रहा है| न कोई चमत्कार, न रोशनी का जादू|

रात के लिए प्रकाश योजना बिल्कुल दूसरी तरह है रात में जब नुक्कड़ नाटक का मंचन होता है तो गोलाकार अभिनय स्थल के चारों कोनों में खंभे गाड़कर अभिनय-स्थल की तरफ फुल-लाइट टाँगने पड़ते हैं| इस प्रकाश योजना से अभिनय स्थल पर तीव्र, गहरा प्रकाश पड़ता है, जिससे अभीनेताओं के तमाम हाव-भाव, शारीरिक क्रियाएँ स्पष्ट रूप से दूर-दूर तक बैठे दर्शकों को दिखलायी पड़ती है| यह कम खर्चीला एवं सुविधामय भी होता है|

शिवरामजी का मानना है कि नुक्कड़ नाटक हमेशा फुल लाइट में होता है| दिन में नाटक के लिए सूर्य का प्रकाश और रात में पेट्रोमैक्स, डिमर, स्पॉट

यदि उपलब्ध हो तो, वह नहीं तो साधारण हैलोजन से ही काम चलाया जाता है| निशांत नाट्यमंच की नीलिमा शर्मा का मानना है कि गाँवों में रात को खेले जानेवाले नुक्कड़ नाटकों की प्रकाश योजना के लिए दो हैलोजन ही काफी है| अगर हैलोजन उपलब्ध नहीं तो डिमर, बेबी या लालटेन मोमबत्तियों का भी इस्तेमाल कर सकते हैं| नुक्कड़ नाटक जब भी करें तो अभिनेताओं का चेहरा दिखाई देना चाहिए| इसलिए प्रकाश योजना ठीक ढंग से होनी चाहिए|

नुक्कड़ नाटकों केलिए ध्वनि-व्यवस्था उतनी महत्वपूर्ण नहीं है| ध्वनी व्यवस्था के लिए माइक का प्रयोग नहीं किया जाता है| कलाकार को अपनी आवाज़ साधकर हाई पिच और लो पिच में बोलना पड़ता है|

नुक्कड़ नाटकों की ध्वनी व्यवस्था के संदर्भ में जन नाट्य मंच की राय तो इस प्रकार है – "अपनी आवाज़ को दर्शकों तक पहूँचाने के लिए यह ज़रूरी है कि नुक्कड़ नाटक के कलाकार अपनी आवाज़ को साधे| इसके अलावा कई बार संवादों को बोलने के लिए कोरस का प्रयोग भी किया जाता है ताकि संवाद दर्शकों तक पहूँच जाए| इस प्रकार का प्रयोग संवाद पर ख़ास तवज्जों दिलाने के लिए भी किया जाता |"[1]

नुक्कड़ नाटकों की प्रस्तुति होते समय कलाकार गोल के किनारे या नेपथ्य में अपना-अपना वाद्ययंत्र लेकर बैठे रहते हैं, जहाँ से अभिनय स्थल में

[1] चौक-चौक पर गली गली में भाग-1, जन नाट्यमंच दिल्ली(संपादक) भूमिका से

कलाकार दिखाई पड़े| वे नाटक के साथ साथ जगह जगह पर ध्वनियाँ देते रहते हैं| कहीं-कहीं कोरस बनाकर गाते भी हैं| नुक्कड़ नाटक में कलाकारों का अपनी आवाज़ के साथ निरंतर प्रयोग करके 'हाई और लो पिच' का सही ज्ञान लेना बहुत आवश्यक है| नुक्कड़ों पर होने वाले तरह तरह के शोरगुल, सवारियों की आवाज़े, फेरीवालों की हाँक भी यदाकदा संगीत ध्वनी के रूप में अच्छी एवं सटीक भागीदारी निभा देती है| इनसे नुक्कड़ नाटक अपनी समग्रता को प्राप्त करता है|

गीत संगीत नृत्य योजना

नुक्कड़ नाटकों की प्रस्तुति में संगीत पक्ष एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है| दर्शकों का ध्यान आकर्षित करने के लिए नुक्कड़ नाटक में वाद्य संगीत एवं गीत का इस्तेमाल किया जाता है| इसका उपयोग नाटक के शुरू से अंत तक होता है| नाटक देखने के लिए आये हुए लोगों को आकृष्ट करने की वजह से संगीत और ध्वनि का सहारा लेते हैं| अधिकांश नुक्कड़ नाटकों में गेय शैली के संवाद एवं कथन तुकांत भाषा का प्रयोग तथा समूहगान इत्यादि का प्रयोग होता है|

नुक्कड़ नाटक प्रायः भीड़ के बीच, खेल के मैदानों, यातायातवाली सड़कों के पास, बाज़ार के पास, खेले जाते हैं| इस शोरगुल वातावरण में संगीत पक्ष लोगों को एकाएक चौकाता है और नाटक की प्रस्तुति में सहायक सिद्ध होता हैं|

नुक्कड़ नाट्य मंडलियों के गायक लोकगीतों और लोकधुनों का प्रयोग कर दर्शक को रसमग्न कर देते हैं| मौलिक धुनें भी प्रयुक्त करती हैं इसके साथ-साथ हारमोनियम, ढोलक, डफली, डमरू, घंटा, मंजीरा आदि वाद्य यंत्रो का प्रयोग भी किया जाता है| अक्सर नुक्कड़ नाटक गीत अथवा ढोलक की थाप के साथ शुरू होते हैं इस प्रकार के वाद्य यंत्रो के प्रयोग से गीत पक्ष की गुणात्मकता बढ़ जाती है|

नुक्कड़ नाट्य मंडलियाँ अपनी प्रस्तुति के लिए ऐसे वाद्य यंत्रो का चुनाव करते हैं जिनके स्वर अधिक तेज़ है, जो आसानी से ढोया जा सकें और सुविधापूर्वक मिल सकते हैं|

रंगकर्मी शिवराम का कहना है – "गीतों में हम अक्सर लोकगीतों की पैरोडी बना दिया करते हैं| कुछ लोकगीत इतने बढिया है कि हम ज्यों का त्यों उन्हें डाल लेते हैं|"[1]

जन नाट्य मंच ने अपने अनुभव के आधार पर लिखा है – "हमारे गीतों की धुनें अक्सर हमारी जानी पहचानी होती हैं| यानी हमारे आसपास के माहौल से जो धुनें, हमने अपने अन्दर रचाई बसाई हैं, अक्सर वही हमारे गीतों में उभरकर आती हैं| .....लेकिन हमने केवल लोक धुनों पर आधारित गीतों की ही रचना नहीं की बल्कि कई बार हमने प्रचलित धुनों, गानों, इप्टा

[1] शिवराम से साक्षात्कार, डॉ.प्रज्ञा, (नुक्कड़ नाटक रचना और प्रस्तुति) पृ 8

के गानों का भी प्रयोग किया है| इसके अलावा हमने कुछ मौलिक धुनें भी बनायी है|"[1]

गीत संगीत के साथ नृत्य संयोजन भी नुक्कड़ नाट्य विधा का एक अंग है| नृत्य योजना नुक्कड़ नाटक को अधिक आकर्षक बनाती है| इस तरह के नाटकों में नृत्य का समावेश कथानक की माँग के अनुसार किया जाता है| जिस क्षेत्र में नाटक खेला जाता है, वहाँ के लोक नृत्यों को नाटकों में अपनाया जाता है ताकि विचार आसानी से दर्शकों तक संप्रेषित हो जाए|

जन नाट्य मंच नृत्य संयोजन को स्क्रिप्ट का अंग मानता है| जन नाट्य मंच का कहना है "नुक्कड़ नाटक की कोरियोग्राफी में दो बातों का विशेष ध्यान रखना ज़रूरी है| पहली बात तो यह है कि नुक्कड़ नाटक के दर्शक चारों ओर होते है, इसलिए कोई भी ब्लोकिंग या मूवमेंट अलग अलग जगह बैठ दर्शकों द्वारा अलग कोणों से देखी जाती है| केवल ऊपर की दिशा में की गयी मूवमेंट ही सब दर्शकों द्वारा एक ही तरह से देखी जाती है| दूसरे इस बात का ध्यान रखना ज़रूरी है कि 'मूवमेंट' और 'कोरियोग्राफी' स्क्रिप्ट से स्वतः ही बहे और थोपी हुई न हो| कोरियोग्राफी का साफ़ और स्पष्ट होना बहुत ज़रूरी है| किसी भी किस्म की आवश्यक और विस्तृत मूवमेंट या ब्लाकिंग मुख्य मुद्धे से ध्यान हटाने का काम करती है|"[2]

[1] चौक-चौक पर गली गली में भाग-1, जन नाट्यमंच दिल्ली(संपादक) भूमिका से

[2] चौक-चौक पर गली गली में भाग-1, जन नाट्यमंच दिल्ली(संपादक) भूमिका से

नुक्कड़ नाटक जीवन यथार्थ का जनसंवादी रूप है| हर हाल में नुक्कड़ नाटक केलिए कथानक प्रधान है| इसका रूप इतना लचीला है कि किसी भी तकनीक और कला का प्रयोग उसमें हो सकता है, लेकिन यह उपयोग कथानक की माँग के आधार पर ही किया जाता है| इसीलिए नुक्कड़ नाटक के कथानक को प्रभावी बनाने के लिए कोरियोग्राफी उचित या उपयोगी है तो नाट्य मंडलियाँ ज़रूर उसे करेंगी| यानी कि नाटक को प्रभावशाली बनाने के उद्देश्य से नृत्य संयोजन किया जाता है|

'जनता पागल हो गयी है' में डांसिग स्टेप्स का उपयोग है| वे कलाकार 'ज़मीन'में नृत्य रचनाएँ भी संरचित करते है| उसी प्रकार 'अभी लड़ी जारी है','घुसपैठिए' आदि नुक्कड़ नाटकों में नृत्य रचनाएँ संरचित की है|

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि हर नुक्कड़ नाट्य मंडली यही मानती है कि नृत्य संयोजन कथानक की माँग के अनुसार उचित स्थानों पर ही होना चाहिए|

उद्देश्य

जन जागरण आन्दोलन के दौरान ही नुक्कड़ नाटकों का उदय हुआ| इसीसे पहचान सकते है कि जनता में जागरण लाना इसका प्रमुख उद्देश्य है| समाज में मौजूद किसी भी गलत व्यवस्था का विरोध और उसके समानांतर एक आदर्श व्यवस्था की स्थापना इन नाटकों की मुख्य वाणी है|

सामाजिक परिवर्तन का एक माध्यम है नुक्कड़ नाटक | नुक्कड़ नाटक अपने कथ्य के द्वारा सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और धार्मिक अत्याचारों, अनीतियों, शोषण, के प्रति आम आदमी में जागरण लाता है|

समाज के निम्न-स्तर के लोगों में आन्दोलन की लहरे पैदा करने का सशक्त माध्यम है नुक्कड़ नाटक| अशिक्षित लोग भी इससे लाभ उठा सकते हैं| गली, मोहल्ले, चौक, सड़क के किनारे, पार्क, विद्यालय, महाविद्यालय के प्रांगण, कारखाने के दरवाज़े आदि सभी जगह पर यह नाटक मौजूद है|

इन नाटकों का मुख्य स्वर राजनीतिक भ्रष्टाचार के प्रति विद्रोह है| रूढ़ सामाजिक परंपराओं कुरीतियों पर प्रहार करके एक आदर्श स्वच्छ सुन्दर समाज की कल्पना नुक्कड़ नाटकों ने की| रोटी, कपडा, मकान और पानी बिजली की किल्लत जैसी समस्याओं के विरोध में उठा आक्रोश इस प्रकार के नाटकों में मुखरित है|

नुक्कड़ नाटक समाज की तथाकथित मुख्य धारा के बाहर छोड़ दिए गए जन समूह की पीड़ा, आक्रोश और आशाओं को आवाज़ देता है| आम जनता को अपने अधिकारों के प्रति सचेत करने, शोषण धर्मी व्यवस्था का उन्मूलन करने तथा कला को सामाजिक परिवर्तन के महत्तर उद्देश्य से जोड़ने आदि क्षेत्रो में नुक्कड़ नाटक ने महत्वपूर्ण भूमिका निभायी|

समाज में चल रहे दलित महिला मज़दूर किसान आन्दोलनों को अधिक ज़ोर देने में नुक्कड़ नाटककारों का सशक्त हाथ हैं| इन नाटकों की विषय वस्तु ठोस सामाजिक राजनैतिक समस्याओं सच्चाइयो और सामाजिक महत्व के अन्य मुद्दों से निर्मित होता है|

सर्वहारा वर्ग में जनवादी अधिकारों के प्रति जागरूकता पैदा करने और उन्हें आन्दोलनात्मक गतिविधियों की ओर सक्रिय करने का कठिन और निरंतर प्रयत्न यह कला कर रही है| नुक्कड़ नाटकों की प्रतिबद्धता शोषित जनता के साथ है, इस जनता के प्रति उनकी गहरी सहानुभूति है, जिसके साथ वह जनता को सही दिशा में ले जाकर बुर्जुआ विचारधारा के विरुद्ध जन मानस तैयार करता है|

नुक्कड़ नाटकों का संप्रेषण तथा प्रस्तुति में आनेवाली बाधाएँ

किसी भी नाट्य विधा के लिए संप्रेषण एक ऐसी आवश्यक चीज़ है जो उसकी लोकप्रियता और उत्कृष्टता के निर्धारण में अपनी अहम भूमिका अदा करती है| संप्रेषण की दृष्टि से देखे तो नुक्कड़ नाटक अपने शैली शिल्प या अंतर्वस्तु को लेकर अत्यंत सरल है|

जिस जन जीवन की समस्याएँ नाटक के अन्दर है उसी जनकी भाषा-शैली में ही उन्ही समस्याओं को प्रस्तुत करता है| नुक्कड़ नाटक अपने दर्शकों के लिए कोई विशिष्ट या बाहर की चीज़ न होकर उनके अपने बीच का ही यथार्थ

होता है| इन नाटकों के दर्शक अपनी ही समस्याओं को नुक्कड़ नाटकों में देखते हैं इसलिए बहुत आसानी से इन्ही को अपनाते है|

नुक्कड़ नाटक के प्रसिद्ध रंगकर्मी सफ़दर हाश्मी के शब्दों में - "राजनैतिक चेतना से लैंस यह नाटक जब जनता के बीच पहूँचते हैं तो फ़ौरन अपना लिए जाते हैं| जनता की भाषा में, बिना किसी तामझाम के जनता की बात करनेवाले यह नाटक जनता को अपने लगते है, यही कारण है कि इन नाटकों को जनता का आश्रय मिलता है|"[1]

नुक्कड़ नाटकों में यथार्थ बाते सरल ढंग से चित्रित की जाती है| इसलिए वे आसानी से संप्रेषित की जाती है| नुक्कड़ नाटकों में जो कथ्य प्रस्तुत होता है वह बहुत साफ़ सुधरे हैं| इस लिए दर्शको पर इसका असर जल्दी से पड़ता है| नुक्कड़ नाटक के दर्शक को नाटक देखते समय कभी कभी ऐसा लगता है कि वह स्वयं उसके पात्र है| इस प्रकार का एक तादात्म्य पात्र और दर्शक के बीच स्थपित होता है|

"नुक्कड़ नाटक में पात्रों के जीवन से समरूपकता वही तक आवश्यक होती है, जहाँ तक दृश्य में नाटक के अन्य पात्रों से अलग उनकी एक विशिष्ट प्रतिनिधिक पहचान बनाना अत्यंत आवश्यक होता है| उस पहचान को

[1] सफ़दर हाश्मी, दीर्घा, दिसम्बर 1985, पृ : 26

कायम करते ही उनसे सम्बंधित अन्य ब्यौरों को दर्शकों की कल्पना पर छोड़ दिया जाता है|"[1]

इससे हम समझ सकते है कि नाटक का अंत होने के पश्चात् भी दर्शक सोचने के लिए बाध्य हो जाता है| इन नाटकों का लक्ष्य मात्र संप्रेषण ही नहीं बल्कि दर्शक को अपने बारे में सोचना भी है| नाटक देखने के बाद दर्शक को एक वैचारिक प्रक्रिया से गुज़रना होता है|

नुक्कड़ नाटक देखते समय दर्शकों के सामने अपने जीवन की सच्चाईयों की ही आवृत्ति बार बार होती रहती है| आम जन जीवन से ली गयी समस्याएँ या आम जन जीवन का यथार्थ जब नुक्कड़ नाटक के माध्यम से आम आदमी के सामने ही प्रस्तुत होते हैं तब कहने की आवश्यकता नहीं कि उसे दर्शक शीघ्र ही आत्मसात कर सकते हैं| दर्शक और पात्र के बीच जो तादात्म्य स्थापित होता है उसका आधार इसी संप्रेषणात्मकता ही है|

व्यवस्था के छद्म और उत्पीडन तंत्रों को उजागर करके जनता को उस पर विचार करने के लिए बाध्य करनेवाली नाट्य विधा है नुक्कड़ नाटक| रजनैतिक भ्रष्टाचार, गलत सरकारी नीतियाँ आदि पर विचार करने के कारण नुक्कड़ नाटकों की प्रस्तुति पर व्यवस्था की ओर से बाधा लाना तो आम बात ही है|

[1] रमेश उपाध्याय, वर्तमान साहित्य सितंबर 1986, पृ : 38-39

नुक्कड़ नाट्य मंडलियों के कलाकारों को व्यवस्था का तीखा और क्रूर विरोध सहना पड़ता है| "बंगाल में सांस्कृतिक कर्मियों की कविता पाठ करते हुए और नाटक करते हुए पुलिस व गुंडों द्वारा हत्याएँ, केरल में नाट्य कर्मी राजन की हत्या और घोर कम्युनिस्ट विरोधी ट्रावन्कोर कोचीन सेफ्टी एक्ट 1946 का सहारा लेते हुए सन् 1982 के आसपास केरल में ही नुक्कड़ नाटक पर प्रतिबंध, आंध्रा प्रदेश में सांस्कृतिक कर्मियों को पुलिस मुठभेड़ के नाम पर मारना और यातनाएँ, पंजाब में नाट्य कर्मियों को यातनाएँ उत्तर प्रदेश में एक महिला (नुक्कड़ नाटककर्मी) को सबक सिखाने के लिए थाने में (बस्ती में) बलात्कार, उत्तर प्रदेश और बिहार की अनेक जगहों पर नुक्कड़ नाटक पर प्रतिबद्ध आदि शासक-वर्ग के बहादुराना कारनामों से एक है|"[1]

दिल्ली परिवहन निगम द्वारा बस किराए में की गयी बढ़ोत्तरी के खिलाफ जब जन नाट्य मंच "डी.टी.सी की धांधली' नाटक दिल्ली में खेल रहा था तब पुलिस ने कलाकारों और दर्शकों पर लाठी चलायी और उन्हें थाने में बंद कर दिया|

सफ़दर हाश्मी ने अपने लेख 'नाटक खेलने का अधिकार' में इस घटना के बारे में ऐसा लिखा है - "पुलिस रंग-कर्मियों को इसलिए रोकती है, क्योंकि नुक्कड़ नाटक अपनी प्रकृति में राजनीतिक होती हैं| उनका दमन इसलिए किया जाता है क्योंकि वे सामाजिक समस्याओं को उठाते और अपने दर्शकों के

[1] नुक्कड़ नाटक रचना और प्रस्तुती, डॉ. प्रज्ञा, पृ : 154

सामने उनका वैज्ञानिक विश्लेषण पेश करते है| नुक्कड़ नाटकों का दमन करते हुए पुलिस राज्य सत्ता का ही हित साध रही होती है, क्योंकि राज्य सत्ता असहमति और विरोध के प्रति लगातार अधिकाधिक असहिष्णु होती जा रही है|"[1]

नुक्कड़ नाट्यकर्मियों पर सत्ता द्वारा किए जानेवाले अत्याचारों का उत्तम उदाहरण है सफ़दर हाश्मी की हत्या| राज्य सत्ता के विरुद्ध जब जन नाट्य मंच ने 'हल्लाबोल' नामक नुक्कड़ नाटक सन् 1989 जनवरी 1 को साहिबाबाद के झंडापुर में कर रहे थे, तब सफ़दर हाश्मी की हत्या की गयी|

कई नुक्कड़ मंडलियों पर प्रदर्शन के दौरान पुलिस तथा गुंडा द्वारा हमला होते ही रहते थे| नुक्कड़ नाट्य कर्मी शिवराम और उनके साथी कलाकारों पर बारो के गाँव जीरोध में संप्रदाय विशेष के लोगों ने जानलेवा हमला किया|

इस प्रकार प्रस्तुति के दौरान अनेक हमलों का शिकार बनने पर भी नुक्कड़ रंगकर्मी अपने कर्मों में कार्यरत या सक्रिय ही है| प्रतिकूल परिस्थियों में ही इनकी इच्छाशक्ति कम नहीं हुई है| नयी-नयी चुनौतियों का सामना करके करके इन कलाकारों में नवीन उत्साह का संचार होता है|

[1] सफ़दर, जननाट्य मंच, दिल्ली (सं), पृ : 41

निष्कर्ष

नुक्कड़ नाटकों के रूप पक्ष पर विचार करे हुए हम कह सकते है कि नुक्कड़ नाटक में भाषा, शैली,नृत्य-गीत, हास्य-व्यंग्य, संवाद, अभिनय आदि सभी पक्षों पर ध्यान दिया जाता है| कथ्य तथा शिल्प दोनों का समन्वय इन नाटकों को अधिक आकर्षक बनाता है|

अपने रूप पक्ष को लेकर नुक्कड़ नाटक भले ही एकदम नया न प्रतीत होता हो लेकिन इतना ज़रूर है कि इस आयाम पर वह नाटक के पूर्वरुपों से साम्य रखते हुए भी अपने में एक नयापन लिए हुए है| कोई कला अपना रूप और शिल्प स्वयं ही गढ़ लेती है| यह सब युगीन आग्रहों के तहत बिना किसी व्याकरणिक दक्षता के अपने आप होता है| नुक्कड़ नाटक भी इसका अपवाद नहीं है|

उपसंहार

साहित्य मानव में चेतना जगाने का सशक्त हथियार है | पुराण काल से लेकर सामाजिक-परिवर्तन में साहित्य की सक्रिय भूमिका रही है| मनुष्य की संवेदना को छूने का काम साहित्य ही कर सकता है | सामाजिक – परिवर्तन का आधार बनने के साथ ही मनुष्य की संवेदना को एक नयी परिणति देने का काम भी साहित्य करता है |

परिवेश के अनुरूप ही साहित्य सुजन होता है | साहित्य की परिवर्तनशीलता तो सामाजिक जरूरतों के तहत होती है| हर दृष्टि से स्वातंत्र्योत्तर भारतीय परिवेश, मूल्य – विघटन का समय था, और इसने साहित्य पर अपना ज़रूर असर छोड़ा है |

जनता से सीधा संपर्क होने के कारण परिवेश का वास्तविक प्रतिफलन नाटकों में ही अधिक होता है | स्वातंत्र्योत्तर युग के नाटकों में तत्कालीन समाज की छाया दिखाई देने लगी| परिवेश को उजागर करने के साथ–साथ उसमें परिवर्तन की गुंजाइश को भी दर्शाया जाने लगा | इस दौर रंगमंच में विविध प्रयोग होने लगे|

नाट्य – क्षेत्र में हुए नए प्रयोगों के सिलसिले में नुक्कड़ नाटकों की शुरुवात हुई, इसके जन्म और विकास के पीछे हमारे यहाँ का परिवेश, विशेषकर स्वतंत्र्योत्तर परिवेश ही प्रेरणा– स्रोत रहा है | विदेशी देशों में

नुक्कड़ नाटकों की शुरुआत पहले ही हो चुकी थी| उन्होंने अपने राष्ट के अवाम में चेतना जगानेवाले सशक्त हथियार के रूप में इसका सफल प्रयोग किया जिसका असर हिंदी साहित्यकारों -नाटककारों पर भी पड़ा|

नुक्कड़ नाटक हमारे लिए कोई आसमान से टपकनेवाली चीज़ नहीं थी क्योंकि इसकी जड़ें हमारी लोकनाट्य-परंपरा में पहले से लेकर विद्यमान थी| स्वातंत्र्योत्तर युग तथा आपात्काल के समय जो जनवादी नाट्यान्दोलन हुआ, उसके तहत नाटककारों ने विशेषकर वामपंथी विचारधारा से प्रभावित लोगों ने अपनी लोकनाट्य-परंपरा को नयी ऊर्जा देते हुए उसका प्रयोग अपने समाज तथा परिवेश के अनुरूप किया, जिसका विकास नुक्कड़ नाटक के रूप में हुआ|

यह तो वह नाट्य-विधा है जो अपनी ज़मीन से जुड़कर, जन-साधारण की संस्कृति,रहन-सहन और हावभाव को अपने अन्दर समेटकर समाज के अंतर्विरोधों को रचना के केन्द्र में रखते हैं| एक व्यवस्थित नाट्यान्दोलन के रूप में पनपे नुक्कड़ रंगकर्म ने नाटकों को मनोरंजन मात्र से निकालकर जन हितों और अधिकारों की रक्षा के लिए प्रयुक्त किया है| उसका कार्यक्षेत्र आम आदमी है|

भारत में नुक्कड़ नाटकों की शुरुआत का श्रेय इप्टा (भारतीय जन नाट्य संघ) को ही जाता है, जिसने भारत की बहुसंख्यक अनपढ़ और गंवार जनता में नई सांस्कृतिक चेतना और सामयिक घटनाओं के प्रति प्रगतिशील दृष्टि पैदा की, अकाल के समय गली, चौराहे, रेलवे स्टेशन आदि जगहों पर नुक्कड़ नाटक

प्रस्तुत किए| इप्टा ने नुक्कड़ नाटक का जो बीज बोया वह सफ़दर हाश्मी की नाट्य-संस्था 'जनम' के हाथ में आकर और भी पनपा|

कथ्यगत दृष्टि से नुक्कड़ नाटक का फलक बहुत विस्तृत है| मौजूदा समाज की राजनैतिक आर्थिक धार्मिक सांस्कृतिक सभी समस्याओं को नुक्कड़ नाटकों में स्वर मिला| अपने नाटकों के ज़रिए एक आदर्श समाज की व्यवस्था कैसी होनी चाहिए? इसे प्रस्तुत करने का प्रयास नुक्कड़ नाटककारों ने किया|

राजनैतिक भ्रष्टाचार के विरुद्ध प्रतिशोध ही नुक्कड़ नाटक का मुख्य स्वर है| इसके साथ-साथ मज़दूर-नारी-किसान-दलित आदि के ऊपर होनेवाले शोषण तथा समाज में अप्रत्यक्ष रूप से पनपनेवाली सांप्रदायिकता को भी उन्होंने अपना विषय बनाया|

भारत के सांस्कृतिक परिवेश में स्वातंत्र्योत्तर समय ने बहुत हल्ला मचाया| सांस्कृतिक दृष्टि से यह तो बहुत उथल पुथल का समय था| भूमंडलीकरण, यान्त्रीकरण, उपनिवेशवाद, पूँजीवाद आदि से एक प्रकार की अपसंस्कृति ही फ़ैल रही थी| भूमंडलीकृत–पूँजीवादी संस्कृति के चक्कर में आम जनता तड़प रही थी|

नुक्कड़ रंगकर्मियों ने अपने नुक्कड़ नाटकों के माध्यम से जनता को इस तथ्य से अवगत कराने की भरसक कोशिश की है कि वैश्वीकरण की प्रकिया

विश्वंपूजिवाद में अन्तर्निहित प्रक्रिया है और बाज़ारवादी भूमंडलीकरण के मौजूदा दौर में समाजवादी स्वप्न का ह्रास हो रहा है|

अपने रूप पक्ष को लेकर नुक्कड़ नाटक लोक-नाट्य परंपरा से तो ज़रूर मिलता है| लोक-नाट्य की तरह इसमें भी मुक्ताकाशी रंगमंच का प्रयोग होता है| बिना किसी तामझाम के रंगमंचीय उपकरणों की भरमार के, इसकी प्रस्तुति होती है| लेकिन इसे लोक नाट्य परंपरा का विकास नहीं कहा जा सकता क्योंकि इसका जन्म तथा विकास जनवादी नाट्यान्दोलन के साथ-साथ हुआ है|

जैसाकि नाम से जाहिर है नुक्कड़ नाटक की प्रस्तुति किसी नुक्कड़ चौराहे पर होते हैं| नुक्कड़ किसी गली मोहल्ले या बस्ती के कोने को कह दिया जाता है| यह वह जगह है जहाँ पर आम आदमी, मज़दूर, किसान, शिक्षक, बेरोज़गार युवक आदि सब एक दूसरे से मिलते हैं, अपने भावो-विचारों को आपस में बाँटते हैं| यह वह जगह है जहाँ देश का वास्तविक जीवन धड़कता है|

नुक्कड़ नाटक की खासियत यह है कि समाज में व्याप्त अनीतियों के चित्रण करने के साथ-साथ इसके विरूद्ध लडने का आह्वान भी इसमें है| आम जनता में चेतना जगाने तथा क्रांति के माध्यम से सामाजिक बदलाव यही उनका मुख्य रवैया है|

नुक्कड़ नाटककारों की शैली की विशेषता यह है कि वे दर्शक और पाठकों में प्रश्न करने की कूवत पैदा करते हैं| आशय यह है कि नुक्कड़ नाटकों को देखने के पश्चात् दर्शक और पाठक कुछ सोचने विचारने के लिए प्रेरित होते हैं|

नुक्कड़ रंगकर्मी ऐशो-आराम ज़िन्दगी चाहनेवाले नहीं है| आम जनता के लिए कुछ करना उनका जीवन कुछ बेहतर बनाना तथा समाज के उच्च वर्ग द्वारा उनपर किए जानेवाले शोषणों पर रोक लगाना, यही उनका लक्ष्य है| सामाजिक जीवन में समाज के निम्न तब्के के लोगों की उपस्थिति भी महसूस कराने के लिए न जाने कितने रंगकर्मियों ने अपनी कलम चलायी है|

भूमंडलीकरण जैसी ज्वलन्त समस्या को भी नुक्कड़ नाटकों में आवाज़ मिली है| इस खेमे के नुक्कड़ रंगकर्मियों में जन नाट्यमंच के नुक्कड़ नाटककारों के नाम विशेष रूप से आते हैं| उनके द्वारा आयोजित नाटकों में भारत में परोक्ष रूप से छा जानेवाली भूमंडलीकृत अपसंस्कृति की ओर इशारा है|

राजनीति तो ऐसा एक पहलू है, जिससे प्रत्येक देश की सामाजिक-आर्थिक-सांस्कृतिक- व्यवस्था प्रभावित होता है| स्वातंत्र्योत्तर युगीन भारतीय राजनैतिक परिदृश्य देखने पर हमें पता चलते हैं कि वह युग तो बिल्कुल हलचल का युग था| मौजूदा समाज में व्याप्त राजनैतिक-सामाजिक-आर्थिक समस्याओं को नुक्कड़ नाटकों में आवाज़ मिली है|

राजनैतिक समस्याओं को चित्रित करनेवाले नुक्कड़ नाटककारों में शिवराम, मालमसिंह चन्द्रवंशी, हरीश मदानी आदि के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं| धार्मिक सांप्रदायिक समस्याओं का चित्रण करनेवाले नुक्कड़ नाटककारों में रमेश उपाध्याय, सफ़दर हाश्मी, असगर वजाहत आदि के नाम आते हैं|

कोई भी कलाकर्म जब शोषक-शासक वर्ग के लिए चुनौती या खतरा बनने लगता है तो उस पर दमन का रुख अपनाया जाता है| नुक्कड़ नाटक पर भी यही हुआ है या होता आया है| जन नाट्य मंच के प्रसिद्ध नुक्कड़ कर्मी सफदर हाश्मी की निर्मम हत्या इसका सबूत है| इससे ज़ाहिर होता है कि नुक्कड़ नाटक यथार्थ की ज़मीन पर पनपी एक ऐसी कला है जिसकी प्रवृत्ति चेतनामूलक होती है| जनता की वर्ग-चेतना को जगाते हुए दुनिया भर के नुक्कड़ रंगकर्मियों ने जनमानस को आन्दोलित किया है|

संदर्भ ग्रंथसूची

आधार ग्रंथ

[1]	मशीन	नुक्कड़ जनम संवाद अंक 16 -17 जुलाई – दिसम्बर – 2002
[2]	गाँव से शहर तक	नुक्कड़ जन्म संवाद अंक 16-17 जुलाई – दिसम्बर -2002
[3]	मिल के चलो	नुक्कड़ जनम संवाद अंक 16 -17 जुलाई – दिसम्बर – 2002
[4]	समरथ को नहीं दोष गुसाई	नुक्कड़ जनम संवाद अंक 16 -17 जुलाई – दिसम्बर – 2002
[5]	काला कानून	नुक्कड़ जनम संवाद अंक 16 -17 जुलाई – दिसम्बर – 2002
[6]	जब चोर बने कोतवाल	नुक्कड़ जनम संवाद अंक 16 -17 जुलाई – दिसम्बर – 2002
[7]	मई दिवस की कहानी	नुक्कड़ जनम संवाद अंक 16 -17 जुलाई – दिसम्बर – 2002
[8]	हल्ला बोल	नुक्कड़ जनम संवाद अंक 16 -17 जुलाई – दिसम्बर – 2002
[9]	छः पैसे का रुपैया	नुक्कड़ जनम संवाद अंक 16 -17 जुलाई – दिसम्बर – 2002
[10]	संघर्ष करेंगे जीतेंगे	नुक्कड़ जनम संवाद अंक 16 -17 जुलाई – दिसम्बर – 2002

[11]	अंधेरा अफताब मांगेगा	नुक्कड़ जनम संवाद अंक 16 -17 जुलाई – दिसम्बर – 2002
[12]	जिन्हें यकीन नहीं था	नुक्कड़ जनम संवाद अंक 16 -17 जुलाई – दिसम्बर – 2002
[13]	नहीं कुबूल	नुक्कड़ जनम संवाद अंक 16 -17 जुलाई – दिसम्बर – 2002
[14]	हम है झुग्गी वाले	नुक्कड़ जनम संवाद अंक 16 -17 जुलाई – दिसम्बर – 2002
[15]	एक मज़दूर की स्वाभाविक मौत	नुक्कड़ जनम संवाद अंक 16 -17 जुलाई – दिसम्बर – 2002
[16]	ओम स्वाहा	थियेटर यूनियन नुक्कड़ जनम संवाद अंक 35-36 अप्रैल – सितम्बर 2007
[17]	मैं हूँ लडकी कुँवारी	कालिंदी देशपांडे नुक्कड़ जनम संवाद अंक 35-36 अप्रैल – सितम्बर 2007
[18]	सती	कालिंदी देशपांडे नुक्कड़ जनम संवाद अंक 35-36 अप्रैल – सितम्बर 2007
[19]	जीना है तो लड़ना होगा	कालिंदी देशपांडे नुक्कड़ जनम संवाद अंक 35-36 अप्रैल – सितम्बर 2007

[20] बेटी आई है
कालिंदी देशपांडे
नुक्कड़ जनम संवाद अंक 35-36
अप्रैल – सितम्बर 2007

[21] वे आ रही है
ज्योति
नुक्कड़ जनम संवाद अंक 35-36
अप्रैल – सितम्बर 2007

[22] बुशक्याओ
सुधन्वा देशपांडे
नुक्कड़ जनम संवाद अंक 31-32
अप्रैल – सितम्बर 2006

[23] डी.टी.सी की धांधली
जन नाट्य मंच
नुक्कड़ जनम संवाद अंक 18-19
जनवरी – जून 2003

[24] औरत
जन नाट्य मंच
नुक्कड़ जनम संवाद अंक 18-19
जनवरी – जून 2003

[25] राजा का बजा
जन नाट्य मंच
नुक्कड़ जनम संवाद अंक 18-19
जनवरी – जून 2003

[26] आया चुनाव
जन नाट्य मंच
नुक्कड़ जनम संवाद अंक 18-19
जनवरी – जून 2003

[27] पुलिसचरित्रम
जन नाट्य मंच
नुक्कड़ जनम संवाद अंक 18-19
जनवरी – जून 2003

[28]	जंग के खतरे	जन नाट्य मंच नुक्कड़ जनम संवाद अंक 18-19 जनवरी – जून 2003
[29]	एग्रीमेंट	जन नाट्य मंच नुक्कड़ जनम संवाद अंक 18-19 जनवरी – जून 2003
[30]	है लाल हमारा परचम	जन नाट्य मंच नुक्कड़ जनम संवाद अंक 18-19 जनवरी – जून 2003
[31]	पढ़ना लिखना सीखो	जन नाट्य मंच नुक्कड़ जनम संवाद अंक 18-19 जनवरी – जून 2003
[32]	आर्तनाद	जन नाट्य मंच नुक्कड़ जनम संवाद अंक 18-19 जनवरी – जून 2003
[33]	वो बोल उठी	जन नाट्य मंच नुक्कड़ जनम संवाद अंक 18-19 जनवरी – जून 2003
[34]	रेहड़ी पटरी नहीं हटेंगी	जन नाट्य मंच नुक्कड़ संवाद अंक 33 अक्तूबर – दिसम्बर 2006
[35]	अब चल पड़ा	जन नाट्य मंच नुक्कड़ संवाद अंक 33 अक्तूबर – दिसम्बर 2006

[36] जीना हो तो लड़ना होगा
हंसराज ड्रामेटिक सोसायटी
नुक्कड़ संवाद अंक 29-30
अक्तूबर 2005 – मार्च 2006

[37] ये भी हिंसा है
जन नाट्य मंच
नुक्कड़ संवाद अंक 29-30
अक्तूबर 2005 – मार्च 2006

[38] नारे नहीं तो नाटक नहीं
जन नाट्य मंच
नुक्कड़ संवाद अंक 29-30
अक्तूबर 2005 – मार्च 2006

[39] रंग सियार
राजेश कुमार
मुजरिम कौन है ?
सुभाष चौदरी (संपादक)
जीवन ज्योति प्रकाशन, दिल्ली
संस्करण - 1996

[40] हमें बोलने दो
राजेश कुमार
मुजरिम कौन है ?
सुभाष चौदरी (संपादक)
जीवन ज्योति प्रकाशन, दिल्ली
संस्करण - 1996

[41] सबसे सस्ता गोश्त
असगर वजाहत
उत्तरार्द्ध मई 1983

[42] अपहरण भाईचारे का
सफदर हाश्मी
सफदर
भीष्मसाहनी (संपादित)
राजकमलप्रकाशन, नयी दिल्ली
संस्करण- 1989

[43]	बोल री मछली कितना पानी	अरविन्द कुमार मुक्ति जून 1985
[44]	जनता पागल हो गयी है	शिवराम उत्तरार्ध्द नाटक विशेषक जनवरी मई 1983
[45]	अब नहीं सहेंगे ज़ोर किसीका	निशान्त नाट्य मंच दिल्ली द्वारा संपादित
[46]	हरिजन दहन	रमेश उपाध्याय उत्तरार्ध्द नाटक विशेषक मई 1983
[47]	सुजाता मायने पैसा	राजेश कुमार मुक्ति जून 1985
[48]	आग	असगर वजाहत मुक्ति जून 1985
[49]	रोटी नाम सत् है	हरीश भादानी उत्तरार्ध्द मई 1983
[49]	सबका दुश्मन	स्वयंप्रकाश उत्तरार्ध्द मई 1983
[50]	प्रजातन्त्र सड़क पर	मालम सिंह चंद्रवंशी उत्तरार्ध्द मई 1983

[51] देश आगे बढाओ — असगर वजाहत
उत्तरार्ध्द
मई 1983

[52] राजा की रसोई — रमेश उपाध्याय
उत्तर गाथा
सांप्रदायिकता विरोधी अंक
जनवरी – अप्रैल 1982

सहायक ग्रंथ

[1] आज का हिन्दी नाटक प्रगति और प्रभाव — डॉ. दशरथ ओझा,
राजपाल एन्ड सन्ज़
दिल्ली, प्रथम संस्करण 1984

[2] आज के रंग नाटक — इब्राहिम अल्काजी (संपादक)
राधाकृष्ण प्रकाशन,
नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 1973

[3] आज के हिन्दी रंग नाटक – परिवेश और परिदृश्य — जयदेव तनेजा,
तक्षशिला प्रकाशन
दिल्ली, प्रथम संस्करण 1980

[4] आधुनिक भारत — सुमित सरकार,
राजकमल प्रकाशन
नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2007

[5] आधुनिक भारतीय रंगलोक — जयदेव तनेजा,
भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन
दिल्ली, प्रथम संस्करण 2006

[6]	आधुनिक हिन्दी नाटक	डॉ. नगेन्द् नेशनल पब्लिशिंग हाउस नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 1998
[7]	आधुनिक हिन्दी नाटक और रंगमंच	नेमिचंद्र जैन (सं) मैकमिलन प्रकाशन नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 1978
[8]	आधुनिक हिन्दी नाटक और रंगमंच	डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल साहित्य भवन इलाहाबाद, प्रथम संस्करण 1973
[9]	आधुनिक हिन्दी नाटकों में प्रयोगधार्मिता	डॉ.सत्यवती त्रिपाठी राधाकृष्ण प्रकाशन नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 1991
[11]	आधुनिक हिन्दी नाटकों में सामाजिक व्यंग्य	डॉ. आर शशिधरन जवाहर पुस्तकालय, सुन्दर बाज़ार, मथुरा प्रथम संस्करण 2009
[12]	आधुनिक हिन्दी नाटक एक यात्रा दशक	नर नारायण राय, भारती – भाषा प्रकाशन दिल्ली, प्रथम संस्करण 1979
[13]	आधुनिक हिन्दी नाटक :संवेदना और रंगशिल्प के नए आयाम	डॉ. सुन्दरलाल कथूरिया भावना प्रकाशन दिल्ली, प्रथम संस्करण 1998

[14]	इतिहास और संस्कृति	वीरेन्द्र मोहन शिल्पायन प्रकाशन दिल्ली, प्रथम संस्करण 2004
[15]	ग्यारह नुक्कड़ नाटक	गिरिराज शरण अग्रवाल हिन्दी साहित्य निकेतन, प्रथम संस्करण 2000
[16]	दिल्ली का हिन्दी नाटक और रंगमंच	डॉ. रमेश गौतम अभिरुचि प्रकाशन दिल्ली, प्रथम संस्करण 2000
[17]	नया नाटक उद्भव एवं विकास	डॉ.नरनारायण राय कादम्बरी प्रकाशन दिल्ली, प्रथम संस्करण 2001
[18]	नयी रंग – चेतना और हिन्दी नाटककार	जयदेव तनेजा तक्षशिला प्रकाशन दिल्ली, प्रथम संस्करण 1994
[19]	नाट्यानुभव	नंदकिशोर आचार्य वाग्देव प्रकाशन बीकानेर, प्रथम संस्करण 2004
[20]	नाटक और रंगमंच	ललित कुमार शर्मा डॉ. भानुशंकर मेहता (संपादक) प्रभा प्रकाशन इलाहबाद, प्रथम संस्करण 1985
[21]	नाटक के सौ बरस	हरिश्चन्द्र अग्रवाल (संपादक) शिल्पायन प्रकाशन दिल्ली, प्रथम संस्करण 2001

[22]	नाटक तथा रंग परिकल्पना	डॉ. गिरीश रस्तोगी विश्वविद्यालय प्रकाशन वारणासी, प्रथम संस्करण 1992
[23]	नाट्य चिंतन : नए संदर्भ	डॉ. चन्द्र साहित्य रत्नालय कानपुर, प्रथम संस्करण 1987
[24]	नुक्कड़ नाटक : रचना और प्रस्तुति	डॉ. प्रज्ञा राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2004
[25]	पाँच नुक्कड़ नाटक	डॉ. ब्रजराज किशोर जनप्रिय प्रकाशन दिल्ली, प्रथम संस्करण 1985
[26]	बीसवीं शताब्दी का हिन्दी नाटक और रंगमंच	गिरीश रस्तोगी भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2004
[27]	भारतीय नाट्य परंपरा और रंगभूमि	डॉ. मदन भारद्वाज नेशनल पब्लिशिंग हाउस नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2001
[28]	भारतीय नाट्यशास्त्र और आज का रंगमंच	डॉ. विश्वनाथ मिश्र उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान लखनऊ, प्रथम संस्करण 2005

[29] रंगमंच और स्वाधीनता आन्दोलन — विजय पंडित
वाणी प्रकाशन
नई दिल्ली, प्रथम संस्करण
1998

[30] रंग-प्रक्रिया के विविध आयाम — प्रेमसिंह, सुषमा आर्य
(संपादक)
राधाकृष्ण प्रकाशन
दिल्ली, प्रथम संस्करण 2007

[31] रंगमंच कला और दृष्टि — गोविन्द चातक
तक्षशिला प्रकाशन
दिल्ली, प्रथम संस्करण 1976

[32] रंगमंच का सौन्दर्यशास्त्र — देवेन्द्रराज अंकुर
राजकमल प्रकाशन
नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2006

[33] रंग कोलाज — देवेन्द्रराज अंकुर
राजकमल प्रकाशन
नई दिल्ली, प्रथम संस्करण
2000

[34] रंगमंच और नाटक की भूमिका — डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल
नेशनल पब्लिशिंग हाउस
नई दिल्ली, प्रथम संस्करण
1965

[35] रंगमंच परंपरा और प्रयोग — योगेन्द्र चौबे
राजकमल प्रकाशन
नई दिल्ली, प्रथम संस्करण
2007

[36]	रंग भूमिकाएँ	मुद्राराक्षस राष्ट्रीय नाट्यविद्यालय नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2006
[37]	रंगमंच : लोकधर्मी नाट्य धर्मी	डॉ. लक्ष्मी नारायण भरद्वाज के.एल.पचौरी प्रकाशन गाज़ियाबाद, प्रथम संस्करण 1992
[38]	रंग हबीब	भारतरत्न भार्गव राष्ट्रीय नाट्यविद्यालय नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2006
[39]	समकालीन साहित्य – चिंतन	डॉ. रामदरश मिश्र , डॉ. महीप सिंह (संपादक) प्रभात प्रकाशन दिल्ली, राष्ट्रीय नाट्यविद्यालय नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 1986
[40]	समकालीन संवेदना और हिन्दी नाटक	डॉ. शेखर शर्मा भावना प्रकाशन दिल्ली, प्रथम संस्करण 1988
[41]	समकालीन हिन्दी नाटक	नर नारायण राय सन्मार्ग प्रकाशन दिल्ली, प्रथम संस्करण 1996
[42]	समकालीन हिन्दी रंगमंच	डॉ. समिता गुरव विद्या प्रकाशन कानपुर, प्रथम संस्करण 2006

[43]	समसामायिक नाटकों में वर्ग – चेतना	डॉ. देव किशन चौहान स्वराज प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण 1997
[44]	स्वातंत्र्योत्तर युगीन परिप्रेक्ष्य और नुक्कड़ नाटक एक मूल्यांकन	डॉ.मदन मोहन शर्मा पार्श्व प्रकाशन, अह्म्मदाबाद, प्रथम संस्करण 1992
[45]	स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी रंगमंच	ओमप्रकाश शर्मा ऊंदल प्रकाशन कानपुर, प्रथम संस्करण 1994
[46]	स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी नाटक	डॉ. रामजन्म शर्मा लोक भारती प्रकाशन इलाहाबाद, प्रथम संस्करण 1985
[47]	स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी नाटक मूल्य – संक्रमण	ज्योतीश्वर मिश्र, लोक भारती प्रकाशन इलाहबाद, प्रथम संस्करण 2007
[48]	सफ़दर – जन-नाट्यमंच	राजकमल प्रकाशन दिल्ली, प्रथम संस्करण 1989
[49]	साठोत्तर हिन्दी नाटकों में सामाजिक चेतना	डॉ. जयश्री शुक्ला, शांति प्रकाशन इलाहबाद, प्रथम संस्करण 1965
[50]	हिन्दी नाटक	बच्चन सिंह लोक भारती प्रकाशन इलाहाबाद, प्रथम संस्करण 1967

[51]	हिन्दी नाटक आजकल	जयदेव तनेजा तक्षशिला प्रकाशन नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2000
[52]	हिन्दी नाटक आज तक	प्रकाशक शब्द सेतु दिल्ली, प्रथम संस्करण 2001
[53]	हिन्दी नाटक और रंगमंच	डॉ. पवनकुमार मिश्र अक्षर प्रकाशन दिल्ली, प्रथम संस्करण 1984
[54]	हिन्दी नाटक और रंगमंच	राजमल बोरा, नारायण शर्मा (सं) पंचशील प्रकाशन जयपुर, प्रथम संस्करण 1988
[55]	हिन्दी नाटक और रंगमंच	डॉ. रामकुमार वर्मा (सं) हिन्दुस्तानी अकादमी, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण 1986
[56]	हिन्दी नाटक और रंगमंच : पहचान और परख	डॉ. इन्द्रनाथ मदान लिपि प्रकाशन नई दिल्ली, द्वितीय संस्करण 1993
[57]	हिन्दी नाटक और रंगमंच ब्रेख्त का प्रभाव	डॉ.सुरेश वशिष्ठ प्रेम प्रकाशन दिल्ली, प्रथम संस्करण 1995
[58]	हिन्दी नाटक और रंगमंच समकालीन परिदृश्य	डॉ.ब्रजराज किशोर जनप्रिय प्रकाशन दिल्ली, प्रथम संस्करण 1988

[59] हिन्दी नाटक इतिहास के सोपान — गोविन्द चातक
तक्षशिला प्रकाशन
दिल्ली, प्रथम संस्करण 2002

[60] हिन्दी नाटक उद्भव और विकास — डॉ. दशरथ ओझा
राजपाल एन्ड सन्ज़
दिल्ली, प्रथम संस्करण 2006

[61] हिन्दी नाटक का आत्मसंघर्ष — गिरीश रस्तोगी
लोक भारती प्रकाशन
दिल्ली, प्रथम संस्करण 1998

[62] हिन्दी नाटक चिंतन — कुसुम कुमार
इन्द्रप्रस्थ प्रकाशन
दिल्ली, प्रथम संस्करण 1977

[63] हिन्दी नाटक : प्राक्कथन और दिशाएँ — डॉ.विजयकान्तधर दुबे
अनुभव प्रकाशन
श्रीनगर, प्रथम संस्करण 1986

[64] हिन्दी नाटक : संदर्भ और प्रकृति — डॉ. नरनारायण राय
के.एल. चौधरी प्रकाशन
दिल्ली, प्रथम संस्करण 1987

[65] हिन्दी नाटक में पात्र कल्पना और चरित्र चित्रण — डॉ. सूरजकांत शर्मा
एस.ई.एस. बुक कंपनी
दिल्ली, प्रथम संस्करण 1973

[66] हिन्दी नाट्यकर्म : दृष्टि और सृष्टि — डॉ.रमेश गौतम
शांति पुस्तक मंदिर
दिल्ली, प्रथम संस्करण 1996

[67]	हिन्दी नाट्य – साहित्य और रंगमंच की मीमांसा प्रथम खण्ड	कुँवर चन्द्र प्रकाश सिंह भारतीय ग्रंथ भण्डार दिल्ली, प्रथम संस्करण 1964
[68]	हिन्दी रंगकर्म : दशा और दिशा	जयदेव तनेजा, तक्षशिला प्रकाशन नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 1980

अंग्रेज़ी

[1]	A History of Russian Theatre	Robert Leach, Victor Borovsky Cambridge University Press – 1999
[2]	Encyclopedia of Social Movement Media	John D.H. Downing Sage Publications – 2010
[3]	Indian Theatre : Theatre of origin, Theatre of Freedom	Ralph Yarrow, Curzon Press, Richmond, Surrey 2001
[4]	New farmer's Movement in India	Tom Brass, Routeldge, 1995
[5]	People's Art in the twentieth Century theory and Practice	Jana Natya Manch, New Delhi 2000
[6]	Social Movement in India	Ghan Shyam Shah Sage Publication Indian, Delhi 1990
[7]	Subversive Women : Women's Movement in Africa, Asia, Latin America and the Caribbean	SaskiaWierings, Zed Books, 1995
[8]	The Art of Dramatic Writing	Simon and Schuster, New York, 1946
[9]	The Cambridge Guide to American Theatre	Don B. Wilmeth, Cambridge University Press, 2007 (II Edition)
[10]	The Cambridge Guide to theatre	Martin Banham, Eambridge University Press,1995 (II Edition)

[11]	The Cambridge History of American Theatre Post World War II to the 1990's	Don B. Wilmeth, C.W.E. Bigsby Cambridge University Press - 2000
[12]	Theatre as a Weapon	Richard Stourac Methuen, 1986
[13]	The Indian Theatre	AdyaRangacharya, National Book Trust, New Delhi-1980
[14]	Theatre in India	National School of Drama, New Delhi – 1975
[15]	The Theatre in India	BelwantGargi New Delhi – 1975
[16]	People's Theatre in America	Karen Malpede Taylor, 1972
[17]	Politics and People	Rajani Kothari Ajanta Publications, Delhi

मलयालम

[1]	AadhunikaMalayalaSahithyaCharithram	Prasthanangaliloode : Dr. K. M. George (Editor), D.C. Books, Kottayam, 2001
[2]	Prathyayashastravum, Natakavum	N.R. GramaPrakash, NaveenaDrishyakala, Thrissur, 1997
[3]	MalayalaNatakaSahithyaCharithram	Dr. VayalarVasudevanPillai, Kerala Sahithya Academy, Thrissur, 2005
[4]	MalayalaSahithyam, Kalaghattangaliloode	Erumeli, Current Books, 1998 (Second Edition)
[5]	TheruvuNatakam: Sidhanthavam, Prayogavum	Dr. N.R. GramaPrakash (Editor)2003

पत्रिकाएँ

[1]	आजकल	मई	1975
[2]	आजकल	जनवरी	1976
[3]	आलोचना	जनवरी – मार्च	2001
[4]	आलोचना	जुलाई -सितम्बर	2002
[5]	आलोचना	अक्तूबर – दिसंबर	2002
[6]	आलोचना	जनवरी – मार्च	2003
[7]	आलोचना	जुलाई – सितम्बर	2003
[8]	आलोचना	सहस्राब्दी अंक	2003
[9]	उत्तरार्ध्द	मई	1983
[10]	उत्तरगाथा	अप्रैल – जून	1983
[11]	कथन	जनवरी – मार्च	2003
[12]	कथन	अप्रैल – जून	2003
[13]	कथन	अप्रैल – जून	2005
[14]	कथन	अक्तूबर – दिसम्बर	2005
[15]	कथन	अप्रैल – जून	2007
[16]	कथन	जुलाई – सितम्बर	2007
[17]	कथन	अक्तूबर – दिसम्बर	2007
[18]	कथन	जनवरी – मार्च	2008
[19]	ज्योत्सना	मई	1992
[20]	दीर्घा	दिसम्बर	1985
[21]	नटरंग	अध्द्र्शताब्दी अंक मार्च – दिसम्बर	1989
[22]	नुक्कड़ जन्म संवाद	जनवरी – अप्रैल	1997

[23]	नुक्कड़ जन्म संवाद	जुलाई	1997
[24]	नुक्कड़ जन्म संवाद	जनवरी	1998
[25]	नुक्कड़ जन्म संवाद	अक्तूबर	1998
[26]	नुक्कड़ जन्म संवाद	जनवरी – मार्च	1999
[27]	फल – प्रतिफल	जनवरी – मार्च	2005
[28]	मधुमती	अगस्त	2001
[29]	मधुमती	मई	2002
[30]	वागर्थ	सितम्बर	1999
[31]	वागर्थ	दिसम्बर	2001
[32]	वागर्थ	नवम्बर – दिसम्बर	2002
[33]	वाड.मय	जनवरी – मार्च	2008
[34]	संग्रथन	मई	2007
[35]	संग्रथन	फरवरी	2008
[36]	संचेतना	मार्च – जून	1996
[37]	संचेतना	मई	1998
[38]	साहित्य अमृत	दिसम्बर	2001
[39]	साहित्य अमृत	जुलाई	2007
[40]	साहित्य अमृत	अगस्त	2007
[41]	साक्षात्कार	जनवरी	1997
[42]	साक्षात्कार	अक्तूबर	2007
[43]	हंस	फरवरी	2001
[44]	हंस	फरवरी	2001
[45]	हंस	अक्तूबर	2002